पढ़ें और सीखें योजना

हमारा गुजरात

वर्षादास

विभागीय सहयोग
सुरेश पांडेय

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

जुलाई 1991
आषाढ़ 1913

P.D. 15 T—SD

प्रकाशन सहयोग

सी.एन.राव : अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग

प्रभाकर द्विवेदी	: मुख्य संपादक	**यू. प्रभाकर राव**	: मुख्य उत्पादन अधिकारी
आशीष सिन्हा	: संपादक	**डी.साई प्रसाद**	: उत्पादन अधिकारी
शर्मा दत्त	: सहायक संपादक	**सुबोध श्रीवास्तव**	: उत्पादन सहायक

मूल्य : रु. 12.00

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा ग्राफिक कम्पोज़र्स द्वारा फोटो कम्पोज़ होकर सर्ज एसोसिएट्स (प्रा.) लिमिटेड, सी-454, सेक्टर-10, नोएडा द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

विद्यालय शिक्षा के सभी स्तरों के लिए अच्छे शिक्षाक्रम, पाठ्यक्रमों और पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की दिशा में हमारी परिषद् पिछले पचीस वर्षों से कार्य कर रही है। हमारे कार्य का प्रभाव भारत के सभी राज्यों और संघशासित प्रदेशों में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से पड़ा है और इस पर परिषद् के कार्यकर्त्ता संतोष का अनुभव कर सकते हैं।

किन्तु हमने देखा है कि अच्छे पाठ्यक्रम और अच्छी पाठ्यपुस्तकों के बावजूद हमारे विद्यार्थियों की रुचि स्वतः पढ़ने की ओर अधिक नहीं बढ़ती। इसका एक मुख्य कारण अवश्य ही हमारी दूषित परीक्षा-प्रणाली है जिसमें पाठ्यपुस्तकों में दिए गए ज्ञान की ही परीक्षा ली जाती है। इस कारण बहुत ही कम विद्यालयों में कोर्स के बाहर की पुस्तकों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है। लेकिन अतिरिक्त पठन में बच्चों की रुचि न होने का एक बड़ा कारण यह भी है कि विभिन्न आयुवर्ग के बालकों के लिए कम मूल्य की अच्छी पुस्तकें पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध भी नहीं हैं। यद्यपि पिछले कुछ वर्षों में इस कमी को पूरा करने के लिए कुछ काम प्रारंभ हुआ है पर वह बहुत ही नाकाफी है।

इस दृष्टि से परिषद् ने बच्चों की पुस्तकों के रूप में लेखन की दिशा में महत्वाकांक्षी योजना प्रारंभ की है। इसके अंतर्गत, "पढ़ें और सीखें" शीर्षक से एक पुस्तकमाला तैयार करने का विचार है जिसमें विभिन्न आयुवर्ग के बच्चों के लिए सरल भाषा और रोचक शैली में अनेक विषयों पर बड़ी संख्या में पुस्तकें तैयार की जाएँगी। हम आशा करते हैं कि 1991 के अंत तक हिन्दी में हम निम्नलिखित विषयों पर 50 पुस्तकें प्रकाशित कर सकेंगे।

(क) शिशुओं के लिए पुस्तकें
(ख) कथा साहित्य

(ग) जीवनियाँ

(घ)देश-विदेश परिचय

(ङ) सांस्कृतिक विषय

(च) वैज्ञानिक विषय

(छ) सामाजिक विज्ञान के विषय

इन पुस्तकों के निर्माण में हम प्रसिद्ध लेखकों, अनुभवी अध्यापकों और योग्य कलाकारों का सहयोग ले रहे हैं। प्रत्येक पुस्तक के प्रारूप पर भाषा, शैली, और विषय-विवेचन की दृष्टि से सामहिक विचार करके उसे अंतिम रूप दिया जाता है।

परिषद् इस माला की पुस्तकों को लागत-मूल्य पर ही प्रकाशित कर रही है ताकि ये देश के हर कोने में पहुँच सकें। भविष्य में इन पुस्तकों को अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद कराने की भी योजना है।

हम आशा करते हैं कि शिक्षाक्रम, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के क्षेत्र में किए गए कार्य की भाँति ही परिषद् की इस योजना का भी व्यापक स्वागत होगा।

प्रस्तुत पुस्तक "हमारा गुजरात" के लेखन के लिए डा. (श्रीमती) वर्षा दास ने हमारा निमंत्रण स्वीकार किया जिसके लिए हम उनके अत्यंत आभारी हैं। जिन-जिन विद्वानों, अध्यापकों और कलाकारों से इस पुस्तक को अंतिम रूप देने में हमें सहयोग मिला है उनके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

हिंदी में "पढ़ें और सीखें" पुस्तकमाला की यह योजना प्रो. अनिल विद्यालंकार (अवकाश प्राप्त) के मार्ग-दर्शन में चल रही थी और अब प्रो.अर्जुन देव इसे दिशा दे रहे हैं। उनके सहयोगियों में श्रीमती संयुक्ता लूदरा, डा. रामजन्म शर्मा, डा. सुरेश पांडेय, डा. हीरालाल बाछोतिया और डा. अनिरुद्ध राय सक्रिय सहयोग दे रहे हैं। विज्ञान की पुस्तकों के लेखन का मार्गदर्शन राजस्थान विश्व विद्यालय के भूतपूर्व कुलपति डा. रामचरण मेहरोत्रा कर रहे हैं और इन पुस्तकों के लेखन में हमारे विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग के डा. रामदुलार शुक्ल सहयोग दे रहे हैं। योजना के संचालन में डा. बाछोतिया विशेष रूप से सक्रिय रहे हैं। मैं डा. रामचरण मेहरोत्रा को और अपने सभी सहयोगियों को हार्दिक धन्यवाद और बधाई देता हूँ।

इस माला की पुस्तकों पर बच्चों, अध्यापकों और बच्चों के माता-पिता की प्रतिक्रिया का हम स्वागत करेंगे ताकि इन पुस्तकों को और भी उपयोगी बनाने में हमें सहयोग मिल सकें।

के. गोपालन
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली

गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं । जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ :

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा । क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा ? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा ? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आतमा अतृप्त है ?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है ।

मो. क. गांधी

विषय क्रम

1

चलिए सैर करने

अंधेरी रात थी। विशाल जंगल था। आकाश तारों से जगमगा रहा था। ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी। एक जीप में एक परिवार जंगल के पास के रास्ते से गुजर रहा था। अचानक खट-सी आवाज़ हुई और जीप रुक गई।

गीर के जंगल में शेर
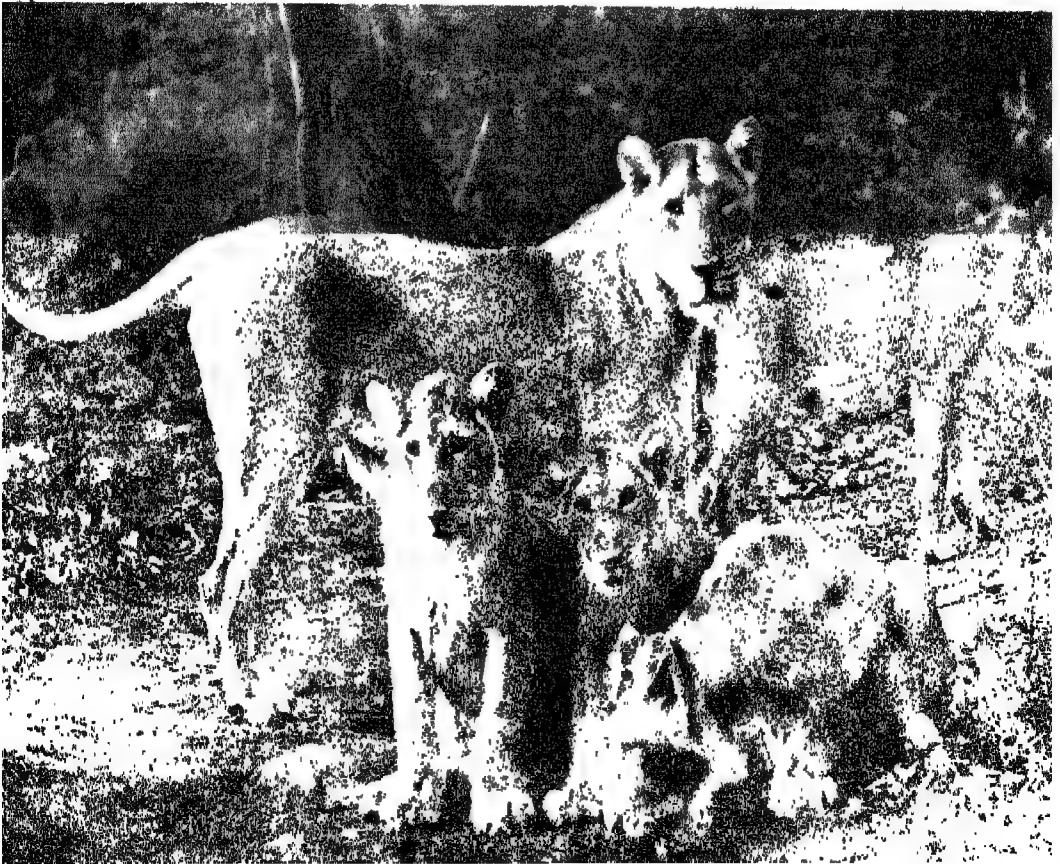
चालक बोला: "अब क्या होगा? बीच जंगल में यह क्या मुसीबत आ पड़ी?" नीचे उतर कर उसने जीप का बोनट खोला। इधर गाड़ी में दो बच्चे और उनके माता-पिता थे। गीर के मशहूर जंगल को छूते हुए वे एक गाँव से दूसरे गाँव जा रहे थे। यह कोई छोटा जंगल नहीं था। 1,500 वर्ग किलोमीटर में फैले हुए इस जंगल में कई प्रकार के प्राणी रहते हैं। यहाँ विश्वविख्यात सिंह, नीलगाय, हिरण, चीतल, सांबर, चौसिंगा और चिन्कारा हैं, जंगली सूअर तथा चीते और रीछ भी हैं।

जंगल के कारण जीव-जन्तुओं की छोटी-मोटी आवाज़ें हो रही थीं। जीप में सभी चुपचाप बैठे थे कि अचानक सिंह की दहाड़ सुनाई दी। सभी के दिल की धड़कन मानों पलभर के लिए रुक गई। चालक वहीं का रहने वाला था। वह डरा नहीं। जीप में बाबुभाई और रमाबहन तथा उनके बच्चे बाबुल और नीतु बैठे थे। उनका हौसला बढ़ाने के लिए वह बोला: "सिंह तो पशुओं का राजा होता है। उसे छेडो नहीं तो वह कुछ नहीं करता। आप घबराइए मत और यह लीजिए, गाड़ी भी ठीक हो गई।"

डर के मारे सिकुड़कर बैठे हुए बाबुभाई और रमाबहन कुछ स्वाभाविक हुए। बाबुल और नीतु तो अपने माता-पिता के सीने में सिर छुपाकर बैठ गए थे। जीप के चलते ही दोनों ने धीरे से सिर उठाया और एक-दूसरे को देखकर मुस्कराए। अब डर गायब हो गया था। दोनों ही सोच रहे थे कि स्कूल जाकर मित्रों से इस जंगल की और सिंह की बातें करेंगे।

बाबुभाई ने बच्चों को बताया कि सारी दुनिया में केवल दो ही देशों में सिंह हैं। एक अफ्रीका के जंगलों में और दूसरा भारत के इस गीर के जंगल में। भारतीय सिंह 2.75 मीटर लंबा होता है। अफ्रीका का सिंह उससे 30 से मी. अधिक लंबा होता है। इस समय गीर के जंगल में सिंह, सिंहनी और उनके बच्चों को मिलाकर कुल आबादी लगभग 200 की है। वहाँ शिकार करना बिलकुल मना है। सिंह तो क्या, किसी भी प्राणी को नहीं मार सकते हैं।

बाबुल तो ये सब सुनकर अपने दोस्तों को सुनाने के लिए अधीर हो गया। दोस्तों को तो बहुत-सी बातें बतानी थीं। बाबुल, नीतु और उनके माता-पिता बंबई में रहते थे दीपावली की छुट्टियों में पूरा परिवार जीप में बैठकर गुजरात की सैर करने चला था। बंबई महाराष्ट्र की राजधानी है। उससे लगा हुआ उत्तर में गुजरात राज्य है। सन् 1960 की 1 मई के पहले तो गुजरात बंबई राज्य का ही हिस्सा था।

बाद में वह अलग राज्य बना। गुजरात पश्चिम भारत में है। उसकी दाँईं ओर मध्यप्रदेश है और बाँईं ओर अरब सागर है। दक्षिण में महाराष्ट्र है और उत्तर की सीमा पर एक तरफ राजस्थान है और उसी से जुड़ा हुआ पाकिस्तान है।

गुजरात का समुद्र किनारा बहुत ही बड़ा, लगभग 1600 किलोमीटर लंबा है। उस पर कुल मिलाकर छोटे-बड़े 40 बंदरगाह हैं। प्राचीन काल से यहाँ विदेशों से जहाज आया करते हैं और यहाँ से विदेशों में जाते रहते हैं। विदेशियों के आने से हमें काफी लाभ हुए हैं। व्यापार से होने वाले लाभ तो हैं ही, लेकिन एक-दूसरे के बारे में जानने का भी यह अच्छा अवसर होता है। दोनो देशों के विकास के लिए यह आवश्यक है। परंतु यदि हम सतर्क न हों तो विदेशियों के आगमन से नुकसान भी हो सकता है। भारत में हालैंड से डच, फ्रांस से फ्रांसिसी, पुर्तगाल से पुर्तगाली और इंग्लैंड से अंग्रेज आए। सभी ने व्यापार करना चाहा और फिर हम पर ही सवार हो गये। यह तो ऊँट और अरब की कहानी जैसा हुआ। ऊँट ने अरब से केवल अपना सिर छुपाने की जगह माँगी थी, फिर धीरे-धीरे पैर घुसा दिए, फिर शरीर और फिर वह पूरा का पूरा अरब के तंबू में घुस गया। अरब बेचारा बाहर। इन विदेशियों ने भी हमारे साथ कुछ ऐसा ही किया। रोचक बात तो यह है कि दक्षिण गुजरात का सूरत शहर सभी विदेशियों को बड़ा पसंद आ गया। मुगलों की नजर उस पर इसलिए थी कि वे सूरत बंदरगाह से हज करने मक्का जाया करते थे। डच, फ्रांसिसी और पुर्तगालियों ने भी यहाँ अपनी कोठियाँ बना लीं। सन् 1612 में अंग्रेजों ने सूरत में व्यापार करने की सुविधाएँ माँगीं और मुगल बादशाह ने मंजूरी दे दी। परिणाम यह हुआ कि सन् 1842 में जब अंतिम नवाब की मृत्यु हुई तब सूरत पूरी तरह से अंग्रेजों के हाथ में आ गया।

इस प्रकार भारत को गुलामी की ओर ले जाने का रास्ता गुजरात में खुल गया। यह सत्रहवी शताब्दी की बात है। इसी गुजरात के पोरबंदर नामक शहर में उन्नीसवीं सदी में एक व्यक्ति का जन्म हुआ, जिसने आज़ादी के आंदोलन का नेतृत्व किया। यह व्यक्ति थे मोहनदास करमचंद गांधी, जिनको हम महात्मा गांधी के नाम से जानते हैं। काफी संघर्ष के बाद आखिर सन् 1947 में भारत आजाद हो ही गया। इस प्रकार देश की पराधीनता के इतिहास में जैसे गुजरात का नाम आता है, वैसे स्वाधीनता संग्राम के बयान में भी गुजरात आगे रहा है। जिस सूरत पर अंग्रेजों ने कब्ज़ा कर लिया था उसी के आसपास का प्रदेश गांधी जी के सत्याग्रहों से विश्वविख्यात हो गया।

प्राचीन काल से आज तक गुजरात ने कई रंग देखे हैं। यहाँ कला और संस्कृति पनपे हैं। विज्ञान और यांत्रिकी का भी विकास हुआ है। समृद्ध लोकसाहित्य एवं लोककलाएँ हैं। आधुनिकतम विश्वविद्यालय हैं। कृषि उद्योग में प्रगति की हैं। उपग्रह संचार केन्द्र भी यहीं पर हैं। इस प्रकार, प्राचीन और अर्वाचीन संस्कृति का सुंदर मेल गुजरात में पाया जाता है। इसीलिए गुजरात की यात्रा बड़ी रोचक रहेगी।

तो फिर हम भी बाबुल-नीतु के साथ जीप में बैठकर पूरे गुजरात की सैर कर लेते हैं। लेकिन वे तो गीर के जंगल तक पहुँच गये हैं। आधे से भी ज्यादा गुजरात देख चुके हैं। हम भी वह सब देख लें जो उन्होंने देखा है और बाकी की यात्रा उनके साथ कर लें।

किसी नई जगह पर जाने से पहले उसके-बारे में थोड़ी बातें जान लेना जरूरी है। इससे वहाँ की विशेषताओं को पहचानने में सरलता हो जाती है।

गुजरात राज्य के मुख्य तीन हिस्से हैं: गुजरात, सौराष्ट्र और कच्छ। कहा जाता है कि पाँचवी शताब्दी में हूण लोगों के साथ आये हुए गुर्जर लोग इस प्रदेश में बसे थे इसलिए यह गुर्जर-राष्ट्र और फिर गुजरात कहलाया। सुराष्ट्र याने अच्छा राष्ट्र कहलाने पर गुजरात का दूसरा हिस्सा सौराष्ट्र कहलाया। सौराष्ट्र में एक ज़माने में काठी कोम का वर्चस्व था, तब उसे काठियाबाड़ कहते थे। यह नाम आज भी प्रचलित है। कच्छ का प्रदेश पाकिस्तान के सिंध से जुड़ा हुआ है लेकिन एक समय ऐसा था जब उसके चारों ओर पानी था, जिसके कारण वहाँ काफी नमी रहती थी। नमीवाले प्रदेश को कच्छ कहते हैं। इस प्रदेश का आकार ऐसा है कि वह पानी में तैरते हुए कछुए जैसा लगता है। संस्कृत में कछुए को कच्छप कहते हैं। हो सकता है कि उसी से यह प्रदेश कच्छ कहलाया।

हम बंबई से चल रहे हैं, इसलिए सबसे पहले आएगा गुजरात, फिर सौराष्ट्र और उसके बाद कच्छ। सारा गुजरात प्रशासन की सुविधा के लिए 19 ज़िलों में बंटा हुआ है। यहाँ लगभग 18,700 गाँव हैं और एक लाख से अधिक की आबादी वाले ग्यारह शहर हैं। बंबई की ओर से गुजरात में प्रवेश करते समय सबसे पहले वलसाड़, डांग और सूरत जिले आते हैं।

□□

2

वलसाड़

पूरे गुजरात में पक्की सड़कें जाल की तरह फैली हुई हैं। बसों का यातायात दिन-रात चलता रहता है। हम बंबई के अंतर्राज्यीय बस अड्डे से बस में बैठे हैं और तीन घंटे हुए नहीं कि हम गुजरात में आ गये। सड़क के दोनों ओर खेत तथा फलों के बगीचे लहलहाते दिखाई देते हैं। आम, चीकू, केले, संतरे, पपीते, अमरूद और भी कई प्रकार के फल यहाँ होते हैं। गन्ने के भी बड़े-बड़े खेत हैं। सारा वलसाड़ ज़िला बहुत ही हराभरा है। वलसाड़ के समुद्र किनारे पर तिथल और उभराट जैसे सुंदर नगर हैं। गरमी के दिनों में यहाँ दूर-दूर से लोग आते हैं। कभी-कभी तो सारी छुट्टियाँ यहाँ के विश्रामगृहों में बिता देते हैं। इसी जिले में सरोवर के किनारे उकाई नाम का नगर है। वहाँ देवी अम्बा के मंदिर के प्रागण में गरम पानी के झरने हैं। पानी में गंधक होने के कारण वह गरम होता है। उसमें औषधीय गुण भी होते हैं। त्वचा की कुछ बीमारियाँ इससे दूर हो जाती हैं। एक किवदंती के अनुसार भगवान रामचंद्र जी ने अपने तीर से यहाँ पानी निकाला था। यहाँ लोगों की भीड़ लगी रहती है।

पुर्तगालियों ने दमण नाम के एक शहर पर कब्जा किया था वह इसी जिले में हैं और इरान से भागे हुए लोग भी वलसाड़ जिले के संजाण बंदरगाह पर उतरे थे। इरान उन दिनों पर्स कहलाता था। सातवीं सदी में अरबों ने पर्स पर हमला किया था और वे विजयी भी हो गये थे। उन्हीं का हुक्म चलने लगा। जीत हो गई तो पर्स की प्रजा को इस्लाम धर्म स्वीकारने पर मजबूर करने लगे। उस समय इरान में पैगम्बर जरथुष्ट्र के दिये हुए धर्म का पालन हो रहा था। लोग पवित्र अग्नि की पूजा करते थे।

जब उन पर धर्म बदलने के लिए ज़ोर दिया गया तो बहुत से लोग खोरासान के पहाड़ों में छुप गये। इस तरह छुपकर रहना भी जब मुश्किल हो गया तो वे पवित्र अग्नि को साथ लेकर सात जहाजों का एक काफला बनाकर अपने अरब सागर के रास्ते से सौराष्ट्र के दीव बंदरगाह पर आये। कुछ वर्ष वहाँ बिताने के बाद उन्होंने दीव छोड़ दिया और वलसाड़ जिले के संजाण बंदरगाह पर कदम रखा। यह आठवीं शताब्दी की बात है। इस समय वहाँ जादव राणा नामके हिंदू राजा का शासन था।

पर्स के ये पारसी लोग राजा के पास गये और कहा: ''हमें अपने राज्य में आसरा दीजिए।'' इतनी बड़ी संख्या में आये हुए निराश्रितों के प्रति राजा को सहानुभूति हुई। लेकिन उनके राज्य में इतने सारे विदेशियों को रखने की जगह नहीं थी। अपनी प्रजा के साथ इनको रखने का एक ही तरीका था। राजा ने एक कटोरा दूध मंगवाया। उस में चीनी मिलाई। चीनी घुल गई। दूध की एक बूंद भी बाहर नहीं गिरी।

राजा यही समझाना चाहते थे कि दूध में जैसे चीनी घुल जाती है उसी तरह पर्स से आए हुए लोगों को वहाँ की प्रजा के साथ घुल मिल जाना होगा। इस संबंध में दो शर्तें भी रखी गईं। पहली शर्त यह थी कि पर्स की महिलाएँ गुजराती महिलाओं की तरह पूरा घाघरा पहनकर, उन्हीं की तरह साड़ी बाँधेंगी। और दूसरी शर्त यह थी कि उनको अपनी भाषा छोड़कर गुजराती भाषा अपनानी होगी। दोनों शर्तें सुनकर पारसी तो खुश हो गये। वे अपने धर्म की रक्षा करने के लिए अपने देश से भाग निकले थे। जादव राणा ने हिंदू धर्म अपनाने की शर्त नहीं रखी थी। अन्य दो शर्तें पारसियों को मंजूर थी। उन्होंने संजाण के पास उदवाड़ा गाँव में अपने साथ लाये हुए पवित्र अग्नि की स्थापना की। पारसियों का धर्मस्थान ''अगियारी'' कहलाता है। आज भी उदवाड़ा की अगियारी पारसियों का सब से बड़ा तीर्थस्थान माना जाता है। तब से पारसी गुजरात के गुजराती बन गये हैं, स्वदेश-प्रेमी, भारतवासी बन गये हैं।

अंग्रेजों को देश से हटाने के लिए जब स्वतंत्रता-आंदोलन छिड़ गया तब दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, सर दिनशा वाच्छा और भीकाजी कामा ने बहुत बड़ा योगदान दिया था। दादाभाई नौरोजी इन्डियन नेशनल कांग्रेस के स्थापकों में से एक थे। सन् 1906 के अधिवेशन में उनको अध्यक्ष चुना गया था। फिरोजशाह मेहता स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय हिस्सा ले रहे थे। उन्होंने बंबई में 'बोंबे क्रोनिकल' नाम का अखबार शुरू किया। दिनशा वाच्छा अठारह वर्षों तक इंडियन नेशनल कांग्रेस के सचिव रहे और सन् 1901 के अधिवेशन में अध्यक्ष भी चुने गये। भीकाजी कामा पहली पारसी महिला थीं जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में प्राणपण से भाग

लिया था। अंग्रेजों के खिलाफ वे इतनी उग्रता से लड़ रही थीं कि उनको भारत छोड़कर विदेश भाग जाना पड़ा। 18 अगस्त 1907 में उन्होंने लगभग 1000 जर्मन लोगों के सामने उन्हीं की भाषा में भारत की स्वतंत्रता के लिए बड़ा जोशीला भाषण दिया। भाषण के बाद उन्होंने झंडा फहराया, जिसमें मामूली-सा परिवर्तन करके आज हमने उसे अपने राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपना लिया है। आज इसी पारसी कौम के जमशेदजी टाटा सफल उद्योगपति, होमी भाभा महान वैज्ञानिक और जुबिन मेहता विख्यात संगीतकार के रूप में सारे संसार में प्रसिद्ध हैं। पारसी कवि अरदेशर खबरदार का काव्य

"गुणवंती गुजरात। अमारी गुणवंती गुजरात।
नमिये, नमिये मात। अमारी गुणवंती गुजरात।"

कवि की मृत्यु के बत्तीस साल बाद भी ये पंक्तियाँ गुजरात में गूँज रही हैं। पारसी लोग गुजरातियों के साथ इतने घुलमिल गये लेकिन उनके पर्व-त्यौहार खास उन्हीं के हैं, जैसे कि नये साल का दिन पपेती कहलाता है। इस दिन वे अगियारी में जाकर अग्नि में चंदन की लकड़ियाँ समर्पित करते हैं। धानसाक इत्यादि विशिष्ट भोजन बनाते हैं। मित्रों और रिश्तेदारों का अभिवादन करते हैं।

□□

3

सूरत

वलसाड़ के बाद आ गया सूरत ज़िला। सूरत का नाम लेते ही मुँह में पानी आ जाता है। गुजराती में एक कहावत है कि "सूरतनु जमण अने काशीनु मरण" याने बढ़िया से बढ़िया भोजन खाना है तो सूरत जाइए और सीधे स्वर्ग पहुँचाने वाली मृत्यु चाहिए तो काशी जाइए। सूरत की शान का तो जवाब नहीं। जब खाने-पीने की बात चली है तो पहले उसे ही देख लें।

जैसे हमारी बस सूरत के बस-स्टैंड पर रुकी तो वहाँ घारी और नानखताई बेचने वाले दौड़ आये। घारी सूरत की बड़ी मशहूर मिठाई है। ऊपर घी की मोटी परत होती है और अंदर खोया व मेवा भरा रहता है। नानखताई बिस्कुट भी यहाँ की विशेषता है। दिवाली के दिनों में और एक चीज़ मिलती है, जिसे "पोंक" कहते हैं। खेतों में ज्वार के दाने लग गये हैं पर वह अभी पकी नहीं है। उनको भूना जाता है। ज्वार के दाने जो पोंक कहलाते हैं, उनके साथ लहसुन की चटनी, खूब महीन भुजिया और मट्ठा..... अहाहा..... मज़ा आ गया। इन दिनों हरी सब्जियाँ भी बहुत अच्छी मिलती हैं। गुजराती लोग कई तरह की सब्जियों को एक मिट्टी के घड़े में रखकर, घड़े का मुँह घास से बंद करके उसे ज़मीन में गड्ढा खोदकर रख देते हैं। फिर उसके चारों ओर लकड़ी से आग जलाते हैं। इस प्रकार बनाई गई सब्जी को उंधियु कहते हैं। उंधियु पूरे गुजरात में बनाया जाता है, लेकिन उसके लिए विशेष प्रकार की सेम चाहिए जो सूरत के पास कतार गाँव में ही उगती है। रुपहले रंग की यह सेम रेशम जैसी चिकनी होती है उसके अंदर तीन दानें होते हैं। किसी भी सेम में आपको न दो

दाने मिलेंगे, न चार। है न कुदरत का कमाल। इस सेम की इतनी महिमा है कि भारत के किसी भी कोने में रहते हुए गुजराती व्यक्ति को यदि सर्दी के मौसम में दक्षिण गुजरात से गुज़रना हो तो वह इसे साथ ले ही जाएगा।

सूरत का और एक आकर्षण है मकरसंक्रांति का त्यौहार। 14 जनवरी को जब सूर्य उत्तरायण में जाता है तब सारे गुजरात में पतंगें उड़ाई जातीं हैं। इस त्यौहार को गुजरात में "उतराण" कहते हैं। छोटे-बड़े सब घर की छतों पर चढ़कर, खुले मैदानों में जाकर पतंगें उड़ाते हैं। इसकी तैयारी कई दिन पहले शुरू हो जाती है। शीशे का बारीक चूरा बनाकर "मांजा" तैयार किया जाता है, जिससे दूसरों की पतंग को काटा जा सके। अलग-अलग मोहल्लों के बीच में स्पर्धा होती है। सारा आकाश पतंगों से छा जाता है।

मूल सूरत के रहने वाले यदि नौकरी या किसी अन्य कारण से सूरत के बाहर हों तो उतराण के दिन सूरत पहुँच ही जाएँगे।

सूरत के लोग शौकीन है। अच्छा पहनना, अच्छा खाना, मौज करना। सूरत का इतिहास देखें तो मालूम होता है कि गोपी नामके ब्राह्मण ने यह शहर बसाया था। लगभग चौदहवीं शताब्दी से सूरत का विदेशों से व्यापार होता था।

सूरत समुद्र के किनारे नहीं है। तापी नदी के किनारे बसा हुआ यह शहर अरबी समुद्र से केवल 20 किलोमीटर दूर है और नदी के कारण समुद्र से जुड़ा हुआ है। इसी लिए तो यहाँ विदेशी आते रहे, आक्रमण भी करते रहे। पुर्तगालियों ने इस पर तीन बार हमला किया था और जला भी डाला था। ऐसे हमलों से अहमदाबाद के राजा को बहुत गुस्सा आया। सूरत शहर की रक्षा के लिए उन्होंने शहर के चारों ओर किला बनवाने का आदेश दिया और तुर्कस्तान के विशेषज्ञों को बुलाया। सन् 1546 में किले क़ा निर्माण पूरा हुआ। इसकी दीवारें 18 मीटर ऊँची थीं। किले के चारों और 18 मीटर चौड़ी खाई बनाई गई थी। अब तो खाई के कुछ हिस्से को मिट्टी से भरकर उस ज़मीन का उपयोग किया जा रहा है। किले की एक तरफ की दीवार भी तोड़ दी गई है जिससे फैले हुए शहर में यातायात की सुविधा रहे। चौदहवीं शताब्दी में मुहम्मद तुगलक ने भी भील जाति के आदिवासियों के हमले से शहर की रक्षा करने के लिए किला बनवाया था। किला होते हुए भी सूरत पर हमले होते रहे, दुकानें और लोग लूटते रहे। शिवाजी ने भी सूरत पर दो बार हमला किया था।

इस किले के अतिरिक्त डच काल का कब्रिस्तान, कैथोलिक गिरजाघर और

संग्रहालय देखना नहीं भूलेंगे। यह संग्रहालय सरदार पटेल संग्रहालय कहलाता है। इसमें पत्थर और लकड़ी से बनी सुंदर मूर्तियाँ हैं। सूरत में दुनियाभर में मशहूर जरीकाम के नमूने हैं, तरह-तरह के वस्त्र और गहने हैं। चाँदी और सोने के तार से किया जाने वाला जरी का काम सूरत की बहुत ही प्राचीन कला है। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में मैगस्थेनस भारत आये थे तब उन्होंने भारत के बारे में जो कुछ लिखा था उसमें "सोने के कपड़े" का उल्लेख है। मुगलशासन के समय में इसका बहुत विकास हुआ था। इटली, जर्मनी, तुर्कस्तान, इजिप्ट, फ्रांस और इंग्लैंड में भी इसकी अच्छी माँग थी। सूरत में बने हुए सोने-चाँदी के धागे आज भी मद्रास, मैसूर, बनारस इत्यादि शहरों में भेजे जाते हैं और वहाँ पर जो साड़ियाँ और किनखाब बनते हैं उनमें इन धागों का प्रयोग होता है। इस संग्रहालय में आज 10,000 से भी अधिक वस्तुएँ संग्रहित हैं।

सूरत कपड़ा उद्योग के लिए भी मशहूर हैं। हाथकरघा भी है और बेशुमार मिलें भी। आजकल वहाँ हीरा-उद्योग का बोलबाला है। हीरे को काटने और पालिश करने का काम यहाँ होता है। एक जमाने में सूरत की गलियों में हीरे और जवाहरात की कई दुकानें थीं। मोती की लड़ियाँ आजकल दुकानों में जैसे फुँदने लटकते हैं; वैसे झूला करती थीं। पर फिर मुसलमान और मराठा राजाओं ने इस शहर पर कई बार हमले किए और वह उजड़ता गया, फिर बसता गया। आज यहाँ एक बार फिर हीरा उद्योग पनप रहा है।

सूरत शिक्षा और संस्कृति का भी केन्द्र है। गुजरात के महान कवि, लेखक एवं समाज सुधारक नर्मद, जिन्होंने "जय जय गरवी गुजरात" काव्य लिखा, उनकी यह जन्मभूमि है। दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय भी सूरत में ही है।

सूरत के आसपास कुछ बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान हैं। उन्हें देखकर फिर डांग के जंगल की ओर जाएँगे।

सूरत से 34 किलोमीटर दूर बारडोली नामका एक छोटा-सा नगर है। सन् 1921-22 में गांधीजी ने यहीं से बारडोली सत्याग्रह का प्रारंभ किया था। यह 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' था। अंग्रेज सरकार की कोई बात नहीं सुननी थी। इसके बाद सन् 1928 में सरदार वल्लभभाई पटेल के नेतृत्व में अंग्रेज सरकार को कर नहीं देने का आंदोलन शुरू हुआ। स्वतंत्रता आंदोलन में बारडोली का स्थान महत्त्वपूर्ण है। यहाँ पर एक स्वराज आश्रम है। गांधीजी के साथियों ने इस आश्रम की स्थापना

की थी। इसमें एक "खादी सरंजाम कार्यालय" था। खादी बनाने के लिए आवश्यक सब तरह की सामग्री, जैसे कि चरखा, तकली इत्यादि यहाँ बनाया जाता था। भारत में यह पहला इस प्रकार का कार्यालय था। बारडोली में सरदार पटेल के संपूर्ण जीवन से संबंधित सरदार स्मृति नामक एक संग्रहालय भी है। संग्रहालय के पीछे चीकू का बगीचा है। चीकू के पेड़ों के नीचे एक चबूतरा बना है और उसके ऊपर सरदार पटेल की मूर्ति बैठाई गई हैं। ऐसी हूबहू मूर्ति है कि पलभर के लिए आप यही समझ बैठेंगें की स्वयं सरदार यहाँ बैठे हैं।

सत्याग्रह के लिए यात्रा

सूरत के एक ओर बारडोली है तो दूसरी ओर दांडी। यह वही दांडी है जहाँ **गांधीजी** ने नमक का कानून तोड़ा था। यह सन् 1930 की बात है। अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से गांधीजी के नेतृत्व में सत्याग्रही चल पड़े थे। अंग्रेज सरकार ने नमक के बारे में बड़ा विचित्र कानून बनाया था। नमक हमारे ही देश के समुद्र किनारे पर तैयार होता था। पर विदेशी सरकार ने उस नमक के प्रयोग पर प्रतिबंध

लगा दिया था। यह तो बहुत ही अन्याय भरी बात थी। गांधी जी ने कहा: "हम दांडी के समुद्र किनारे जाएँगे और वहाँ बन रहे नमक को अपनी झोली में भर लेंगे"। सत्याग्रहियों ने यही किया और उन पर अंग्रेजों की लाठियाँ बरस पड़ीं। गांधीजी के साथ और भी कई सत्याग्रहियों को कैद किया गया। दांडीकूच की इस घटना की खबर सारे विश्व में फैल गई थी। स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में यह एक महत्त्वपूर्ण सीमाचिह्न है।

□□

4

डांग

हम समुद्र तट पर ही चलते रहें तो इस पथ से किसी दिन पाकिस्तान पहुँच जाएँगे और हमारा गुजरात-दर्शन अधूरा रह जाएगा। इसलिए अब समुद्र किनारे को छोड़कर हम जंगलों की तरफ चलते हैं। यह अनोखी ही दुनिया है। डांग के जंगलों में शेर, हिरन, चीतल, चीता, रीछ, खरगोश, मोर, तीतर इत्यादि पाये जाते हैं। डांग जिले के बद्रीपदा के लगभग 97 वर्ग किलोमीटर के जंगल को सरकार ने "अभयारण्य" घोषित किया है। "अरण्य" याने जंगल और "अभय" याने जहाँ के प्राणियों को शिकारियों से किसी प्रकार का भय न हो। जंगल के प्राणियों का यदि शिकार होता रहा तो एक दिन ऐसा भी आयेगा जब पृथ्वी पर कहीं जानवर ही नहीं होगा। ऐसी स्थिति पर्यावरण के लिये अच्छी नहीं मानी जाती।

इस अभयारण्य के बीच में से पूर्णा नदी बहती है और उसके उत्तर में गीरा तथा दक्षिण में खपरी नदियाँ हैं। सहयाद्रि पर्वतमाला का कुछ हिस्सा डांग जिले में हैं। समद्रतल से लगभग 1000 मीटर की ऊँचाई पर समतल जमीन है, जहाँ सापुतारा नामका बहुत ही सुंदर स्थान है। सापुतारा याने साँप का निवास। यहाँ सर्पगंगा नदी के किनारे सांप की मूर्तियाँ बनाई गईं हैं और डांग के आदिवासी उनकी पूजा करते हैं। इन आदिवासियों का डांगीनृत्य बड़ा मशहूर है।

डांग जिले का मुख्य शहर है आह्वा। यहाँ होली के त्यौहार के ठीक एक सप्ताह पहले डांग दरबार का मेला लगता है। आदिवासी मुखिया उत्सव के अनुरूप
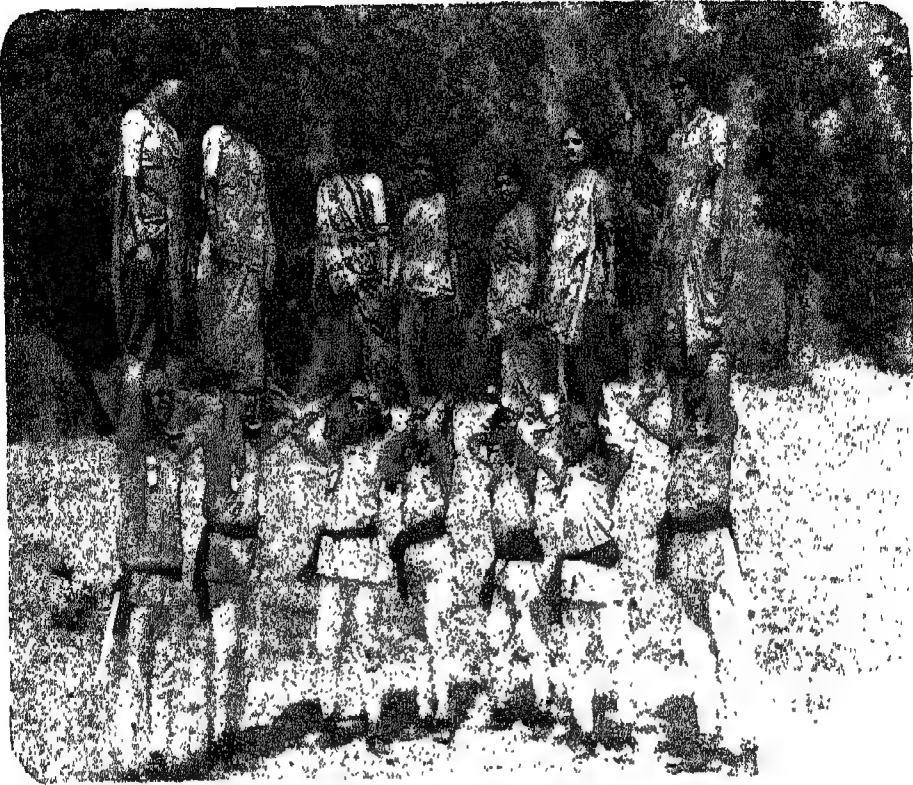
डांगी नृत्य

रंगीन कपड़े पहनकर खूब आग जलाते हैं। उसी के साथ आदिवासियों के कहालिया और तडपुर नामके खास वाद्यों के साथ नृत्य होते हैं।

पूरे गुजरात में मई-जून के महीनों को छोड़कर साल भर मेले लगते रहते हैं और त्यौहार मनाये जाते हैं। इनकी गिनती करने बैठें तो लगभग पन्द्रह सौ मेले और दो हज़ार त्यौहार हो जाएँगे। हमारी यात्रा के दौरान भी हम कुछ मेले और कुछ त्यौहारों में हिस्सा ले पाएँगे।

□□

5

भरूच और खेड़ा

अब हम आगे चलें। यह है भरूच शहर। नर्मदा नदी के किनारे बसा हुआ भरूच अरबी सागर से 48 किलोमीटर दूर है। जब ज्वार आता है तब बड़े-बड़े जहाज बहते हुए भरूच तक पहुँच जाते हैं। 48 किलोमीटर का समुद्री रास्ता काटने में तीन दिन लग जाते हैं। इस शहर का प्राचीन नाम है भृगुकच्छ। कहते हैं कि लगभग पाँच हजार साल पहले भृगु ऋषिने यहाँ अपना आश्रम बनाया था, इसलिए यह स्थान भृगुकच्छ कहलाया। लगभग ढाई हजार साल पहले ग्रीक प्रजा का भारत के साथ इसी बंदरगाह से व्यापार होता था। बाद में भी चीन, श्रीलंका, मध्यपूर्व के कुछ देश तथा पूर्व में जावा, सुमात्रा के साथ व्यापार होता रहा। अब नर्मदा नदी में बहाव के कारण मिट्टी जमा हो जाने से तथा सड़कों पर यातायात बढ़ जाने से बंदरगाह का प्रयोग नहीं के बराबर होता है। भरूच के पास अंकलेश्वर में तेल निकलता है, जिसके कारण भरूच फिर एक बार महत्त्वपूर्ण शहर बन गया है।

भरूच जिले में नर्मदा नदी के किनारे शुक्लतीर्थ नाम का एक तीर्थस्थान है। उसी के पास एक बहुत ही बड़ा बड़ का पेड़ है, जिसे "कबीरबड़" कहते हैं। एक किंवदंती के अनुसार संत कवि कबीर ने अपने दांत साफ करके दातुन की एक चीर इधर फेंकी थी। उसी से यह इतना विशाल पेड़ बन गया है। भरूच से आगे खेड़ा जिले का डाकोर नगर भी बड़ा तीर्थस्थान माना जाता है। एक भक्त ने द्वारका से श्रीकृष्ण की मूर्ति यहाँ लाकर मंदिर बनाया था। प्रत्येक शरद पूर्णिमा के दिन डाकोर

कबीर बड़

में बड़ा मेला लगता है। हज़ारों यात्री इस मेले में हिस्सा लेते हैं। मंदिर के प्रांगण में भजनों की धूम मच जाती है।

खेड़ा जिले में खेती, पशुधन और उससे संबंधित उद्योगों का काफी विकास हुआ है। आणंद शहर इसी जिले में हैं। शहर तो बहुत छोटा है लेकिन वहाँ अमूल डेरी है, जिसके कारण वह विख्यात हो गया है। इस डेरी में दूध का पाउडर, मक्खन, घी, पनीर इत्यादि बनते हैं। हमारे देश में बच्चों को दूध पिलाने के लिए जो पाउडर बनता हे उसका 63 प्रतिशत उत्पादन गुजरात में होता है और सारे भारत में जितना दूध का पाउडर बनता है उसमें 47 प्रतिशत योगदान गुजरात का है।

इस जिले का खंभात शहर प्राचीन बंदरगाह है। एक ज़माने में वह बहुत ही समृद्ध शहर था। बंदरगाह होने के कारण से अन्य देशों के साथ व्यापार होता था। खंभात में अकीक के पत्थर की खानें हैं। यह पत्थर हीरे जितना तो मूल्यवान नहीं है, लेकिन अकीक अल्प मूल्यवान पत्थर माना जाता है। इस्वी सन् पूर्व चौथी शताब्दी में रोमन लोग भारत से यह पत्थर मँगवाते थे और उसकी अंगूठियाँ बनवाते थे।

अकीक के रंग बड़े सुन्दर होते हैं। गहरे लाल रंग का अकीक सबसे कीमती

माना जाता है। खान में से निकालने के बाद अकीक को मार्च-अप्रैल के सूरज की धूप में लगभग दो महीनों तक सुखाया जाता है। पत्थर के भीतर पानी रह जाय तो उस पर काम करते समय वह टूट जाता है। उसे आग पर गरम करने से भी उसके टूटने का डर रहता है। इसलिए सबसे अच्छा तरीका है धूप में सुखाने का। सुखाने के बाद उसे गरम किया जाता है। बाद में उसे पालिश करके उससे माला, अंगूठी इत्यादि वस्तुएँ बनाई जाती हैं। इन चीज़ों की कीमत चार-पाँच रुपयों से लेकर हज़ारों रुपयों तक की होती है।

खंभात की और एक विशेषता है "सूतर फेणी"। मैदे से बनी हुई यह मीठी सेवईयाँ मुँह में डालते ही पिघल जाती हैं। वे इतनी महीन होती हैं कि बच्चे उसे "बुढ़िया के बाल" कहते हैं।

इस प्रकार खेड़ा जिले में शरीर को तंदुरस्त रखने के लिए दूध है, स्वाद के लिए सूतरफेणी है, शरीर की सजावट के लिए अकीक के आभूषण हैं और जीवन को सब प्रकार से समृद्ध बनाने के लिए शिक्षा-संस्थाएँ भी हैं। इनमें सबसे अधिक विख्यात है वल्लभविद्यानगर विश्वविद्यालय। अधिकतर ऐसा होता है कि शहर और उसकी आबादी की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए विद्यालय एवं विश्वविद्यालय बनते हैं। इधर बात उलटी है। विश्वविद्यालय की योजना पहले बनी, ज़मीन बाद में मिली। वहाँ पर कालेज बने, उससे जुड़ी हुई अन्य संस्थाएँ बनीं। इस प्रकार विद्या को केन्द्र में रखकर पूरा नगर रचा गया। इस विद्यालय का नाम सरदार वल्लभभाई पटेल के नाम से जुड़ा है। वे हमेशा कहते थे कि शिक्षा ऐसी हो जिससे विद्यार्थी चरित्रवान नागरिक बने। इस विद्यालय का मूल मंत्र है: "शीलवृत्तफलंश्रुतम्", याने ज्ञान का फल है शीलयुक्त व्यवहार। शिक्षा तब ही सार्थक है जब वह मनुष्य के चारित्र्य का गठन कर सके। सारा गुजरात ऐसी शिक्षा संस्थाओं से समृद्ध है।

□□

6

वडोदरा

शिक्षा और संस्कृति को महत्व देने वाला और एक स्थान है। वडोदरा। विश्वामित्री नदी के किनारे बसा हुआ वडोदरा गायकवाड़ राजाओं के शासनकाल में एक आदर्श नगर बन पाया था। कला और संस्कृति के क्षेत्र में गायकवाड़ के ज़माने में जो प्रगति हुई थी वह आज भी कायम है। महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ ने जिस विश्वविद्यालय की स्थापना की, उसका स्थान आज देश के अग्रगण्य विश्वविद्यालयों में हैं।

वडोदरा में घूमते समय अधिकतर स्थान ऐसे मिलेंगे जो गायकवाड़ राजाओं से संबंधित हैं। नज़रबाग महल पुरानी शैली में बना हुआ महल है। गायकवाड़ राजा विशेष समारोहों के लिए इस महल का उपयोग करते थे। आजकल यहाँ गायकवाड़ परिवार के कुल की वस्तुएँ रखी गईं हैं। इन्हीं राजाओं का इटालियन शैली में बना और एक महल है—मकरपुरा महल। अब तो उसे भारतीय वायुसेना का ट्रेनिंग स्कूल बना दिया गया है। लालबाग महल का प्रताप विलास महल पाश्चात्य कला की "रेनेसां" शैली की इमारत है। इस समय उसमें रेलवे स्टाफ कालेज बना हुआ है। यहाँ एक खंड में छोटी रेलवे का मॉडल बनाकर रेलगाडियों की जटिल कारर्वाइयों का प्रदर्शन किया गया है।

शाही परिवार के रहने के लिये जो महल था उसका नाम है लक्ष्मी विलास महल। इसके निर्माण में भारतीय और मुस्लिम स्थापत्य कला का मिश्रण दिखाई देता

है। इस भव्य महल के दरबार खंड में पैर रखते ही आँखें चकाचौंध हो जाएँगी। खंड का फर्श इटालियन पच्चीकारी से बना है। दीवारों पर भी पच्चीकारी की सजावट है। महल में पुराने शस्त्रों तथा कांसा, संगमरमर और मिट्टी की मूर्तियों का असाधारण संग्रह है। टिकट खरीद कर हम ये सब देख सकते हैं। महाराजा फतेह सिंह संग्रहालय में कला का वैभव संग्रहित है। पाश्चात्य कला के रफाएल, तितियन और म्युरिलो जैसे महान चित्रकारों की मौलिक कृतियाँ, आधुनिक युग के पाश्चात्य एवं भारतीय चित्र, ग्रीक व रोमन कला के नमूने, चीनी व जापानी कलाकृतियाँ, भारतीय कला की भी उत्कृष्ट वस्तुओं का विशाल संग्रह यहाँ पाया जाता है।

वडोदरा का भद्र महल मुस्लिम राजाओं ने बनाया था लेकिन पिलाजीराव और दामाजीराव नामके पहले दो गायकवाड़ राजा इसी महल में रहे थे। इस महल में संगमरमर की बहुत-सी सुदंर नक्काशी हैं।

गायकवाड़ राजाओं ने अपने वडोदरा राज्य को हर तरह से समृद्ध करना चाहा था। उन दिनों की समृद्धि तो आज दिखाई नहीं देती, लेकिन उसके अवशेष इन महलों और संग्रहालयों में आज भी मौजूद हैं। गायकवाड़ शासकों के परिवारों के शव-कक्ष के ऊपर सुंदर इमारत बनाई गई है। इसका नाम है—कीर्ति-मंदिर। कीर्ति-मंदिर की दीवारों पर बंगाल के सुप्रसिद्ध चित्रकार नंदलाल बोस ने चित्र बनाये हैं। इस प्रकार, मृत्यु के बाद भी गायकवाड़ परिवार ने कला और संस्कृति का साथ निभाया है।

सन् 1894 में गायकवाड़ राजा ने वडोदरा संग्रहालय की स्थापना की थी। आज उसमें कला और पुरातत्व, प्राकृतिक इतिहास, विज्ञान और मानवजाति विज्ञान का प्रभावशाली संग्रह है। इसके साथ गायकवाड राजा द्वारा ही स्थापित चित्रदीर्घा है। इसमें विदेशी कलाकारों की कृतियों के साथ मुगल लघुचित्र तथा तालपत्र पर अंकित बौद्ध और जैन पांडुलिपियाँ हैं।

वडोदरा में आकर यदि हम सरदार वल्लभभाई पटेल तारामंडल (प्लेनेटोरियम) न देखें तो यात्रा अधूरी रह जाएगी। सयाजीबाग में 200 लोग बैठ सके इतना बड़ा तारामंडल बनाया गया है। तारे और नक्षत्रों का कार्यक्रम तैयार करने के लिए पूर्व जर्मनी के एक विशेषज्ञ को बुलाया गया था। तारामंडल की कुर्सी पर बैठकर उसके गोलाकार गुम्बज में जब हमारे जाने पहचाने स्वाति, कृत्तिका इत्यादि नक्षत्र घूमने लगते हैं, बदलती हुई ऋतुओं के साथ आकाश में इन सब के स्थान बदल जाते हैं,

तब पलभर के लिए हम इस बात को भूल जाते हैं कि हम इस पृथ्वी पर घूमते-फिरते मनुष्य हैं। उस समय तो उन अनगिनत तारों के बीच में हम भी उस अलौकिक सौंदर्य का एक हिस्सा बन जाते हैं। पर कार्यक्रम समाप्त होते ही तारों भरा आकाश अदृश्य हो जाता है। बिजली के बल्ब जल उठते हैं और अन्य लोगों के साथ हम भी तारामंडल से बाहर निकलकर एक बार फिर भूमंडल पर पैर जमा लेते हैं। विज्ञान के क्षेत्र में भारत ने जो प्रगति की है उसका परिचय देनेवाले कई स्थान वडोदरा में हैं। एक तो यह तारामंडल।

दूसरा है दवाइयों और पैट्रोकेमिकल्स के बड़े-बड़े कारखाने। वडोदरा शहर को छोड़ते ही कुछ अजीब-सी गंध आने लगती है। वातानुकूलित ट्रेन में आप चैन की नींद ले रहे हों तब भी उस गंध से पता चल जाएगा कि ट्रेन वडोदरा से बाहर निकल रही है। बीमारियों को दूर करने वाली दवाइयाँ जहाँ बनती हैं, उन कारखानों की यह गंध है। उस समय तो हम नाक सिकोड लेते हैं लेकिन कोई बीमार हो जाए तो उसी दवाई के लिए दौड़ते हैं।

पैट्रोकेमिकल्स के कारखानों में भी कई प्रकार के रसायन बनते हैं, जिनका हमारे उद्योगों में उपयोग किया जाता है। ये कारखानें वडोदरा शहर से कुछ दूरी पर बनाये गये हैं।

कारखानों की गंध तो जब आप वडोदरा छोडेंगे तब मिलेगी। अभी तो जिससे तबियत खुश हो जाय, वह तो मुँह में पानी लाने वाली स्वादिष्ट चीज़ों की ही गंध हो सकती है। इसलिए अब हम चलते हैं वडोदरा स्टेशन के पास। यहाँ से हमें आगे जाने के लिए ट्रेनें भी मिलेंगीं, लेकिन स्टेशन के पास आये हैं तो ज़रा इस कक्कड़ बाज़ार में झांक लेते हैं। कहते हैं कि "घ्राणेन अर्धभोजनम्", याने खुशबू से ही आधा भोजन हो जाता है। तो अब मुँह में पानी लाने वाली कुछ गंधों का ही सेवन कर लेते हैं। इस बाज़ार में लो हरी सब्जियों के ढेर लगे हैं। इस में क़तार गाँव की सेम हैं, छोटे-छोटे गोल बैंगन हैं, हरी अरहर के दाने हैं, शकरकंद और जामुनी रंग के कंद हैं–संक्षेप में कहें तो "उंधियुं" के लिए जो सब्जियाँ चाहिए वे सारी यहाँ मौजूद हैं। मुँह में पानी आ गया क्या? इस समय हम "उंधियुं" पकाने की झंझट में नहीं पड़ सकते, न ही हमारे पास इतना समय है। आगे चलते हैं। कक्कड़ बाज़ार के सामने बड़ा चौक है जहाँ से शहर के सभी भागों में जाने के लिए बसें मिलती हैं। उसकी दूसरी ओर के बाजार में 'खमण ढोकला', 'लीलो चेवड़ो' और 'कोर्नफ्लेक्स चेवड़ो'

मिलते हैं। खमण ढोकला चने की दाल को पीसकर भाप से पकाकर बनाया जाता है। स्पंज की तरह नरम, पीले रंग का और स्वाद में नमकीन होता है। "लीलो चेवड़ो" याने हरा चिउड़ा। उस में आलू इत्यादि डला होता है। और कोर्नफ्लेक्स को तलकर उसमें तिल इत्यादि डालकर बनाया गया चिउड़ा है कोर्नफ्लेक्स चिउड़ा।

डभोई

कुछ चिउड़ा और कुछ खमण ढोकला लेकर बस में बैठ जाते हैं। यहाँ से हमें डभोई का किला देखने जाना है।

वडोदरा से 29 किलोमीटर दक्षिण में हैं डभोई। 13 वीं शताब्दी का यह किला सोलंकी युग में राजा सिद्धराज के समय में बनाया गया था। हिंदू स्थापत्य कला का यह उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। किले की चारों दिशा में चार दरवाज़े हैं। प्रत्येक दरवाज़े पर बेनमूत नक्काशी की गई है। चारों दरवाज़ों में सबसे उत्तम है हीरा भागोल के नाम से प्रचलित दरवाज़ा। कहा जाता है कि हीरा नामके एक अत्यंत कुशल शिल्पी ने इस दरवाज़े को बनाया था। उन दिनों यदि कोई शिल्पी किले के निर्माण में असाधारण कारीगरी दिखा देता था तो ऐसी कला का उपयोग वह और कहीं न कर सके इसलिए राजा उसे किले की दीवार में ही जिंदा चुनवा देते थे। हीरा भी इसी तरह डभोई के किले की दीवार में चिन दिया गया। ऐसी बात सुनकर रौंगटे खड़े हो जाते हैं। अनारकली की कहानी में भी ऐसी ही कुछ बात है ना? मुगल बादशाह अकबर ने अपने बेटे सलीम से अनारकली को अलग करने के लिए उसे दीवार में चिनवा दिया था। खैर..... डभोई के किले में मलिका माता का मंदिर है। उसका शिल्प भी अद्भुत है।

संखेड़ा

कला का और एक नमूना इसी प्रदेश में देखना है तो संखेड़ा चले जाते हैं। संखेड़ा डभोई के पास ही है। लोग कहते हैं कि लगभग 500 वर्ष पहले उत्तर गुजरात के चांपानेर नगर पर मुसलमानों ने हमला किया था। तब वहाँ से पंचोली जाति के कुछ हिंदू बढ़ई संखेड़ा गाँव चले आये थे। उन का पूरा परिवार लाख की कारीगरी में कुशल था। लाख पेड़ के रस से बनती है। उसे कई तरह से प्रयोग में लाया जाता है। लाख की चूड़ियाँ तो गुजरात और राजस्थान में काफी पहनी जाती हैं। हाँ, तो ये पंचोली बढ़ई लकड़ी से कुर्सी, मेज, पालने, खिलौने इत्यादि बनाते हैं और उस पर लाख के रंगों से अत्यंत कलात्मक चित्रकारी करते हैं। महाभारत में आपने पढ़ा ही

संखेड़ा का काम

होगा कि कौरवों ने पांडवों को खतम करने की कई तरकीबें की थीं। उनमें से एक थी उनको लाक्षागृह में जला डालने की। लाख का प्रयोग तो बहुत पुराना है। संखेड़ा के पास छोटा उदेपुर के जंगलों में "कुसुम" के पेड़ हैं। बढ़ई इस पेड़ की लकड़ी से कई प्रकार की वस्तुएँ तैयार करते हैं। उसे पानी के रंगों से रंगते हैं और ऊपर कुसुम की लाख से डिज़ाइनें बनाते हैं। वैसे लाख का काम भारत के अन्य स्थानों में भी होता है लेकिन इस कला के क्षेत्र में संखेड़ा पूरे भारत में मशहूर है।

□□

7

पंचमहाल

हम तो कुछ ज्यादा ही घूमने लगे हैं। गुजरात के इतने सारे जिलों के इतने सारे शहर और गाँव-सब कुछ देखने लगेंगे तो दिवाली की छुट्टियाँ तो क्या, गर्मी की छुट्टियाँ भी खतम हो जाएँगी और हम सौराष्ट्र तक भी नहीं पहुँच पाएँगे। इसलिए जरा जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाएँ तो ठीक रहेगा।

डभोई का किला देखते समय हमने मुगल बादशाहों को याद किया था। पंचमहाल जिले में उनको और एक बार याद करना होगा। यहाँ के दाहोद शहर में शाहजहाँ के पुत्र औरंगज़ेब का जन्म हुआ था। मुगलों से पहले गुजरात का यह प्रदेश सुलतान महमूद बेगड़ा के अधीन था। इस सुलतान ने सन् 1484 में पंचमहाल जिले के चांपानेर शहर को अपनी नई राजधानी बनाया था। उसने शहर के चारों ओर किला बंदी कर दी और शहर में एक जामामस्जिद भी बनवाई जिसकी स्थापत्य-कला देखते ही बनती है। चांपानेर में जैन स्थापत्य कला के साथ इस इस्लामी कला का मिश्रण होने से अत्यंत सुदंर शैली का सृजन हुआ है।

यह शहर पावागढ़ नामक पहाड़ी के पास है। राजा वनराज चावड़ा के सेनापति चांपा ने इसे लगभग आठवीं शताब्दी में बसाया था। एक किवदंती के अनुसार जयसिंह देव नाम का एक पताई रावल वंश का राजा नवरात्रि के त्यौहारों में नृत्य-गान करती हुई महिलाओं को देखने निकला। उनमें एक महिला उसे बहुत ही सुंदर लगी। उसके प्रति आकृष्ट होकर जयसिंह देव ने उसका आँचल पकड़ लिया। यह महिला कोई साधारण नारी नहीं थी, मनुष्य का रूप धारण किये स्वयं देवी

कालिका थीं। देवी क्रुद्ध हुई और उसने जयसिंह देव को श्राप दिया। इसी के बाद महमूद बेगड़ा के साथ उसकी लड़ाई हुई और वह हार गया।

पावागढ़ की लगभग ढाई हज़ार फीट ऊँची पहाड़ी पर सबसे ऊपर देवी महाकाली का बड़ा मंदिर है। कच्चे रास्ते या पत्थर से बनी सीढी के रास्ते से ऊपर जा सकते हैं।

उससे लगभग एक हज़ार फीट नीचे की ओर "माची हवेली" नामका समतल स्थान है। वहाँ भद्रकाली का मंदिर है। यात्रियों के रहने के लिए धर्मशालाएँ भी बनी हुई हैं।

माची हवेली से नीचे किला है। इस तरह पहाड़ी के तीन हिस्से हैं, नीचे किले के खंडहर, बीच में माची हवेली और किले की दीवारें और ऊपर फिर से किले की दीवारें और मंदिर। महाकाली के मंदिर के पीछे दिगंबर संप्रदाय के कई जैन मंदिर भी बने हुए हैं। उस तरफ "नवलख कोठार" के खंडहर भी हैं। पताई रावलों का यह अन्नभंडार था। भद्रकाली मंदिर के पास उनके महल के खंडहर मौजूद हैं।
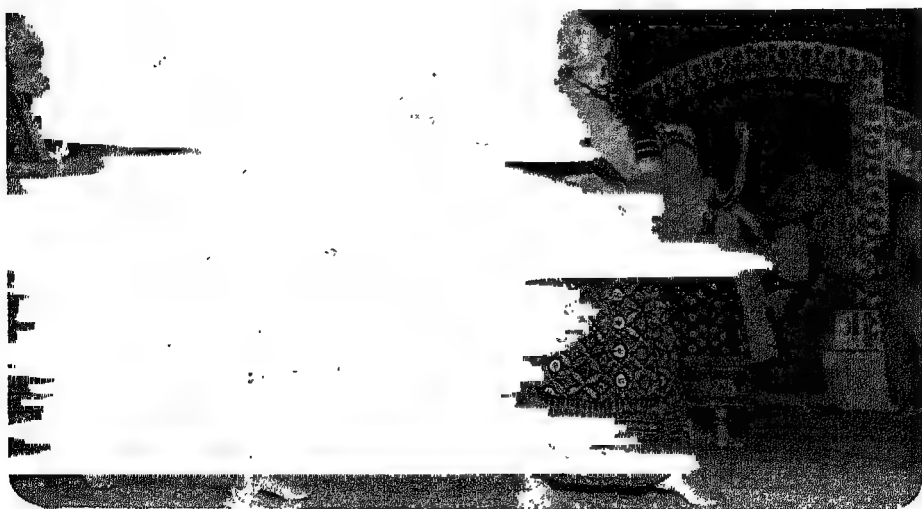
गुजरात का डांडिया रास

इस इलाके की शान देखनी हो तो नवरात्रि के दिनों में ही यहाँ आना चाहिए। वैसे तो यह त्यौहार पूरे गुजरात में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है लेकिन जहाँ कहीं महाकाली, अंबा, भवानी-जो एक ही देवी के नाम हैं—के मंदिर होते है वहाँ तो नवरात्रि के नौ दिन उत्सव का वातावरण बना रहता है। दशहरा के दिन वह समाप्त होता है। गुजरात के विख्यात लोकनृत्य गरबा और रास रात-रातभर चलते रहते हैं।

छेदवाले मिट्टी के घड़े के बीच में दीप जलाया जाता है। यह दीप देवी अंबा का प्रतीक है। उसको बीच में रखकर उसके चारों ओर महिलाएँ वर्गाकार में तालियाँ बजाती हुई नृत्य करती हैं। देवी की प्रशस्ति के गीत गाती हैं। पावागढ़ का विख्यात गरबा सुना हैं?

"मा पावा ते गढ़ थी ऊतर्या मा काली रे
वसाव्युं चांपानेर पावागढ़ वाली रे..."

इसका अर्थ है कि देवी महाकाली पावागढ़ से नीचे उतर आई और उस पावागढ़ वाली ने ही चांपानेर शहर बसाया।

"गरबा" महिलाएँ करती हैं। पुरुष भी इसी प्रकार तालियों के साथ वर्गाकार नृत्य करते हैं, जिसे "गरबी" कहते हैं। आजकल तो नवरात्रि के दिनों में गरबा, गरबी और रास करने वाले विभिन्न समूहों की प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। लोगों पर ऐसी मस्ती छा जाती है कि देखने वालों पर उसका असर पड़े बिना नहीं रहता। छोटे-बड़े, सब इस में शामिल हो जाते हैं।

पावागढ़ से आगे चलने से पहले यहाँ की और एक खास बात भी जान लें। मुगल बादशाह अकबर के दरबार में नौ-रत्न थे, जिनमें एक था महान संगीतकार तानसेन। उससे पहले एक और महान संगीतकार हो चुका था बैजू। उस युग के संगीतकारों को याद करते समय इन दोनों के नाम साथ ही लिये जाते हैं। बैजू का जन्म इस पावागढ़ नगरी में ही हुआ था।

अब पंचमहाल के कलोल शहर में तेल और प्राकृतिक गैस तथा रासायनिक खाद के कारखानों पर एक नज़र डालते हुए आगे निकल चलते हैं। बीच में अहमदाबाद जिला आता है। यहाँ तो देखने के स्थान इतने अधिक हैं कि उसके बाद

शायद उत्तर गुजरात में जाना हम टाल ही दें। इसलिए उचित यही होगा कि हम महेसाणा, साबरकांठा और बनासकांठा का विहंगावलोकन करने के बाद ही अहमदाबाद में अपना तंबू डालें।

□□

8

उत्तर गुजरात

उत्तर गुजरात को सोलंकी वंश के राजाओं ने स्थापत्य कला से बहुत समृद्ध किया था। इसके अवशेष आज भी पाये जाते हैं। उदाहरण के रूप में देखें तो महेसाणा जिले में दसवीं शताब्दी में राजा मूलराज सोलंकी ने "रूद्रमाल" नामका मंदिर बनवाया था। मूलराज सोलंकी को उसके मामा ने गोद लिया था। सत्ता की लालसा से उसने अपने मामा की हत्या की। बाद में अपने इस भयानक कृत्य का उसे बहुत ही पछतावा हुआ। प्रायश्चित्त के रूप में उसने रूद्र महालय बनवाने का निश्चय किया। एक गुजराती काव्य में इस "रूद्रमाल" का वर्णन पाया जाता है। उसके चार द्वार, तीन मंडप और 1600 खंभे थे। हीरे व मूल्यवान मणियों से जड़ित अठारह हज़ार मूर्तियाँ थीं और सोने के कलश पर सत्रह हजार ध्वजाएँ लहराती थीं। यह "रूद्रमाल" इतना ऊँचा था कि सिधपुर से बीस किलोमीटर की दूरी पर आये हुए पाटण शहर की पनिहारिनें रूद्रमाल से दिखाई देती थीं। विदेशी हमलावरों के आक्रमण से इसका नाश हुआ था। आज तो वह खंडहर की हालत में हैं। कई खंभे टूट गये हैं। दीवारें ढह गई हैं। लेकिन कुछ खंभों की नक्काशी अब भी दिखाई देती है, जिससे प्राचीन भव्यता का अनुमान हो सकता है।

पाटण का नाम लेते ही वहाँ का "पटोला" याद आ जाता है। "पटोला" एक खास प्रकार की रेशमी साड़ी होती है। उसमें डिज़ाइन के अनुसार पहले धागों को रंगा जाता है और उसके बाद बुनाई होती है। यह काम बहुत ही मुश्किल है। कभी-कभी एक साड़ी बनाने में एक साल भी लग जाता है। एक-एक पटोले का मूल्य

दो हज़ार से लेकर दस हज़ार रुपये तक होता है। पाटण की यह परंपरागत कला आज भी जीवित है।

इसके अतिरिक्त यहाँ का स्थापत्य भी बेजोड़ है। आठवीं शताब्दी के राजा वनराज चावड़ा ने अणहिलवाड़ पाटण शहर बसाया था। सोलंकी वंश के राजा सिद्धराज जयसिंह ने सहस्रलिंग तालाब बनवाया था। इस तालाब के आसपास शिव के एक हज़ार मंदिर हैं। आरती के समय जब इन सभी मंदिरों से घंटें बजते हैं तो चारों दिशाएँ मधुर स्वरों से गूँज उठती हैं।

सोलंकी वंश के ही राजा भीमदेव ने उसकी रानी उदयमती के आग्रह से पाटण में "राण की बाव" नाम की बावड़ी बनवाई थी। उसकी रचना और नक्काशी इतनी सुंदर है कि इसको लेकर गुजरात में एक मुहावरा बन गया है:

"राणकी बाव ने दामोदर कूवो
जेणे ना जोयो ते जीवतो मूवो।"

अर्थात् राणकी बाव और दामोदर कुआँ जिसने नहीं देखा हो वह जिंदा होते हुए भी मरे के समान है।

महेसाणा जिले के मोढेरा में जो सूर्य मंदिर है उसको देखकर तो हमें वहाँ से हटने का मन नहीं करेगा। सोलंकी राजा सूर्यवंशी थे। भीमदेव ने ही यह सूर्य मंदिर बनवाया था। पानी की बावली से सीढ़ियाँ ऊपर मंदिर की ओर जाती हैं। सबसे पहले है सभा मंडप। इस मंडप के खंभों और दीवारों पर देव-देवियों की मूर्तियाँ बनी हैं, पशु-पक्षी और फूलों की नक्काशी की गई है। अंदर गर्भगृह में सूर्य की मूर्ति थी, जो आज मौजूद नहीं है। वह मूर्ति इस तरह बनाई गई थी कि सूर्योदय के समय सूर्य की पहली किरण उस मूर्ति के चेहरे पर पड़े। इस के नीचे तह-खाना है। उसमें भी शायद सूर्य की ही मूर्ति थी। गर्भगृह की दीवारों में बनी ताकों में सूर्य की बारह मूर्तियाँ हैं। इन मूर्तियों के घुटनों तक ऊँचे जूते देखकर ऐसा अनुमान किया जाता है कि वे इरानी शैली में बनी मूर्तियाँ हैं। महमूद गजनवी ने कई मंदिरो का नाश किया था, उनमें से एक मोढेरा का यह सूर्य मंदिर भी है। खंडहर की हालत में भी वह इतना प्रभावशाली दिखाई देता है, तो तब तो कैसा होगा!

साबरकांठा जिले का शामलाजी और बनासकांठा का अंबाजी भी देखने लायक तीर्थस्थान हैं। शामलाजी में मंदिर में श्याम रंग के कृष्ण की मूर्ति है और अंबाजी के मंदिर में देवी अंबा की। अंबाजी के मंदिर के प्रांगण में "भवाई" नामका गुजरात का

मोढेरा का सूर्य मंदिर

लोकनाटक होता है। यह नाटक रात भर चलता है और हजारों लोग उसे देखने आते हैं। अंबा माता की स्तुति से नाटक का प्रारंभ होता है और बड़े रोचक ढंग से कहानी आगे चलती है। इसमें संवाद होते हैं, गीत और गरबा भी होते हैं। रंगलो नाम का विदूषक दर्शकों का मनोरंजन करता है। वह नाटक की कहानी और दर्शकों के बीच के पुल जैसा होता है। दर्शकों के साथ हँसी मज़ाक करता हुआ उनको भी नाटक में शामिल कर लेता है। एक रात अंबाजी में रूक जाते हैं। भवाई देखने का मौका मिल रहा है, उसे हाथ से जाने न दें। कल सुबह की बस से अहमदाबाद चले जाएँगे।

□□

9

200 किलोमीटर का रास्ता कैसे कट गया, पता ही नहीं चला। रातभर सबने भवाई की मौज ली इसलिए बस में बैठते ही खर्राटें मारना शुरू हो गया।

अहमदाबाद पहुँचकर बस अड्डे से बाहर निकले तो चारों ओर भीड़भाड़, दुकानें, 'ट्रेफिक जाम'। उफ! लगता है बहुत पुराना शहर है। हाँ, पुराना ही है। सन् 1411 में मुसलमान सुलतान अहमद शाह ने साबरमती नदी के किनारे अपना डेरा डाला था। कहानी ऐसी है कि अहमद शाह के डरावने कुत्ते नदी किनारे घूमते हुए खरगोशों को देखकर भौंकने लगे थे। वे खरगोश डरके मारे भागे नहीं। उन्होंने उलटा उन कुत्तों का सामना किया। यह देखकर सुलतान दंग रह गया। उसने सोचा कि जिस धरती के खरगोश ऐसे हो उसमें जरूर कुछ खास गुण हैं। मुस्लिम संत अहमद खट्टु गंज बक्श से सलाह लेकर अहमद शाह ने साबरमती नदी के किनारे एक शहर बसाया। उसी का नाम अहमदाबाद रखा गया। गुजराती में इसे "अमदावाद" कहते हैं।

इस शहर में बहुत ही सुंदर ऐतिहासिक इमारतें हैं। मुगलों के आने से पहले की मुस्लिम स्थापत्यकला के साथ हिंदू शैली का सुरुचिपूर्ण मेल और बाद के मुगल व जैन शैली के स्थापत्य भी यहाँ मौजूद हैं। यही नहीं, गांधीजी का साबरमती आश्रम है, बेसुमार कपड़ा-मिलें हैं। कपड़ों के इतिहास को सजीव बनाता हुआ संग्रहालय है।

बस, आप कम-से-कम आठ दिन का प्रोग्राम बनाकर घूमते रहिए। ये भी कम पड़ेंगे, क्यों कि अहमदाबाद के आसपास लोथल, अडालज बाव और नल सरोवर तो देखने ही देखने हैं।

हमारे ठहरने का प्रबंध ला गार्डन के पास एक मित्र के घर में किया गया है। शाम के समय ला गार्डन की रौनक भी देखने लायक होती है, इसलिए दो-चार दिन वहाँ ठहरेंगे, दो-चार दिन रेलवे स्टेशन के पास धर्मशाला में ठहर जाएँगे।

मित्र के घर पहुँचकर पहले तो नहा-धो लेते हैं। इतने दिन के कपड़े भी धोने हैं। घर के बीचोबीच खुली जगह है। वहाँ कपड़े सुखाने के लिये रस्सी बंधी हुई है। धूप भी अच्छी आ रही है। इधर रसोई से दूधपाक की खुशबू भी अच्छी आ रही है। बढ़िया भोजन मिलने वाला है। बरामदे में एक किनारे पर दरी बिछा दी गई है। सामने लकड़ी की छोटी चौकियाँ रखी हैं। हम दरी पर बैठ गए तो खाना परोसना शुरू हुआ। चौकी पर स्टील की थाली है। थाली में तीन कटोरियाँ हैं। थाली के बाहर पानी पीने का गिलास रखा है। दरी पर खद्दर का नैपकीन है, उसे हमने गोद में बिछा लिया है।

सबसे पहले आया दूधपाक। दूध में थोड़े से चावल डाले हैं। रबड़ी से पतला है और दूध से गाढ़ा है। पीसी हुई इलाइची और केसर भी है। बादाम के पतले-पतले टुकड़े भी हैं। दूधपाक के पीछे चली आ रही हैं छोटी-छोटी गोलमटोल पुरियाँ और यह हरी-हरी गोल-गोल चीज़ क्या है? इसे पातरा कहते हैं। अरबी के पत्तों पर बेसन लगाकर उसको बेलन के आकार में मोड़ देते हैं। फिर भाप से पकाकर, बहुत सारी सरसों और तिल से छौंकते हैं। पातरा के पीछे है कढ़ी। खट्टे दही और बेसन से बनती है। और ये हैं अंकुरित मोठ। अंकुरित धान्यों में विटामिन अधिक होते हैं। गांधीजी ने अपने आश्रम में इन बातों पर ज़ोर दिया था, इसीलिए गुजराती घरों में अंकुरित धान्य आम पाये जाते हैं। थाली में एक कटोरी अभी खाली है। लो, भर गई। इसमें आ गई लौकी और मटर की रेसेदार सब्जी। एक सूखी सब्जी भी है, सेम और बैंगन की। वही कतारगाम वाली सेम है। थाली में एक और कुछ सलाद, चटनी और रायता भी रख दिया गया है। बहुत ही स्वादिष्ट खाना है। पुरियाँ खा लीं तो चावल आये। चावल के साथ मूंग के पापड़ भी। खाना खाकर हाथ धोये तो हाथ में छोटी बोतल थमा दी गई। उसमें भुनी हुई नमकीन सौंफ थी। गुजरात में भोजन के बाद ऐसा कुछ खाने की प्रथा है। उसे "मुखवास" कहते हैं। "वास" याने गंध। मुँह में से भोजन की गंध दूर करने के लिए मुखवास खाया जाता है।
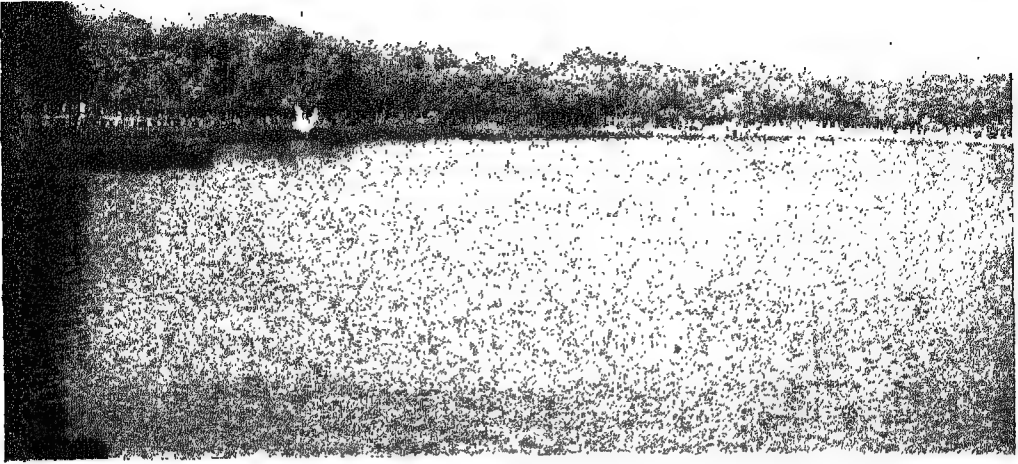
कांकरिया सरोवर

इतना बढ़िया भोजन खाने के बाद पलकें नींद से बोझिल हो गईं। रात की "भवाई" का भी नशा था। थोड़ी देर सो ही जाते हैं। फिर शाम को कांकरिया सरोवर की सैर करने जाएँगे। सुना है कि यह बड़ा सुंदर सरोवर है। जहांगीर और नूरजहाँ इस सरोवर में नौका विहार किया करते थे।

कांकरिया सरोवर

सन् 1451 में सुलतान कुत्बुद्दीन ने यह सरोवर बनवाया था। इसीलिए इसका असली नाम "हौजे कुत्ब" था। इसकी परिधि दो किलोमीटर से भी अधिक है। सरोवर के बीच में एक द्वीप है। उस पर महल बना है, बगीचा भी है। इसे नगीना-वाड़ी कहते हैं। अहमदाबाद में गरमी काफी पड़ती है। इससे बचने के लिए यह "ग्रीष्ममहल" बनवाया गया था। आजकल अहमदाबाद की नगर-पालिका ने यहाँ बालवाटिका, पिकनिक-घर, खुला प्रेक्षागृह, छोटा-सा मछली-घर और चिड़ियाघर बनाये हैं। बालवाटिका में बच्चों के लिए सुंदर पुस्तकालय है, खिलौना-घर और शीशा घर है। शीशा घर में तरह-तरह के शीशे लगे हैं। किसी में आप ठिगने और मोटे दिखेंगे तो किसी में लंबे और पतले। हँस,हँसकर पेट में बल पड़ जाएँगे।

जहांगीर और नूरजहाँ की तरह हम भी नौकाविहार कर लें। फिर ला गार्डन चले जाएँगे।

ला गार्डन

यह एक साधारण-सा बगीचा ही है, लेकिन इसके मशहूर होने के कारण कुछ और हैं। बगीचे के बाहर की फुटपाथ पर बहुत सारी ग्रामीण महिलाएँ लोक कला की

सुंदर कृतियाँ बेचने बैठती हैं। गुजरात की कढ़ाई एक अनोखी चीज़ है। गुजराती में कढ़ाई को "भरत" कहते हैं। जो कौम कढ़ाई करती है उन्हीं के नाम से वह कढ़ाई पहचानी जाती है, जैसे कि मोची भरत, कणबी भरत, काठी भरत इत्यादि। सौराष्ट्र और कच्छ की कुछ कोमें भी बहुत सुंदर कढ़ाई करती हैं। घर को सजाने के लिए "चाकला", "तोरण" आदि होते हैं। पुरुष और स्त्रियों के पहनने के वस्त्रों पर भी कढ़ाई होती है। इसी प्रकार पशुओं को ओढ़ने व सजाने के कपड़ों को कढ़ाई से सुशोभित कियां जाता है। इनके अतिरिक्त थैले, बटुए इत्यादि भी बनाये जाते हैं। आजकल तो ये महिलाएँ केवल ला गार्डन की फुटपाथ पर नहीं, दिल्ली के जनपथ पर और बम्बई के होटलों के बाहर भी बड़ी कुशलता से अपनी कला विदेशियों को और अन्यों को बेचती हैं।

हमने भी आठ रुपये का एक बटुआ और पचीस रुपये का एक थैला खरीद डाला। आगे चलें तो बाप रे बाप, कितनी भीड़ है यहाँ। लोग खाने पीने की मौज मना रहे हैं। पूरा रास्ता ही भेलपुरी, पानीपुरी, पाँऊ-भाजी, कोठी का आइसक्रीम इत्यादि बेचनेवालों की रेहड़ियों से खचाखच भर गया है। किसी ने फुटपाथ पर एकाध बैंच लगा दी है। अधिकतर लोग अपनी मोटर में बैठकर या स्कूटर और मोटरबाइक पर बैठकर ही चाट का स्वाद लेते हैं। हम जैसे फक्कड़ हों वह खड़े रहकर खाएँ। वैसे दिन में दूधपाक इत्यादि इतना ज्यादा खा लिया था कि खास भूख नहीं है, पर इन चीजों से कुछ का स्वाद कर लेना भी बढ़िया रहेगा। नहीं चखेंगे तो यह शहर हमसे नाराज हो जाएगा और ला गार्डन तो रूठ ही जाएगा।

अहमदाबाद-दर्शन

अहमदाबाद में दर्शनीय स्थान इतने अधिक हैं कि एक टूरिस्ट की तरह ही सब कुछ फटाफट देख लेना होगा। साबरमती आश्रम को बहुत गौर से देखना है तो पहले अन्य स्थान देख लेते हैं। आश्रम आखिर में देखेंगे।

सुलतान अहमद शाह ने सन् 1423 में पीले रेतीले पत्थर से जामामस्जिद बनवाई थी। हर शुक्रवार को यहाँ बहुत बड़ी नमाज़ होती थी। इस मस्जिद में 260 खंभे हैं और ऊपर पन्द्रह गुम्बद हैं। उन पर हिलती हुई मीनारें भी थीं। सन् 1818 के भूकंप में वे टूट गईं।

हिलती हुई दो मीनारें सीदी बशीर मस्जिद में भी हैं। यह मस्जिद इन मीनारों के कारण विख्यात हो गई है। इसकी खूबी यह है कि आप एक मीनार हिलाएंगें तो

दूसरी अपने आप हिलने लगेगी। बड़ी अचरज की बात है। आज तक कोई इसकी करामात को समझ नहीं पाया है। ऐसी ही दो हिलती मीनारें राज बीबी की मस्जिद में हैं। हिलने के रहस्य की खोज करने के लिए इन दो में से एक को उतार दिया गया था, लेकिन उसके बाद भी रहस्य का पता नहीं चला। इनका निर्माण 400 से अधिक वर्ष पहले हुआ था। आज भी वे अच्छी स्थिति में हैं।

सीदी सैयद की मस्जिद सुलतान अहमद शाह के गुलाम सेवक सीदी सैयद ने बनवाई थी। इसकी खिड़कियों पर पत्थर की जालियाँ हैं। पत्थर को काटकर जो नक्काशी की गई है वह इतनी महीन है कि लगता है, जैसे पत्थर के तार से डिज़ाइन बनाया गया हो। अमरीका और इंग्लैंड के संग्रहालयों में इस जाली की प्रतिकृति
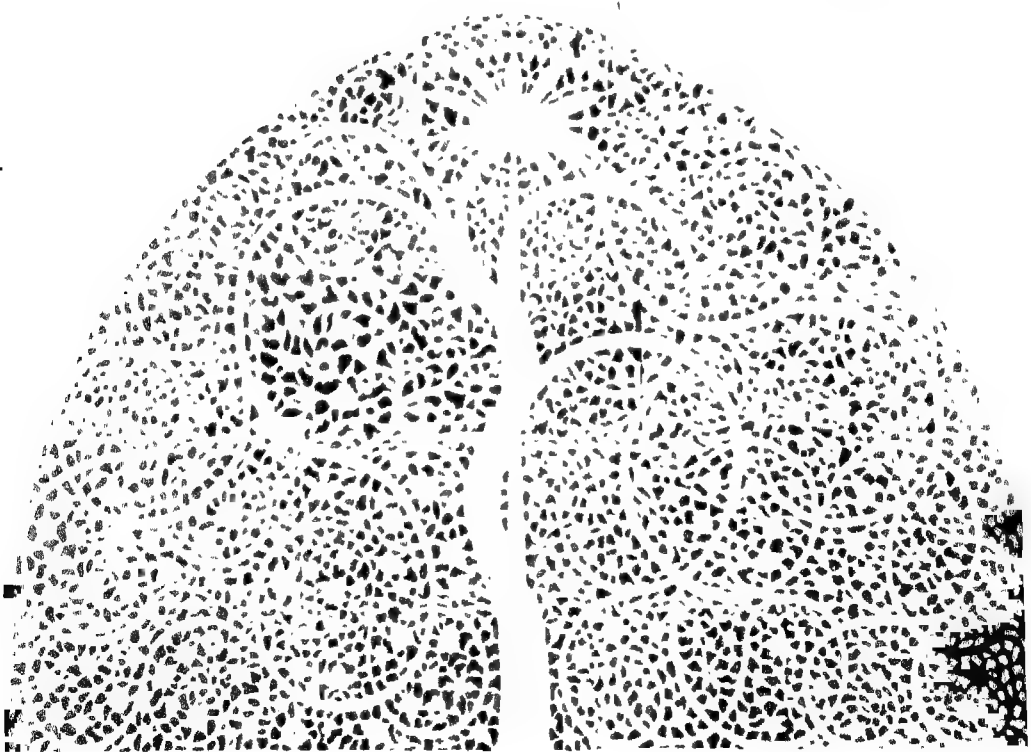
सीदी सैयद की जाली

लकड़ी से बनाकर रखी गई है। लकड़ी को कुरेदना तो फिर भी आसान है। पत्थर में इतना बारीक काम करना बहुत मुश्किल है।

अहमदाबाद में ऐसी कई मस्जिदें हैं जिनकी कोई न कोई विशेषता है। मुसलमान सुलतान महमूद बेगड़ा की एक हिंदू पत्नी थी। उसका नाम था रानी रूपमती। इस हिंदु रानी की भी एक मस्जिद है। इसमें बारह खंभों पर एक गुम्बद, ऐसे तीन गुम्बद हैं। पन्द्रहवीं शताब्दी में हिन्दू-मुसलमान स्थापत्य कला के मिश्रण की जो शैली पाई जाती है, उसी शैली में यह मस्जिद बनी है। इसकी भी मीनारें थीं, लेकिन सन् 1818 के भूकंप में वे ढ़ह गईं।

जहाँगीर की पत्नी नूरजहाँ के भाई ने संतशाह आलम का मकबरा और मस्जिद बनवाये थे। संगमरमर की नक्काशी के फ्रेम में बने पीतल के दरवाजे इस इमारत की विशेषता हैं।

अहमदाबाद शहर से बाहर निकलते ही आठ किलोमीटर की दूरी पर मुगल स्थापत्यकला का अत्यंत सुरुचिपूर्ण सादगी का उदाहरण मिलता है सरखेज में। यहाँ महमूद बेगड़ा और उसकी रानी राजाबाई के मकबरे हैं, महल हैं और संत अहमद खट्टु जंग बक्श का भी मकबरा है। साथ ही में सीढ़ियोंवाली बड़ी बावली है। इनमें से किसी भी इमारत में मेहराब ही नहीं है। सादगी की दृष्टि से ये इमारतें बेजोड़ मानी जाती हैं। गुजरात में लगभग 175 मेले ऐसे लगते हैं जो खास मुसलमान मेले या उर्स कहलाते हैं। इनमें से दो बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। एक शाह अहमद खट्टु जंग बक्श की मस्जिद के पास लगता है और दूसरा शाह आलम के मकबरे के पास। दोनों में काफी भीड़ होती है। लगभग पचीस हजार लोग इसमें भाग लेते हैं।

जैसा कि हमने पहले देखा, अहमदाबाद शहर सन् 1411 में बसाया गया था। उसी समय महलों के चारों ओर किलाबंदी की गई थी। इसे भद्र का किला कहते हैं। इस किले के भीतर शाही महल और नगीना बाग थे। बाद में महमूद बेगड़ा ने सारे शहर की चारों ओर किलेबंदी करवाई। मुगल राज्यपाल आज़म खान ने महल को उत्तर की ओर बढ़ाया था और जब मराठाओं ने अहमदाबाद पर कब्जा कर लिया तब महल के उत्तर के खंडों में से एक में देवी भद्रकाली का मंदिर बनाया। कैसी रोचक बात है! एक मुसलमान सुलतान महल बनाए और उसमें हिंदू मंदिर भी बन जाए। हिंदू-मुसलमान के भेद हम ही खड़े करते हैं। मन साफ हो तो कोई समस्या ही नहीं। गुजराती में एक कहावत है कि "मन चंगा तो कथरोट में गंगा"। कथरोट वह थाली

होती है जिसमें रोटी के लिए आटा तैयार किया जाता है। वह "कथरोट" तो सभी घरों में होती है, याने गंगा भी सभी घरों में पाई जाएगी, यदि मनुष्य का मन अच्छा हो।

जब मन अच्छा होता है तब हम अपने बारे में कम और दूसरों के बारे में ज्यादा सोचते हैं। गुजरात में दूसरों के बारे में सोचनेवाले लोगों ने जगह-जगह पर सीढ़ियों वाली विशाल बावलियाँ बनवाई हैं, जिससे यात्री पानी पी सकें और कुछ देर आराम भी कर सकें। सरखेज के पास जो बावली देखी वह ऐसी ही है। "दादा हरि की बाव" भी ऐसी ही है। सुलतान महमूद बेगड़ा के दरबार में एक महिला थी जिसने यह बावड़ी बनवाई थी। गुम्बद वाले प्रवेश द्वार से बावड़ी तक पहुँचने से पहले कई सीढियाँ और खंभें हैं, पत्थर के चबूतरे हैं, सभी पर बहुत ही सुंदर नक्काशी की गई है।

नक्काशी का और एक बेजोड़ उदाहरण है सेठ हठीसिंग का जैन मंदिर। सन् 1850 में अहमदाबाद के एक बहुत ही अमीर जैन सेठ ने यह संगमरमर का मंदिर बनवाया था। पन्द्रहवे जैन तीर्थंकर धर्मनाथ की इसमें स्थापना की गई है। संगमरमर की नक्काशी देखकर संदेह होने लगता है कि यह मनुष्य के हाथों से ही बना है या किसी दैवी हाथों से!

साबरमती आश्रम

अहमदाबाद में एक और मंदिर है। यह मंदिर सादगी, सेवा और समर्पण का प्रतीक है। इसका नाम है साबरमती आश्रम। गांधी जी सन् 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत आये थे। अफ्रीका में ही उन्होंने आश्रम का प्रारंभ कर दिया था। अब भारत में भी वे ऐसा आश्रम बनाना चाहते थे, जहाँ लोग एक साथ रहकर, संयमपूर्ण जीवन जीकर देश की सेवा कर सके। पूरा भारत घूमने के बाद गांधी जी ने अहमदाबाद को पसंद किया। अहमदाबाद के उपनगर कोचरब में एक बंगला था, उसी में गांधी जी एवं उनके साथ दक्षिण अफ्रीका से आये हुए लगभग बीस व्यक्ति रहने लगे। आश्रम के समूह जीवन की बात सुनकर और भी लोग इस अभिनव प्रयोग में शामिल होने आ गये। अब बंगला छोटा पड़ गया। उसी समय कोचरब में प्लेग की बीमारी फैल गई। आश्रम इससे शायद अछूता न रह पाय ऐसा डर भी था। इसलिए अब नई जगह ढूंढनी थी।

अहमदाबाद शहर से सात किलोमीटर दूर साबरमती जेल के पास का स्थान गांधी जी को पसंद आ गया। इस ज़मीन पर न कोई मकान था, न पेड़। उसकी एक ओर जेल थी तो दूसरी ओर श्मशान। अब आश्रमवासियों का काम शुरू हो गया। फावड़े और खुरपी लेकर ज़मीन साफ की, तंबू डाले और रहने लगे। लेकिन इस प्रकार के आयोजन में कई कठिनाइयाँ महसूस हुईं। पक्का मकान बनाने की बहुत ही आवश्यकता थी। आखिर शहर के मिल मज़दूरों को उनकी हड़ताल के दौरान कुछ काम देने के लिए गांधी जी ने उन्हीं को लगाकर एक बड़ा मकान बनवा लिया। बाद में कई पक्के मकान बने।

इनमें से एक है "हृदयकुंज"। यह गांधी जी की कुटिया है। उनकी वस्तुएँ आज भी वहाँ रखी गई हैं। 1918 से 1930 तक गांधी जी "हृदयकुंज" में रहे थे। 1930 में यहीं से गांधी जी दांडी जाने के लिए निकले थे। उस समय उन्होंने संकल्प किया था कि वे स्वराज लिये बिना इस आश्रम में नहीं लौटेंगे।

आश्रम में सभी लोग एक साथ रहते थे। प्रार्थना, सफाई-काम, कातना, बुनना, खेती, गोपालन इत्यादि आश्रम की दिनचर्या के मुख्य अंग थे। आश्रम के ग्यारह व्रत थे जो नीचे दी गई पंक्तियों में बताये गये हैं:

सत्य, अहिंसा, चोरी न करना,
बिन उपयोगी का संग्रह न करना,
ब्रह्मचर्य और जात-मेहनत,
किसी के छूने से अस्पृश्य न होना,
अभय, स्वदेशी, स्वाद न करना,
सर्वधर्मों को समान समझना,
इन ग्यारह को महाव्रत मानकर
नम्रता व दृढ़ता से आचरन।

कितनी सुंदर बात है! यह बात जीवन को कितना निर्मल और उपयोगी बना देती हैं।

साबरमती आश्रम में पुस्तकालय है, संग्रहालय भी है और गांधीजी के जीवन एवं कार्य पर आधारित ध्वनि-आलोक का एक कार्यक्रम भी दिखाया जाता है। यहीं ठहर जाना हो तो अतिथिगृह का प्रबंध भी है। यहाँ पौष्टिक स्वादिष्ट शाकाहारी

भोजन मिल जाता है। ऐसे शांत, स्वच्छ वातावरण में मनको अजीब-सी शांति मिलती है। स्वदेश प्रेम भी प्रबल हो जाता है।

कपड़ा उद्योग

इस शांत वातावरण से फिर शहर के कोलाहल की ओर जाना होगा क्योंकि अहमदाबाद की एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात पीछे छूट गई है। वह है कपड़ा मिलें।

अहमदाबाद में कपड़ों के उत्पादन का उद्योग इतना अधिक है कि यह शहर भारत का ''मान्चस्टर'' कहलाता है। मुगल शासन के समय से अहमदाबाद में बना हुआ साटिन, मखमल, मशरू और कमख्वाब विदेशों में बेचा जाता था। सूत, रेशम और जरी के धागों का खूब उत्पादन होता था। तभी से अहमदाबाद काफी समृद्ध शहर है। सन् 1859 में अहमदाबाद में पहली कपड़ा मिल शुरू हुई। आज तो देश के कपड़ों के कुल उत्पादन का पचीस प्रतिशत केवल इस शहर में होता है।

वस्त्रों की विविधता देखनी हो तो केलिको संग्रहालय को देखना ही चाहिए। सत्रहवी शताब्दी से लेकर आज तक के भारतभर के कपड़ों के अत्यंत सुंदर और विरल नमूने इस संग्रहालय में संग्रहित हैं। भारतीय कपड़ों का तकनीक और इतिहास, दोनों की जानकारी यहाँ मिलती है।

उद्योग, शिक्षा और संस्कृति इन तीनों क्षेत्रों में अहमदाबाद बहुत विकसित शहर है। गांधीजी द्वारा शुरू की गई गुजरात विद्यापीठ है, गुजरात विश्वविद्यालय तो है ही, फिर सांस्कृतिक विद्या मंदिर और संस्कार केन्द्र हैं, नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ डिजाइन है, इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला है, उपग्रह स्टेशन भी अहमदाबाद में ही है।

पहले तो गुजरात की राजधानी भी यहीं हुआ करती थी। अब यह 32 किलोमीटर दूर गांधीनगर में है।

□□

10

[illegible] के आसपास

गांधीनगर में सिवा सरकारी मकानों के खास कुछ नहीं है। लेकिन हम उस दिशा में जाएँगे "अडालज बाव" देखने। अहमदाबाद से 19 किलोमीटर की दूरी पर यह अत्यंत सुंदर बावली सन् 1499 में रानी रुड़ाबाई ने बनवाई थी। पानी तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ बनी हैं। दीवार और खंभों पर पक्षी, मछलियाँ, फूल-पत्ते एवं अन्य सुशोभनों की नक्काशी की गई है। पत्थर के पक्षी ऐसे सुंदर हैं मानों अभी पंख फैलाएँगें।

पत्थर के पक्षियों को सजीव रूप में देखना हो तो नल सरोवर चलना होगा। यह स्थान अहमदाबाद से लगभग 65 किलोमीटर दूर हैं। सरोवर बहुत ही विशाल है, पर अधिक गहरा नहीं है। वर्षाऋतु के पानी से वह भर जाता है, गर्मियों में फिर सूख जाता है। नवंबर से फरवरी तक यहाँ तरह-तरह के पक्षी आते हैं और काफी दूर-दूर से, उत्तर में उत्तर ध्रुव से और दक्षिण में आस्ट्रेलिया से भी आते हैं। गुलाबी जलसिंह (रोज़-पेलिकन) हंसावर (फ्लेमिंगो), सफेद लकलक (स्टोक) क्रौंच, सारस, सुरखाब, बतख, बगुला इत्यादि कई पक्षियों का मेला लगता है। इसे पक्षियों का अभयारण्य कहते हैं। शिकार मना है। पक्षियों के बीच जाकर कुछ दिन रहना हो तो उसका भी प्रबंध है। लगभग नब्बे लोग रह सके इतने कमरे वहाँ बने हैं।

सरोवर के बीच में हिंगलन और भुरेख नामकी देवियों के मंदिर बनें हैं। पक्षियों का ऐसा ही एक मेला कच्छ में भी है, पर जब हम कच्छ पहुँचेंगे तब ही

उसको देख सकेंगे। इस समय तो चलते हैं लोथल। प्रकृति से प्राचीन इतिहास की ओर सरोवर से समृद्ध संस्कृति की ओर।

लोथल

आज से लगभग बीस साल पहले अहमदाबाद से कोई नब्बे किलोमीटर की दूरी पर सरगवाला नामके एक गाँव में अद्‌भुत चीज़ पाई गई। जमीन को खोदने पर भीतर से पूरी नगरी निकल आई। यह संस्कृति हड़प्पा और मोहन जो-दड़ो की संस्कृति के समय की, अर्थात ईसा पूर्व दो सहस्राब्दी (मिलेनियम) की है। इससे पता चलता है कि हड़प्पा की संस्कृति गुजरात से खंभात तक फैली हुई थी। आज यह स्थान लोथल के नाम से प्रसिद्ध है।

सदियों पुरानी नगरी - लोथाल
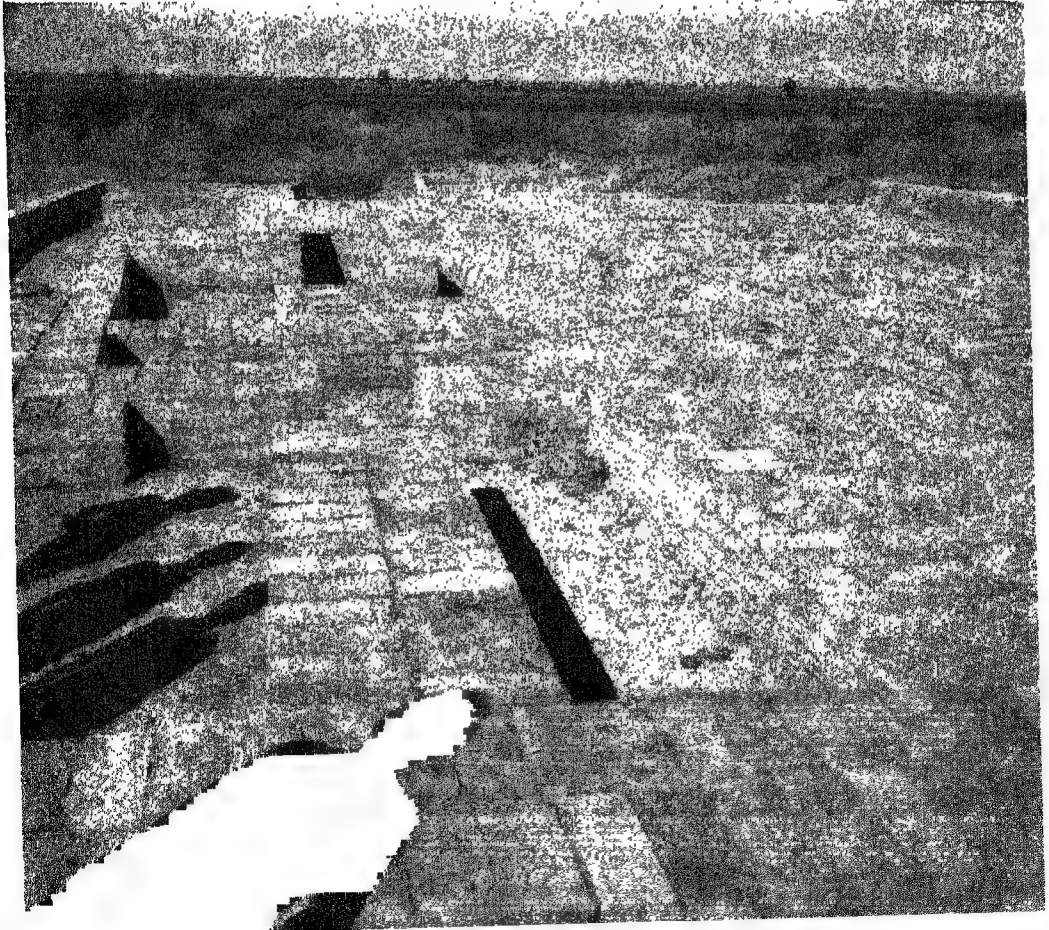
सरगवाला गाँव में लोथल नामका एक टीला है। गुजराती में लोथल शब्द "लोथ" से आया है। "लोथ" याने मृत। लोथल का अर्थ भी कुछ अंश से मोहन-जो-दड़ो जैसा ही हुआ। सिंधी शब्द दड़ो का अर्थ है टीला।

यहाँ जब पूरी नगरी ही बसी हुई थी तब तो मनुष्यों को रहने के लिए जो सुविधाएँ चाहिए वह सारी होनी चाहिए। आइए, कुछ समय के लिए अतीत में घुस जाते हैं। इतिहास के पन्नों को फिर से जीवित कर देते हैं। हज़ारों वर्षों पहले जिन लोगों ने यहाँ आखरी सांस ली थी, उनके रहनसहन को देख लेते हैं।

लोथल में एक बात तो स्पष्ट हो ही जाती है कि यह व्यापार का बड़ा केन्द्र रहा होगा। हड़प्पा के लोग भी यहाँ इसी कारण आ पहुँचे होंगे। सौराष्ट्र के मध्य से भोगवो नदी निकलती है और लोथल टीले के बीच से ग़ुज़रती हुई साबरमती नदी से जा मिलती है। साबरमती नदी अरब सागर से मिल जाती है। इस प्रकार लोथल से समुद्री रास्ते तक पहुँचकर दूसरे देश से व्यापार करना संभव था। इसका और एक प्रमाण मिल जाता है लोथल के मालगोदाम से। सूरज की धूप में पकाई गई ईंटों से यह गोदाम बना है। काफी बड़ा है—140′ × 135′। दूसरा सबूत मिलता है तरह-तरह की मोहरों से। महत्त्वपूर्ण व्यवसाय केन्द्रों में ही इतनी सारी मोहरों का प्रयोग होता है। यहाँ का गोदीबाड़ा भी बड़ा प्रभावशाली है। यह भी ईंट से बनी 710′ × 116′ की बड़ी इमारत है। कहा जाता है कि लोथल का गोदीबाड़ा सारे संसार के गोदीबाड़ों में सबसे पहले बना था। नाविकों द्वारा प्रयोग में लाये गये पत्थर के लंगर भी यहाँ पाये गये हैं।

लोथल से जो औजार मिले हैं वे सारे किसी-न-किसी वस्तु के बनने के लिए प्रयोग में लिए जाने वाले औजार हैं। युद्ध के या किसी को मारने के कोई औजार नहीं मिले हैं। इस से हम कह सकते हैं कि वहाँ की प्रजा बड़ी शांतिप्रिय थी। गुजराती प्रजा आज भी शांतिप्रिय मानी जाती है।

शांतिप्रिय प्रजा को ही कलाकारीगीरी के लिए समय मिलता है। लोथल से देवी की आकृति की, बैल, कुत्ते, शेर, मोर, रीछ इत्यादि की मिट्टी से बनी सुंदर मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई हैं। मोहर के ऊपर भी हाथी, एकश्रृंगी, बकरी या पक्षी की आकृतियाँ बनी हैं। बर्तनों पर भी सुंदर चित्र पाये गये हैं।

कुछ वेदियाँ पाई गई हैं जिन पर पशुओं की बलि चढ़ाई जाती थी और कुछ ऐसी कब्रें भी मिली हैं जिनमें एक साथ दो व्यक्तियों को दफनाया गया है।

इसके अतिरिक्त गलियाँ, बाज़ार, चौड़े रास्ते, स्नानघर, मोरियाँ इत्यादि हैं। कल्पना कर लीजिए कि आज जो मकान और रास्ते शांत हैं, जो गोदाम खाली हैं, जो दीवारें खंडहर हो चुकी हैं, सालों पहले उनमें भी हमारे दिल की तरह जीवन की धड़कन थी, वे भी सांस लेती थीं। उनकी रगों में भी खून दौड़ता था और उसकी गलियों में भी जीवन की चहल-पहल रहा करती थी। गलियों में मानव थे।

और अब? कारवाँ गुज़र गया। हवा में उड़ी हुई धूल भी धरती पर शांत होकर जम गई, मानो समय थम गया, धरती की कई परतों के नीचे।

□□

11
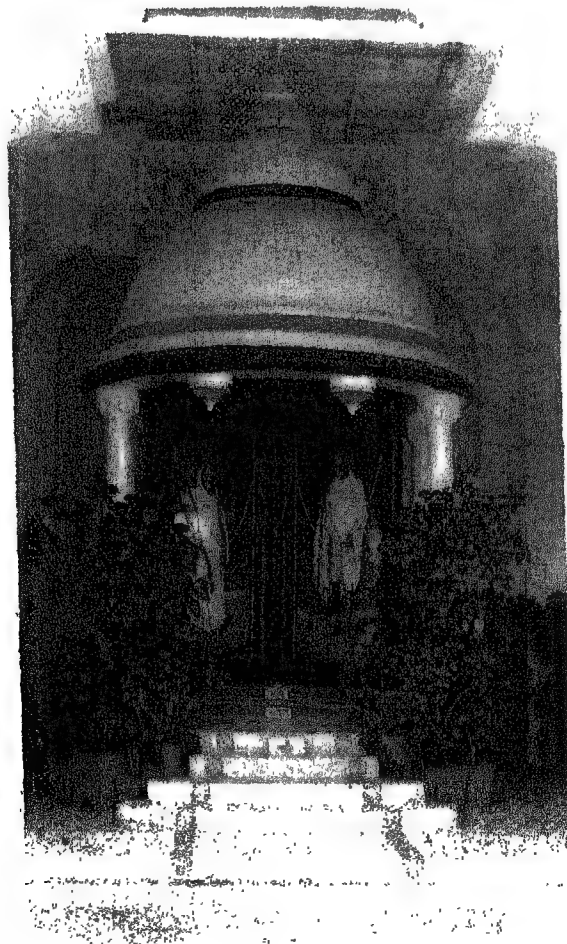
सौराष्ट्र की ओर

पीछे से बस की भोंपू-भोंपू सुनाई दी। हम लोथल की अतीत से वर्तमान में आ गये। भोंपू की आवाज़ के साथ वह जीप याद आ गई जिसमें बाबुल और नीतु सफर कर रहे हैं।

हमने गुजरात के इस भाग में बहुत कुछ देखा। छोटी-छोटी जगहें भी बड़े आराम से, गौर से देखीं। यहाँ कई दिन लगा दिये। बाबुल-नीतु वाली जीप तो शायद कच्छ पहुँच गई होगी। सौराष्ट्र की यात्रा भी हमें अपने आप बसों और बैलगाड़ियों से करनी पड़ेगी।

सौराष्ट्र बड़ा रंगीन इलाका है। लोक-साहित्य और लोककला में बहुत ही समृद्ध है। लोगों में एक प्रकार की मस्ती है। भोलापन भी है। रास-गरबा-भजन तो मानों लोगों की सांसों में है, सौराष्ट्र की हवा और पानी में है।

अहमदाबाद से सौराष्ट्र आते समय पहला जिला आता है सुरेन्द्र नगर का। इस जिले में तरणेतर नामक एक गाँव है। यहाँ भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की चौथी, पाँचवी और छठी तिथियों को बहुत बड़ा मेला लगता है। भाद्रपद याने अगस्त-सितंबर के महीने। तरणेतर में भगवान शिव का मंदिर है। इस गाँव का नाम त्रिनेश्वर था। शिव के तीन नेत्र माने जाते हैं ना? फिर त्रिनेश्वर से तरणेतर हो गया। इस मेले में भरवाड़ और रबारी कौम के लोग खास हिस्सा लेते हैं। उनके वस्त्रों पर की गई कढ़ाई और पुरुष तथा महिलाओं की देह पर चांदी के आभूषण देखकर आप दंग रह
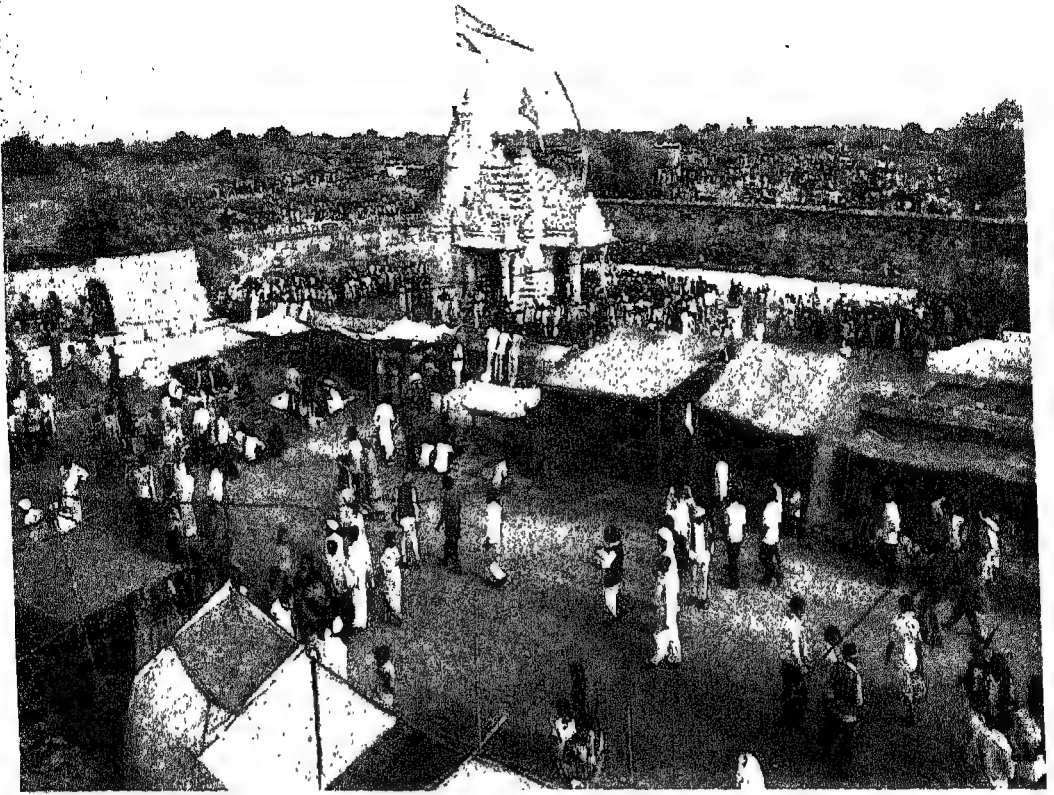
तरणेतर का मेला

जाएँगे। सारे सौराष्ट्र से हजारों ग्रामवासी इस मेले में आते हैं। ढोल और "जोड़िया पावा" (अलगोजा याने दो बांसुरियाँ) के साथ बड़ी मस्ती से रास-गरबा होते हैं। रास को रासड़ा भी कहते हैं। रासड़ा करने वालों के हाथ में छोटी-छोटी लकड़ियाँ होती हैं। इन लकड़ियों को "डांडिया" कहते हैं। सैंकड़ों महिलाएँ बहुत बड़ा वर्तुल बनाकर घंटों भर डांडिया-रास खेलती रहती हैं। मेले के अन्य आकर्षण तो होते ही हैं। आजकल तो केवल शहरों से ही नहीं, भारतदर्शन के लिए आये हुए विदेशी लोग भी इस मेले में शामिल हो जाते हैं।

भारत की आत्मा तो गाँवों में ही है ना? ऐसे मेलों से पता चलता है कि लोग मूलतः कितने सहज, स्वाभाविक और आनंदप्रिय होते हैं। उनपर थोपी गई कृत्रिमता उन्हें बिगाड़ देती है।

□□

12

भावनगर

लोकजीवन की रक्षा करना हमारे ही हाथ में हैं। इस कार्य में जागरूकता का महत्त्व स्वीकारना होगा। तरणेतर से दक्षिण की ओर चलते हैं।

यह है वलभीपुर। पाँचवी शताब्दी में गुप्ता राजवंश का पतन होने लगा था। उस समय उनके सेनापति भट्टारक ने सौराष्ट्र को अपने हाथ में ले लिया। वलभीपुर को राजधानी बना लिया। भट्टारक मैत्रक वंश का था। ये लोग बड़े शक्तिशाली थे। इन्होंने गुजरात और मालवा के कई भागों पर अपना वर्चस्व जमा दिया था। यहाँ विश्वविद्यालय की स्थापना भी की गई थी, लेकिन जब अरबों के हमले हुए तब उसका नाश हो गया।

सौराष्ट्र में कई छोटे-छोटे राज्य थे। उनमें से एक था राजा भावसिंहजी का भावनगर। सन् 1723 में यह शहर बसा था। तभी से एक बंदरगाह के रूप में इसका विकास होता रहा था। दो स्टीमर एक साथ खड़े रह सकें इतनी बड़ी इसकी गोदी है। यहाँ ''लाक-गेट'' बनाये गये हैं, जिसके कारण समुद्र में भाटा हो तब भी इसमें जहाज तैरते रहते हैं। गुजरात में इस प्रकार का यह पहला ''लाक-गेट'' है।

भावनगर में सौराष्ट्र विश्वविद्यालय है, केन्द्रीय नमक और समुद्री अनुसंधान इंस्टिट्यूट भी है। दांडी में नमक के सत्याग्रह की बात करते समय हमने यह तो जान ही लिया था कि भारत में नमक का कुल जितना उत्पादन होता है उसका 60 प्रतिशत गुजरात में होता है।

गांधी जी की स्मृति में यहाँ एक पुस्तकालय और संग्रहालय है, जिसका नाम ही गांधी-स्मृति है। 1888 में गांधी जी भावनगर के शामलदास कालेज में विद्यार्थी थे। इस पुस्तकालय में गांधीजी के जीवन व विचार से संबंधित लगभग चालीस हज़ार पुस्तकें हैं।

एक टीले पर तख्तेश्वर मंदिर है। यहाँ से सारा भावनगर दिखाई देता है।

□□

13

पालीताणा

मंदिर की बात होते ही पालीताणा याद आ जाता है। गुजरात के दर्शनीय स्थानों में पालीताणा एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। भावनगर से यह 56 किलोमीटर दूर है। वहाँ से कई बसें इस ओर जाती हैं। हम भी एक बस में बैठ जाएँ। डेढ़ घंटे में पालीताणा पहुँच जाएँगें।

पालीताणा पहुँचते-पहुँचते शाम हो गई। यहाँ के सरकारी अतिथिगृह में रात बिता लेते हैं। अच्छा शाकाहारी भोजन भी मिल जाएगा। सुबह सूर्योदय से पहले उठकर शत्रुंजय पर्वत चढ़ना शुरू करेंगे। इस पर्वत के ऊपर जैन मंदिरों की एक नगरी बसी हुई है। कुल मिलाकर 863 मंदिर हैं।

600 मीटर ऊंचे इस शत्रुंजय पर्वत पर चढ़ने के लिए पत्थर की सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। वृद्ध, बीमार या कमजोर लोग डोली या कुर्सी के सहारे ऊपर जाते हैं। इनको उठाने वाले लोग किराये पर मिल जाते हैं।

हमने तो सीढ़ियों से चढ़ना पसंद किया। सीढ़ियाँ यदि सीधी चढ़ें तो सांस फूल जाती हैं, लेकिन बाँयें से दाँयें से फिर बाँयें, इस तरह तिरछे चढ़ते रहते तो कोई तकलीफ नहीं होती है। हम भी तिरछे चढ़ रहे हैं। आराम से, आपस में बातें करते हुए, आसपास का सौंदर्य देखते हुए चढ़ते जा रहे हैं। आधे रास्ते पहुँचकर हम सीढ़ी के किनारे के पत्थर पर बैठ गये। यहाँ से शत्रुंजी नदी कितनी सुंदर दिखती है! यह गिरनार पर्वत से निकलती है और शत्रुंजय पर्वत को छूती हुई आगे चली जाती
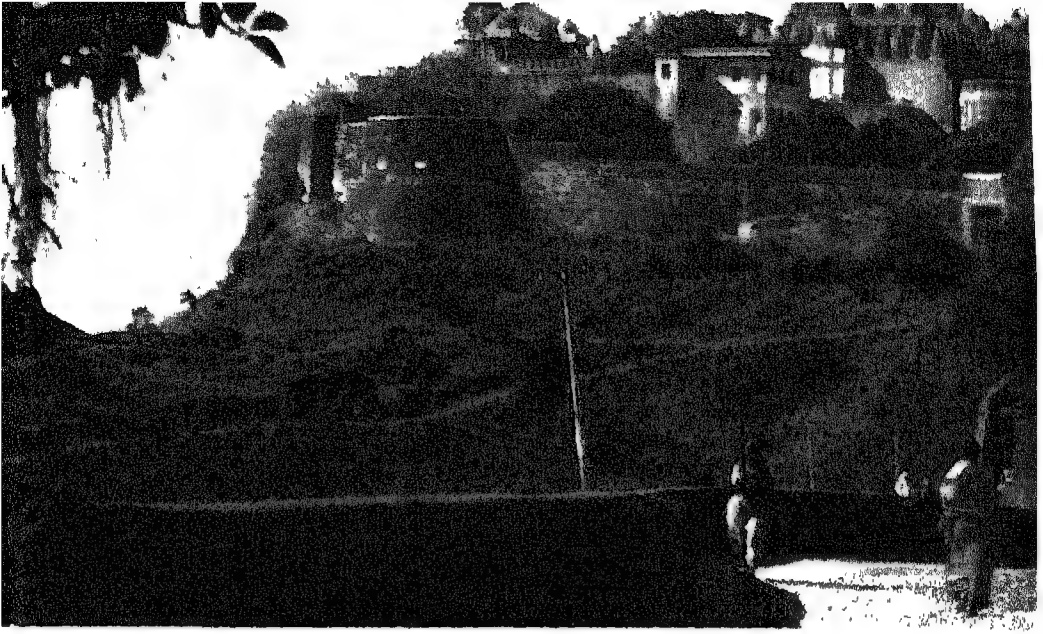
पालीताणा के मंदिर

है। लेकिन यह शत्रुंजी क्यों कहलाती है? इस प्रश्न का उत्तर कोई नहीं दे पाता है। खैर, छोड़िये इसे। तर्कबाजी में पड़ेंगें तो ऊपर पहुँचने में देर हो जाएगी।

यह लीजिए, आ गये। ऊपर चढ़ने में एक घंटे से ज्यादा ही समय लग गया। खाकर निकले थे फिर भी भूख लग गई। यहाँ ये महिलाएँ मिट्टी के बर्तनों में क्या बेच रही हैं? यह तो दही है। हम भी इसे खरीद लें। अहाहाहा..... कितना स्वादिष्ट दही है और कितना गाढा है। किसी ने हँसकर कहा: ''अरे भाई, छुरी से काटना पड़े इतना सख्त है।'' वास्तव में बहुत ही अच्छा दही है।

इस प्रदेश में भैंस का दूध मिलता है। यहाँ रबारी, मेर, आहिर, ऐसी कई कौमें हैं जिनका व्यवसाय पशुपालन है। इन महिलाओं का ही स्वास्थ्य देखो। त्वचा चमक रही है। चेहरा कितना स्वस्थ और खुश दिखता है।

इस तरफ कुछ धर्मशालाएँ हैं। सरकारी अतिथिगृह भी हैं और उस तरफ मंदिर ही मंदिर। पिछले 900 वर्षों में ये सारे मंदिर बने हैं। प्रत्येक श्रद्धालु यात्री की यही मनोकामना रहती है कि 'मेरे पास कुछ पैसे जुट जाय तो मैं भी यहाँ एक मंदिर बनवा दूँ।'

प्रथम जैन तीर्थंकर श्री आदीश्वर का मंदिर सबसे बड़ा माना जाता है। यहाँ एक चौमुख नामका मंदिर है। इस मंदिर में आदिनाथ की मूर्ति के चार दिशाओं में

चार मुख हैं। चारों ओर चार द्वार भी हैं। इनके अलावा कुमारपाल, विमल शाह और संप्रीतिराज को समर्पित मंदिर भी बहुत सुंदर है। संगमरमर के मंदिरों में संगमरमर की मूर्तियाँ हैं। बहुत ही बारीक नक्काशी की गई है। जैन स्थापत्यकला का यह अद्‌भुत उदाहरण है। मंदिरों में मूल्यवान रत्नों का भी बड़ा संग्रह है। इन रत्नों को देखने के लिए यहाँ के प्रबंधक या इन्सपेक्टर साहब से खास अनुमति लेनी पड़ेगी या फिर जब दिन में इनको मूर्तियों पर चढ़ाने की विधि हो रही हो, उसी समय उन्हें देख लेंगें।

यहाँ घूमते पैर थक जाएँगे लेकिन मन तृप्त नहीं होगा। आराम करने के लिए धर्मशालाएँ हैं, लेकिन इनमें रात को ठहर नहीं सकते। यह तो देवों की नगरी है। रात को कोई भी मनुष्य शत्रुंजय पहाड़ी की इस देवनगरी में नहीं रह सकता। सूरज ढलते ही सारे लोग नीचे उतर जाते हैं यहाँ तक कि मंदिर के पुजारी भी।

हम भी नीचे उतर जाएँगे। लेकिन उतरने से पहले आदीश्वर मंदिर के पास अंगार पीर की दरगाह है, उसके दर्शन कर लें। दरगाह में इतने सारे खिलौने क्यों हैं? सभी खिलौने छोटे बच्चे को झुलानेवाले पालने के हैं। बात यह है कि अंगार पीर की बड़ी महिमा मानी जाती है। जिन स्त्रियों को बच्चे चाहिए वे यहाँ आकर दरगाह पर छोटा-सा पालना रखकर मन्नत मानती हैं।

ऐसी अंधश्रद्धा मनुष्य के भोलेपन का ही उदाहरण है। दूसरे तरीके से देखें तो हम यह भी कह सकते हैं कि ऐसी आशाओं के सहारे ही तो मनुष्य अपने दुख को भुलाकर जी लेता है। दुख आ पड़ता है तो ईश्वर को कोसता है और सुख मिले तब ईश्वर याद नहीं आता। उस समय तो वह अपनी बुद्धि की दाद देता है। कैसी विचित्र बात है यह।

भावनगर जिले में और भी कुछ धार्मिक स्थान हैं। तलाजा की पहाड़ी पर प्राचीन बौद्ध गुफाएँ और जैन मंदिर हैं। संतकवि नरसिंह मेहता का जन्म यहीं हुआ था। सोनगढ़ में भी जैन मंदिर है। गढ़ड़ा में स्वामी सहजानंद की गादी है। स्वामी सहजानंद का जन्म सन् 1781 में हुआ था। उनका संप्रदाय स्वामी नारायण संप्रदाय कहलाता है। गुजरात में ऐसी कई पिछड़ी हुई जातियाँ थीं जो शराब पीती थीं, बहुत ही अस्वच्छ वातावरण में रहती थी। उनका जीवन दयनीय था। सहजानंद स्वामी ने उनको बुरी आदतों से मुक्ति पाने का रास्ता दिखाया। स्वच्छता सिखाई दैनंदिन

जीवन के कुछ विशेष आचरण सिखाए। इस प्रकार पिछड़े हुए लोगों के जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया।

□□

14
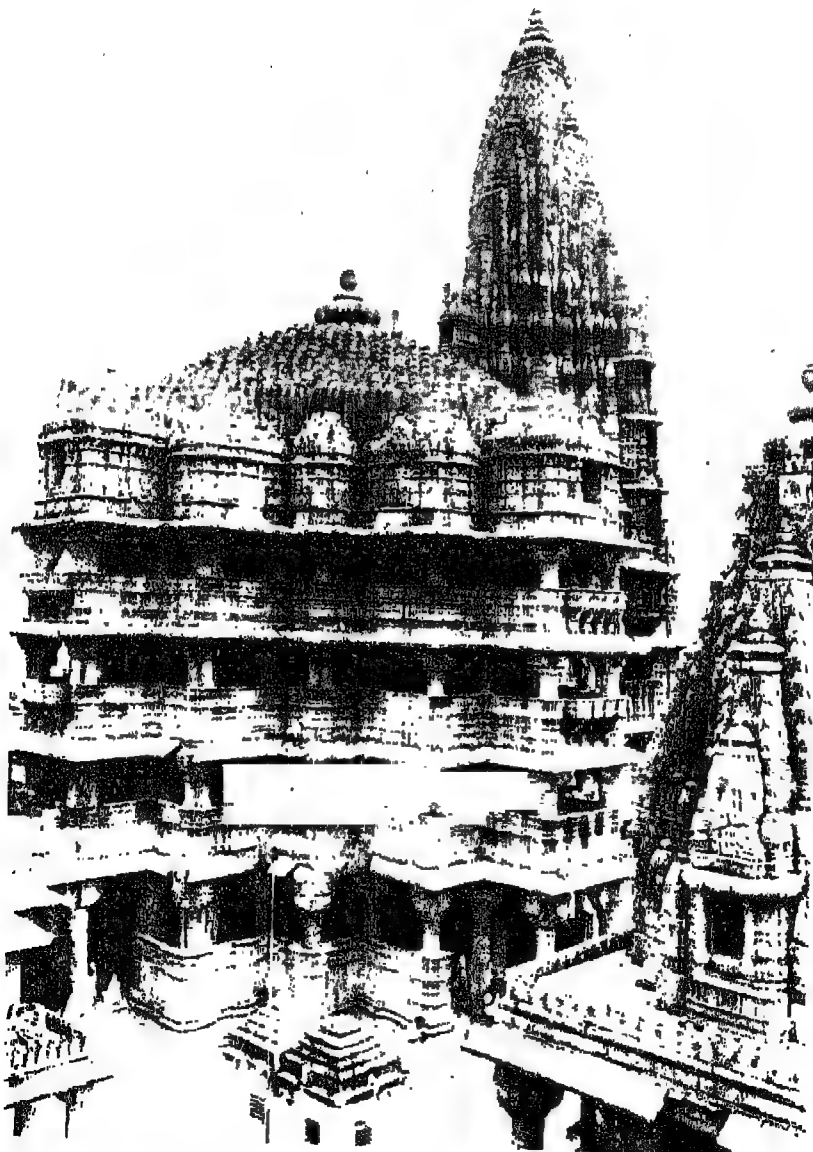
राजकोट

सहजानंद स्वामी की तरह गुजरात में और एक संत पैदा हुए, जिनका नाम है स्वामी दयानंद सरस्वती। राजकोट जिले के टंकारा गाँव में सन् 1824 में उनका जन्म हुआ था। उनका असली नाम था मूलशंकर। उनके ब्राह्मण पिता बड़े ही धर्मान्ध शिवभक्त थे। एक बार शिवरात्रि के दिन टंकारा के शिवमंदिर में बालक मूलशंकर बैठे थे। उन्होंने देखा कि चारों ओर चूहे दौड़ रहे हैं। शिवलिंग पर भी चूहे खेल रहे हैं। तब उनके मन में विचार आया कि यह कैसे भगवान हैं जो चूहों से अपनी रक्षा तक नहीं कर सकते हैं! तभी से उनके मन में मूर्तिपूजा के प्रति संदेह जागा। वह दृढ़ हुआ जब उनकी बहन की मृत्यु हुई। वे जीवन का रहस्य जानना चाहते थे। ज्ञान प्राप्त करना चाहते थे। वे घर छोड़कर चले गये। गुरु परमानन्द सरस्वती के शिष्य बन गये। तब से उनका नाम दयानंद सरस्वती रखा गया।

उन्होंने वेद-उपनिषद् पढ़े, दर्शनशास्त्र पढ़े और जीवन की एक नई दिशा उन्हें प्राप्त हुई। समाज की कुरीतियों का उन्होंने विरोध किया। विधवाओं के पुनर्विवाह की और बालविवाह पर प्रतिबंध की बातें की। संक्षेप में कहें तो समाज को सुधारने का एक आंदोलन शुरू कर दिया। आज इनका संप्रदाय आर्य समाज के नाम से प्रचलित है।

समाजसुधार के क्षेत्र में राजकोट का भी काफी योगदान है। इसका कारण है गांधीजी का राजकोट से संबंध।

जाडेजा राजपूत शासक कुंवर विभोजी ने सोलहवीं शताब्दी में राजकोट नगरी

बसाई थी। इसके बाद लगभग दो सौ वर्षों तक कभी यह प्रदेश जाडेजाओं के हाथ में रहा तो कभी मुगल फौजदारों के हाथ में। फिर सन् 1808 में ब्रिटिश पोलिटिकल एजेन्ट कर्नल वॉकर ने यहाँ अपना स्थायी उपनिवेश (सेटलमैन्ट) बनाया। जाडेजा का राज भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति तक चला। बाद में वे भी सौराष्ट्र संघ में जुड़ गये।

गांधीजी के पिताजी करमचंद गाधी जब राजकोट के दीवान बने तब उनके साथ उनका पूरा परिवार राजकोट आया। नन्हा मोहनदास राजकोट के आल्फ्रेड हाई स्कूल में पढ़ने लगा। स्कूल की सारी शिक्षा यहीं हुई। आज इस स्कूल का नाम मोहनदास करमचंद गांधी हाई स्कूल है।

राजकोट में ही मोहनदास का कस्तूरबा से विवाह हुआ था। जिस मकान में गांधी परिवार रहता था उसका नाम है "कबा गांधीनो डेलो" और वह गली, जिसमें मकान है "कबा गांधीनी शेरी" कहलाती है। कबा गांधीनो डेलो अब गांधी संग्रहालय बन गया है।

राजकोट में सन् 1921 में "राष्ट्रीय शाला" की स्थापना की गई थी। बाद में इसे राष्ट्रीय शैक्षिक संस्था बना दिया गया था। यहाँ खादी तैयार करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। यह वही संस्था है जहाँ सन् 1939 में राजकोट सत्याग्रह के दौरान गांधीजी ने आमरण अनशन किया था।

राष्ट्रीय शाला में एक नज़र डालते हुए हम जुबिली गार्डन की ओर चले जाएँगे।

राष्ट्रीय शाला के इस विशाल खंड में कितनी सारी बालिकाएँ चरखा चला रही हैं! लगता है जैसे सभी ध्यानमग्न हैं। एक हाथ नीचे के पहिये को चलाता है और दूसरा ऊपर उठता है। रुई से पतला सूत निकल रहा है। गांधीजी के आश्रम में तो चरखा चलाना अनिवार्य था। एक दिन में किसने कितना सूत काता उसका हिसाब रहता था। आज के यंत्रयुग में भी इन बालिकाओं को सूत कातते देखकर अच्छा लग रहा है। मानो योगाभ्यास हो रहा हो।

इधर जुबिली गार्डन में पुस्तकालय, संग्रहालय और प्रेक्षागृह है। भावनगर में हमने सौराष्ट्र विश्वविद्यालय देखा था। वह शाखा थी। उसका मुख्य स्थान है राजकोट में। राजकोट में और भी कई कालेज हैं और शिक्षा का क्षेत्र काफी विकसित है।

राजकोट जिले में मोरबी का बंधेज मशहूर है। वांकानेर का राजमहल भी देखनेलायक है। इस राजमहल में अब यात्रियों के लिए होटल बना दिया गया है। गोंडल शहर की लालमिर्च प्रसिद्ध है। उसे अचार में डालो तो सालभर अचार का रंग लाल रहेगा और मुँह में आग लगेगी, वह अलग।

□□

15

जूनागढ़

अब हम अमरैली को पार करके चलेंगे जूनागढ़ जिले में। यहाँ पर तो वह सासण-गिर का जंगल है, वही, बाबुल-नीतु वाला।

यह है जूनागढ़ शहर। गुजराती भाषा में "जूना" का अर्थ है पुराना और गढ़ याने किला। शहर की चारों ओर किला बंदी है, जो काफी पुरानी है, इसी लिए इस शहर का नाम जूनागढ़ है।

जूनागढ़ के विख्यात होने के दो कारण है। एक गिरनार पर्वत और दूसरा संत कवि नरसिंह मेहता। तो पहले गिरनार हो आते हैं, बाद में नरसिंह मेहता के बारे में जानेंगे।

यह पर्वत तो बहुत बड़ा दिख रहा है। गुजरात का सबसे ऊँचा पर्वत गिरनार ही है। इसकी ऊँचाई 600 मीटर से भी अधिक है। ऊपर जाने के लिए पत्थर की जो सीढ़ियाँ बनी हैं वे भी काफी सीधी हैं। शत्रुंजय पर्वत की तरह यहाँ भी वृद्ध, बीमार या कमजोर लोगों के लिए डोली और कुर्सी का प्रबंध हैं। हम तो अभी ताकतवर हैं, उम्र में छोटे हैं, इसलिए फुर्ती भी काफी है। हम तो सीढ़ियों के रास्ते ही ऊपर जाएँगे। सुना है, लगभग 2,000 सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ेंगी। कोई बात नहीं। एक गुजराती कवि ने कहा है कि "याहोम करीने पड़ो, फतेह छे आगे"। "याहोम" कहके कूद पड़ो, आगे सफलता ही मिलेगी।

प्रारंभ में जो बावड़ी दिखती है वह है दामोदर कुंड। वहीं से ज़रा आगे चले तो
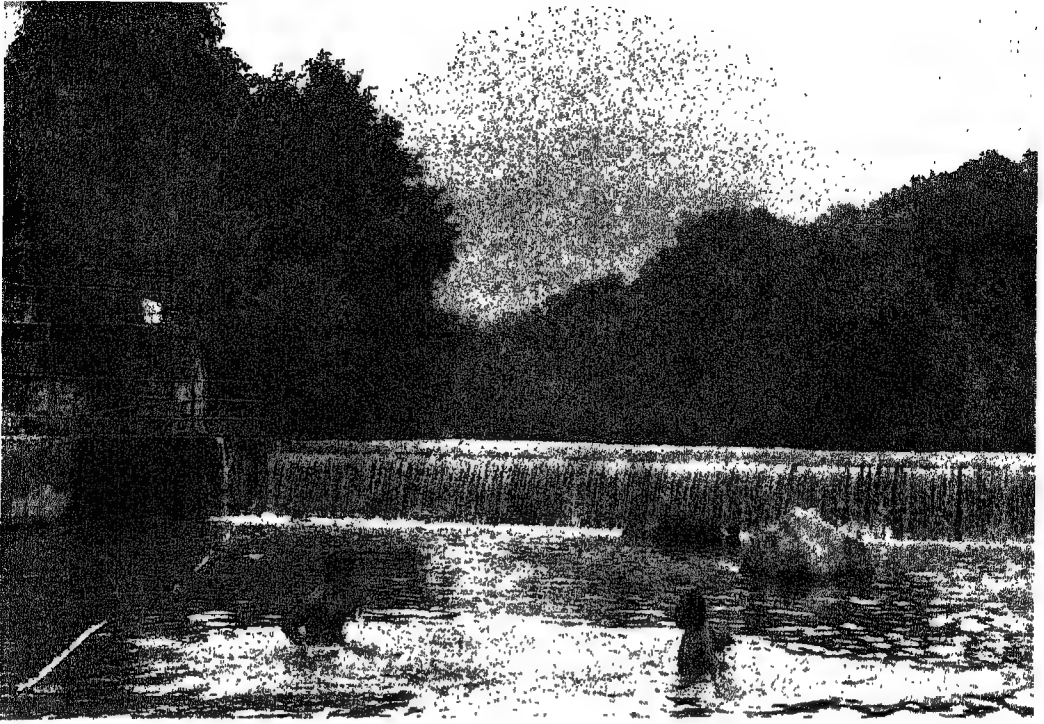
गिरनार पर्वत

आ गये शिलालेख। हमने इतिहास में पढ़ा है कि इस्वीसन् पूर्व 250 में राजा अशोक ने कलिंग युद्ध में मानवसंहार देखकर अपने हथियार फेंक दिये थे। बौद्ध धर्म अपनाकर अहिंसा का प्रचार शुरू किया था। प्रचार का एक माध्यम था शिलालेख। जगह-जगह पर पत्थरों पर गौतम बुद्ध के विचार और अहिंसा के संदेश कुरेदे गये थे। ऐसे ही चौदह शिलालेख इस गिरनार पर हैं, जो राजा अशोक ने पालि भाषा में लिखवाये थे। उन दिनों आम जनता की भाषा पालि थी।

उसके बाद सन् 150 में राजा रूद्रदमन ने और मौर्यवंश के राजा स्कंदगुप्त ने सन् 454 में इसी टीले पर संस्कृत में संदेश लिखवाये थे।

ऐसी वस्तुएँ देखने से हम समझ पाते हैं कि जीवन को सुख और शांतिमय बनाने के लिए हमारे देश में कितने लोगों ने कितना कुछ किया है। इतनी मूल्यवान बातों को हमें भुलाना नहीं चाहिए। आगे चलें।

यह है ''ऊपरकोट'', अर्थात् ऊपर का किला। प्राचीन काल में इस किले को पार करना बहुत ही कठिन था। इसकी दीवारें कहीं-कहीं तो बीस मीटर ऊँची हैं। उसके नक्काशीदार दरवाजे अब तो खंडहर की हालत में हैं। किले के भीतर मध्ययुग के राजपूत राजा का महल है। एक मस्जिद है, दो कुएँ हैं। अड़ी और चढ़ी नामकी

दो बहनें इस कुएँ से पानी भरती थीं इसलिए यह कुआँ "अड़ी-चड़ी" का कुआँ कहलाता है। "नवधन" नाम का और एक बहुत बड़ा कुआँ हैं। काफी गहरा है। उसके भीतर गोल-गोल सीढ़ियाँ बनी हैं। ऊपर से देखते ही सिर चकरा जाता है। अंदर उतरने की बात तो दूर ही रही।

पहाड़ी के एक ओर लगभग 1500 वर्ष पुरानी बौद्ध गुफाएँ हैं। इसके खंभों पर सुंदर नक्काशी है।

गिरनार तो बादलों से बातें करता हैं। इसके कुल पाँच शिखर हैं। सभी पर संगमरमर के सुंदर मंदिर हैं। यह भी शत्रुंजय की तरह मंदिरों की नगरी है। इनमें सबसे पुराना है बाईसवें जैन तीर्थंकर नैमिनाथ्जी का मंदिर हैं। 12 वीं शताब्दी में यह मंदिर बना था। यह सबसे बड़ा भी है।

गुजरात के वाघेला वंश के एक राजा थे वीरधवल। उनके मुख्य मंत्री का नाम था वस्तुपाल और वस्तुपाल का ही भाई तेजपाल मुख्य सेनापति था। इन दोनों भाइयों ने गुजरात में कई जैन मंदिर बनवायें हैं। ऐसे सुंदर मंदिरों का एक उदाहरण इस गिरनार पर्वत पर भी है। जैनों के उन्नीसवें तीर्थंकर मल्लीनाथजी का मंदिर भी 12 वीं शताब्दी का है। अंबा माता का मंदिर भी बड़ा महत्वपूर्ण माना जाता है।

यही नहीं, पास की दातार पहाड़ी पर जयमल शाहपीर की दरगाह है। सुना है कि उनके आध्यात्मिक गुरु पीर पट्टा के कहने पर वे सिंध से जूनागढ़ आये थे।

□□

16

नरसिंह मेहता

अब तो मंदिरों की नगरी में काफी घूम लिया। नीचे उतर जाएँ? नरसिंह मेहता का मंदिर देखें या न देखें, उनके बारे में कुछ बातें सुनना बहुत जरूरी हैं। वह इसलिए कि गांधीजी का प्रिय भजन "वैष्णवजन तो तेने रे कहिये जे पीड़ पराई जाणे रे", नरसिंह मेहता का रचा हुआ हैं। जिसने इतना सुंदर भजन रचा वह अवश्य ही असाधारण व्यक्ति होगा।

नरसिंह मेहता बचपन से ही 'भगत माणस' थे। दुनियादारी से मानों उन्हें कोई नाता नहीं था। वे पत्नी सहित अपने बड़े भाई-भाभी के साथ तलाजा में रहते थे। एक दिन काम करके शाम को घर लौटे और भाभी से पानी माँगा तो भाभी ने तानेबाजी शुरू कर दी। नरसिंह के दिल पर गहरी चोट लगी। उसे सौतेली माँ के कटुवचन सुनकर ध्रुव के वन में चले जाने की बात याद आई। ध्रुव ने वन में जाकर तपस्या की थी, ईश्वर के दर्शन पाये थे। नरसिंह भी घर छोड़कर वन के किसी वीरान शिवालय में बैठकर कड़ी तपस्या करने लगे। सात दिन तक न कुछ खाया न पीया। भगवान शिवजी तपश्चर्या से प्रसन्न हुए। उन्होंने नरसिंह से वरदान माँगने को कहा। नरसिंह बोले: "आपको जो प्रिय हो वही दीजिए।"

शिवजी उन्हें अपने साथ श्रीकृष्ण की कर्मभूमि द्वारिका ले गये। वहाँ श्रीकृष्ण की रासलीला का साक्षात्कार करवाया। फिर तो नरसिंह कुछ समय वहीं रह गये और काव्य रचना शुरू कर दी। जब वे तलाजा लौटे तो भाई-भाभी ने और गाँव के लोगों ने उनका सम्मान किया। नरसिंह ईश्वर भजन में ही अधिक समय बिताते थे।

भाई-भाभी पर बोझ न बनने के लिए वे अपने परिवार के साथ जूनागढ़ आ गये। जीवन-निर्वाह के लिए छोटा-मोटा काम कर लेते थे।

वे नियमित रूप से गिरनार पर्वत की तराई में दामोदर कुंड में स्नान करने जाया करते थे। एक दिन स्नान करके लौट रहे थे, तब अस्पृश्य जाति के लोगों ने उनसे अपनी बस्ती में आकर कीर्तन करने की प्रार्थना की। नरसिंह वहाँ कीर्तन करने गये। रातभर कीर्तन होता रहा। हरिनाम का उत्सव हो गया। सुबह जब घर लौटे तो देखा कि जिस मोहल्ले में उनका घर था उसके सारे लोग उनका तिरस्कार करने लगे थे। नरसिंह ने उत्तर में कहा,—"मैं छोटे कर्म करने वाला नरसिंह हूँ, मुझे तो वैष्णव प्यारे हैं। हरिजन से जो दूरत्व रखेगा, उसका जन्म व्यर्थ हो जाएगा।" इस अर्थ का एक काव्य भी उन्होंने रचा है।

नरसिंह मेहता

यहाँ नरसिंह कहना यह चाहते हैं कि हरिभक्त किसी भी कौम, धर्म या जात का हो सकता है। भक्ति में भेदभाव को स्थान नहीं है। हरि की भक्ति करने वाले सभी हरिजन हैं। दलित कौम के लिए गांधीजी ने "हरिजन" शब्द को जो अपनाया और उसे व्यापक किया उसकी मूल प्रेरणा नरसिंह के इस शब्द के प्रयोग में हैं।

भारत का सौभाग्य है कि उसे ऐसे सत्पुरुष निरंतर मिलते रहे हैं।

□□

17

जूनागढ़ के आसपास

जूनागढ़ से दक्षिण में जाएंगे। लगभग 54 किलोमीटर की दूरी पर सासण-गीर जंगल हैं। यहीं वह अभयारण्य है जहाँ सिंह, चीतल इत्यादि बिना किसी डर के घूमते हैं। इसी जंगल के अंदर ''तुलसीश्याम'' नाम का गरम पानी का कुंड है। भगवान विष्णु के प्रतीक रूप एक बड़े श्यामरंगी पत्थर, जिसे शालीग्राम कहते हैं, का विवाह तुलसी के पौधे से किया गया था। इसीलिए यह स्थान तुलसीश्याम कहलाता है।

पास ही में भीम और कुंती का मंदिर हैं। एक कहानी ऐसी है कि पाँच पांडवों में जो भीम थे उन्होंने यहाँ अपनी माता कुंती की प्यास बुझाने के लिए हल का फाल मारकर धरती से पानी निकाला था। उन्हीं की स्मृति में यह मंदिर बनाया गया है।

अब हम समुद्र किनारे की ओर बढ़ रहे हैं।यह है चोरवाड़। बहुत ही सुंदर स्थान है। जूनागढ़ के नवाबों ने यहाँ ग्रीष्म ऋतु में रहने के लिए विशाल महल बनवाया था। अब वह होटल बन गया है। इस समुद्रतट पर नारियल के बहुत से वृक्ष हैं। एक नारियल पीकर भी देखें। वाह, बहुत मीठा पानी है।

पास ही में मांगरोल है। मांगरोल विख्यात हो गया है ''शारदा मंदिर'' नाम के एक विद्यालय के कारण। कराची (पाकिस्तान) से आये हुए एक शिक्षाविद् स्वर्गीय मनसुखराम भाई ने विद्यालय शुरू किया था। विद्यालय की धरती पर पैर रखते ही पता चल जाता है कि यहाँ की बात ही कुछ ओर है। बहुत ही स्वच्छ स्थान है। रास्तों पर कंकड़ बिछे हैं। चलने में कुछ तकलीफ होती है। पूछने पर पता चला कि

इस प्रदेश में सांप बहुत हैं। ऐसे कंकड़ पर सांप तेजी से चल नहीं सकता, इसलिए रास्ते पर कंकड़ बिछा दिये गये हैं।

इसकी गौशाला भी देखने लायक है। सफाई तो ऐसी है जैसी अस्पतालों में होती है। दरवाजों पर फूलों की मालाएँ लगी हैं। बीचोबीच सुंदर रंगोली की गई है। अगरबत्तियाँ जल रही हैं। अब वाद्यों का मधुर संगीत सुनाई देता है। ऐसा वातावरण तैयार करने के बाद ही गाय को दुहा जाता है। मनसुखराम भाई कहते थे कि स्वच्छता, सुगंध और संगीत के कारण गायों का मन शांत और प्रसन्न रहता है. वे अधिक दूध देती हैं। सच ही तो है। देखते-देखते कितनी बालटियाँ भर गई!

यहाँ, पास ही में दिव है। दिव, दमण और गोवा का जो संघीय क्षेत्र कहलाता है, उसमें से दमण हम दक्षिण गुजरात में देख चुके। दिव यहाँ सौराष्ट्र में है। इरान से आये हुए पारसी पहले इसी दिव शहर में आये थे। बाद में यह पुर्तुगालियों के हाथ में आ गया था।

□□

18

सोमनाथ

समुद्र किनारे पर ही आगे बढ़ते हैं। यह है प्रभास पाटण, जहाँ सोमनाथ का विख्यात मंदिर है। इस मंदिर का सात बार विनाश हुआ, सातों बार पुनर्निर्माण हुआ। पूरे भारत में शिव के बारह मंदिर सबसे पवित्र या महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। सोमनाथ का मंदिर उन्हीं में से एक है।

कहा जाता है कि स्वयं सोम अर्थात् चंद्र ने यह मंदिर बनवाया था। चंद्र देवता की कहानी इस मंदिर से जुड़ने के कारण वह और भी पवित्र माना जाता है।

अरबों ने जब मैत्रकों की राजधानी वलभीपुर पर हमला किया था तब सोमनाथ का मंदिर भी तोड़ा था। उन दिनों इस प्रकार का इतना बड़ा मंदिर सारे देश में केवल यही था। उस समय नागभट्ट ने उसे फिर से खड़ा किया। महमूद गज़नवी ने भी मंदिर पर हमला किया था। पूरे सात दिन तक उसका सामना किया गया, लेकिन अंत में उसने मंदिर और मूर्ति, दोनों का खंडन किया और मंदिर का सारा सोना और जवाहरात ऊँटो पर लादकर ले गया। यह सन् 1026 की बात है। मंदिर का पुनः निर्माण हुआ। अलाउद्दीन खिलजी ने जब प्रभास पाटण पर कब्जा जमाया तब मंदिर और मूर्ति को ध्वंस कर डाला। फिर से मंदिर खड़ा हुआ। इस बार औरंगज़ेब के कहने पर उसको तोड़ा गया। इन्दौर की अहल्याबाई होलकर ने उन खड़हरों के पास नया मंदिर बनवाया। वर्तमान में जो मंदिर है उसे महाभेरु प्रसाद नाम दिया गया है। भारत स्वतंत्र होने के लगभग दस वर्ष बाद मंदिर की मूल योजना देखकर, उसी स्थान पर, जहाँ सबसे पहला मंदिर था, वहीं उसी प्रकार का मंदिर बनाया गया है।
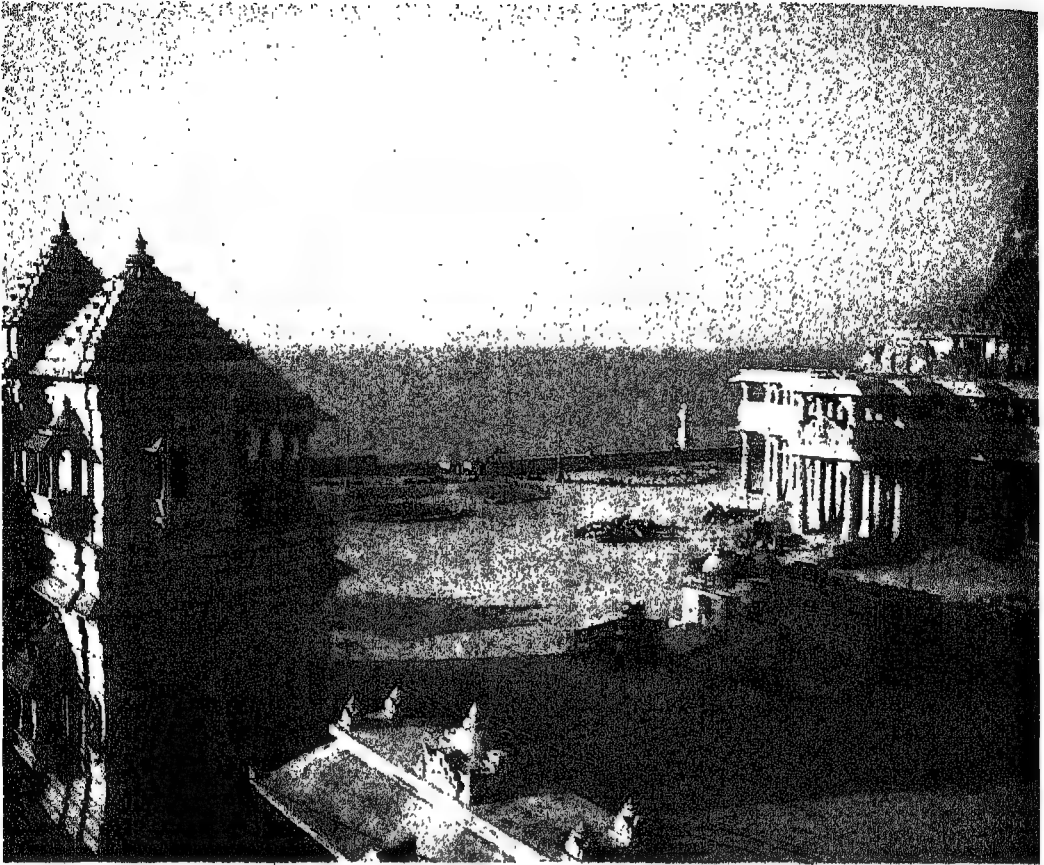
सोमनाथ का मंदिर

सोमनाथ के पास भालका तीर्थ है। यहाँ एक पीपल के पेड़ के नीचे श्रीकृष्ण विषादमय मुद्रा में बैठे थे। उस समय किसी शिकारी ने दूर से उनको हिरन समझकर तीर मारा और उनकी मृत्यु हुई। पास के त्रिवेणी घाट पर जहाँ उनके अंतिम संस्कार किये गये थे, ''देहोत्सर्ग'' नामका स्थान है। उसको भी प्रणाम कर लेते हैं। त्रिवेणी घाट पर तीन नदियाँ हैं हिरण्या, सरस्वती और कपिला। कितना आह्लादक संगम है यह। विद्वानों का कहना है कि यह घटना ईसा पूर्व 3185 की है। अर्थात् आज से पाँच हजार वर्ष से भी अधिक पुरानी।

इसके निकट एक सूर्यमंदिर भी है, लेकिन बिलकुल खंडहर की हालत में पड़ा है।

□□

19

पोरबंदर

जूनागढ़ जिले के उत्तर की ओर, समुद्र किनारे पर है पोरबंदर। इस बंदरगाह से प्राचीनकाल में अरबस्तान, अफ्रीका और इरान के साथ व्यापार होता था। आज भी, बंदरगाह होने के कारण वह एक औद्योगिक शहर बन गया है। यहाँ साबुन, सीमेन्ट और रसायन के कारखाने हैं। तेल और कपड़े की मिलें हैं। ''बॅकवोटर'' होने के कारण, समुद्री तूफानों से गोदी बच जाती है, यह इसकी विशेषता है। पोरबंदर मशहूर होने का कारण ये उद्योग नहीं है और न ही इसका ''बॅकवोटर'' है। इस शहर के साथ दो महत्त्वपूर्ण घटनाएँ जुड़ी हुई हैं। एक है प्राचीन और दूसरी अर्वाचीन। श्रीकृष्ण के बचपन के परममित्र थे सुदामा। यह नगरी उन्हीं की है। इसीलिए पोरबंदर का दूसरा नाम सुदामापुरी है। यहाँ सुदामा का मंदिर भी है। यह हुई प्राचीन बात।

और अर्वाचीन बात है गांधीजी से संबंधित। पोरबंदर में सन् 1869 में गांधीजी का जन्म हुआ था। आज वह मकान कीर्ति मंदिर कहलाता है। जिस कमरे में गांधीजी का जन्म हुआ था उसे तो देखना ही है। इसमें गांधीजी की वस्तुएँ और तसवीरें रखी गई हैं। यहाँ एक पुस्तकालय है और इधर के विशाल कक्ष में कताई होती है। बालमंदिर और प्रार्थनाकक्ष भी है। गांधीजी के पिताजी पोरबंदर के राजा के दीवान थे। इसलिए जन्म के बाद कुछ वर्ष तक बालक मोहन पोरबंदर में ही थे।

गांधीजी की पत्नी कस्तूरबा का जन्म भी पोरबंदर में हुआ था। लोग दूर-दूर से इस स्थान के दर्शन के लिए आते हैं। वैसे तो सारी दुनिया बड़ी सुंदर है। लेकिन कुछ
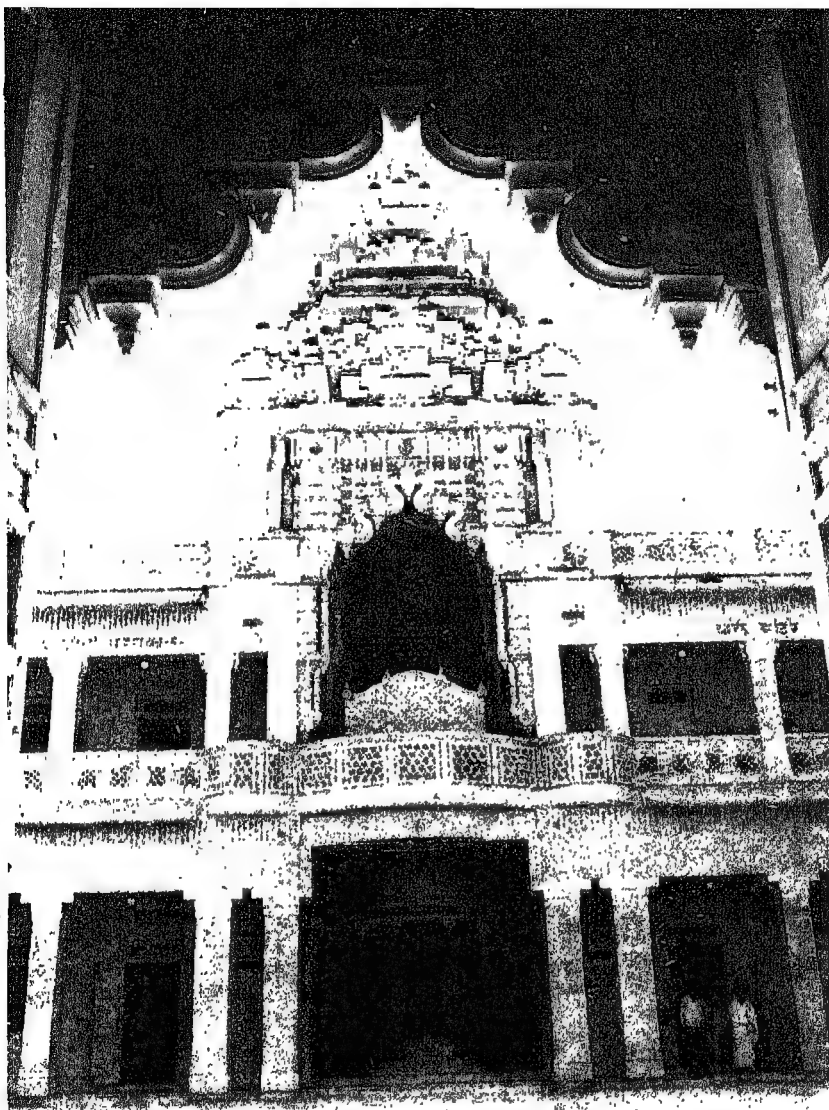
पोरबंदर कीर्ति मंदिर

स्थान ऐसे होते हैं जो किसी विशेष कारण से महत्त्वपूर्ण बन जाते हैं। अधिकतर ऐसा देखा गया है कि किसी महान व्यक्ति का जन्म, कर्म या मृत्यु किसी स्थान से जुड़े हों तो वह स्थान विख्यात हो जाता है। पोरबंदर गांधीजी का जन्म स्थान होने के कारण विख्यात हो गया, तो गुजरात की द्वारिका नगरी श्रीकृष्ण की नगरी बन गई, इसलिए विख्यात हो गई। समुद्र के किनारे ही अब हम पोरबंदर से द्वारका चलें। "द्वारिका" इसका प्राचीन नाम है।

□□

20

द्वारका

श्रीकृष्ण गोकुल-वृंदावन छोड़कर मथुरा गये, यह बात तो समझी जा सकती है, क्योंकि गोकुल-वृंदावन उनकी क्रीड़ाभूमि थी, जबकि मथुरा कर्मभूमि थी। लेकिन मथुरा भी क्यों छोड़ दिया? कहानी इस प्रकार है:

श्रीकृष्ण गोकुल से मथुरा गये तब उन्होंने दुष्ट राजा कंस का वध किया। कंस श्रीकृष्ण के मामा भी थे। दुष्ट को तो दूर करना ही चाहिए, इसीलिए श्रीकृष्ण ने कंस को स्वर्ग पहुँचा दिया था। मथुरा के खाली सिहासन पर कंस के वृद्ध पिता को बिठाया। कंस का ससुर जरासंघ बड़ा शक्तिशाली राजा था। वह कंस की तरह दुष्ट भी था। कंस की मृत्यु की खबर मिलते ही वह आगबबूला हो गया। पूरे जोश के साथ उसने मथुरा पर आक्रमण किया। कई लोगों को मार डाला। खूनखराबा करके चला गया। इस प्रकार वह बार-बार मथुरा पर हमला करता था और लोगों का संहार करता था। ऐसी परिस्थिति से दुःखी होकर श्रीकृष्ण ने सोचा:

"मेरे कारण ही लोगों को इतनी परेशानी झेलनी पड़ती है, इतने सारे लोगों की जान जाती है। मैं ही मथुरा छोड़कर कहीं दूर चला जाता हूँ।"

बस, फिर वे मथुरा छोड़कर, उस रणभूमि को छोड़कर सौराष्ट्र की ओर चल पड़े। रणभूमि छोड़ दी इसलिए श्रीकृष्ण का नाम रणछोड़जी पड़ गया।

बहुत लंबा रास्ता काटकर वे भारत के पश्चिम किनारे पर आ पहुँचे। यहाँ गोमती नदी का सागर से संगम होता है। यह स्थान श्रीकृष्ण को अच्छा लगा। यहीं

पर उन्होंने द्वारिका नगरी बसाई। बहुत ही सुंदर नगरी थी वह। कई कवियों ने इसका वर्णन किया है। लेकिन यादवों के दिमाग पर सत्ता और धन का बुरा असर पड़ा। उनको शराब पीने की खराब आदत पड़ गई। उनका व्यवहार, रहन-सहन बदल गया। श्रीकृष्ण ने उन्हें बहुत समझाया, पर शराबी का दिमाग कहाँ काम करता है? उनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई थी। आपस में लड़कर उन्होंने अपने हाथों ही अपना विनाश कर डाला। गुजराती में एक कहावत है कि "विनाशकालेविपरीत बुद्धि" अर्थात् जब मनुष्य का विनाश होना हो तब उसकी बुद्धि विपरीत हो जाती है। यादवों के किस्से में यही हुआ।

इस संहार से दुःखी होकर श्रीकृष्ण कुछ बचे हुए यादवों को लेकर तीर्थयात्रा करने निकले। प्रभास पाटण के उस सोमनाथ मंदिर में गये, जो हम भी देख चुके हैं। यादवों ने यहाँ समुद्र में स्नान किया। फिर दिमाग तो बिगड़ ही गया था इसलिए खूब शराब पी। शराब के नशे में लड़ाई शुरू हो गई। बचे हुए यादव इस आपसी लड़ाई में खतम हो गये। इस प्रकार सारे यादव खत्म हो गये।

यह सब देखकर श्रीकृष्ण को बहुत दुःख हुआ। वे खिन्न मन से, एक पीपल के पेड़ के नीचे अपनी जीवनलीला समाप्त करने के लिए बैठ गये। उसी समय उन्हें शिकारी का तीर लगा और उनकी मृत्यु हुई।

कहते हैं कि श्रीकृष्ण की विदा के साथ ही सोने की द्वारिका नगरी समुद्र में समा गई। बाद में यह नगरी फिर से बसी, फिर समुद्र में समा गई, ऐसा पाँच बार हुआ। आज जो द्वारका है, वह छठी बार बसी हुई एक नगरी है। इस प्रदेश में की गई खुदाई से जो अवशेष मिले हैं उन्हीं से इस बात का प्रमाण मिलता है।

द्वारका हमारे देश के चार मुख्य तीर्थस्थानों में से एक है। ये तीन हैं–बद्री-केदार, रामेश्वर और जगन्नाथपुरी।

द्वारका में सबसे बड़ा मंदिर रणछोड़रायजी का है। यही द्वारकाधीश मंदिर कहलाता है। कोई 2500 वर्ष पुराना यह मंदिर है। इस पाँच मंजिलों वाले मंदिर का शिखर बहुत ही ऊँचा है और अत्यंत सुंदर है। भीतर जाने के लिए जो दरवाजा है उसे स्वर्ग द्वार कहते हैं। आइए, हम स्वर्ग द्वार से अंदर चलें। भीतर 60 खंभे हैं। और यह देखो, रणछोड़रायजी की मूर्ति। काले पत्थर से बनी है। मूर्ति के चार हाथ हैं। एक में शंख, दूसरे में चक्र, तीसरे में गदा और चौथे हाथ में कमल का फूल है
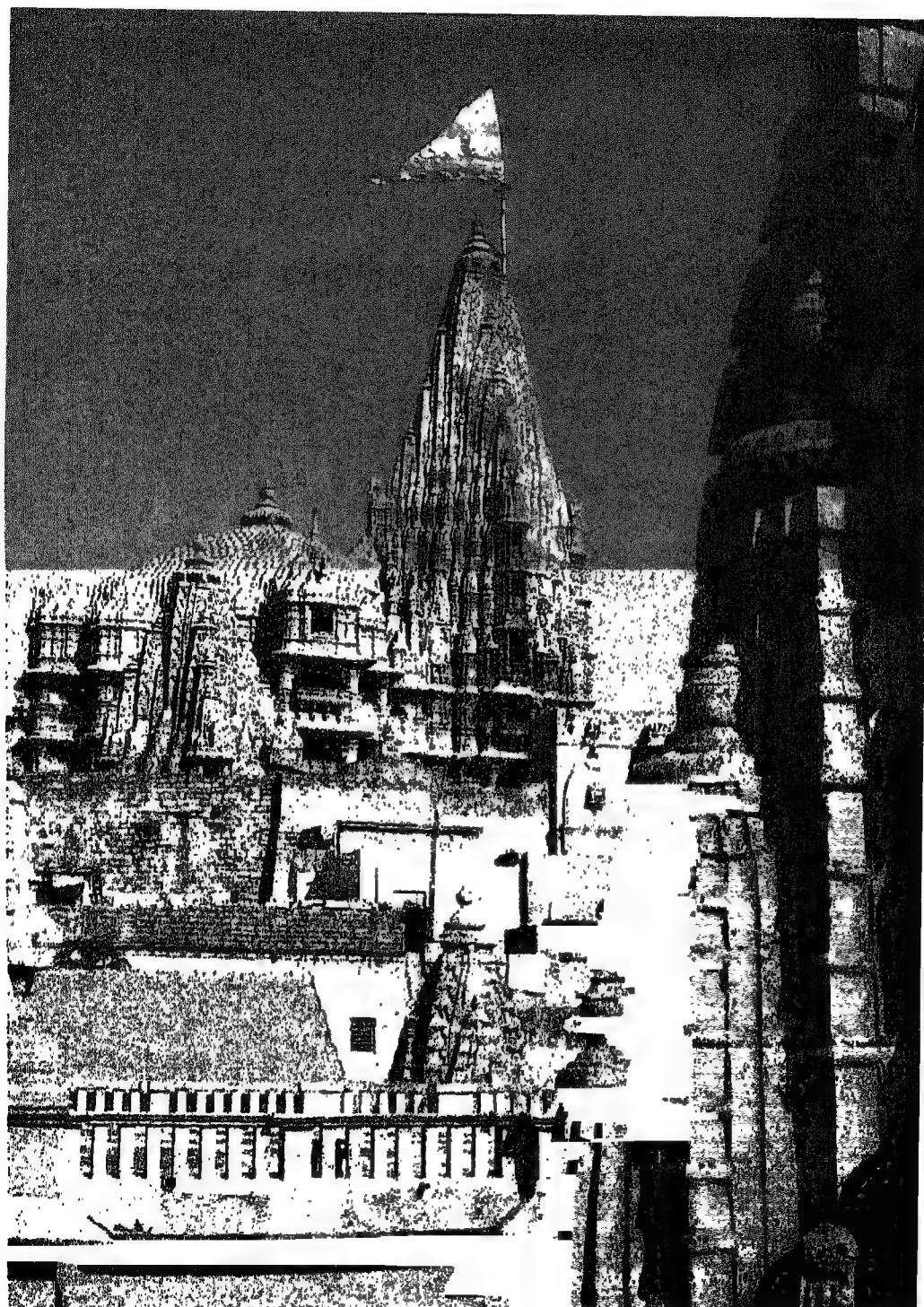
द्वारका में रणछोड़राय जी का मंदिर

मंदिर के इस भाग को निजमंदिर कहते हैं। घंटनाद करके हम मोक्ष द्वार से बाहर निकलेंगे। कितनी रोचक बात है। मंदिर में प्रवेश करना स्वर्ग में प्रवेश करने के बराबर माना गया है और मंदिर से बाहर निकलना मोक्ष प्राप्त करने के बराबर।

बाहर गोमती नदी बह रही है। उस के किनारे बहुत सारे मंदिर हैं। जन्माष्टमी के दिन इस नगरी की रौनक देखनी चाहिए। बड़ी धूमधाम से कृष्णजन्म मनाया जाता है।

द्वारका में जगद्गुरु श्रीमद् शंकराचार्य की शारदापीठ है। उन्होंने भारत में चार मुख्य मठों की स्थापना की थी। इनमें से एक द्वारका में है। यहाँ हिंदू धर्म की शिक्षा दी जाती है। दूर-दूर से लोग संस्कृत पढ़ने आते हैं।

द्वारका से अब हम नाव में बैठकर शंखोद्धार द्वीप जाएँगे। यहाँ से लगभग 32 किलोमीटर की दूरी है। इस द्वीप में शंखासुर नामका एक असुर रहता था। श्रीकृष्ण ने उसका वध किया था। भगवान के हाथों से मृत्यु मिलना अर्थात् मोक्ष मिलना, इसलिए इस द्वीप को शंखोद्धार–शंख का उद्धार कहते हैं। यहाँ भी एक कृष्ण-मंदिर है।

द्वारका के पास नागेश्वर महादेव का मंदिर भारत के बारह बड़े ज्योतिर्लिंगों में गिना जाता है। गोपी तालाब भी पवित्र स्थान है।

इस प्रकार द्वारका ऐतिहासिक एवं धार्मिक दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण है। अब उद्योग के क्षेत्र में भी उसका विकास हुआ है। यहाँ सीमेन्ट का कारखाना है। कॉष्टिक सोडा और रसायन उत्पादन के कारखाने भी हैं। रासायनिक खाद भी बनाया जाता है।

21

जामनगर

सीमेन्ट और नमक के उद्योग ज़ामनगर में भी हैं। जामनगर की विशेषता उसके विकासशील वर्तमान और गौरवपूर्ण अतीत के कारण है। वैसे शहर बड़ा सुंदर है। इसे सौराष्ट्र का पेरिस कहते हैं। इसकी सुंदरता का यश जामनगर के राजा जाम रणजीत सिह जी को देना चाहिए। सन् 1540 में जाड़ेजा राजपूत जाम रावल कच्छ से सौराष्ट्र में आए और यह नगरी बसाई। उन दिनों सौराष्ट्र में छोटे-छोटे राज्य हुआ करते थे। ऐसे ही एक नवानगर नामके राज्य की राजधानी थी जामनगर। तब से लेकर स्वातंत्र्य प्राप्ति तक, लगभग चार सौ वर्ष तक, वह राजधानी बनी रही।

जैसा दूसरे कई शहरों में है उसी तरह जामनगर के भी चारों ओर किलाबंदी हैं। उसके कई दरवाज़े थे। सन् 1914 में जाम रणजीत सिंह जी के शासनकाल के दौरान शहर का चेहरा बदल गया। विशाल रास्ते बने, बड़े-बड़े चौराहे बने, प्रभावशाली इमारते बनीं। इन सबके कारण उसकी पेरिस से तुलना होती है।

जामनगर में पुरानी और नई परंपरा क़ा सुंदर समन्वय़ है। सबसे पहले हम लखोटा महल और कोठा बैशन देखने चलते हैं। पुराने जामनगर शहर के मध्य में रणमल सरोवर है और उसके बीच में एक द्वीप है। इसी द्वीप पर लखोटा महल है। यह इमारत इतनी विशाल है कि वह किले का काम भी करती है। इसमें एक हज़ार सैनिक रह सकते हैं और किले की दीवार की आड़ से दुश्मनों के साथ लड़ सकते हैं इस महल में और एक खूबी थी। यहाँ एक पुराना कुआँ है और उसके बाहर की

जमीन में एक छेद बनाया गया है। उस छेद में फूक मारने से कुएँ से पानी बाहर आ जाता है। है न करामात! घड़े पर रस्सी बांधकर कुएँ से पानी खींचने का परिश्रम ही नहीं करना पड़ता। अब तो इसे संग्रहालय बना दिया गया है। इसमें 9 वीं शताब्दी से लेकर 18 वीं शताब्दी तक के अत्यंत सुंदर शिल्प एवं चित्र प्रदर्शित किये गये हैं। पास की बरडो पहाड़ी के घुमली, चोटीला, पिंडारा, गधावी जैसे गाँवों से प्राप्त पुरातत्व की दृष्टि से मूल्यवान अवशेष इस संग्रहालय में रखे गये हैं। नर्मदा नदी की घाटी से पाषाण युग की कुछ वस्तुएँ मिली हैं, वे भी यहीं हैं। सौराष्ट्र के मिट्टी के पात्र, मूल पांडुलिपियाँ, तांबे की तकतियाँ और शिलालेख भी हैं।

रणमल सरोवर के किनारे कोठा बैशन में जामनगर का शस्त्रसरंजाम रहता था। यह लखोटा जैसी ही प्राचीन इमारत है। इस शहर में मंदिर इतने अधिक है कि इसे "छोटा काशी" भी कहते हैं।

जामनगर के दर्शनीय स्थानों में एक है वहाँ का श्मशान। बात कुछ विचित्र लगती है। श्मशान में तो मुर्दे जलाये जाते हैं। उसके साथ भूतप्रेत की बातें जुड़ी होती हैं। बड़ी भयानक होगी वह जगह। लेकिन नहीं, जामनगर का श्मशान बहुत ही शांत और सुंदर स्थान है। एक मंदिर की तरह इसे देख लें।

श्मशान का नाम है माणेकभाई मुक्तिधाम। नाम भी कितना अच्छा है, 'मुक्तिधाम'। मौत से डरने की कोई जरूरत नहीं है। यहाँ तो संसार से मुक्ति मिलती है। हाँ, यदि हमने सदाचार से जीवन बिताया है तब तो जन्म-मृत्यु के चक्र से ही मुक्ति मिल जाएगी। हिंदुओं में मुर्दे को जलाने के बाद नहाने का रिवाज होता है और श्मशान में पानी का प्रबंध न होने के कारण लोग अपने-अपने घर जाकर नहाते हैं। लेकिन जामनगर के इस मुक्तिधाम में नहाने के लिए गरम और ठंडे पानी का प्रबंध है। अब आगे चले।

सूर्य की किरणों से त्वचा के और शरीर के कई रोग दूर होते हैं, यह तो हम जानते हैं। उन किरणों में विटामिन "डी" होता है। जामनगर में एक "सोलेरियम" बनाया गया है। यही पर सूर्य किरणों से चिकित्सा होती है। यहाँ का आयुर्वेद विश्वविद्यालय भी मशहूर है। आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र में औषधीय वनस्पतियों का बहुत बड़ा संग्रह है।

अब हमें कच्छ चलना है। लेकिन एक बार यह जामनगर के बारे में छपा हुआ परचा देख लें। कुछ छूट तो नहीं गया?

चांदी बाजार में जैन मंदिर हैं, सुंदर शिल्प से सजा हुआ खंभालिया द्वार है, जाम साहब का विभाविलास महल और प्रताप विलास महल है। इन महलों को देखने के लिए खास अनुमति लेनी पड़ती है। इतना समय तो अपने पास नहीं है, इसलिए सब कुछ देखने का लोभ त्यागते हैं और आगे चलते हैं। जाते-जाते यहाँ की छुरी, सुपारी काटने की "सूड़ी", कुंकस और सुरमा तो लेना ही है। जामनगर का बंधेज भी बड़ा मशहूर है, पर महंगा भी है इसलिए खरीदने की हिंमत नहीं पड़ती। बंधेज कच्छ में भी मिल जाएगा, वहीं देख लेंगे। तो अब चलें।

□□

22

कच्छ

हम कच्छ की ओर जा रहे हैं। दोनों तरफ सूखी ज़मीन है। इसमें खार का प्रमाण इतना अधिक है कि कुछ उग नहीं सकता। इसीलिए यह रेगिस्तान कहलाता है। कच्छ का अधिकतर भाग रेगिस्तान है। एक हिस्से में बड़ा रेगिस्तान है, दूसरे में छोटा। इसे गुजराती में ''कच्छनुं मोटुं रण'' तथा ''कच्छनुं नानुं रण'' कहते हैं।

कच्छ का छोटा रेगिस्तान ''जादुईनगरी'' है। सारा प्रदेश उजड़ा हुआ और वीरान है। अक्टुबर से जून महीने तक यहाँ इतनी धूप होती है, मानों आकाश से आग बरस रही हो। सारा वातावरण भठ्ठी की तरह तप जाता है। कोई चीज़ स्थिर दिखाई नहीं देती। आकार टेढ़े-मेढ़े और कभी-कभी तो हवा में तैरते हुए दिखाई देते हैं। धरती पर चारों ओर पानी-सा नज़र आता है। वास्तव में यह पानी नहीं होता, मृगजल होता है। अर्थात् पानी का केवल भ्रम होता है।

इस प्रदेश में जंगली गधे बहुत हैं। ये गधे राष्ट्र की संपत्ति हैं। तभी तो कच्छ का छोटा रेगिस्तान अभयारण्य घोषित किया गया है। ये गधे जब मृगजल से छाई हुई ज़मीन पर दौड़ते हैं तो लगता है कि समुद्र के झगमगाते पानी पर दौड़ रहे हों!

इस रेगिस्तान के बीच में कहीं-कहीं टीले हैं। इन्हें द्वीप या ''बेट'' कहते हैं। बारिश के दिनों में खारी ज़मीन पानी से लथपथ रहती है। ये टीलें पानी से ऊपर हैं। टीलों पर केवल बबूल के पेड़ दिखाई देते हैं। थोड़ी बहुत घास भी उग आती है। कुछ द्वीपों में खेती भी होती है।
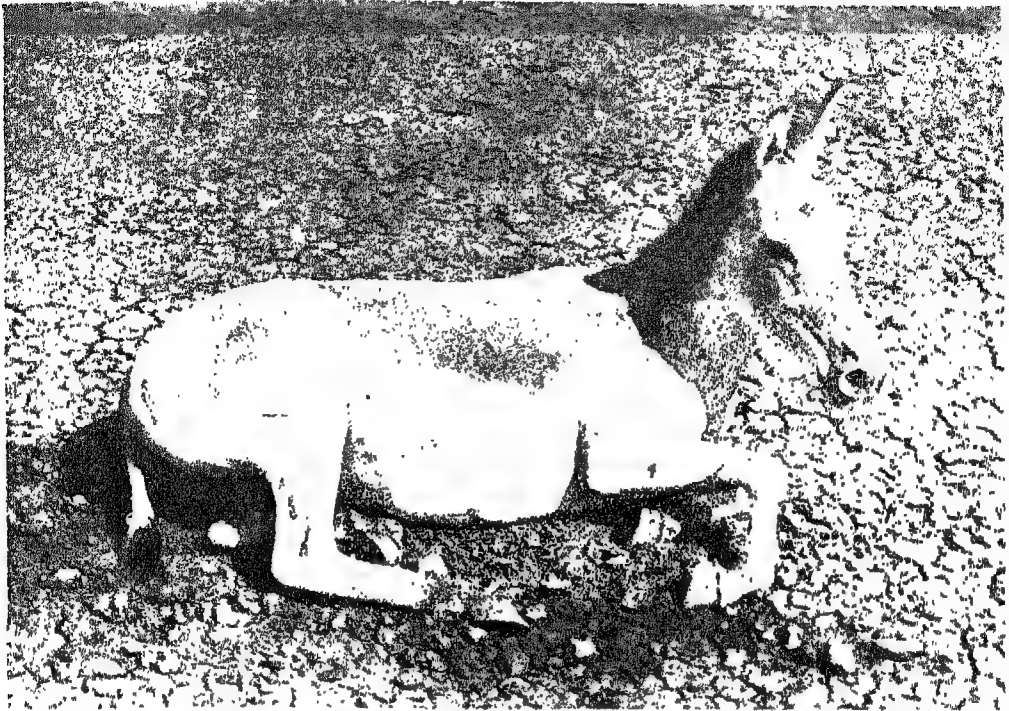
कच्छ का जंगली गधा

जंगली गधे दिन में तो रेगिस्तान में घूमते रहते हैं रात के समय द्वीप पर आ जाते हैं। वे रेगिस्तान का खारवाला घास खाते हैं, इसलिए बहुत ही ताकतवर हैं। रेगिस्तान के ऊँट को भी देखिए। इनमें कितनी अधिक शक्ति है! ऊँट तो रेगिस्तान का जहाज कहलाता है। खारे घास के कारण कच्छ का पशुधन उत्तम है। है न कुछ नई दुनिया!

जहाँ बड़ा रेगिस्तान है, उसकी कहानी भी इतनी ही रोचक है। दूर-दूर तक कुछ भी नहीं दिखाई देता। लेकिन सर्दी की ऋतु में यह स्थान बिलकुल बदल जाता है। ऊपर से सफेद लेकिन जब उड़ते हैं तब केसरी-गुलाबी सुरखाब पक्षी कुछ महीनों के लिए यहाँ अपना घर बना लेते हैं। उनकी एक नई नगरी बस जाती है। उनके घोंसले बनते हैं, अंडे पकते हें, चूज़े निकलते हैं। सर्दी कम होते ही परीकथा की किसी जादुईनगरी की तरह सबकुछ गायब हो जाता है।

ये सुर्ख़ाब बहुत दूर के बर्फीले प्रदेश से आते हैं और उन्हें देखने के लिए दूर-दूर से लोग भारत आते हैं। वैसे उनकी नगरी तक पहुँचना आसान नहीं है। कई दिनों

तक ऊँट पर सफर करते रहिए, तब कहीं उनकी झलक दिखाई देगी। वे इंसानों की दुनिया से दूर ही रहना पसंद करते हैं।

कच्छ का प्रदेश एक ओर रेगिस्तान से तो दूसरी ओर समुद्र से घिरा हुआ है। बारिश के दिनों में जब रेगिस्तान की धरती गीली हो जाती है तब कच्छ समुद्र के बीच स्थित द्वीप जैसा लगता है। कछुए के आकार का द्वीप।

कंडला-मांडवी

समुद्र किनारे का कंडला बंदरगाह गुजरात का सबसे बड़ा बंदरगाह है। सन् 1930-31 में कच्छ के महाराजा खेंगारजी ने इसे विकसित करने का प्रयत्न किया था। आज यहाँ से काफी माल बाहर भेजा जाता है। मांडवी भी मध्यम कक्षा का बंदरगाह है। सुना है, इधर से तस्करी बहुत होती है। डर लगता है न? वैसे समुद्र किनारा काफी विशाल और सुंदर है।
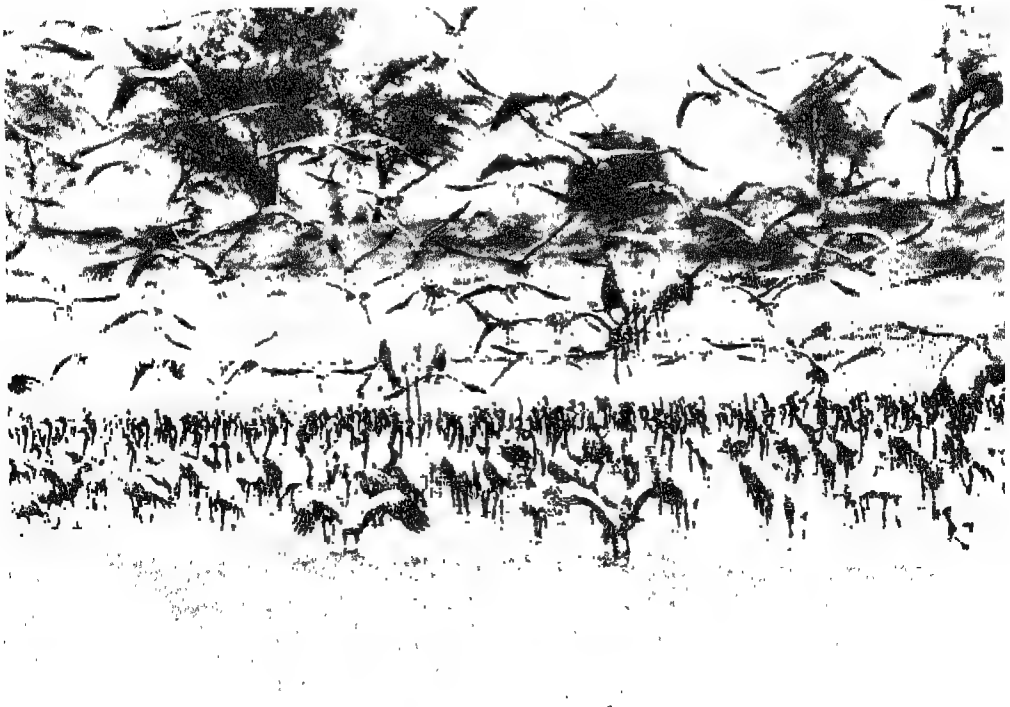
सुर्खाब पक्षियों की नगरी

नल सरोवर

नारायण सरोवर

कच्छ के उत्तर में समुद्र तट के पास नारायण सरोवर है। यह सरोवर बड़ा पवित्र माना जाता है। भारत में कुल पाँच पवित्र सरोवर कहे गये हैं, उत्तर में कैलाश पर्वत का मानसरोवर, दक्षिण में पंपा सरोवर, पूर्व में भुवनेश्वर का बिंदु सरोवर, राजस्थान का पुष्करराज और पश्चिम में यह नारायण सरोवर तीर्थस्थान माना जाता है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन यहाँ मेला लगता है। कच्छ, राजस्थान, सौराष्ट्र और गुजरात के काफी यात्री यहाँ एकत्रित होते हैं।

मेले और त्यौहार का ही ऐसा समय होता है जब हमें उस प्रदेश की ग्राम्य ज़नता अर्थात् मूल आत्मा को देखने का मौका मिलता है। यहाँ हिंदू और मुसलमान, दोनों धर्मों के काफी लोग हैं। उत्तर की सरहद पर पाकिस्तान है। उत्तरी कच्छ की बन्नी कौम मुसलमान है। उनका नृत्य-संगीत, उनके घर, बर्तन, उनके कपड़े, आभूषण, उनके कपड़ों पर कढ़ाई तो ज़रा देखिए। लोककला की इतनी समृद्धि देखकर आप दंग रह जाएँगे।

कच्छ का बंधेज भी इतना ही मशहूर है। गरम शालों पर बंधेज का काम

कच्छ का हस्तशिल्प

आजकल इतना लोकप्रिय हो गया है कि केवल हमारे देश में ही नहीं, विदेशों में भी महिलाएँ इन्हें गौरव के साथ ओढ़ती हैं।

भुज

कच्छ का मुख्य शहर भुज है। अन्य प्राचीन नगरों की तरह इसके भी चारों ओर किला बंदी है। भुज का संग्रहालय, आयना महल, प्राचीन महल देखने लायक हैं।

भुज का बाज़ार देखते हैं। छोटी-छोटी गलियाँ हैं। दोनों तरफ दुकानें। दिल्ली या बम्बई में जो वस्तुएँ बड़े-बड़े वातानुकूलित "स्टोर" में मिलती हैं, वे यहाँ रास्ते पर बिकती हैं। हम भी कुछ बन्नी-कढ़ाई की वस्तुएँ खरीद लेते हैं। सचमुच, बहुत ही सस्ता है। लोग भी कितने सरल और हसमुख हैं। इनकी भाषा गुजराती से अलग लगती है। हाँ, अलग ही है। कच्छ की एक ओर सिंध है और दूसरी ओर गुजरात, इसलिए भाषा में भी दोनों का मिश्रण है। इसे "कच्छी" कहते हैं। वैसे यह "बोली" है, इसकी अपनी लिपि नहीं है। कच्छी लिखनी हो तो गुजराती लिपि में लिखनी होती है।

भुज के पास ही वह अंजार शहर है जहाँ कई बार भूकंप हुए हैं और सारा शहर ध्वस्त हो चुका है। अंजार के पास जेसल-तोरल की समाधि है। जेसल-तोरल की कहानी बड़ी रोचक है।

□□

23

जेसल-तोरल

प्राचीन काल की बात है। गुजरात के इस कच्छ प्रदेश में रायघण नाम का एक राजा राज करता था, उसके सबसे बड़े पुत्र के बेटे का नाम जेसल था। वह बचपन से ही बड़ा निडर, साहसी और शरारती था। बड़ा होकर वह एक मशहूर लुटेरा बन गया, लोग उससे डरने लगे।

एक बार जेसल की भाभी ने उसे ताना मारते हुए कहा कि यहाँ की बस्ती को तुम इतना सता रहे हो, हिम्मत हो तो सोरठ के सांसतिया काठी के घर जाओ। उनकी पत्नी तोरल चांद का टुकड़ा है। उनकी घोड़ी का नाम भी तोरल है। ऐसी बढ़िया घोड़ी दुनिया में किसी के पास नहीं होगी और काठी की तलवार भी बरामदे में लटक रही होगी। सच में बहादुर हो तो इन तीनों को ले आओ।

जेसल ने जोश में आकर कहा कि देख लेना भाभी, इन तीनों को न ले आऊँ तो मेरा नाम जेसल नहीं।

एक रात जेसल सांसतिया काठी के घर जा पहुँचा। घना अंधेरा था। लगता था, जैसे आकाश से अंधकार बरस रहा हो। जेसल लाल लुंगी पहने और काला कंबल ओढ़े मानो अंधेरे में घुलमिल गया था। उसके एक हाथ में तलवार थी और दूसरे हाथ में दीवार में सेंध लगाने का औजार था।

मकान की पिछली दीवार में जेसल ने छेद करना शुरू किया। धीरे-धीरे दीवार टूटने लगी। छेद बड़ा होने लगा। घर के भीतर से भजन की आवाज आ रही थी। पर इस सबसे बेखबर जेसल अपने काम में जुटा रहा। जब छेद काफी बड़ा हो गया, तो वह उसमें से होकर भीतर चला गया।

वह घोड़े बांधने की जगह थी। एक फुर्तीली घोड़ी वहाँ खड़ी थी। उसकी आँखें अंगारों की तरह चमक रही थी। पराये आदमी की गंध पाकर वह ज़ोर से हिनहिनायी।

सांसतिया संत पुरुष था। दिन-रात भजन और प्रभु-भक्ति में लीन रहता था। इस समय भी कीर्तन चल रहा था। भजन समाप्त हुआ। घोड़ी फिर हिनहिनायी। सांसतिया ने अपने आदमी से कहा—भाई, जाकर पता लगाओ कि यह घोड़ी आज इतनी क्यों हिनहिना रही है? कहीं सांप-बिच्छू तो नहीं निकल आये?

यह सुनकर घोड़ी के खूंटे के पास जो घास बिछी थी, उसके नीचे जेसल छिप गया। उस आदमी ने आकर देखा, तो घोड़ी ने खूंटा ही उखाड़ दिया था। उसने एक पत्थर से वह खूंटा फिर से जमीन में गाड़ दिया और घोड़ी को बांधकर चला गया। इधर वह खूंटा जेसल की हथेली के आरपार निकल गया। उसे बेहद पीड़ा होने लगी। खून की धारा बह निकली पर जेसल के मुँह से आह तक नहीं निकली। वह चुपचाप पड़ा रहा।

भजन समाप्त होने पर आरती हुई। प्रसाद बांटा गया। सभी को प्रसाद देने के बाद थाल में एक आदमी के हिस्से का प्रसाद बच गया। यह देखकर सांसतिया ने कहा कि यहाँ एक आदमी और होना चाहिए। वह उसी के हिस्से का प्रसाद है। उसे ढूंढो।

ढूंढते-ढूंढते एक आदमी उस घोड़ी के पास पहुँच गया। वहाँ देखा तो घास खून से लथपथ थी। घास हटायी तो नीचे जेसल और उसकी हथेली के आरपार खूंटा। उसने खूंटा खींचकर बाहर निकाला। जेसल खड़ा हो गया। उस आदमी ने आवाज देकर सांसतिया और उसकी पत्नी तोरल को बुलाया। दोनों वहाँ आये। जेसल तो तोरल का रूप देखता ही रह गया। तभी सांसतिया ने उससे पूछा—आप कौन हैं?

जेसल बोला—राजपूत।

सांसतिया ने आगे पूछा—आपका नाम, स्थान?

जेसल ने जवाब दिया—स्थान कच्छ, नाम जेसल।

जेसल का नाम सुनकर सारे भक्तजन कांप उठे। पर सांसतिया ने शांत स्वर में फिर पूछा—क्यों आये हो?

जेसल बोला—चोरी करने।

हैरान होकर सांसतिया ने पूछा—किस चीज की?

उसने जवाब दिया—सांसतिया की पत्नी तोरल, उसकी घोड़ी और तलवार की।

सांसतिया ने जेसल के हाथ की ओर देखकर पूछा—यह क्या हुआ? जेसल ने बताया कि जब वह घास के नीचे छुपा था, तब लोहे का खूंटा उसकी हथेली के आरपार निकल गया था।

सांसतिया जेसल की हिम्मत और सहनशक्ति पर खुश हो गये। पर उन्हें दुःख हुआ कि इतना शक्तिशाली पुरूष गलत रास्ते पर चला गया है। उसे यदि सही रास्ते पर लाया जाये, तो उसमें उसका कल्याण होगा और दूसरों का भी। वे जानते थे कि उनकी पत्नी तोरल पतिव्रता नारी है। वह त्याग और ममता की देवी है। शायद तोरल जेसल को बदल सके, इस शैतान को मानव बना सके। उन्होंने अपनी पत्नी की ओर देखा। तोरल समझ गयी। उसने आँखों से सहमति दे दी।

सांसत्तिया बोले की आज दूज की रात है, अतिथि खाली हाथ नहीं जा सकते। यह लो मेरी घोड़ी और तलवार। फिर तोरल से कहा कि सती तोरल, इनको संभालना और जब तुम दोनों का मन करे तब भजन गाने चले आना।

जेसल आश्चर्य से देखता रह गया। वह समझ नहीं पाया कि यह सच है या सपना है।

खैर, उसने तोरल को घोड़ी पर बैठने के लिए कहा। तोरल बोली कि बेचारी घोड़ी पर इतना बोझ क्यों डालते हो? आप बैठिए। मैं साथ-साथ दौडूंगी।

सुबह होते-होते घोड़ी पर सवार जेसल और साथ में दौड़ती हुई तोरल नवानगर की खाड़ी के किनारे पहुँचे। नाव तैयार खड़ी थी। तीनों नाव में बैठ गये। नाव चल पड़ी। जेसल गर्व से फूला नहीं समा रहा था, पर तोरल के शांत और पवित्र चेहरे को देखकर जेसल को अपने आप से घृणा होने लगी।

अचानक समुद्र में भयानक तूफान उठा। नाव डूबने-उतरने लगी। बीच समुद्र में उसे बचाने का कोई उपाय नहीं था। पलभर पहले का साफ आकाश काले बादलों से घिर गया।

*जेसल का चेहरा पीला पड़ गया। उसे अपनी मौत का डर लगा। उसने देखा तो तोरल शांत बैठी थी। उसके चेहरे पर भय की रेखा तक नहीं थी। कायर जेसल रो उठा। बोला– तोरल देवी, मुझे बचाओ।

तोरल हंसकर बोली– बहादुर लुटेरा तूफान से डर रहा है?

जेसल सूखे पत्ते की तरह कांप रहा था। वह तोरल के पैरों को पकड़कर गिड़गिड़ाया– मुझे बचा लो तोरल देवी।

तोरल बोली–धर्म को याद करो, अपने पापों को याद करो। मैं तुम्हारी नाव को डूबने नहीं दूँगी। जल्दी करो। देखो, जैसे तुम्हें अपना जीवन प्रिय है, वैसे ही दूसरों को भी अपनी जिंदगी प्यारी होती है। तुमने कितनी जानें ली हैं? कितने पाप किये हैं? ईश्वर से माफी मांग लो।

जेसल बिलख कर बोला– मैंने पाप ही पाप किये हैं। कितने पाप गिनाऊँ मैंने लोगों के मुँह से पानी तक छीन लिया है। बारातें लूटी हैं। घोड़ी पर सवार दूल्हों को तलवार के एक झटके से मार डाला है। सिर पर जितने बाल होते हैं, उनसे भी अधिक पाप मैंने किये हैं। मुझे माफ कर दो, ईश्वर मुझे बचा लो। तोरल देवी, मुझे बचा लो।

धीरे-धीरे तूफान थम गया। आकाश स्वच्छ हो गया। नाव स्थिर हो गयी। मानो समुद्र देवता ने जेसल का प्रायश्चित्त मान लिया हो। जेसल मौत की भयानकता को पहचान गया। जीवन की मधुरता को जान गया। तोरल देवी ने उस शैतान को इंसान बना दिया। एक अच्छा इंसान।

जेसल-तोरल का नाम आज भी गुजरात के कोने-कोने में गूँजता है।

□□

24

वापसी

गुजरात के इस छोर से यदि आगे बढ़ने की कोशिश करेंगे तो हम पाकिस्तान में पहुँच जाएँगे और हमें बिना पासपोर्ट, बिना विज़ा के प्रवेश करने के आरोप में गिरफ्तार किया जाएगा।

इसलिए अब यहीं से "अबाउट टर्न" याने "पीछे मुड़"। जिस रास्ते से आये थे उसी रास्ते से यदि लौटें तब तो हमें पूरे एक महीने की छुट्टी और लेनी पड़ेगी और उधर बम्बई में स्कूल खुल जाएँगे। तो क्या करें? अब गुजरात की तेज़ बसों को टा-टा कहकर रेल में सफर करेंगे। भुज से मीटरगेज की छोटी ट्रेन राजकोट पहुँचा देगी। वहाँ से मीटर गेज की और एक छोटी ट्रेन अहमदाबाद पहुँचा देगी और अहमदाबाद से ब्राडगेज की बड़ी ट्रेन बंबई पहुँचा देगी। अहमदाबाद में सन् 1864 में पहली बार रेल आई थी। आज तो ट्रेनें ऐसे दौड़ रही हैं मानों पृथ्वी की उत्पत्ति हुई तबसे उन्हें दौड़ने की आदत हो गई हो! हमें भी उसी रफ्तार से आगे बढ़ना होगा और स्कूल खुलने से पहले बंबई पहुँचना होगा।

रास्ते में गुजरात और महाराष्ट्र के "हाई-वे" दिखाई देंगे। उस पर दौड़ती हुई बाबुल-नीतु की जीप भी शायद दिखाई दे। यदि ऐसा हो तो उन्हें धन्यवाद देना नहीं भूलना। उन्हीं की प्रेरणा से तो हम गुजरात में घूम आए हैं।

□□

On the Eve

Though a bitterly contested election was in prospect for 1896, plain people went quietly about their business. Nature plodded her accustomed round as if nothing were amiss.

By George H. Morse, Auctioneer.

STANDING
WOOD
AT
AUCTION!
In NORWOOD.

Will be sold at Auction

WEDNESDAY, Jan. 5, '95 at 1 p.m.

Wood standing on ten acres of land west from the house of [illegible] Fisher

The wood is Oak, Birch and Maple

Lot of Cedar Posts

Good access to lot up Fisher's Avenue from Walpole Street. Terms at Sale.

[illegible]
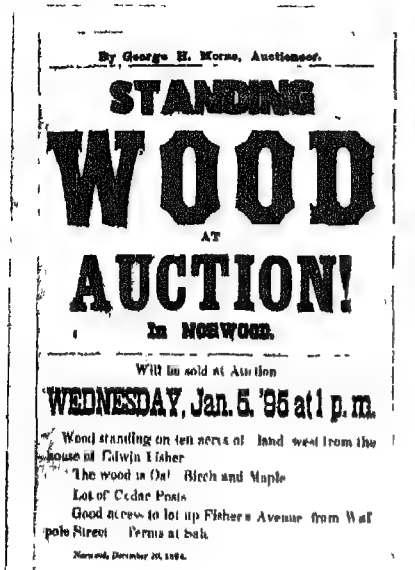
Harper's Weekly, Jan 11, 1896
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Wood Auctions were held in New England.

The river boats dropped downstream to tie up at the foot of Canal Street, New Orleans.

Courtesy, Board of Commissioners of the Port of New Orleans, La

Hammock and garden chairs were set out on the neat lawns of serene Mid-Western homes.

Courtesy, Mr Myron F Henkel, Springfield, Ill

National Issues

Gold was the sole medium of exchange whereby a sound economy could be maintained. Silver was the edged tool with which Socialists would bring the nation to ruin. On the other hand, gold was the sinister fetish which gave power to Wall Street and the Trusts: Silver was the poor man's friend. On these simplifications of the true issues, the Republican and Democratic parties took their stand, nominated candidates and fought the campaign.

The depression years had been years of Democratic administration. When the Republican Party held its convention that June in the St. Louis auditorium shown *right*, Mark Hanna boasted that any Republican could be elected.
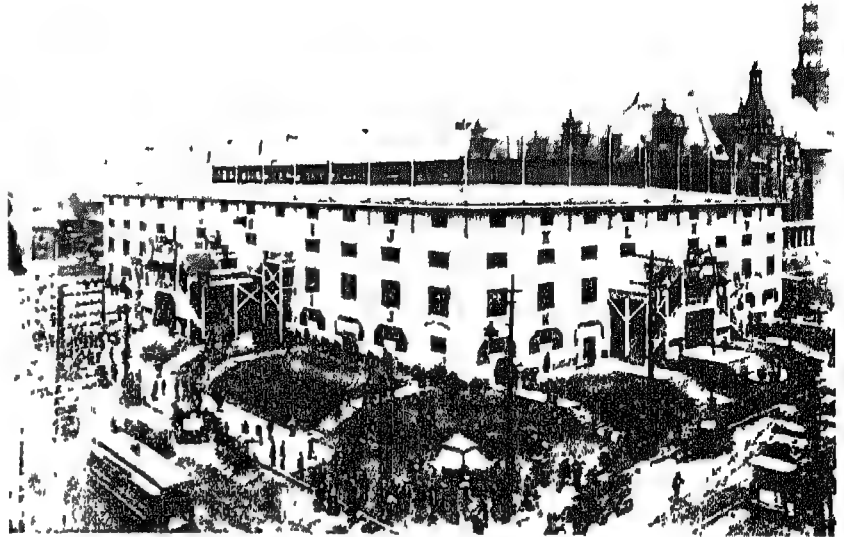
Courtesy Missouri Historical Society, St. Louis
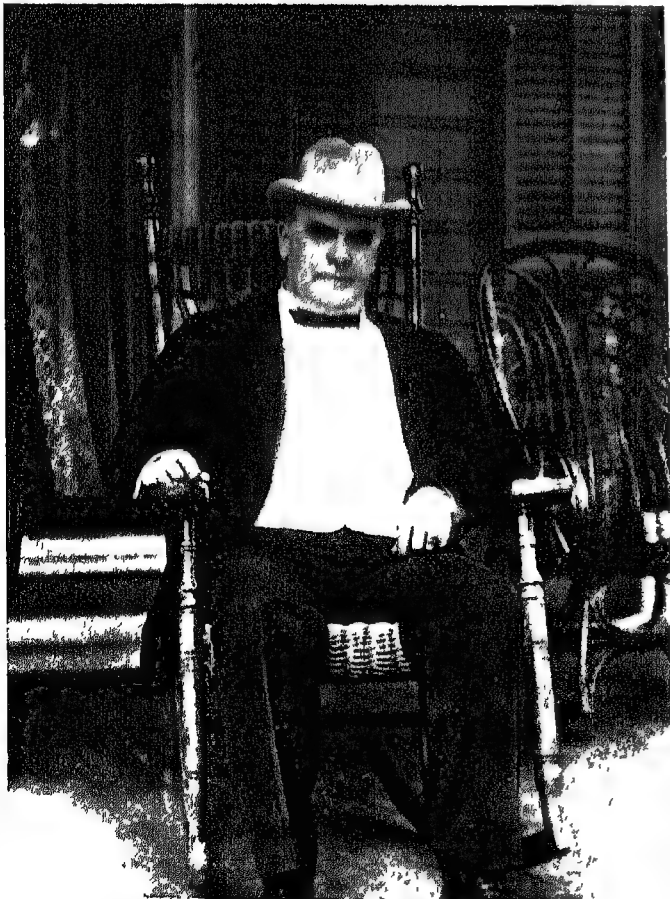
Courtesy, Scribner Art File

Since 1890 Hanna had been grooming his friend, William McKinley, for the nomination; by shrewd management before the convention met, he won nomination for his friend on the first ballot. McKinley proposed to make a "front porch" campaign.

Cross of Gold

Three weeks later, when the Democrats held their convention at Chicago, it was clear that silver sentiment would sweep the convention Delegates committed to free coinage of silver controlled the committees, but there was no outstanding and inevitable candidate.
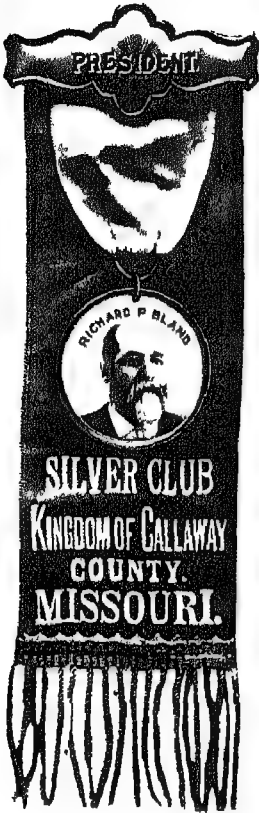
Richard Bland had been active in organizing the silver forces, and his identification with the cause made his nomination a possibility But a silver delegate from Nebraska, William Jennings Bryan (seen *right* in his favorite picture), rose to make the closing plea for silver before 20,000 yelling spectators

When he ceased, the nomination was his after five ballots.

W B Byars, *An American Commoner* 1900 Courtesy, E W Stephens Company, Columbia, Mo

Courtesy, Mrs Ruth Bryan Rohde, Ossining, N Y
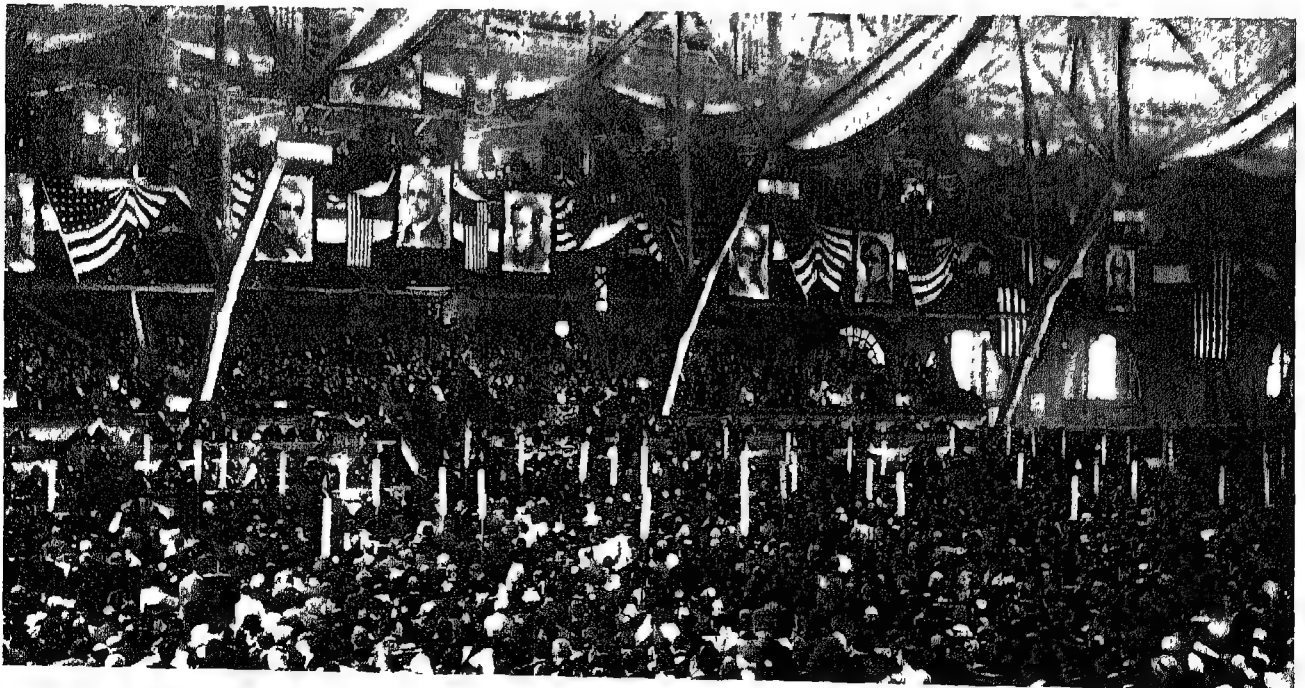
William J Bryan, *The First Battle* 1896 Courtesy, W B Conkey Company, Hammond, Ind

Above is shown the Democratic Convention of 1896 which thrilled as one man to Bryan's closing words ". . . you shall not crucify mankind upon a cross of gold."

Campaign of 1896

In support of McKinley and the Gold Standard, men argued and fought; they organized "Sound Money" clubs and paraded through the nation's streets.

At the *right*, New York lawyers have left their panelled offices to witness their faith in gold.
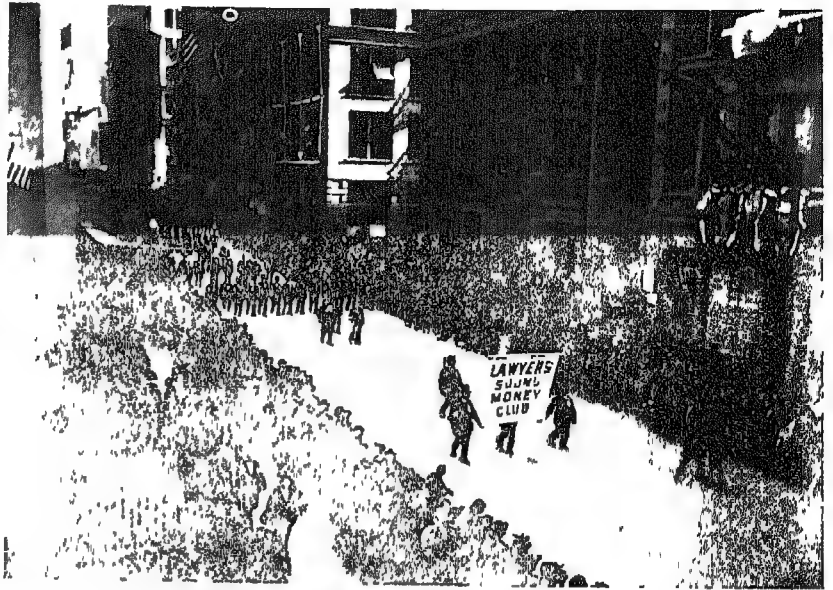
Courtesy, The New York Historical Society, New York City

Courtesy, The Indiana Historical Society, Indianapolis

Residents of Delphi, Ind. (*above*), marched under the banner "Vote Bryan and a Panic."

Golden Voice

Bryan waged a whirlwind campaign that made Republicans doubt the wisdom of the "front porch" strategy.

William J Bryan, *The First Battle* 1896
Courtesy, W B Conkey Company, Hammond, Ind

He traveled day and night, speaking twenty times a day to great crowds and small.

People of Wellsville, Ohio (*right*), listened to the golden voice.
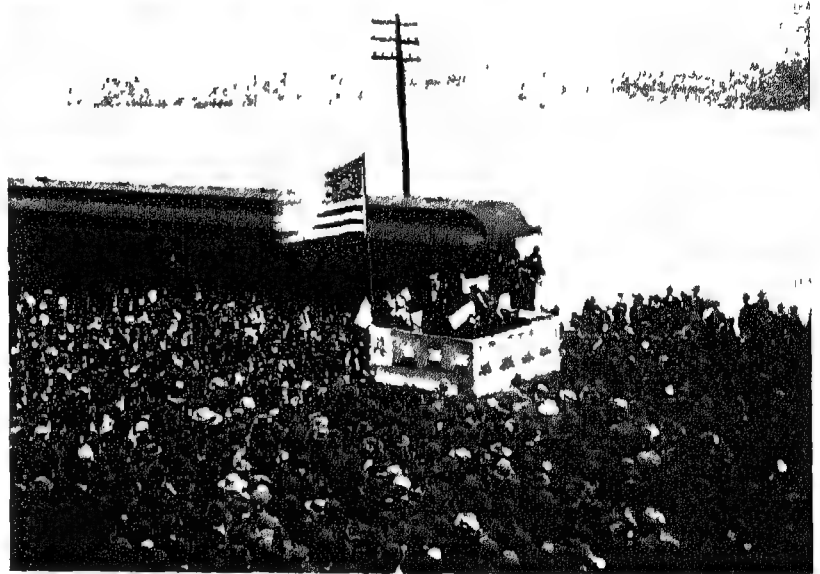
William J Bryan, *The First Battle* 1896
Courtesy W B Conkey Company, Hammond, Ind

Courtesy, Mr Myron F Henkel, Springfield, Ill

On Oct. 23, 1896, the Springfield, Ill., wheelmen, to celebrate his arrival in their town, performed at the head of a great parade

3
THE IMPERIAL EXPERIMENT

After a campaign almost evangelical in fervor, the nation went to the polls in November, 1896, and elected William McKinley President with 271 electoral votes to Bryan's 176.
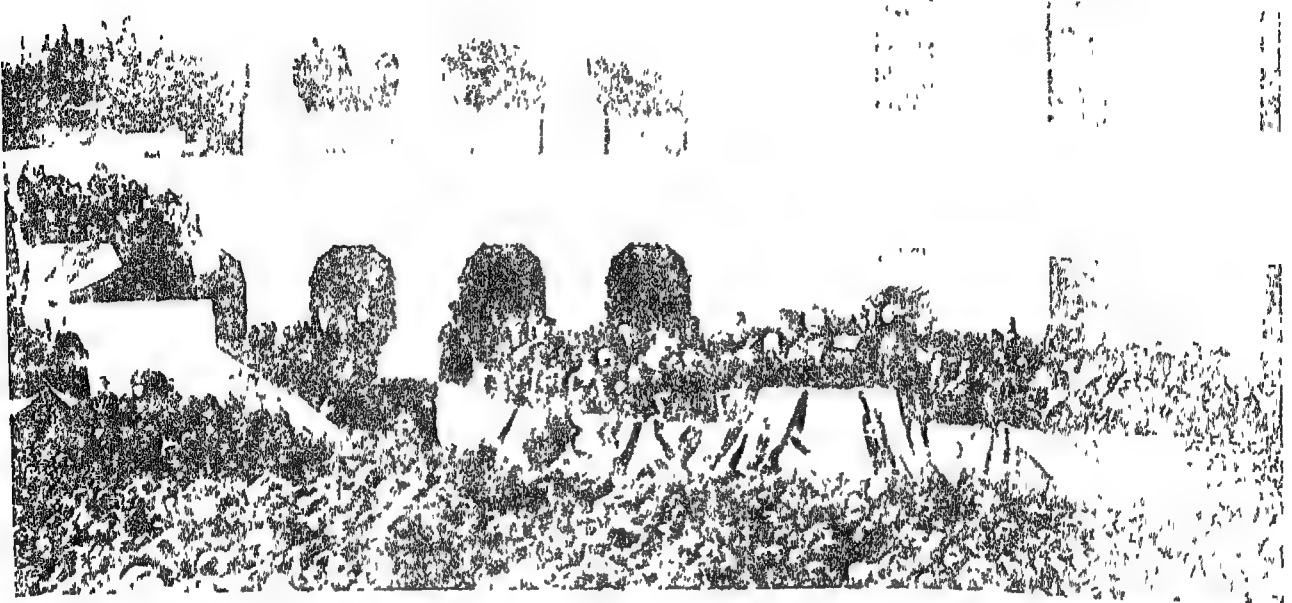
Harpers Weekly Mar 13 [illegible]
Courtesy Harper & Brothers New York City

The new President was sworn into office on Mar. 4, 1897. A photograph of the traditional ceremony is shown *above*. He was committed by his statements and his party's platform to high, protective tariffs; to the maintenance of the gold standard; and the denial of the government's right to control or discipline business.

Courtesy Scribner Art File

A short man, the President (*above*) held himself rigidly erect.

The Gay World

Freed of the nagging threat to comfortable living represented by the embattled Democrats and their "peerless leader," certain elements of society blossomed at such functions as the Bradley Martin ball shown *below*, denounced as shameful waste by the reformers of the time.

Harper's Weekly, Feb 20, 1897 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Harper's Bazar, Feb 5, 1898
Courtesy, Harper's Bazaar, New York City

Atlantic City, New Jersey's year-round resort (*above*), was a favorite place for relaxing

The Easter Parade on New York's Fifth Avenue (*right*) was as ever a brilliant display.

Harper's Bazar, Apr 9, 1898
Courtesy, Harper's Bazaar, New York City

Fun on a Budget

The Dingley Tariff might save the country, or ruin it; but ordinary folk were not too deeply stirred by the prospect.

The circus came to Boonville, Mo., as usual (*right*).

On Sunday you could hire a boat for a row on the lake in Forest Park, St. Louis (*below*).

Courtesy, Charles van Ravenswaay Collection, Missouri Historical Society, St. Louis

Courtesy, Missouri Historical Society, St. Louis

Harper's Weekly, July 24, 1897 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

And in late afternoon the band played beside Prospect Park lake at Brooklyn, N. Y.

Popular Art

Courtesy, Mr Myron F Henkel, Springfield, Ill

Public music was not necessarily furnished by a professional band. The Watch Factory Band shown *left* was the pride of Springfield, Ill., and made concert tours through the Mid-West and South.

The ladies of Salem, Mass., enjoyed dressing up in their grandmothers' clothes and presenting "living tableaux" for a church benefit as the picture *below* indicates.

From a photograph by Frank Cousins. *Courtesy*, The Essex Institute, Salem, Mass

Future Presidents

Sandlot, District School and City Park served as training grounds for future citizens.

One of the future Ivy League half-backs shown *right* was recovering from the mumps.

Courtesy Mr Myron E Henkel, Springfield, Ill.

For all their troubles with mortgages and drought, farmers of western Kansas kept up their schools and their hopes for their children.

Courtesy, Dr Robert Taft, University of Kansas, Lawrence

City children took the air under nursie's eye, as in the view *right* of Monroe Park, Richmond, Va.

Courtesy, The Valentine Museum, Richmond, Va

What Made It Go

The willingness and ability of people in small communities to use their purchasing power for self-improvement made possible the spectacular activities of big business.

Courtesy, Public Roads Administration, Washington, D C.

In the picture *left*, Indiana farmers in 1898 are celebrating the opening of the first Rural Free Delivery route in their neighborhood. People like these gave economic life to the towns where they traded.

Their problems made work for the local courts and occupied the lawyers who practiced in town In the picture *right*, an Illinois judge counsels a litigant.

Courtesy, Mr Myron F Henkel, Springfield, Ill.
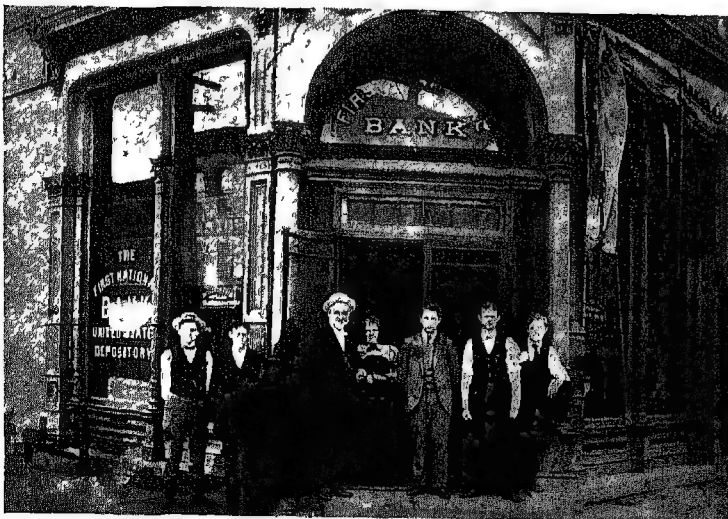
Courtesy, Mr. Myron F Henkel, Springfield, Ill

The prosperity of his rural neighbors and clients determined the success or failure of the town banker shown *left* with his staff.

Homes

Courtesy Mrs Frank Ewing, Grand Rapids, Mich

Many farm homes of 1897 were substantial, well-tended and comfortable, as seen *above* in a picture taken near Woodbridge, Mich.

The street in Cheyenne, Wyo., pictured *below* was typical of thousands of "home town" streets of the time.
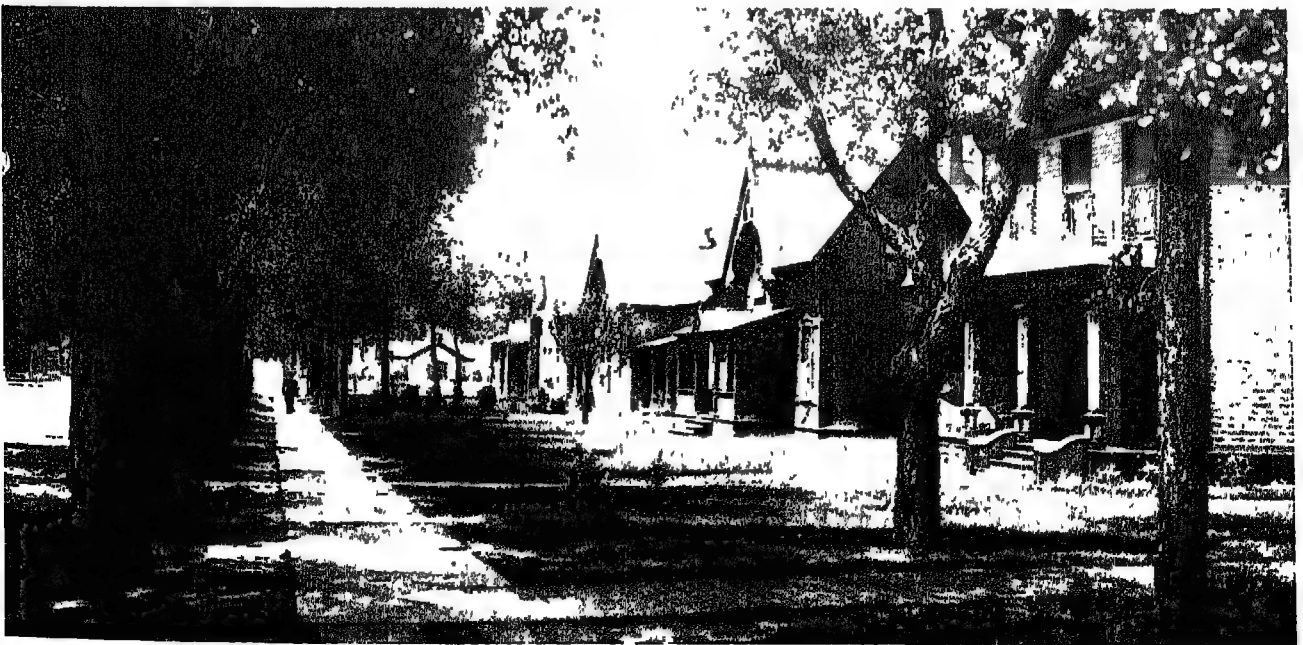
Courtesy, Mr J. E Stimson and the Wyoming State Library and State Historical Department, Cheyenne

Homes—Interior

Comfort was the primary consideration in middle-class home furnishings.
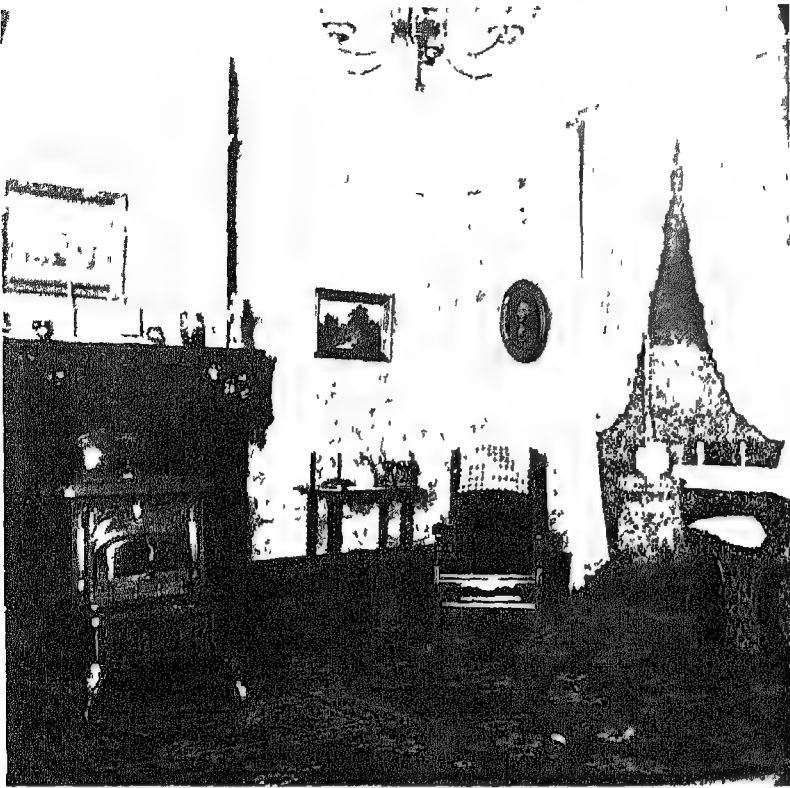
The living-room corner in Logansport, Ind. (*left*), displays many typical articles of 1897 furnishing. Note the antimacassar on the back of father's rocking chair, the starched lace curtains, the spool-legged table, the "tidies" and the bric-a-brac

The bedroom from the same house had a fancy carpet, a Grand Rapids "set" of bed and bureau, and a base-burner stove for warmth.

Both illustrations on this page are by the *courtesy* of Miss Etta Wright and The Indiana Historical Society Library, Indianapolis

College Girls

The New Woman at college took part in traditional observances more ladylike than the cane-rushes and water-fights of the men's colleges

At Vassar, the Daisy Chain was borne solemnly by the Sophomore Class (*right*) At Wellesley, the Seniors rolled hoops (*below*).
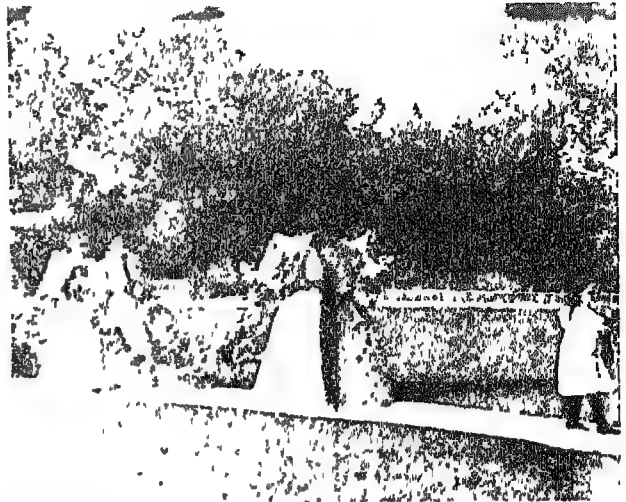
Harper's Bazar June 11, 1898
Courtesy Harper's Bazaar, New York City
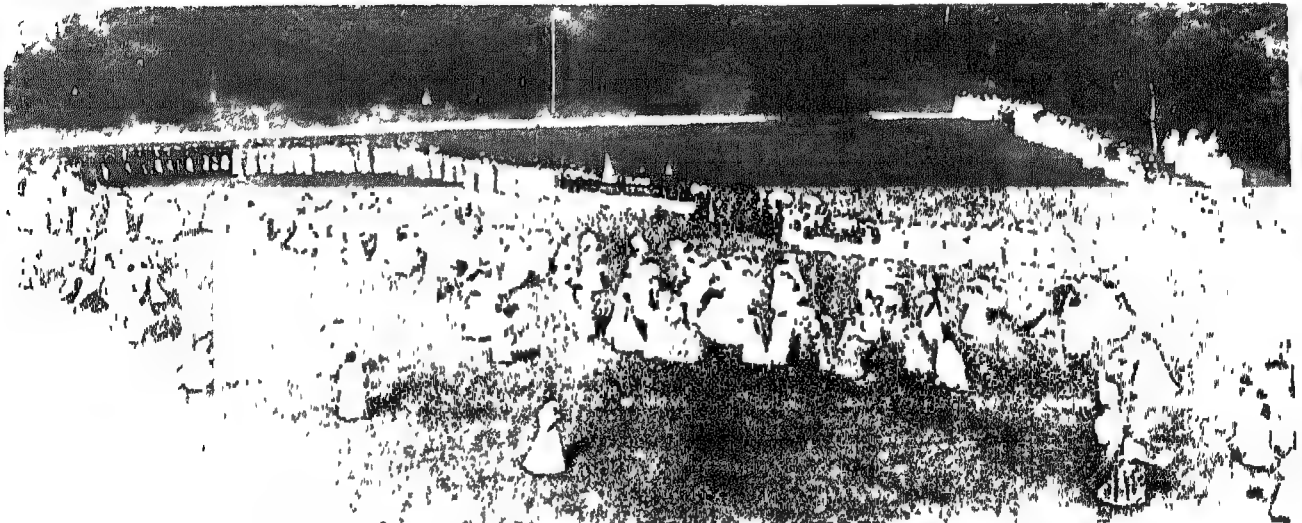
Harper's Bazar, June 11, 1898 Courtesy Harper's Bazaar, New York City

Sororities flourished. The girls shown *right* were Kappa Kappa Gammas at Nebraska

Courtesy, Nebraska State Historical Society, Lincoln

Aspiration to the Arts

Musical and sketching societies interested the boys and girls of the Nineties

Mandolin clubs were popular at schools and colleges

Courtesy, Mr Myron F Henkel, Springfield, Ill

To the *right* is shown a college Art Club off for a day's work with pencil and watercolor.

Courtesy, Agnes Scott College, Decatur, Ga

Yet such a seemingly unaesthetic group as the 1897 High School Track Team shown *left* produced a celebrated American poet. Vachel Lindsay stands second from the right.

Courtesy, Mr Myron F Henkel, Springfield, Ill.

The Gibson Influence

The people in pictures drawn by Charles Dana Gibson became models for the appearance and manners of a whole generation His clean-cut square-jawed young men of action put the moustached exquisite wholly in the shade, and his queenly women were ideals equally for the college girl and the milliner's apprentice.
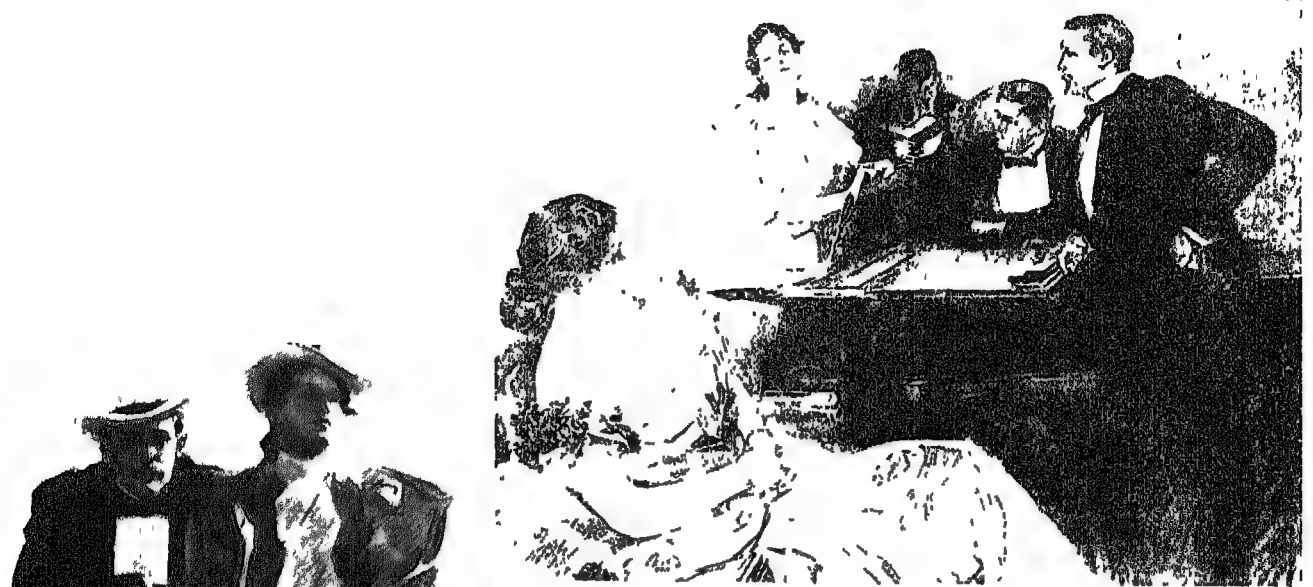
Scribner's Magazine, February, 1897
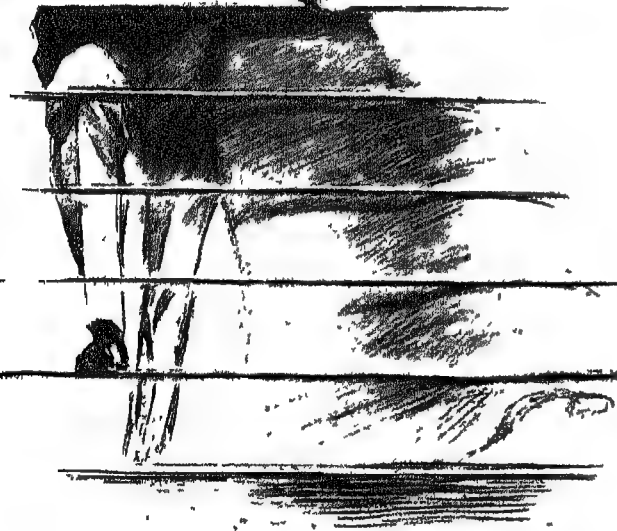
Scribner's Magazine, June, 1897

The three illustrations on this page are typical of Gibson's work as a magazine illustrator.

Scribner's Magazine, May, 1897

Fore!

The game of golf was no longer an amiable eccentricity and had become sufficiently popular to attract the attention of one of the foremost illustrators of the day. The three sketches *below*, from three different periodicals, are the work of A. B. Frost.

Scribner's Magazine, October, 1897

"Dormy Two" (*left*).

Harper's Bazar, Nov 3, 1894
Courtesy, Harper's Bazaar, New York City

Left, "A Drive." The picture *below* is captioned "Golf Terms Illustrated: A Hole in One," and is presumably the first use of this wheeze by any humorist.

GOLF TERMS ILLUSTRATED—"A HOLE IN ONE."

Harper's Weekly, May 21, 1898
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Food Retailing

The local storekeeper was not as yet aware of the formidable competition he was to receive from chain stores, and he was inclined to be somewhat contemptuous of their cash policy and their advertising methods.

A large retail meat-market is shown *right*, the meat was shipped to it in refrigerator cars.
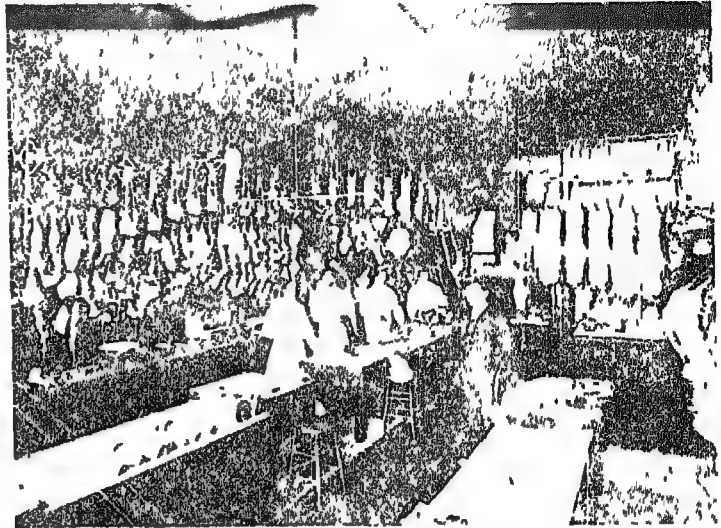
Courtesy San Mateo County Historical Association, San Mateo, Calif

In the picture *left*, an early store of a famous chain is seen as it was in 1898. Note the sandwich man in the center and the display of lamps, fans and other "premiums" to be given the customers.

Courtesy The Great Atlantic and Pacific Tea Company, New York City

Packaged and canned foods were fighting uphill against popular prejudice In the picture *right*, strawberries are being examined at the receiving platform of a packer of jams and relishes.

Courtesy, H J. Heinz Company, Pittsburgh, Pa.

Advertising

The germs of later "mass appeals" were lurking in advertisements of the late Nineties.

Courtesy, N W Ayer & Son, Inc, Philadelphia, Pa

Candy manufacturers had discovered the pretty-girl angle (*above*).

But Buffalo Bill's show stuck to the tried and true, with a concession to the war spirit of 1898.

THERE IS ONLY ONE

POND'S EXTRACT.

Price 50 Cents

POND'S EXTRACT

FULL DIRECTIONS WITHIN

Cheapest, because Best
Always Pure and Safe.
Can be used, with equal safety, both Internally and Externally.

POND'S EXTRACT is manufactured by us at our own factory, with the most improved machinery under our own supervision, and every bottle is guaranteed to be pure, uniform and unequalled in quality

A RELIEF FOR EVERY PAIN.

Cures Inflammations, Hemorrhages, Catarrh, Piles, &c.

USED BY PHYSICIANS, SURGEONS, DENTISTS AND HOSPITALS IN AMERICA AND EUROPE

Indorsed by Presidents, Senators and Congressmen of the United States, by Governors and other Dignitaries, also by Royalty of Europe.

NOTE OUR NAME ON EVERY LABEL AND WRAPPER.

POND'S EXTRACT CO., - New York and London.

Harper's Weekly, Dec 17, 1898
Courtesy Harper & Brothers, New York City

The indorsers who approved of the patent-medicine in the ad *above* were high and mighty enough for anyone.

Courtesy of the Bella C Landauer Collection in The New-York Historical Society, New York City

Motor manufacturers were stressing luxury, appearance and ease of operation (*right*)

Handsome Finish, Luxurious Equipment

Columbia

Motor Carriage
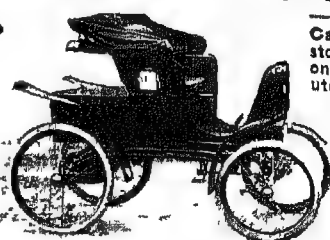
Can be understood by any one in 10 minutes.

Thoroughly Tested. Our Carriages are not experiments. We have in the past three years built and tested. We have had electric vehicles in steady use for over two years, and have succeeded in perfecting a carriage that is EFFICIENT, DURABLE, and PRACTICAL. If you are in New York during May don't fail to see our exhibit at the Electrical Exposition, Madison Square Garden.

Send for Printed Matter POPE MFG. CO, MOTOR CARRIAGE DEPT., Hartford, Conn.

Harper's Weekly, May 21, 1898
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Electric Power—Applied

From power stations at newly-harnessed Niagara and elsewhere, electricity at reduced cost was available for commercial applications on a vast scale

The feeders shown *right* were built in 1897 to carry ten thousand volts from Niagara to the step-down transformers of the Buffalo street-railway system.
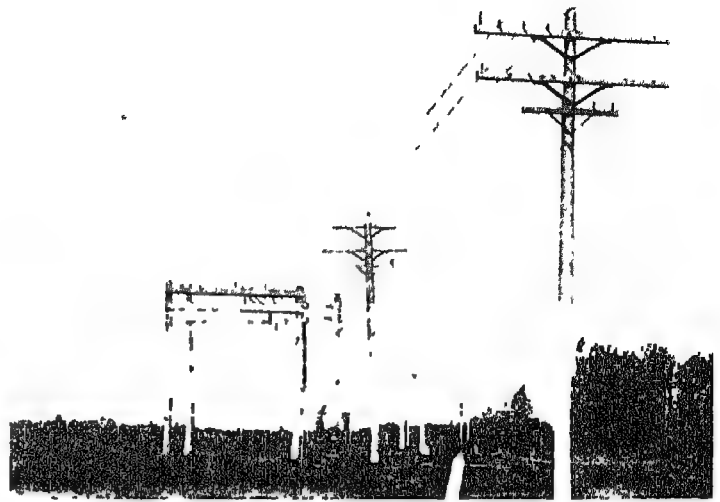
Harper's Weekly June 5, 1897
Courtesy, Harper & Brothers, New York City
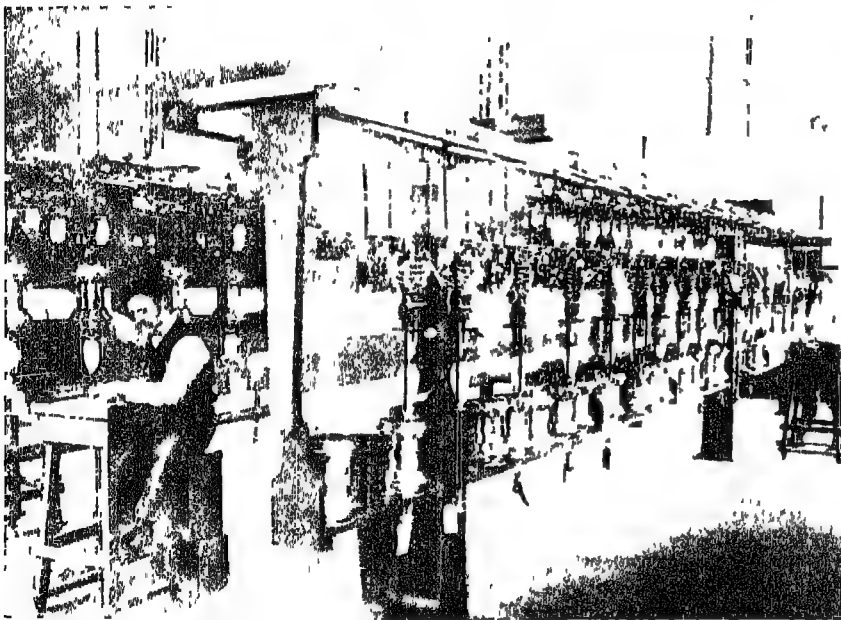
Courtesy, General Electric Company, Schenectady, N. Y.

Streets in cities, large and small, were lighted by arc-lamps like those shown on the assembly racks *left*.
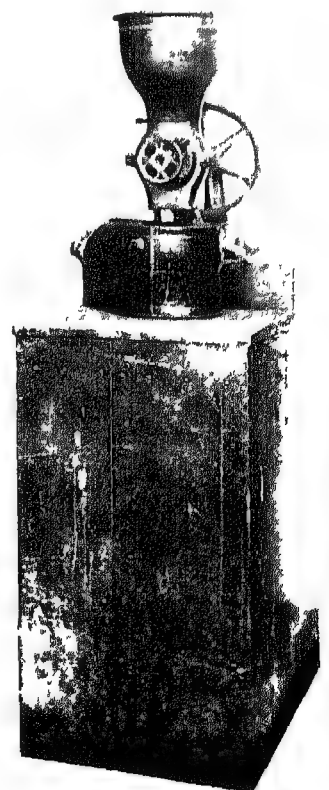
The applications of electric power were not always on the grand scale. One of the first electrically operated coffee-mills is shown *right*—also a development of 1897.

W. H. Ukers, *All About Coffee* 1935
Courtesy, The Tea and Coffee Trade Journal, New York City

"Number, Please—"

Patent strife and public incredulity were by 1897 only bad memories. The telephone industry pressed on to wider expansion of services and a more efficient organization.

Courtesy, American Telephone and Telegraph Company, New York City
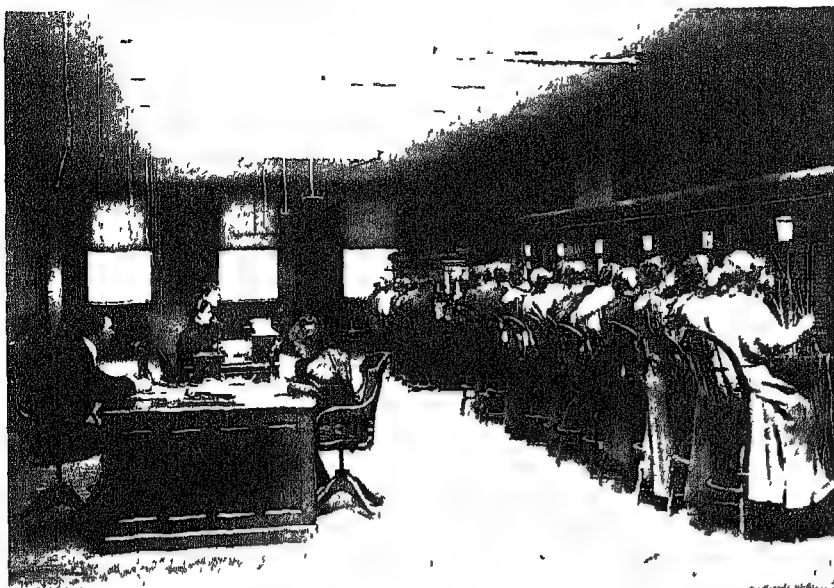
The Harlem "Central" in New York City is seen *left* as it was in 1897. The woman seated beyond the manager was "Information", the board at the far end of the room was the toll-board for out-of-town calls.

At the *right* is shown the auditors' office of the New York Telephone Company, around 1897

Courtesy, American Telephone and Telegraph Company, New York City
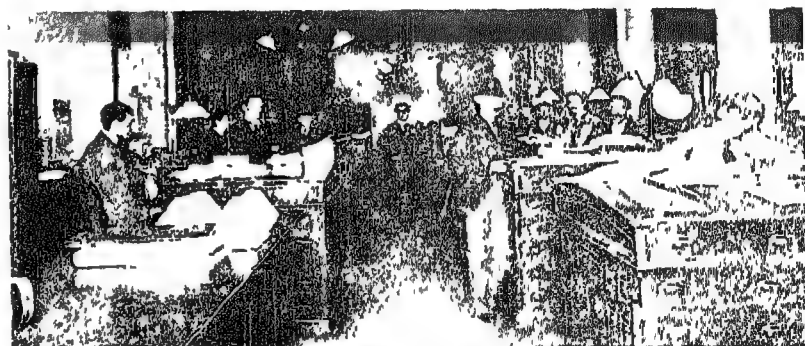
Courtesy, Western Electric Company, New York City
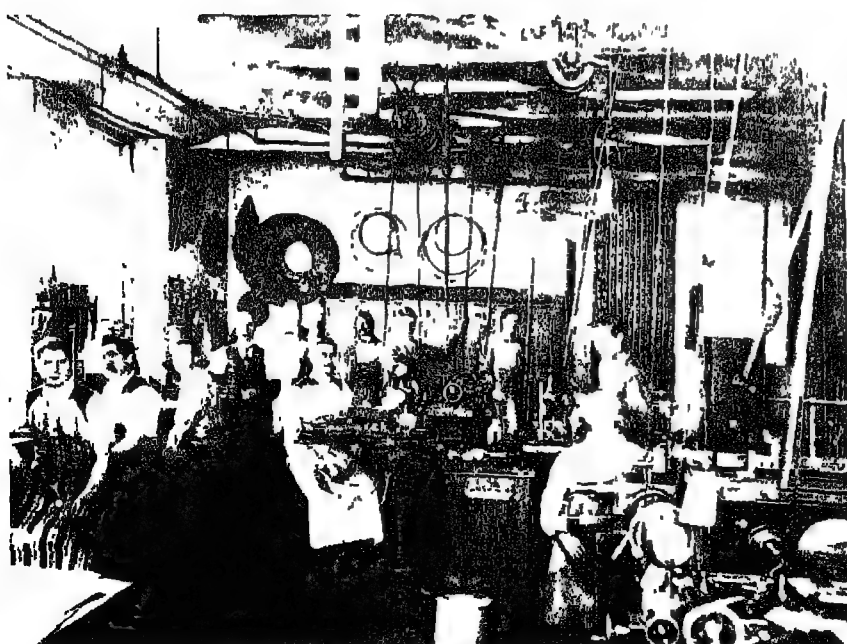
Technical improvements kept tool-workers like the Chicago crew *left* hard at work turning blue-prints into practical form.

Electric Taxicabs

In early spring, 1897, the Electric Vehicle Company started cab service in New York City.

The style of the cabs followed conventional patterns. To the *right* is a battery-powered coach, and *below* is a close cousin of the venerable hansom, photographed later in the season.

Courtesy, Museum of the City of New York

Courtesy, The J Clarence Davies Collection, Museum of the City of New York

Rapid Transit

Only a hardy variety comedian would risk a trolley-car joke in 1897, for the electric cars were everywhere and indispensable.

Courtesy, American Car and Foundry Company, New York City
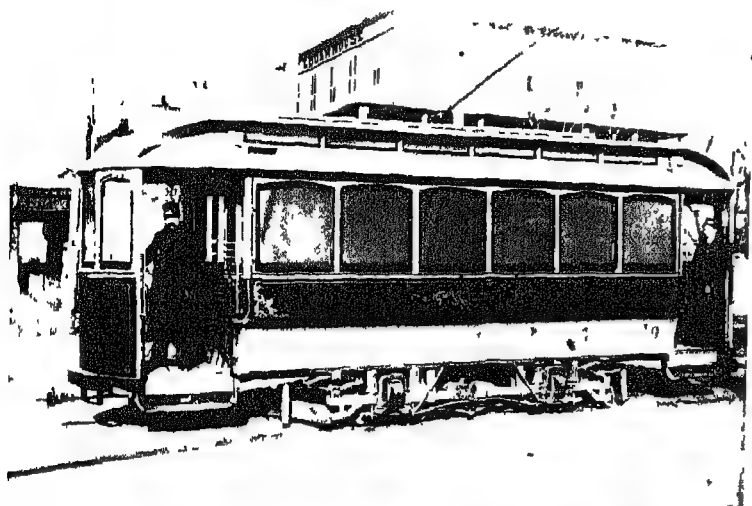
Wilmington, Del , had well-moustached motormen who inspired confidence

Baltimore picnickers took the trolley out to Gwynn Oak Park (*right*).

Courtesy, The Municipal Museum of the City of Baltimore, Md

Courtesy, Dearborn Historical Commission, Mich
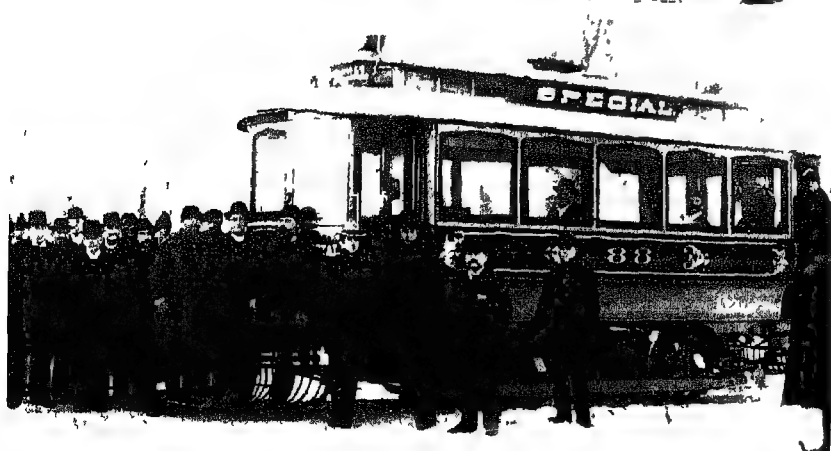
The arrival of the first car in Dearborn, Mich , on Dec 24, 1897, was quite a civic event. The city fathers gathered to greet the "Special" and be photographed.

The Great American Hurry

The picture *below* was taken in 1897 as the Empire State Express was making sixty-four miles an hour.
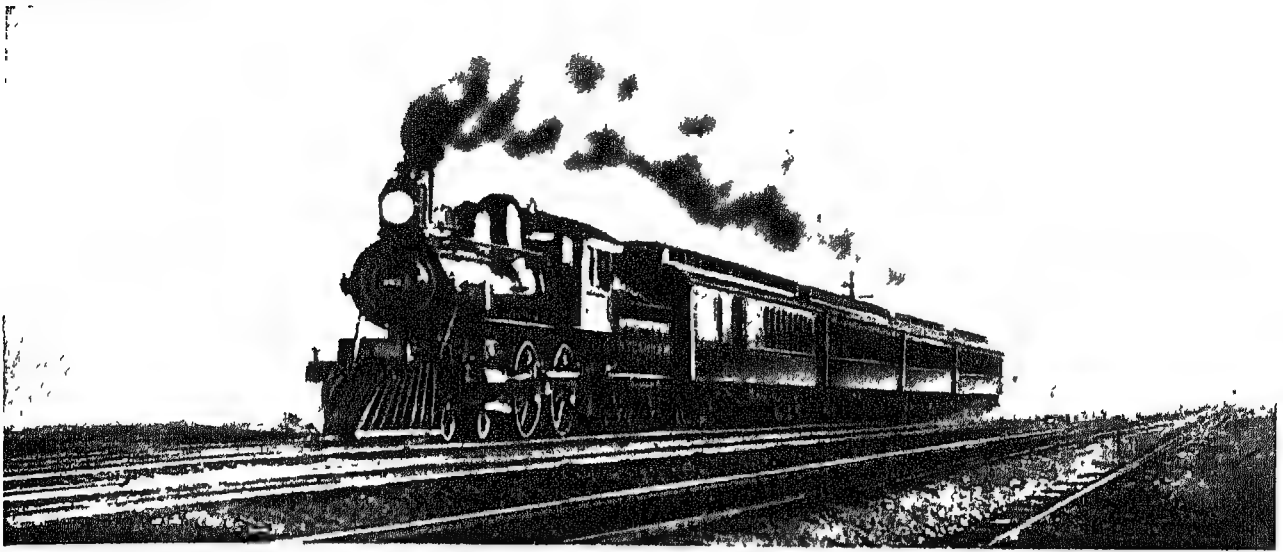
Harper's Weekly Mar 13, 1897
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Courtesy, Scribner Art File

Alexander Winton, a pioneer in the development of the automobile, is seen *above* at the wheel of his 1897 improved model. This car was produced commercially in 1898.

Walt Whitman (deceased 1892) in a comment on the national passion for speed had hoped that provision would be made for an increase in the number of lunatic asylums. Poets are proverbially impractical.

Flood Stage

The latter part of March, 1897, was unseasonably warm and rainy. In three great and distinct waves, flood waters swept down the Mississippi valley, raising the river's level to stages far above the disastrous levels of 1892 and 1893.

Harper's Weekly Apr 17, 1897
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

The water drowned out the "Bohemian Flats" district of Minneapolis (*left*).

Homes were hastily abandoned as the river spread wide below St. Paul (*right*).

Harper's Weekly, Apr 17, 1897
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Harper's Weekly, Apr 24, 1897
Courtesy, Harper & Brothers, New York City
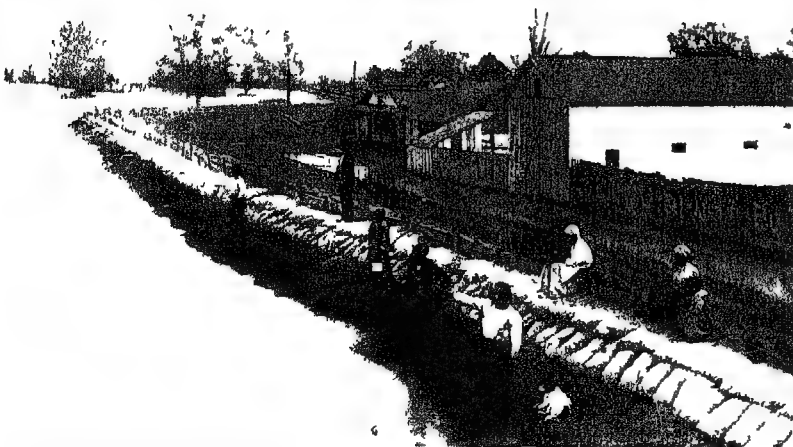
Damage was greatest in the Yazoo Delta where ten counties were under water Greenville, Miss , was isolated on a kind of island preserved by a hastily constructed back-levee (*left*).

Flood Stage (*Continued*)

People along the river did what they could, and the President applied to Congress for relief appropriations.

Harper's Bazar, May 8, 1897
Courtesy, Harper's Bazaar, New York City

In the picture *above*, a farmer has rafted all his possessions.
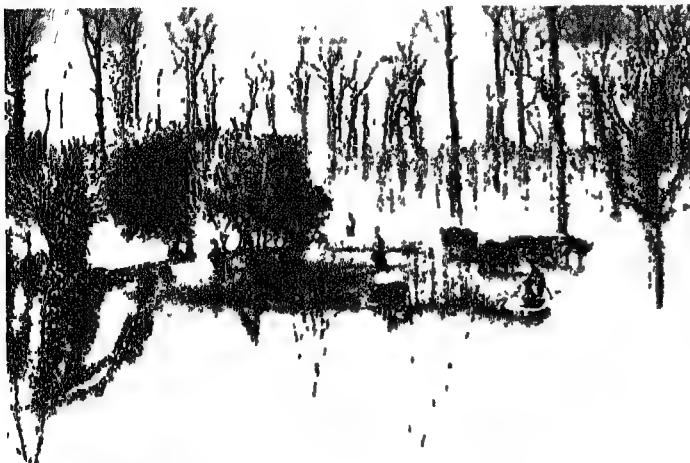
Harper's Bazar, May 8, 1897
Courtesy, Harper's Bazaar, New York City

Stock was herded onto higher ground which might be expected to remain above water.

Down in New Orleans, the river lapped high against the levee at Poland Street (*right*).

Courtesy, Board of Commissioners of the Port of New Orleans, La.

Feeding the World—Wheat

European and Asiatic crop failures had given the wheat and corn farmers of the United States a time of comparative prosperity. Indeed, the rise of farm prices had been a factor in the defeat of William Jennings Bryan
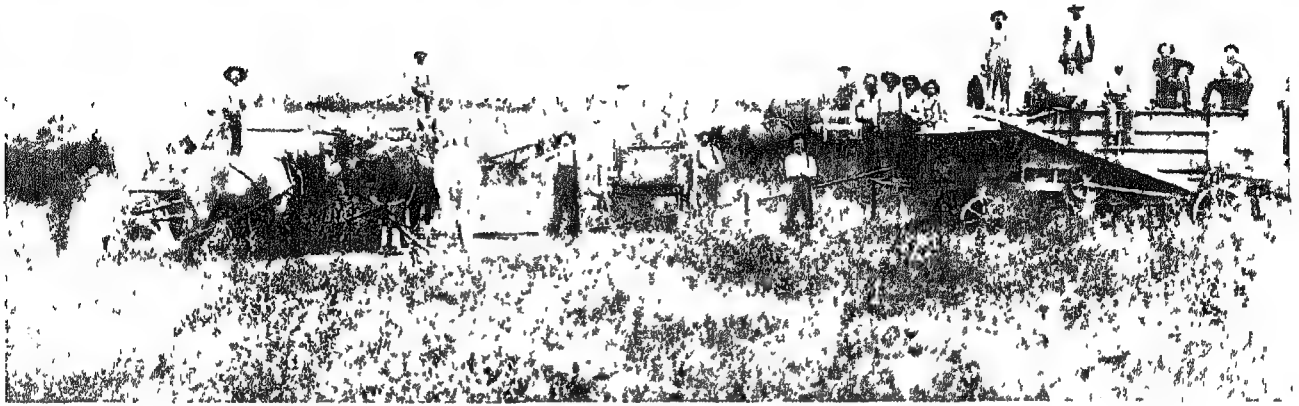
Courtesy, J I Case Company, Racine, Wis

In the picture *above*, part of the 1897 western wheat crop is being harvested in the old style. Note the horse-power applied to the thrasher through a tumbling-rod.
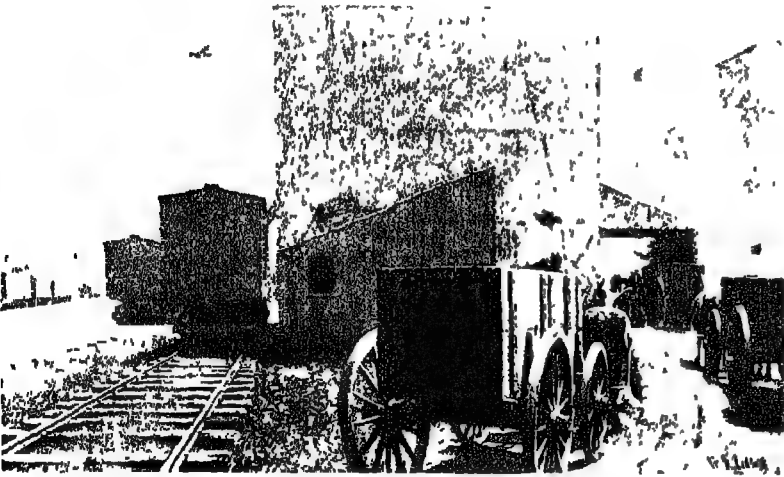
Scribner's Magazine, November, 1897

Wagons hauled the wheat to the elevators for loading into cars, or for storage against a further rise in price.

At the *right*, a heading reaper is being used on a wheat field in the State of Washington.
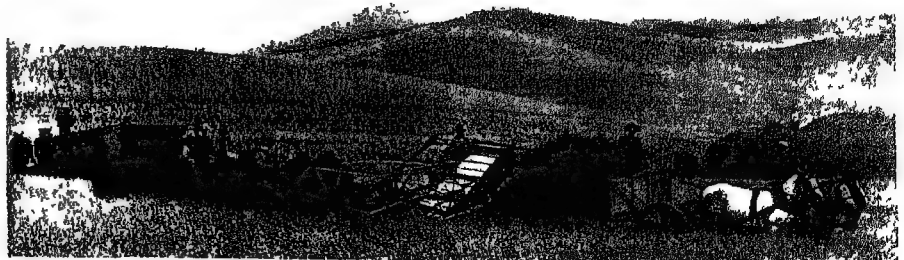
Harper's Weekly, July 24, 1897
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Feeding the World—Wheat *(Continued)*

At Pullman, Wash., half a million bushels of wheat awaited shipment in sacks (*right*). Inland waterways were crowded with grain ships (*below*).
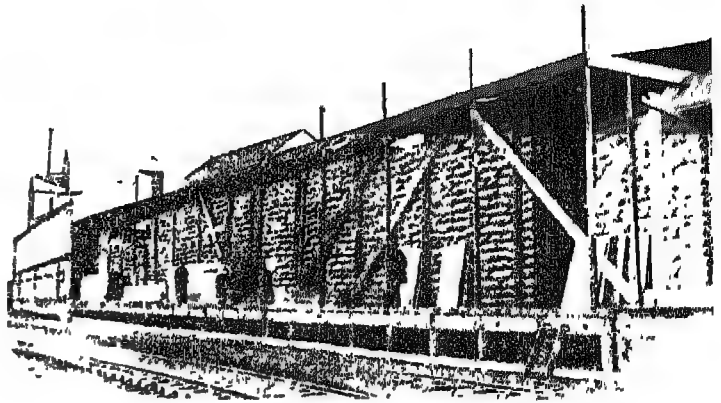
Harper's Weekly, July 24, 1897
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Harper's Weekly, Oct 9, 1897
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

From the giant elevators in Brooklyn, N. Y., the grain spouted into cargo holds for delivery across the ocean
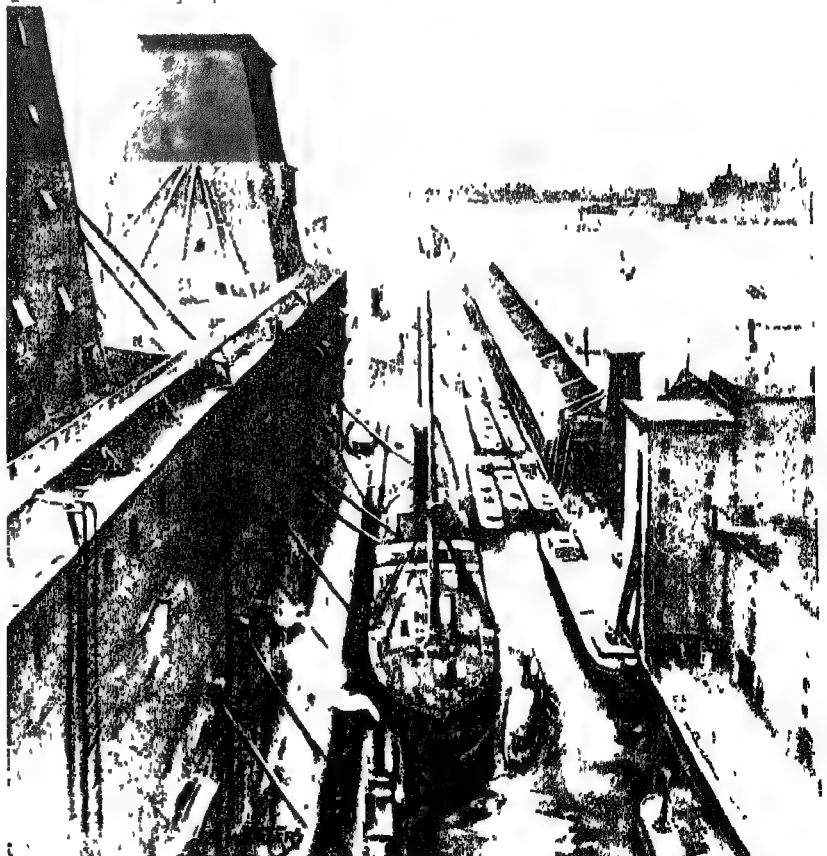
Harper's Weekly, Oct 9, 1897
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Feeding the World *(Continued)*

Kansas and Nebraska farmers paid off their mortgages when the crops of 1897 were harvested and sold.
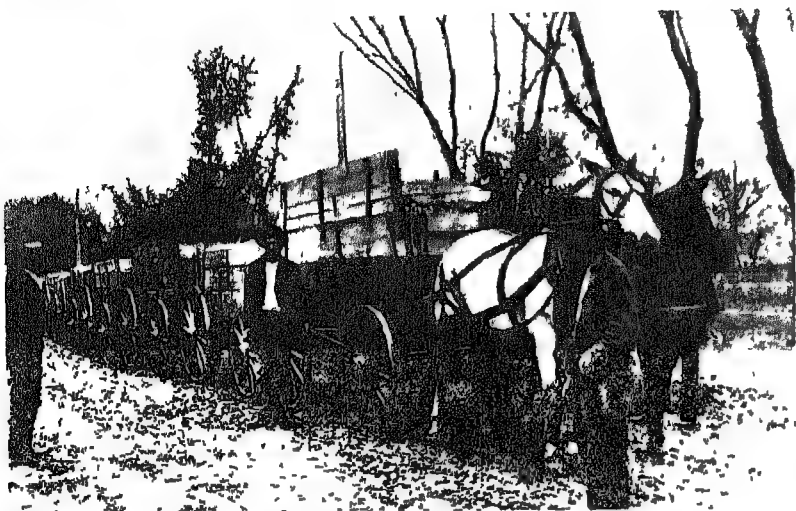
In the picture *left*, one team draws a wagon-train of corn into Manhattan, Kans.

Harper's Weekly, Feb 12, 1898
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Kansas Valley potatoes found a ready market (*right*).
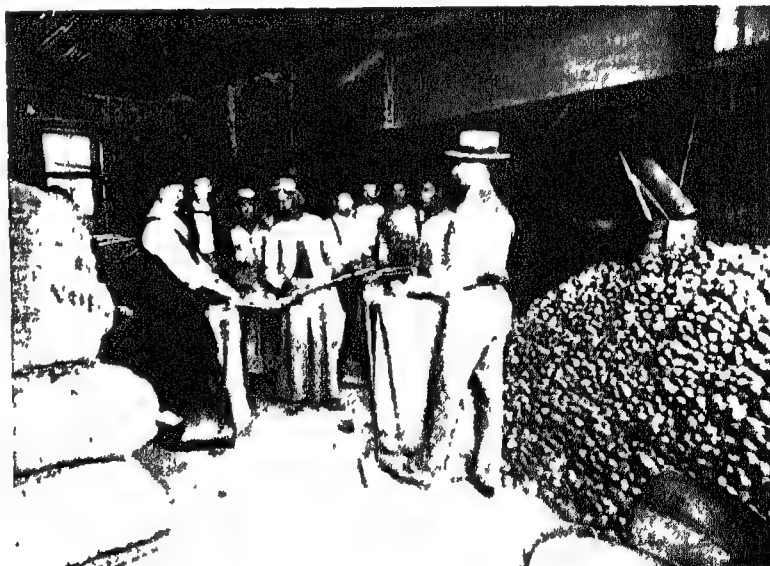
Harper's Weekly Sept 11, 1897
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Through the Kansas City stock-yards (*below*) six million head of livestock passed in 1897.

Harper's Weekly, Sept. 11, 1897. *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City

Georgia Peaches

The citizens of Georgia made a determined and successful effort through the Nineties to limit cotton planting and diversify crops. One result of this action was the rise of a profitable trade in peaches.

The yield of large orchards like the one shown *right* was sorted and graded for market in packing-sheds (*below*).
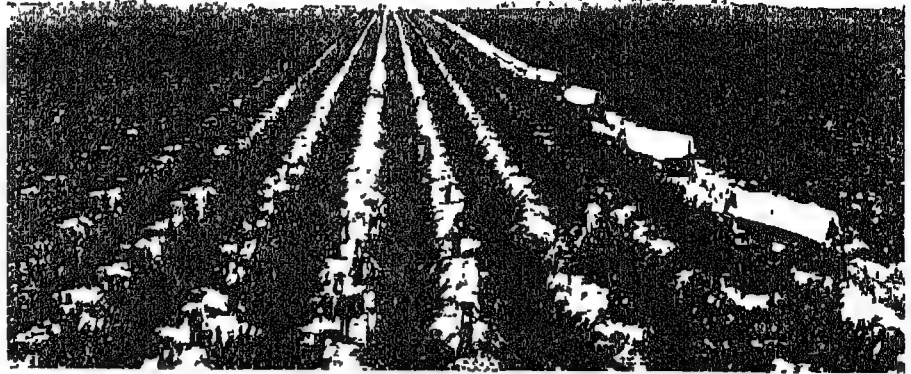
Harper's Weekly, July 10, 1897
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Harper's Weekly, July 10, 1897
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

But the popular northern idea of the "New South" was still limited to the picturesque and archaic sides of its life The 1897 sketch of a wagon yard *right* was what the public wanted.

Harper's Bazar, Oct 23, 1897
Courtesy, Harper's Bazaar, New York City

Timber

Heedless and wasteful commercial exploitation was depleting national forest resources to the point where outcries of "Conservationists" began to be heeded in high places. There was no need for Paul Bunyan and Babe the Blue Ox to snake whole sections down to the sawmills. Mere lumberjacks were doing it very nicely.
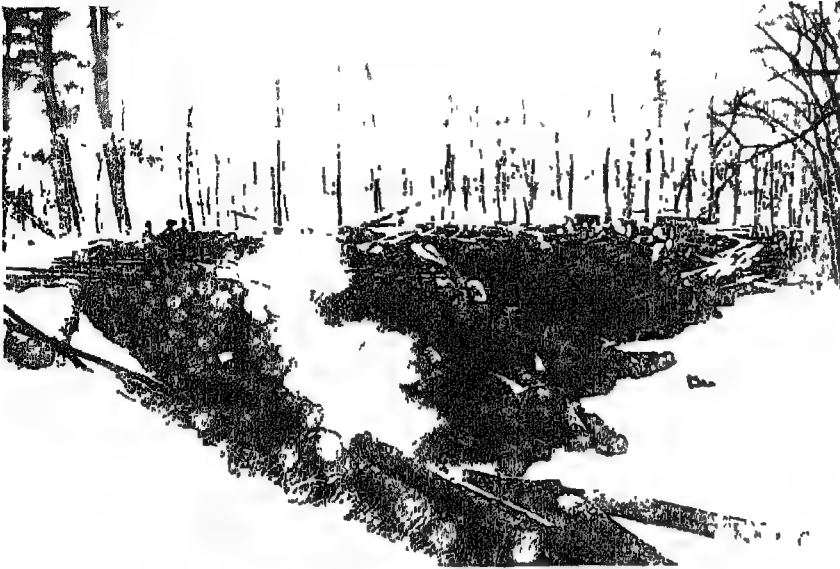
In northern Minnesota the logs piled up at the landing.

The log train *right* was photographed at Walker, Minn Taking the logs out by rail was a comparative innovation in the Nineties
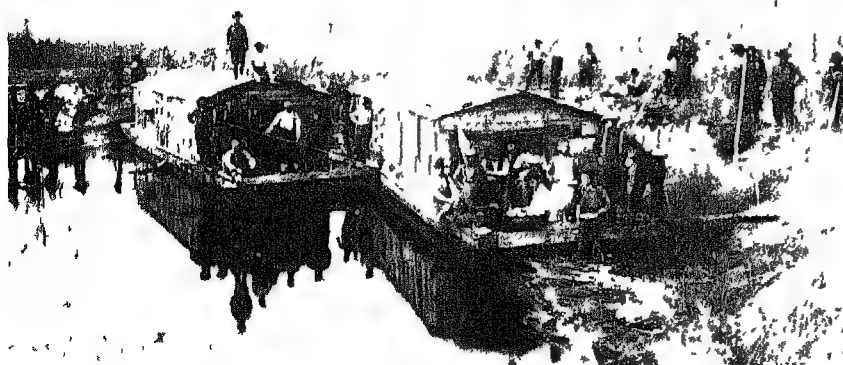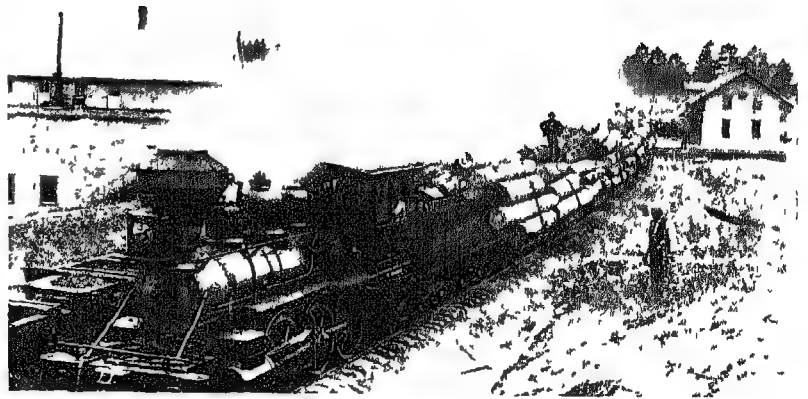
But despite all technological changes in the industry, the lumberjacks remained tough, reckless and productive of legends. In the picture *left*, they are gathered at the "Wannagan," on pay-day.

All illustrations on this page are by the *courtesy* of the Minnesota Historical Society, St Paul

Timber (*Continued*)

Life in the lumber camps was not for the weak or the sensitive.

Handling the tote-team *right* with its load of supplies on a sledge was not a leisured job.
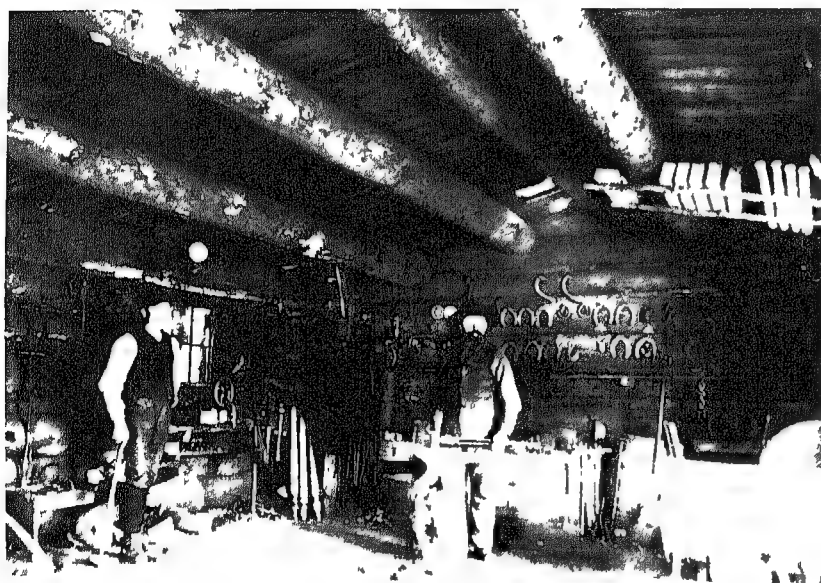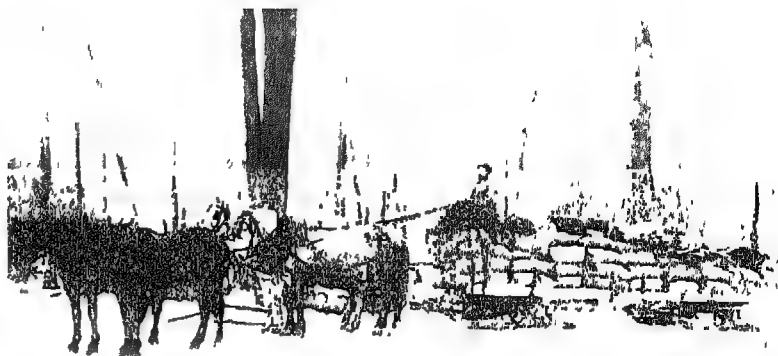
The blacksmith (*left*) would be kept busy.

Bored men in barracks have always cherished pin-up girls.

All illustrations on this page are by the *courtesy* of the Minnesota Historical Society, St Paul

Developing Seaports

Favorably situated southern and northwestern port cities were quick to see opportunity in newly-developing trades and trade-routes.
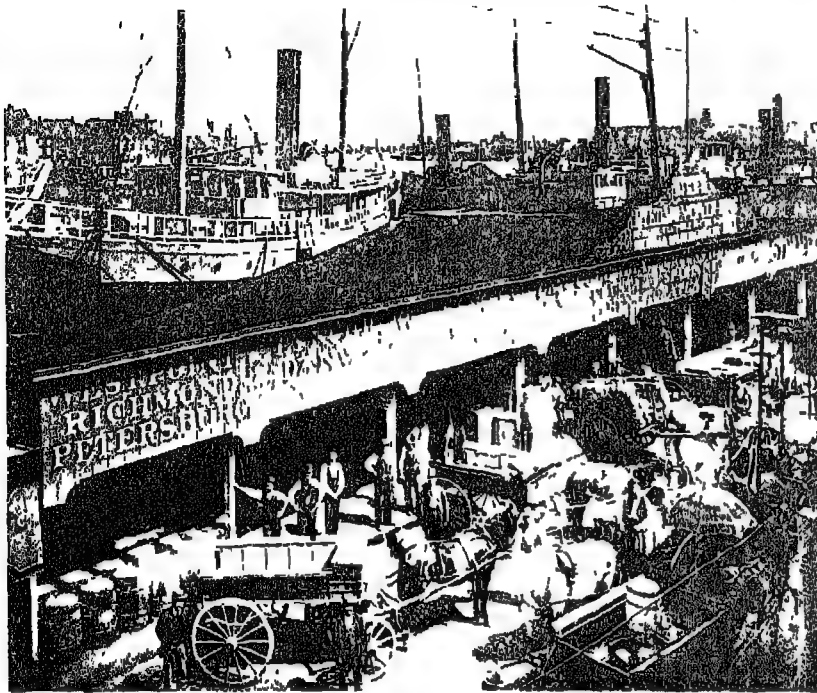
Courtesy, The Municipal Museum of the City of Baltimore, Md

Baltimore challenged New York's supremacy in ocean trade and did not neglect the local traffic advertised *left*.

The advantages of the Port of New Orleans in the trade to the east coast of South America attracted new business to that ancient and pleasant city.
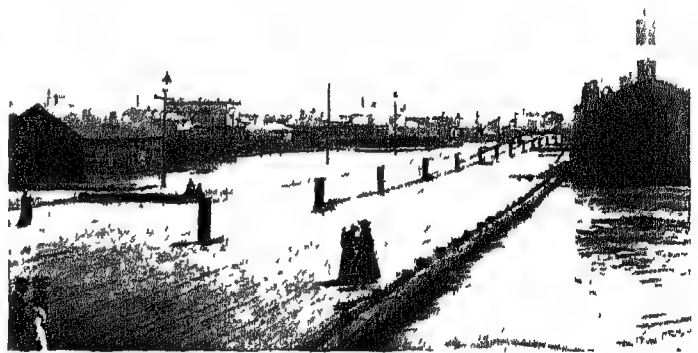
Courtesy, Board of Commissioners of the Port of New Orleans, La

Below is shown a view of Seattle, Wash., in the summer of 1897.
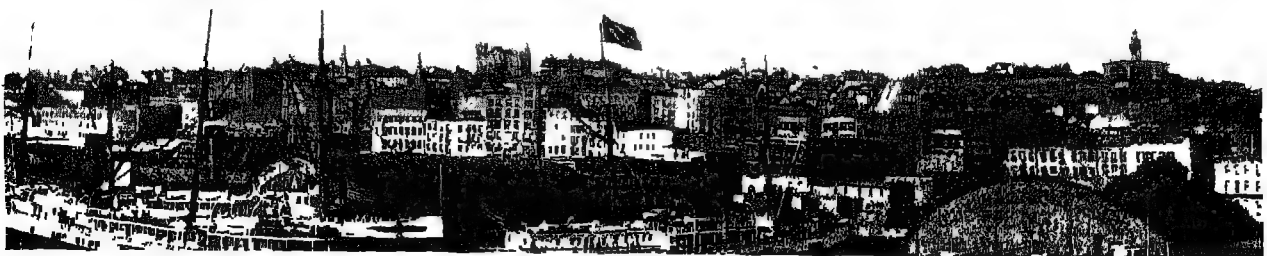
Harper's Weekly, Nov 13, 1897 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

On June 17, 1897, the *Portland* arrived in Seattle with a cargo of Alaskan miners and gold-dust. The Klondike boom that followed gave Seattle an opportunity to diversify her lumber export trade and so prosper.

Klondike

Not since the first news from California, almost fifty years earlier, had a gold discovery aroused such excitement. The event had more significance than the public suspected, however; for this increase in gold production, added to the additional yield from low-grade ore made possible by the Cyanide Process, destroyed the validity of Bryan's Free Silver argument and made the "Sound Money" cry less grievous in the ears of labor and the farmer.

Even while prospective millionaires were streaming out of Forty Mile Post in Alaska (*right*) to stake their claims, advertisements like the one *below* were appearing in the press.

Harper's Weekly, Aug 7, 1897
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Harper's Weekly Sept 11, 1897
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Miners left by boat from Juneau for the start of the adventure and headed for the upper tributaries of the Yukon by way of Chilkoot Pass (*right*) on foot or sledge.

Harper's Weekly, July 31, 1897
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Florida

At the opposite extreme of national geography and temperature, Henry M. Flagler was putting gold into the east coast of Florida, combining existing railroads and building new ones to further his dream of an "American Riviera" He had scored successes with luxury hotels at St Augustine and Palm Beach Now he began to extend the rails far south to Miami
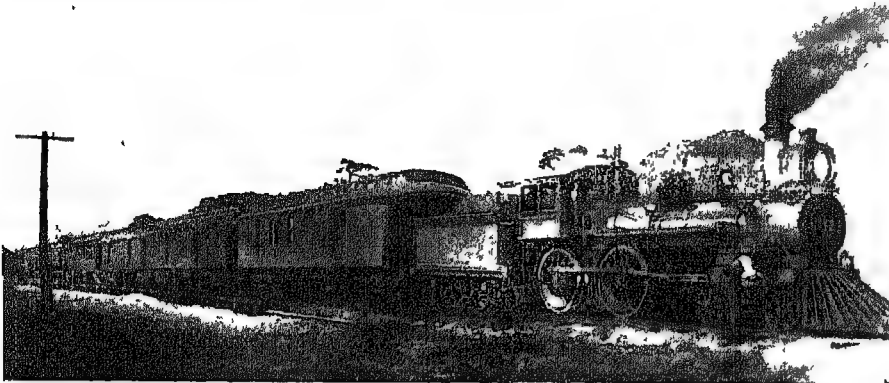
The wood-burning engine *left* pulled the first passenger train into Miami—Apr 22, 1896

The Royal Palm Hotel (*right*) was ready for the season of 1897.
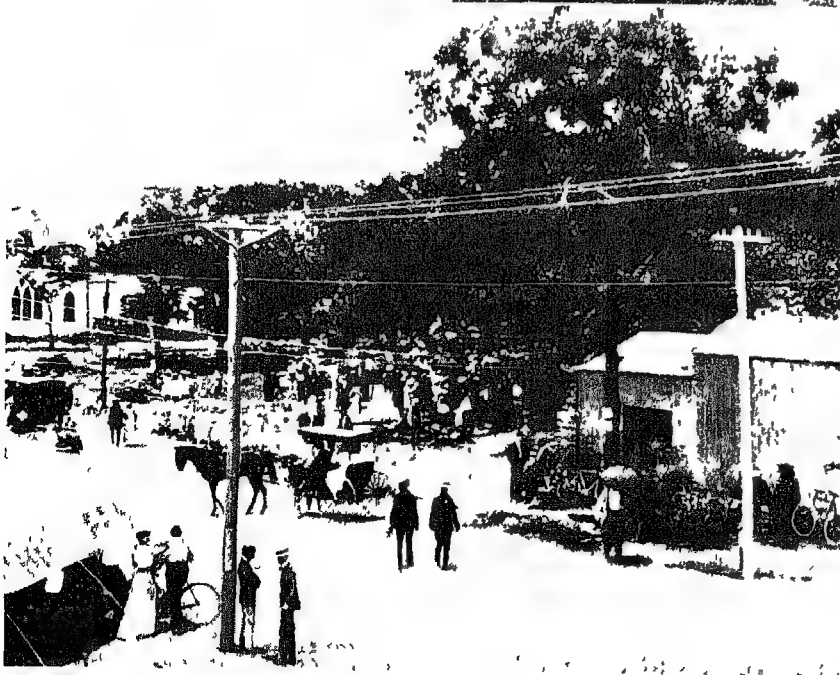
East Flagler Street and Biscayne Boulevard, Miami, is shown *left* as it looked in the late Nineties.

All illustrations on this page are by the courtesy of the Florida East Coast Railway Company, St Augustine, Fla

Gotham

As you looked south down Fifth Avenue from 35th Street in 1898, the New York Club and A. T. Stewart's original "marble palace" sandwiched a small business building; and the thirteen stories of the old Waldorf-Astoria towered in the background
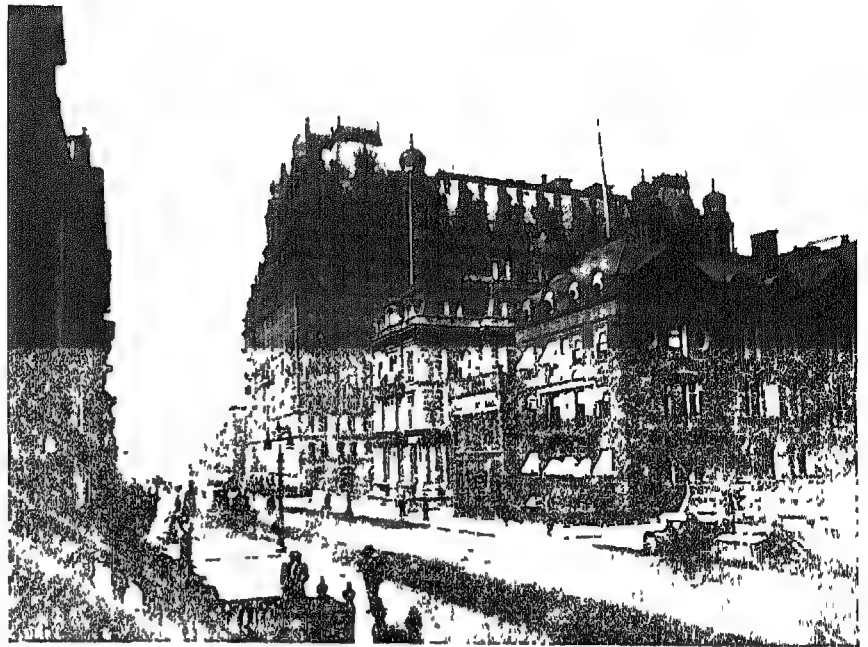
Courtesy The Waldorf Astoria, New York City
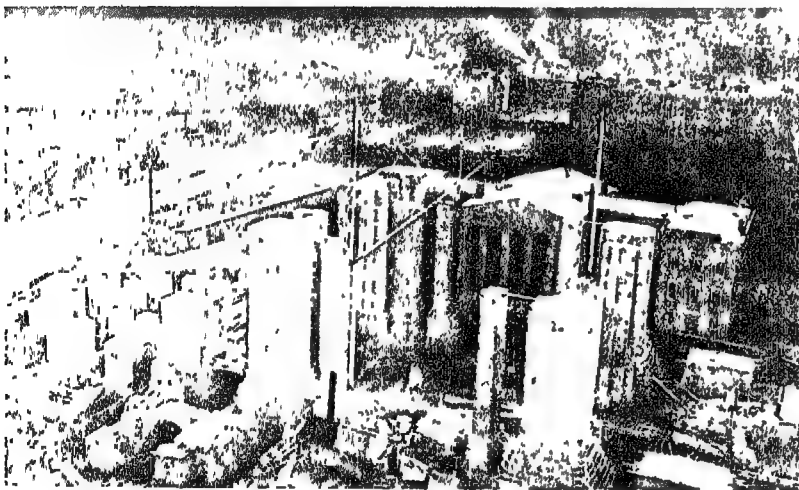
Courtesy, The J Clarence Davies Collection, Museum of the City of New York

Uptown, the piers of the Cathedral of St John the Divine were rising over Morningside Avenue.

On Apr. 27, 1897, the remains of Ulysses S Grant were formally laid away in an imposing tomb on Riverside Drive

The military procession is shown *right* arriving for the ceremony.

Courtesy, Museum of the City of New York

"Remember the Maine"

Since 1895, the people of Cuba had been in active rebellion against the rule of Spain Atrocity stories, true or false, were liberally featured in the United States press, and aroused humanitarians to call for intervention Business men looked forward to extension of trade should Spanish authority be succeeded by a Cuban republic presumably grateful for our help Strategists of the Mahan school considered control of Cuba essential to domination over the Caribbean Sea The "Cuerpo de Consejo" of the Cuban Revolutionary Party (commonly called the "Junta") is shown *below* This group operated in New York as a fund-raising body and as recruiters of filibusterers Owners of sugar estates had to buy immunity from crop-burning from both Spaniards and Cuban patriots.

Courtesy, Anuario Bibliografico Cubano, Havana

Late in January, 1898, the *U S. S Maine* entered the harbor of Havana for a courtesy call, as shown *below*

At about 9 40 P M on the evening of February 15, a dull explosion forward, followed by a much more powerful blast, sent parts of the *Maine* high in the air. The after part of the ship sank slowly. Two hundred and sixty men were lost. The question whether an external mine or an internal explosion caused the disaster was never answered and never will be, since we towed the hulk to sea and sank it

Courtesy, Scribner Art File

War With Spain

Under pressure of all kinds, President McKinley dropped negotiations for a peaceful settlement of Cuban questions, including the "*Maine*" incident, and yielded to popular hysteria On April 11 he sent a war message to Congress.

All over the nation, men flocked to recruiting stations The last traces of bitterness over the Civil War disappeared in martial enthusiasm to free Cuba, and Joe Wheeler and Fitzhugh Lee put on again the blue uniform
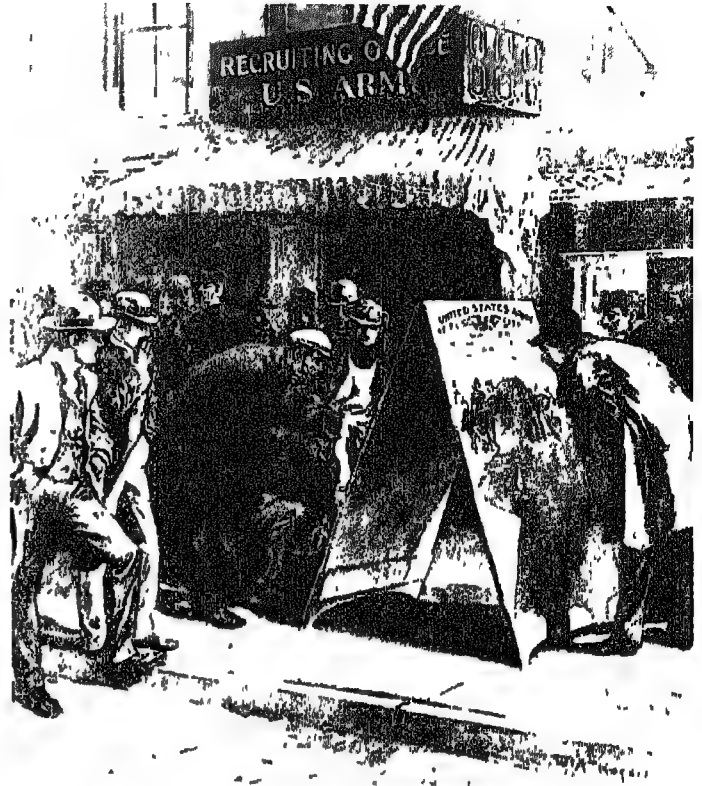
Harper's Weekly Mar 26, 1898
Courtesy Harper & Brothers, New York City

"Fire When Ready, Gridley"

The U S. Pacific squadron, already in Asiatic waters, headed for the Philippine Islands, Spain's rich possession in the Far East.

Harper's Weekly, June 25, 1898 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

On May 1, 1898, one week after the declaration of war, Admiral Dewey on the *Olympia* led the Pacific squadron into Manila Bay, P. I., sank all ten vessels in the Spanish Admiral Montojo's fleet and silenced the shore batteries. The picture *above* was drawn from a sketch made on the spot.

Call to Arms

The immediate objective of the armed forces was the island of Cuba The Regular Army, small but well-trained, presented no problems. The hundreds of thousands of volunteers, however, were equipped mainly with enthusiasm Old Springfield rifles were their arms when they had any on arrival at ports of embarkation. But they came streaming in.
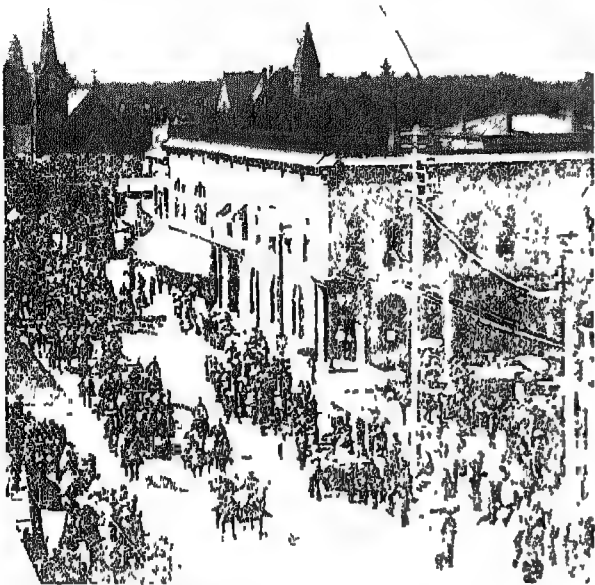
Courtesy, Wyoming State Library and State Historical Department, Cheyenne

At the *left* a cavalry unit is seen leaving Cheyenne, Wyo.

Tampa, Fla., was the scene of hasty training maneuvers as shown *right*

Harper's Weekly, May 28, 1898
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Harper's Weekly, May 28, 1898
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Nine miles away, commandeered transports of all kinds waited at Port Tampa, an embarkation point chosen apparently for its inaccessibility and lack of facilities.

The waiting men sickened on "embalmed beef" and sweltered in heavy "blues" under the Florida sun. Khaki cloth could not be provided.
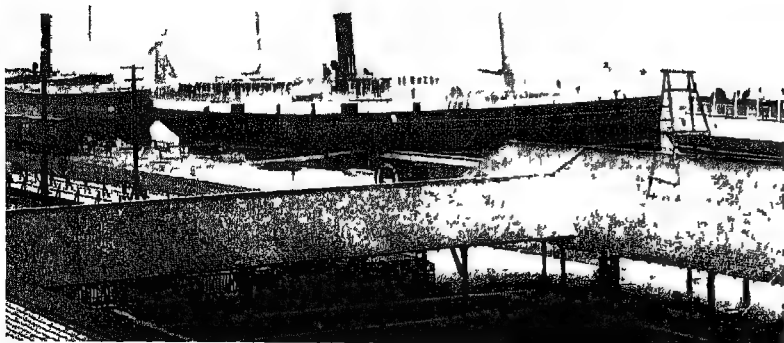
The Rough Riders

Colorful, unconventional and enthusiastic, this volunteer cavalry outfit reflected the temperament of its Lieutenant-Colonel. Theodore Roosevelt had resigned his place on the Board of Naval Strategy to Capt. A. T Mahan and joined with Col. Leonard Wood in command of the Rough Riders A view of the picket line at their Texas training camp is seen *below*

Harper's Weekly, June 4, 1898 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Scribner's Magazine, January, 1899

Recruits from the cattle-ranges and mining camps found little difficulty in the camp chore pictured *above*.

The amenities were not forgotten. In the picture of the Officers' Mess *left*, Col Wood and Lt.-Col. Roosevelt sit at the head of the table.

Courtesy, Scribner Art File

Santiago Blockaded

News had come, meanwhile, that a Spanish cruiser squadron under Admiral Cervera had sailed from the Cape Verde Islands The resultant howls for protection from seaboard American cities subsided when it became known that the Spanish ships had anchored in land-locked Santiago Bay on May 19 The portion of our Atlantic Fleet in Cuban waters immediately set up a blockade

Events of the next few weeks provided a war-correspondent's field day From descriptions received, an artist produced the sketch *left* of Richmond P Hobson and his men scuttling the old collier *Merrimac* in the bottle-neck entrance of Santiago Bay on the south-east coast of Cuba early in the morning of June 3.

Harper's Weekly, June 18, 1898 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Harper's Weekly June 25, 1898 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Meanwhile, at Port Tampa, a disorganized Commissary labored to get an expeditionary force of eighteen thousand men off to Cuba.

Invasion

Gen Shafter's army put off from Port Tampa on June 15 Behind them, they left a host of sick men, a hopeless confusion and the mounts for the Rough Riders *Below* is shown a part of the landing at Daiquiri, made without opposition between the twentieth and the twenty-fifth of June The Spanish Captain-General seemed strangely unconcerned and mustered only a handful of his available troops to block the movement toward the high ground around Santiago.
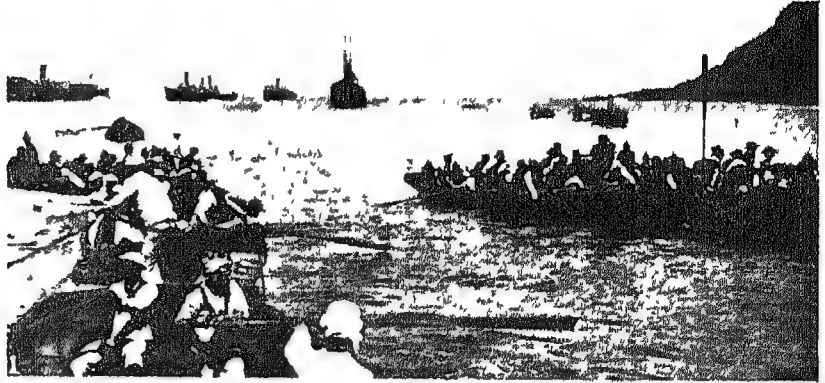
Harper's Weekly July 16, 1898
Courtesy Harper & Brothers, New York City

Harper's Weekly, July 30, 1898
Courtesy Harper & Brothers New York City

The troops pressed forward through tropical vegetation and swampy ground (*left*). An engagement took place at Las Guasimas as the Spanish outposts were driven in.

San Juan Hill was the key point directly blocking the American advance El Caney opposed the enveloping operation of our right wing.

On July 1, Lawton's division carried El Caney. In a simultaneous attack, Kent's division, including the (unhorsed) Rough Riders, charged up San Juan Hill To the *right* is seen one of the few authentic pictures of the charge of the Rough Riders.

Courtesy, Scribner Art File

Santiago

In possession of the hills around Santiago, the United States Army began siege operations. Admiral Cervera was persuaded to escape before the city fell and his ships could be taken at anchor. At nine in the morning, July 3, 1898, the Spanish squadron made its best speed out of the harbor and headed westward. The blockading squadron of battleships and cruisers closed in and gave chase
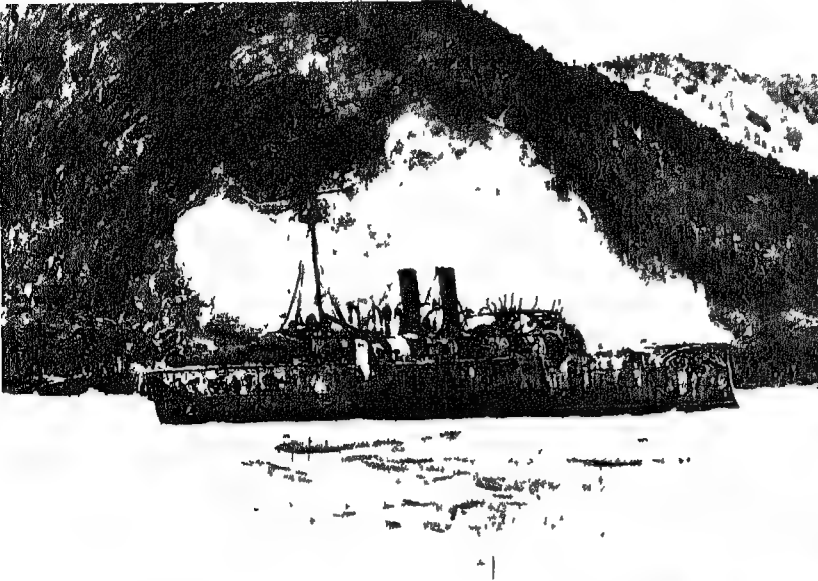
By one o'clock the Spanish ships had been overtaken and destroyed. To the *left* is the wreck of Cervera's flagship, *Infanta Maria Teresa,* as sketched on the spot by Carlton Chapman.

Harper's Weekly July 30, 1898
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Courtesy, The National Archives, Washington, D C

At the *right* is shown the hulk of the cruiser *Reina Mercedes,* sunk attempting a sortie on the night of July 4.

Harper's Weekly, July 23, 1898
Courtesy, Harper & Brothers, New York City
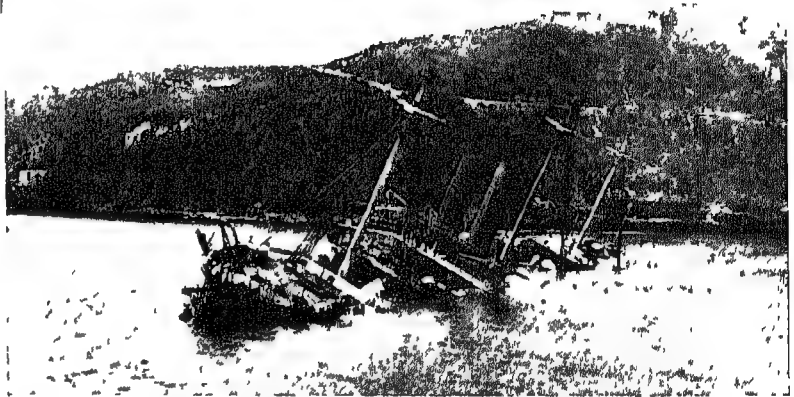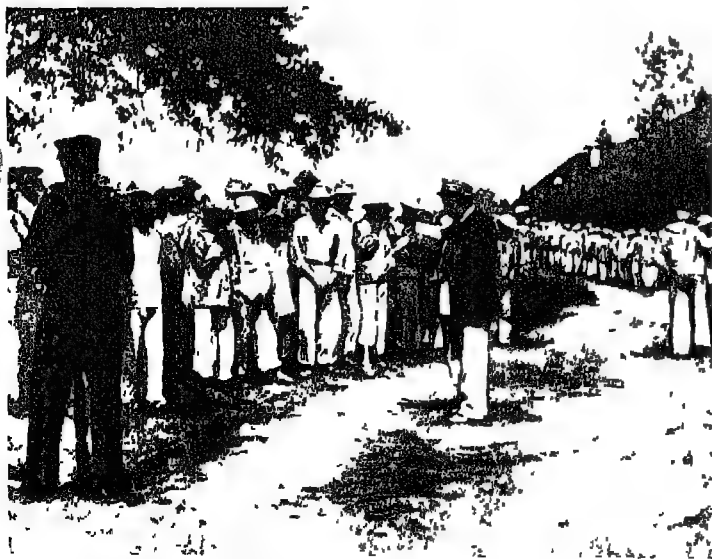
The captain of the Spanish warship *Cristobal Colon* is seen at the *left,* as he checks off the names of his crew at the prison camp

Spreading the News

Newspaper correspondents reported the war news as if they were dealing with a sports event. One of the most glamorous of these correspondents was Richard Harding Davis (*right*)—a prominent writer of fiction and supposedly the model for one of the variants of the "Gibson Man" (see page 93).

Artist-correspondents were attached to the Fleet, and one of them drew the sketch *below*, of the *Oregon* and the *Texas* in pursuit of the *Vizcaya* at the battle of Santiago Bay.

Courtesy, Scribner Art File

Harper's Weekly, July 30, 1898
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Currier and Ives, in the last years of their activity, circulated the naval print shown *below*.
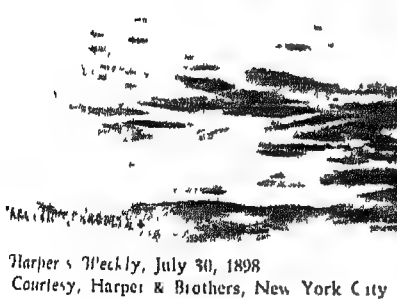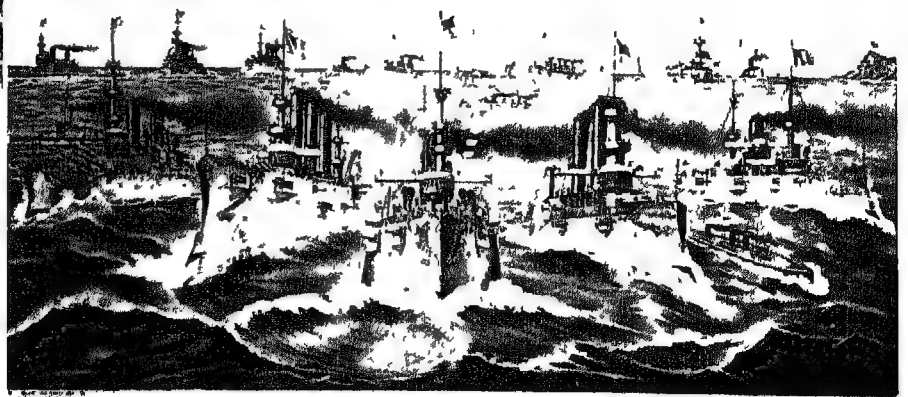
Courtesy, Robert Fridenberg Galleries, New York City

Manila Again

Ever since the sinking of Montojo's ships in May, Admiral Dewey had been blockading the harbor of Manila, warding off German gestures of sympathy with Spain, and temporizing with Filipino insurgents under Aguinaldo. On July 17, the first troop transports arrived and Cavite was occupied.

By July 31, Gen Wesley Merritt considered himself strong enough to invest the city of Manila, and began to negotiate with the Spanish garrison.

[illegible] Nov. [illegible]
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

By arrangement with the Spanish authorities, the Spanish positions were surrendered in such a manner that Aguinaldo and his adherents were unable to make a joint occupation of the city with our troops. The insurgent leader (shown *left* with his chief supporters) was outraged.

At the *right* the American flag is seen as it was hoisted over the Spanish citadel by Lt.-Col McCoy of the 1st Colorado Volunteers
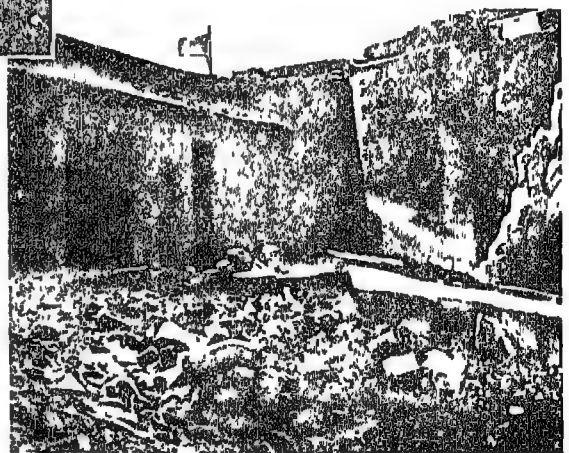
Harper's Weekly, Oct 15, 1898
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Harper's Weekly, Nov 12, 1898
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Gen. Merritt was in a touchy situation He had 8,500 men to hold a city of 300,000 people, to guard 13,000 Spanish prisoners and to fend off at least 10,000 angry Filipino insurgents.

Aguinaldo, elected provisional President of the Visayan Republic, moved his government to Malolos. The end was not yet In Manila, hungry Filipinos flocked for rations to the Army's Commissary (*left*).

Paths of Glory

Soldiers and sailors returned to taste the sweets of victory at home. Local celebrations were held to welcome them.

In the Naval Parade at New York, the *Oregon* (*right*) attracted great attention for her record run around Cape Horn to be present at the destruction of Cervera's squadron.
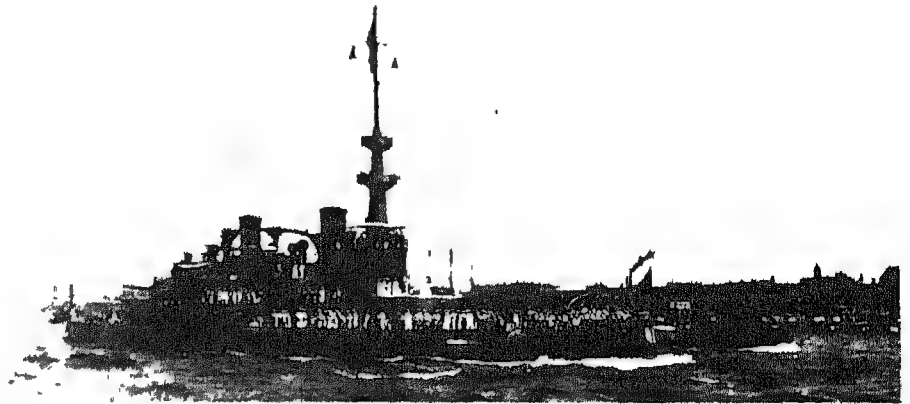
Harper's Weekly Sept 3, 1898
Courtesy Harper & Brothers, New York City

One of the great moments at the Peace Jubilee in Philadelphia was the passage of Lt. Hobson and his crew through the court of honor (*left*).
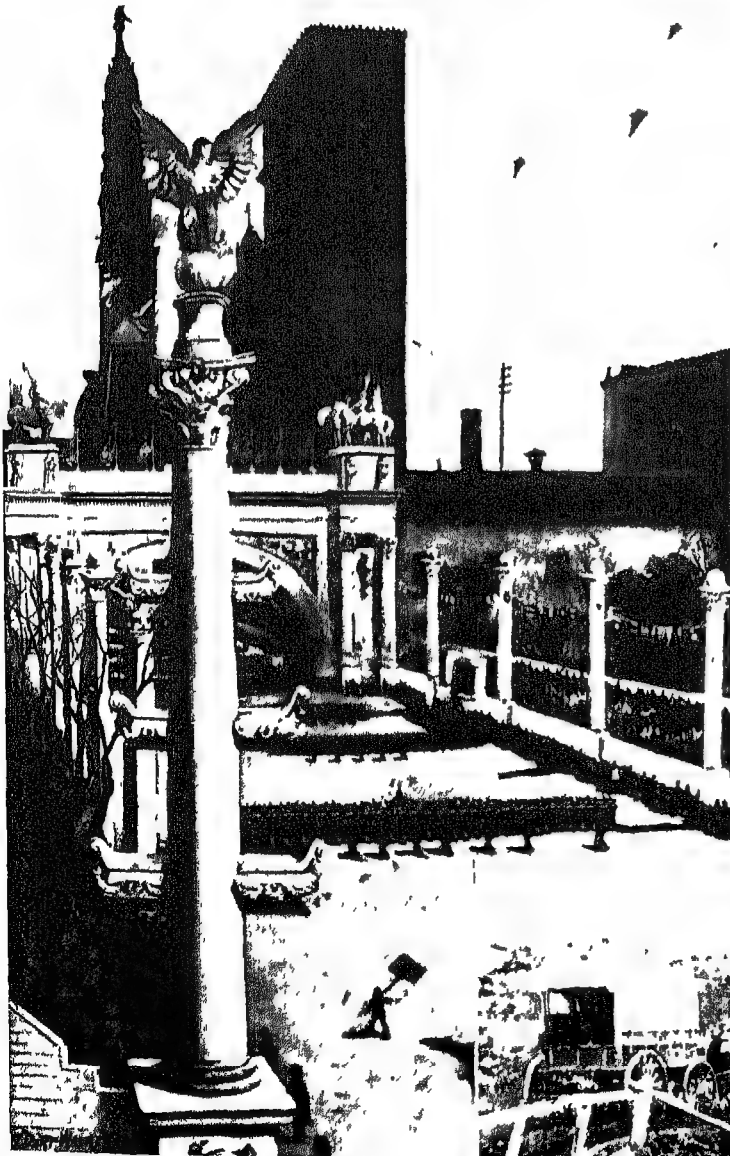
Harper's Weekly, Nov 5, 1898
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Meanwhile at Camp Wikoff, Long Island, thousands of fever victims were held in strict quarantine. Each returning transport or hospital ship contributed its share to the ambulance trains headed for Montauk Point *below*.

Harper's Weekly, Aug 27, 1898
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

4

THE FULL DINNER PAIL

The average citizen of the United States accepted his involvement in colonial problems without much protest. As a result of the war, although opinion had been much divided as to its necessity or justice, a general business boom had come. The money market seemed stable once and for all; at the end of the century (did it end in 1899 or 1900?), peace and prosperity seemed to have returned.

Courtesy, Mr Myron F Henkel, Springfield, Ill

When the Wild West Show came to Springfield, Ill, a new attraction rode in the parade—a group of genuine Rough Riders (*left*).

The small-town man cherished his lodge membership At the *right*, the Odd Fellows of El Campo, Tex., parade behind their band.
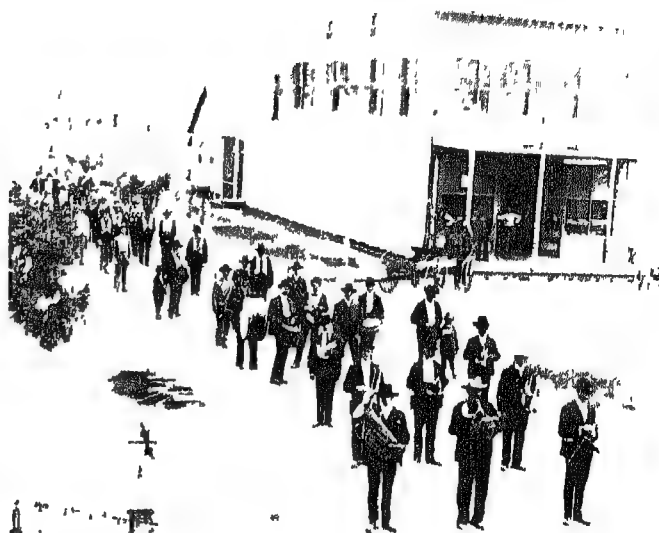
Courtesy, The Library of the University of Texas, Austin

Harper's Weekly, Sept 16, 1899 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Once one of the most potent forces in American politics, the Grand Army of the Republic dressed its lines to parade past Philadelphia's City Hall.

Dances

On every level of society, dancing was a favorite diversion. The day of the "spieler" had departed and a more genteel effect was aimed at in the ballroom.

The young ladies of Goucher College, Baltimore, Md., shown *right* were practicing a figure with a proper sense of its importance

For the Benefit of the Fire Fund of the
HALFMOON BAY HOSE COMPANY
SATURDAY EVENING, FEBRUARY 17th, 1900, in
I. O. O. F HALL, HALFMOON BAY, CALIFORNIA

A San Francisco Costumer will be on hand.

Good San Francisco Music has been engaged for the occasion

Supper at the OCCIDENTAL HOTEL $1.00 per Couple

ADMISSION TO BALL $1.00

COMMITTEES

ARRANGEMENTS

RECEPTION

Courtesy The Baltimore Sun and Enoch Pratt Free Library, Baltimore, Md

Dances had their function as fund-raisers for worthy causes. Note the emphasis on the music in the poster to the *left*.

Courtesy, San Mateo County Historical Association, San Mateo, Calif
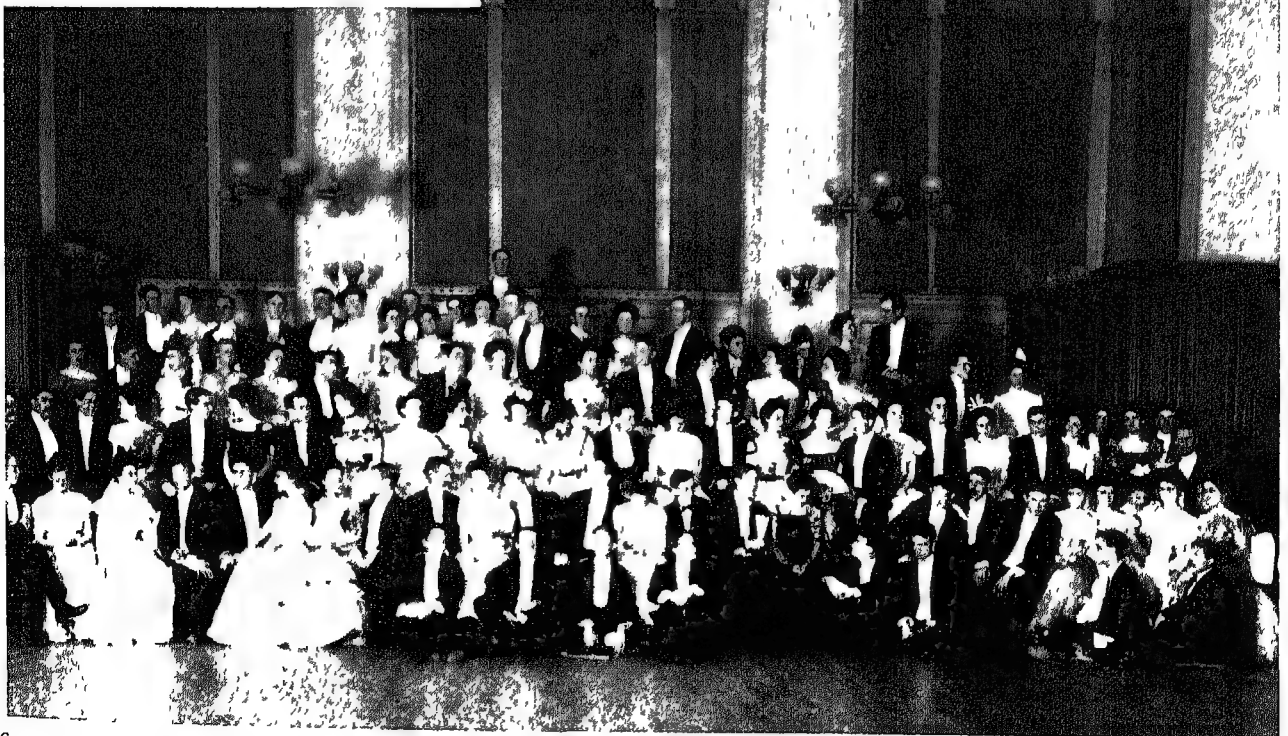
Courtesy, The Valentine Museum, Richmond, Va

Above is shown an interval of the Easter German at Richmond, Va.

Social Rites

Certain kinds of entertainment were still distinctly formal in character.

The début introduced a young girl into the society of her family's friends. In 1899 a débutante appeared with comparatively little fanfare, as shown *left*.

Afternoon tea had a protocol of its own. *Below*.

Harper's Bazar, Dec. 2, 1899. Courtesy, Harper's Bazaar, New York City

Alexander Black, *Miss America*, 1898

Courtesy, Mr. Myron F. Henkel, Springfield, Ill.

An engagement was announced at the somewhat self-conscious party shown *above*.

Lost Inhibitions

Animal spirits were given play at definite places and seasons

Through St. Charles Street, New Orleans, the King of the Mardi Gras passed in state (*right*), inaugurating his brief but lusty reign.
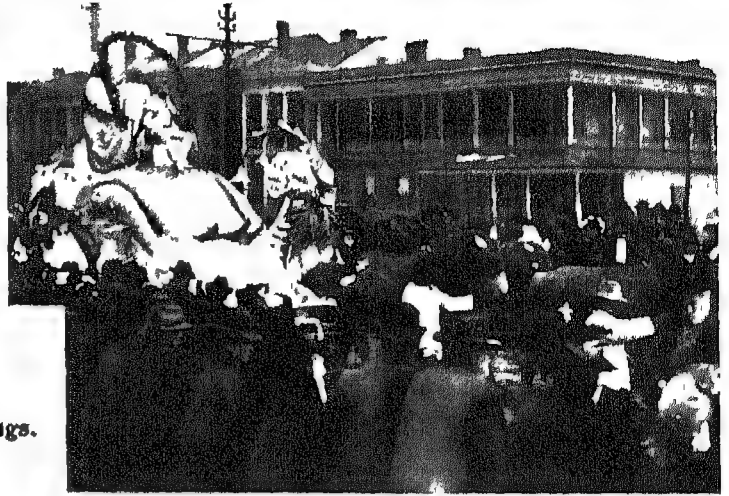
Harper's Weekly, Mar 4, 1899
Courtesy Harper & Brothers, New York City

SHOOTING THE CHUTES.

. . . The Sport of Kings.
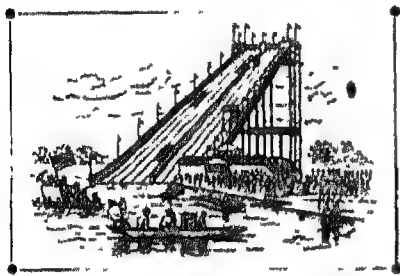
Shooting the Chutes . . . .

UNDOUBTEDLY is the most invigorating, healthful, exciting and most fascinating amusement ever introduced

Those who have visited *Coney Island* this season have been greeted with the query

HAVE YOU SHOT THE CHUTES?

And on every side you hear people praising the *Chutes* with enthusiasm

Both press and public are unanimous in their approval of its wonderful success

It is worth a trip to *Coney Island* in order that you may

· · SHOOT THE CHUTES. . .

AT TERMINUS OF SEA BEACH R. R., Near the Big Elephant — CONEY ISLAND.

THE PAUL BOYTON CO.,
Sole Patentees and Owners.

LONDON, PARIS NEW YORK CHICAGO
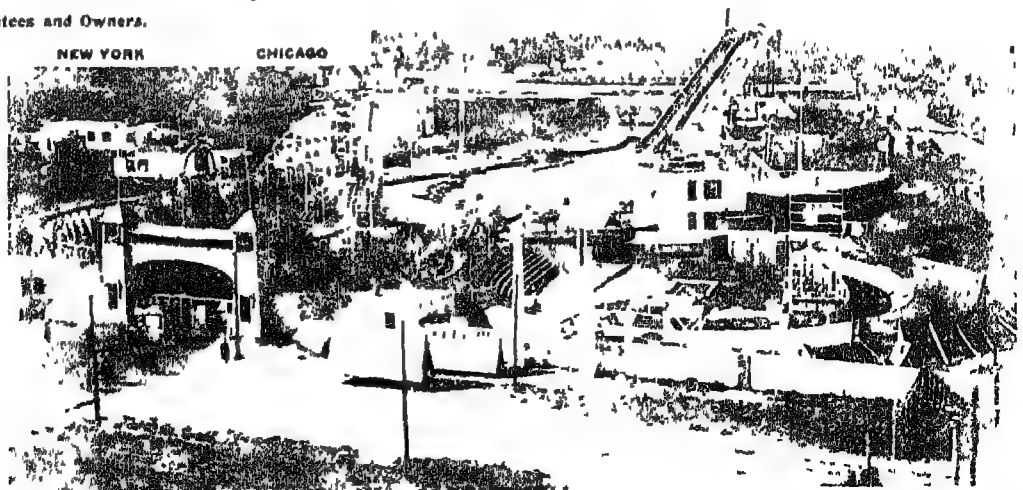
Courtesy, Mr Paul Boyton, Sheepshead Bay, N Y

Coney Island welcomed a new and sensational "ride," the Shoot the Chutes, advertised *left* and seen in its first season *below*.

A troupe of swimmers and divers performed in the pool when the chutes were not shooting.

Courtesy, Mr Paul Boyton, Sheepshead Bay, N Y.

Gittie Up

Courtesy, The Hempstead Library, Hempstead, N Y

The runabout used for ordinary driving was much the same whether (as in the picture of two Long Island speed demons *above*) you were going to the village for the mail, or taking a brief turn around the Park as the Richmond, Va., lady shown *below* has just done.

Courtesy, The Valentine Museum, Richmond, Va.

The Brewer's Big Horses

The fight against the saloon and all it implied was opposed in the cities by the influence of politician-saloon-keepers. The establishment at the *right* belonged to the famous Alderman of Chicago's First Ward, Mr. "Hinky-Dink" Mike Kenna.
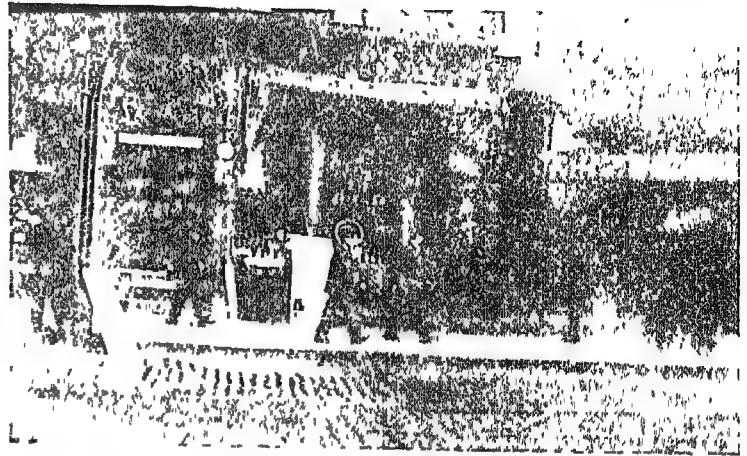
Courtesy, The Managing Editor

Harper's Weekly, July 22, 1899
Courtesy, Harper & Brothers,
New York City

Outside the large cities the forces of temperance had greater victories. "Drinks" advertised for sale at the Michigan camp-meeting refreshment tent shown *left* would be lemonade and "phosphates" or bottled soda-water.

Militant prohibitionists attended the rally in the main square of Nacogdoches, Tex., seen at the *right*. The largest banner reads, "Save Our Boys."

Courtesy, The Library of the University of Texas, Austin

Fashion Notes: End of a Century

The task of the *modiste* had become complicated by the existence of two different kinds of woman—the "New" and the conventional

Alexander Black, *Miss America* 1898

The conventional lady's garments were designed to set off her essential womanliness as in the picture to the *left* and suited traditional feminine attitudes.

The picture *below, left,* shows a décor of ostrich plumes, feather boa and chatelaine, a little overdone but true to the concept of a "womanly woman."

Alexander Black, *Miss America* 1898

The veil shown in the picture *above* was ideal for cute tricks such as freeing the end of the nose by a pout, or tugging gracefully at the lower hem to display the fineness of a hand.

Courtesy, Nevada State Historical Society, Reno

Fashion Notes (*Continued*)

Thoughtless people might scoff at the "new woman's" aspirations, but the designers and manufacturers of clothing clambered on the band wagon.

A coming generation which engaged in athletic activities like that shown at the *right* would want the product advertised *below*.

Courtesy, Public Relations Office, University of Nebraska, Lincoln

Physical Perfection

FERRIS' Good Sense Corset Waist

Made only by THE FERRIS BROS. CO., 341 Broadway, New York

Courtesy, N W Ayer & Son, Inc , Philadelphia, Pa

By popular demand, the traditional man's "boater" straw has been feminized. *Below*.

Harper's Weekly, Mar. 4, 1899
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Harper's Bazar, Feb 10, 1900
Courtesy, Harper's Bazaar, New York City

Displayed *left*, the Cuban heel was introduced that same season of 1899 as a boon to the "outdoor girl."

Gratitude of the Republic

When Admiral George Dewey returned to the United States, his mission completed some seventeen months after the victory of Manila Bay, the American public released on him all its pent-up love of lionizing. He received a series of welcomes that rivaled the triumphs of Rome.

Courtesy Scribner Art File

The *Olympia*, at the head of the squadron, was sighted off Sandy Hook on Tuesday, Sept 26, 1899 Gov Roosevelt and other notables went aboard the flagship to extend an official greeting (*left*).

A triumphal arch (*right*) had been erected at the southern end of Madison Square, and symbolized "Naval Victory."
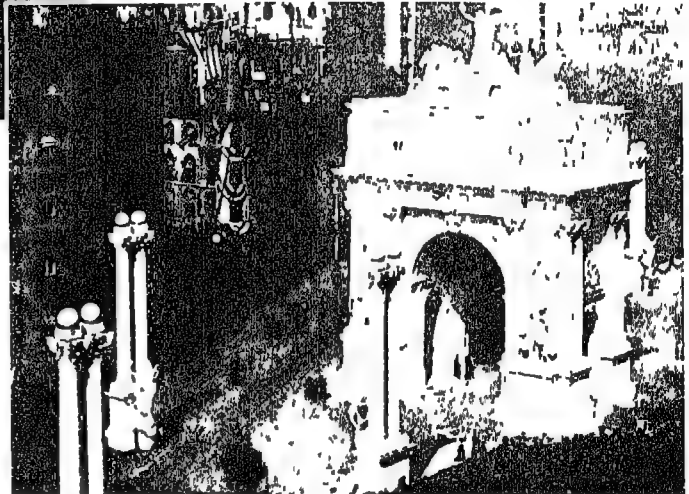
Harper's Weekly, Oct 7, 1899
Courtesy Harper & Brothers, New York City
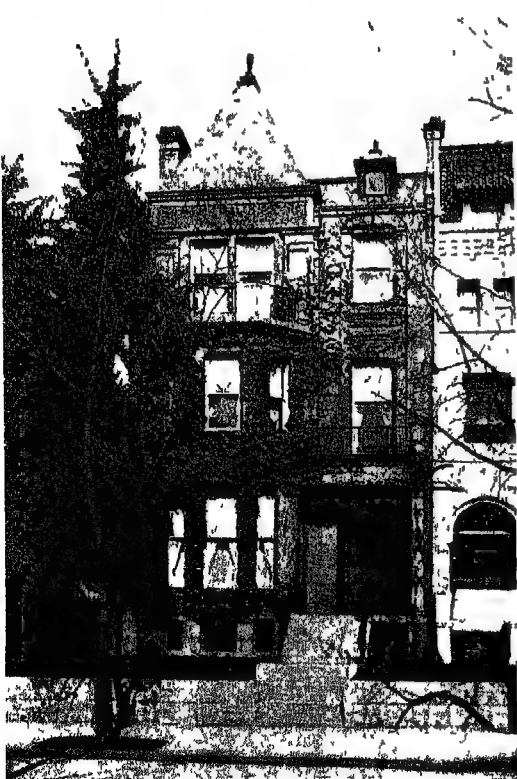
Harper's Weekly, Nov 4, 1899
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

But an unthinking bluntness and a naive honesty disqualified the Admiral as a popular heroic figure. After the parades and the shouting were over, he refused to hold the pose The Washington, D. C., house shown *left* had been given to him by popular subscription He was genuinely puzzled when press and public gave tongue over his presentation of the deed to his newly-wedded wife.

Again Manila

The clash of cymbals and the thump of big drums at countless parades in honor of the returned Admiral did not quite drown out the crackle of rifle fire from across the Pacific. Filipino insurgents did not propose to exchange Spanish rule for American.

Early in February, 1899, a revolt was put down by house-to-house fighting (*right*). A part of Manila was badly damaged by fire, as seen in the panoramic view *below*.

Harper's Weekly, Apr. 22, 1899
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Harper's Weekly, Apr. 22, 1899 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Gen. Arthur MacArthur (*right*), in command of an offensive against insurgent forces north of Manila, captured the provisional capital of Malolos and dispersed Aguinaldo's army, but that leader retreated into the woods and fought a tough guerrilla war until Gen. Funston captured him in March, 1901.

Harper's Weekly, May 27, 1899
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Suburbs

In greater numbers, people who could afford it were shifting their homes outside the cities in search of quiet, fresh air and space. At the home shown *below*, near Richmond, Va., there was plenty of room on the wide lawn for the boys and their bicycles, the smaller children and their goat-cart.
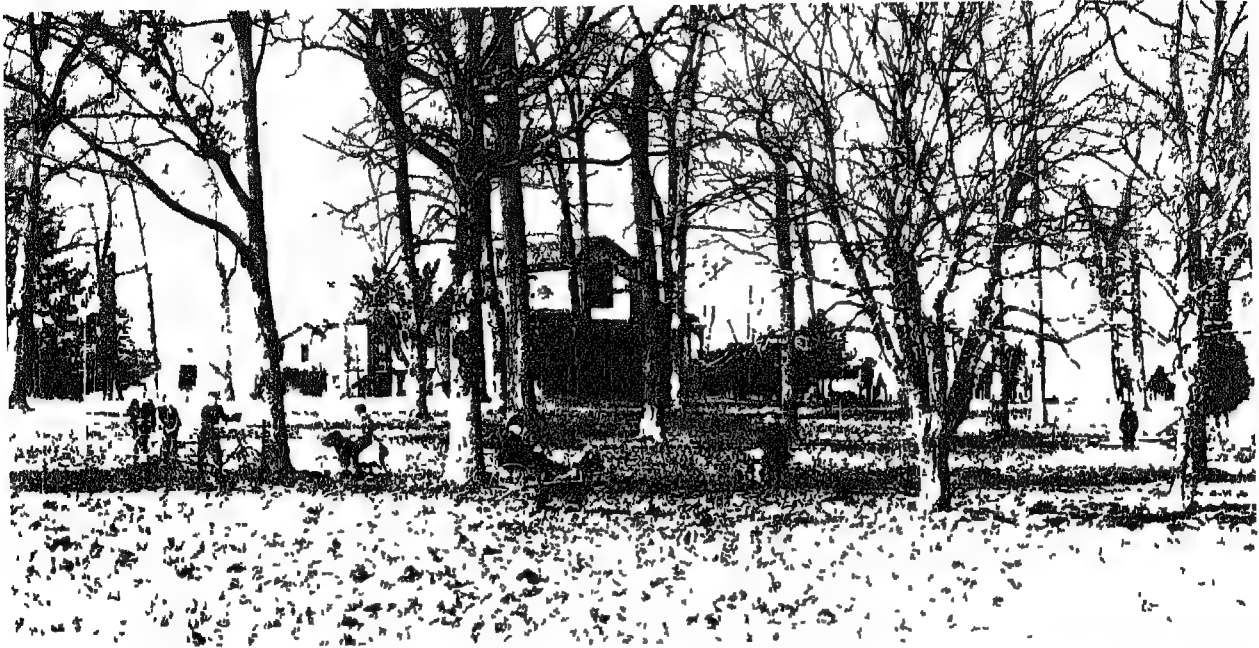
Courtesy, The Valentine Museum, Richmond, Va

Behind less pretentious suburban houses, the "back yard" was a place for play, for relaxation and family entertainment.

Courtesy, Mrs Frank Ewing, Grand Rapids, Mich

Parlors

Every house had one room at least where the family put its best foot forward and displayed what treasures it possessed.

The parlor *right* was in a spacious and comfortable Lincoln, Neb., home. Note the square piano, the framed steel-engraving on the wall, the ornate oil lamp The library or "den" may be seen just through the doorway.
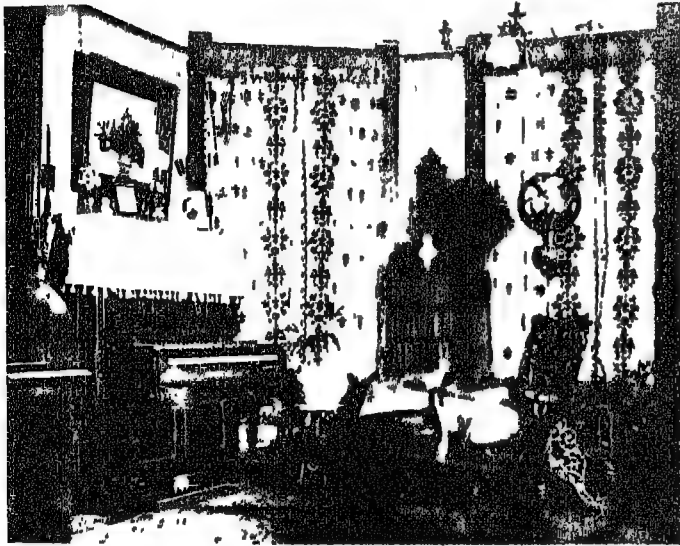
Courtesy Nebraska State Historical Society, Lincoln

Less money was spent on the room *left*, and a less formal effect produced. This Lincoln, Neb., parlor has an upright piano, the lamp is not so heavily ornamented and the top of the piano has been humanized by a few family photographs and a vase of cat-tails.

Courtesy, Nebraska State Historical Society, Lincoln

The parlor in the Cooper County, Mo., farm house shown *right* was an all-purpose room.

Courtesy, Charles van Ravenswaay Collection, Missouri Historical Society, St Louis

Education

These years saw a continuous adaptation of educational practice to meet new challenges.
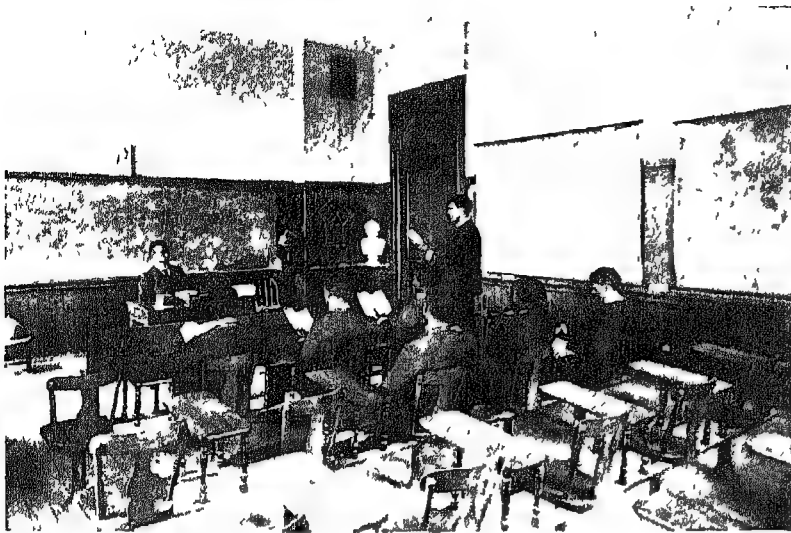
Courtesy, Atlanta University, Ga

In the South, Atlanta University stressed both the practical and the cultural sides of life in the higher education it offered to negro boys and girls. A class in Greek is shown reciting

At the *right* is a class in fine sewing at Atlanta University.

Courtesy, Atlanta University, Ga

Harper's Bazar, Aug 19, 1899 Courtesy, Harper's Bazaar, New York City

In New York, and other crowded urban areas, Vacation Schools had proved themselves valuable factors in reducing summer delinquency. The boys shown at the *left* were learning to model in clay.

Sport Talk

Paced by a Long Island Railroad locomotive, Charles M. Murphy rode a mile in sixty-five seconds on a bicycle, thus becoming immortal as "Mile-a-Minute Murphy."

At the *left* is shown the hero ready for the trial on June 21, 1899. The feat itself is seen at the *right*, as Murphy pedals down the specially constructed board track.
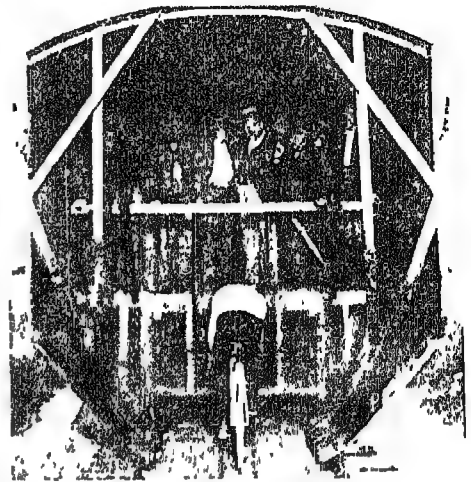
Harper's Weekly, July 8, 1899 Courtesy Harper & Brothers, New York City

Later that summer, the first of Sir Thomas Lipton's *Shamrocks*, challenger for the *America's* Cup, was defeated by the American defender, *Columbia*.

In the picture *right*, *Columbia* is leading as the yachts bear down to the starting line.
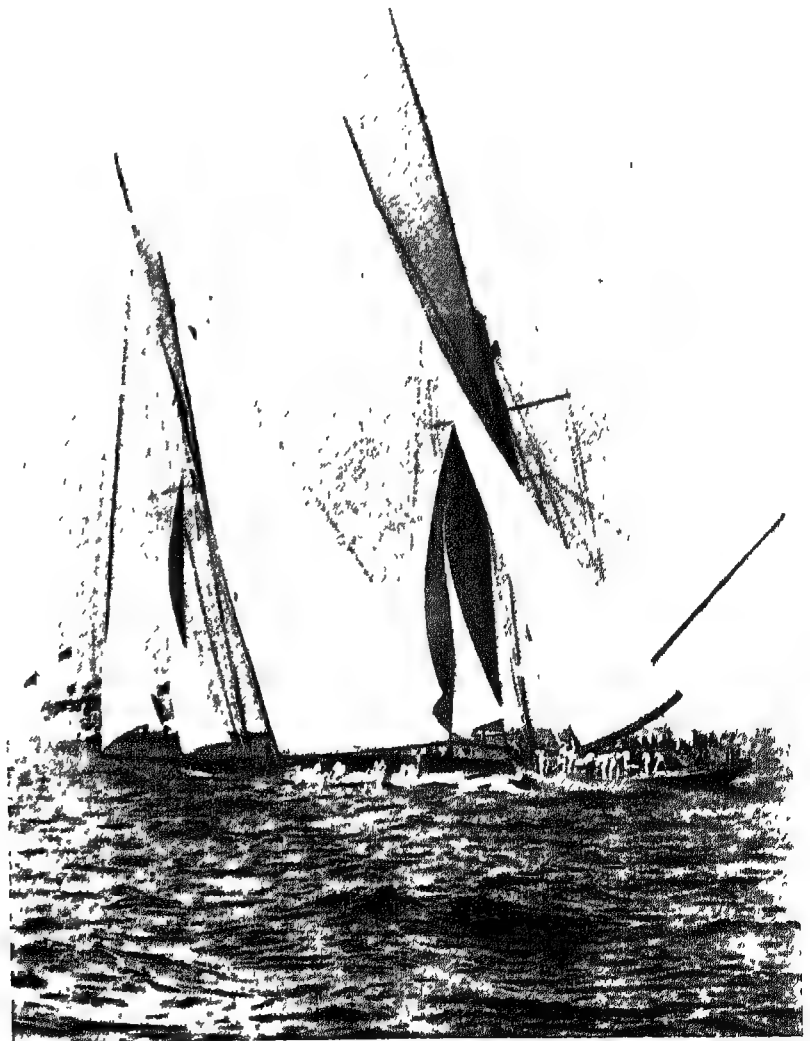
Harper's Weekly, Oct. 21, 1899
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Science a Servant

As engineers applied the lore of the laboratory to practical matters, an era of easeful living appeared certain to open with the new century
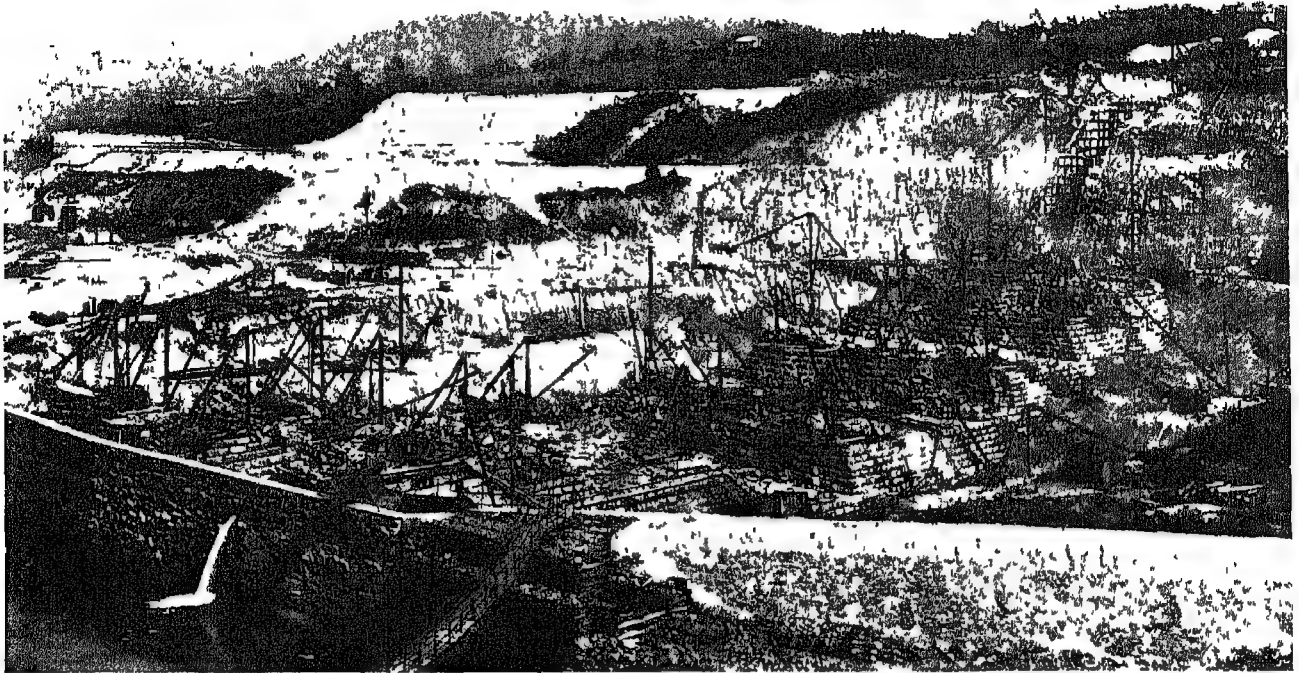
Harper's Weekly, Aug 18, 1900 *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City

New York City's problem of water supply was about to be solved by the new Croton Dam, seen *above* in the construction stage.

Harper's Weekly May 13, 1899
Courtesy, Harper & Brothers, New York City
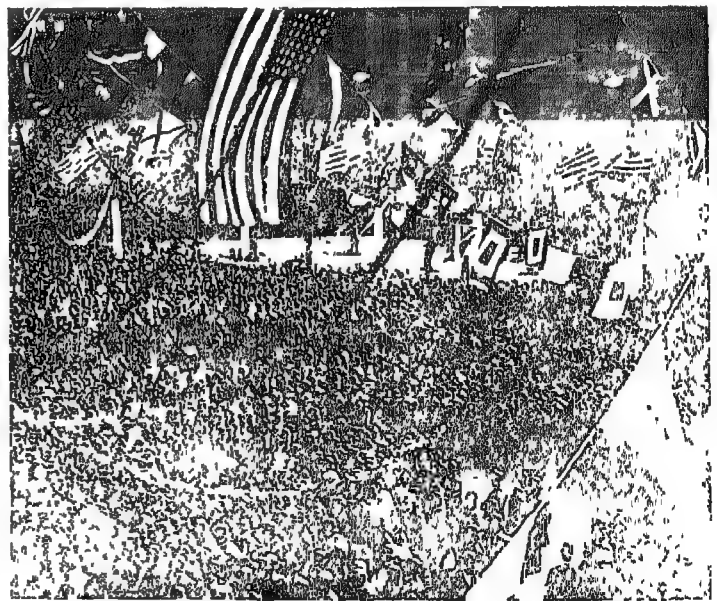
Harper's Weekly, Mar 31, 1900
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

On Mar. 24, 1900, the crowd shown *above*, in New York's City Hall Park, watched the breaking of ground for the new Subway

The 1899 advertisement at the *left* spoke for itself.

Wireless

In the spring of 1899, the Army ran a few experiments in practical field use of Hertzian oscillators.

The picture *right* was taken on the roof of the War Department building, as a message was being transmitted to the field receiving outfit.
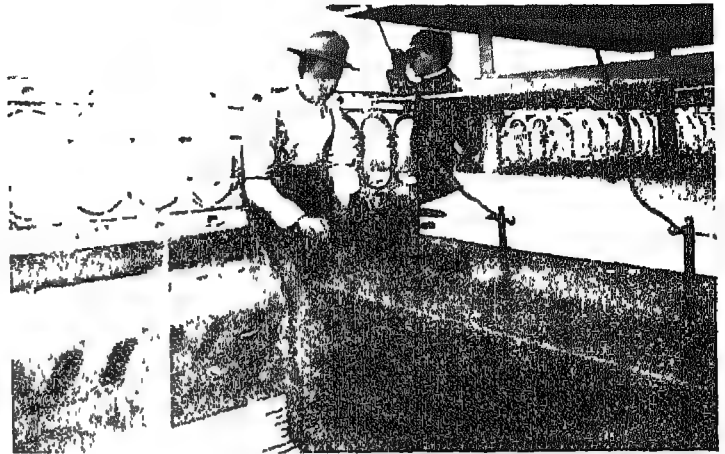
Harper's Weekly, May 13, 1899
Courtesy, Harper & Brothers, New York City
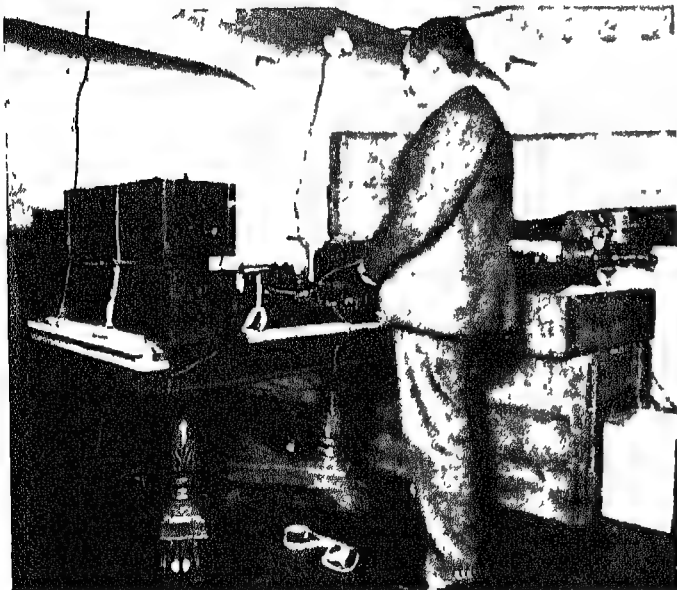
Harper's Weekly, Nov 11, 1899
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Later in that year, the Navy tried out the new Marconi system in successful communication up to nine miles distance between the battleships *Massachusetts* and *New York*. Marconi is seen *left* at the "grasshopper" key of the transmitter aboard the *New York*.

On Nov 15, 1899, the newspaper reproduced at the *right* was sold aboard the United States liner *St. Paul*, the first publication of shipboard news by wireless ever attempted.

THE TRANSATLANTIC TIMES.

Volume I. — Number I.

THE TRANSATLANTIC TIMES

Published on board the ST. PAUL at sea [illegible] for England November 15th 1899.

One Dollar per Copy in aid of the Seamen's Fund.

[illegible]

Through the courtesy of Mr. G. Marconi, the passengers on board the St. Paul are accorded a rare privilege [illegible]

The most important dispatches are published on the opposite page. As all know this is the first time that such a venture as this has been undertaken. [illegible]

[illegible]

BULLETINS

1 50 p.m. — First Signal received, 66 miles from Needles.

2 40 "Was that you St. Paul"? 50 miles from Needles.

2 50 Hurrah! Welcome Home! Where are you?

3 30 40 miles. Ladysmith, Kimberley and Mafeking holding out well. No big battle. 15 000 men recently landed.

3 4[illegible] "At Ladysmith no more killed. Bombardment at Kimberley effected the destruction of ONE TIN POT. It was auctioned for £200. It is felt that period of anxiety and strain is over and that our turn has come."

4 [illegible] Sorry to say the U.S.A. Cruiser "Charleston" is lost. All hands saved.

The thanks of the Editors are given to Captain Jamison who grants us the privilege of [illegible]

Courtesy, Radio Corporation of America, New York City

Motor Cars

Harper's Bazar, Sept 23, 1899
Courtesy, Harper's Bazaar, New York City

For the first automobile parade ever held, at Newport, R. I., Sept. 7, 1899, Mrs. Astor (shown *left*) decked her entry in trappings that even an Astor horse might envy.

Advertising of new cars made no extravagant claims Note in the specimen *right* the cost for a hundred mile drive

Harper's Weekly Aug 26, 1899
Courtesy Harper & Brothers, New York City
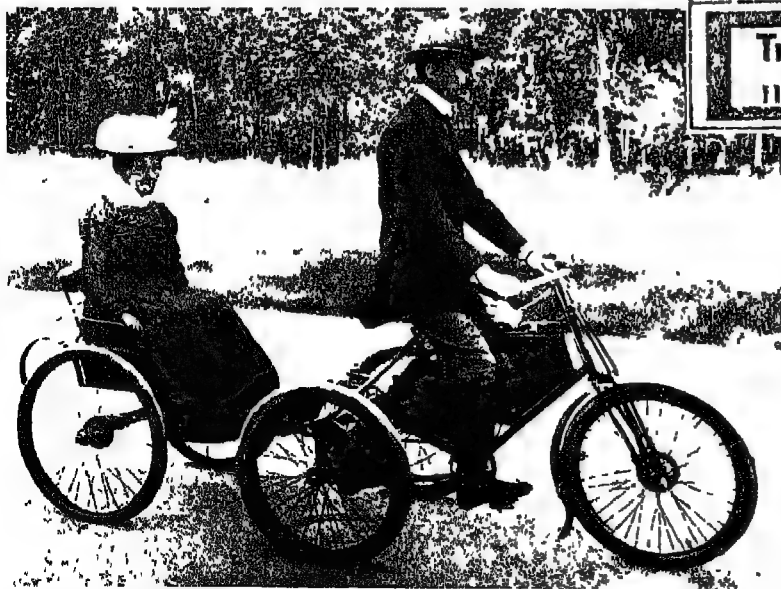
Harper's Weekly, Oct 21, 1899
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

The imported De Dion motorcycle shown *left* was highly recommended "With slight assistance from the pedals it will mount a fifteen percent grade."

Motor Cars (*Continued*)

In the fall of 1900, the galleries of New York's Madison Square Garden looked down on something new—an Automobile Show.
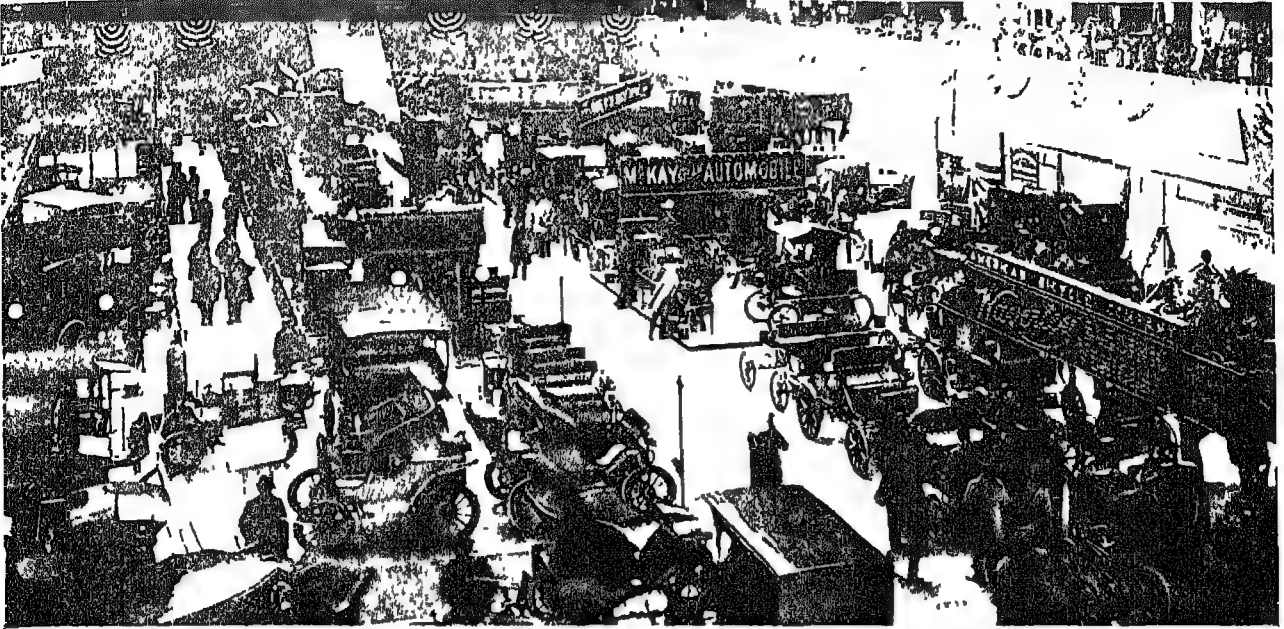
Harper's Weekly, Nov 17, 1900 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

The father of a family is trying the controls of one of the Show exhibits in the picture to the *left* as a salesman stands hopefully by.

Courtesy, Scribner Art File

The first Mack Truck was a bus—the 1900 vehicle seen at the *right*.
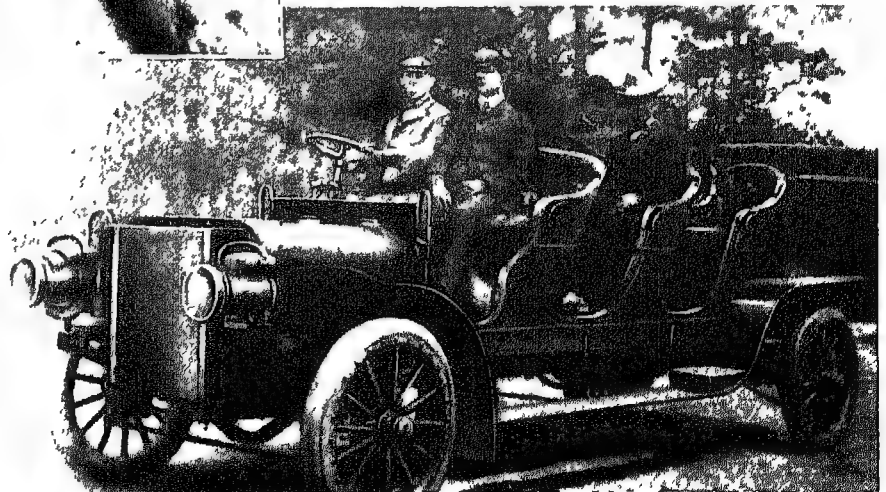
Courtesy, Mack-International Motor Truck Corporation, New York City

Farm Machinery

By the year 1900, production of wheat and corn was about double what it had been in 1870. A factor in this increased yield was the widespread use of steam power on the farms Larger acreages could be planted and harvested.
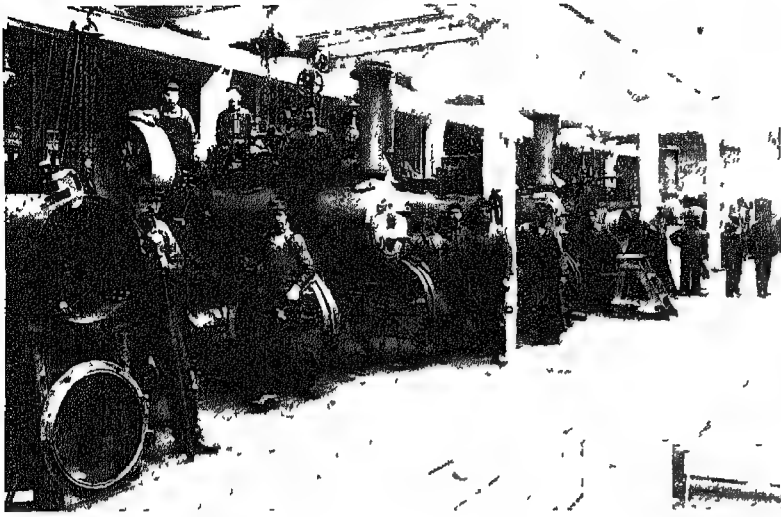
Courtesy, J I Case Company, Racine, Wis

Above and to the *right* are seen stages in the building of traction engines Note the purposeful pose of the apprentice at left center in the picture *above*.
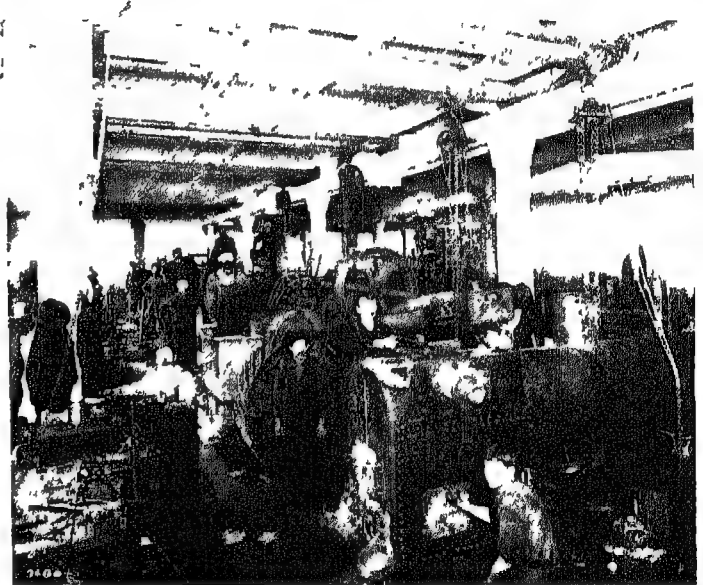
Courtesy, J I Case Company, Racine, Wis.
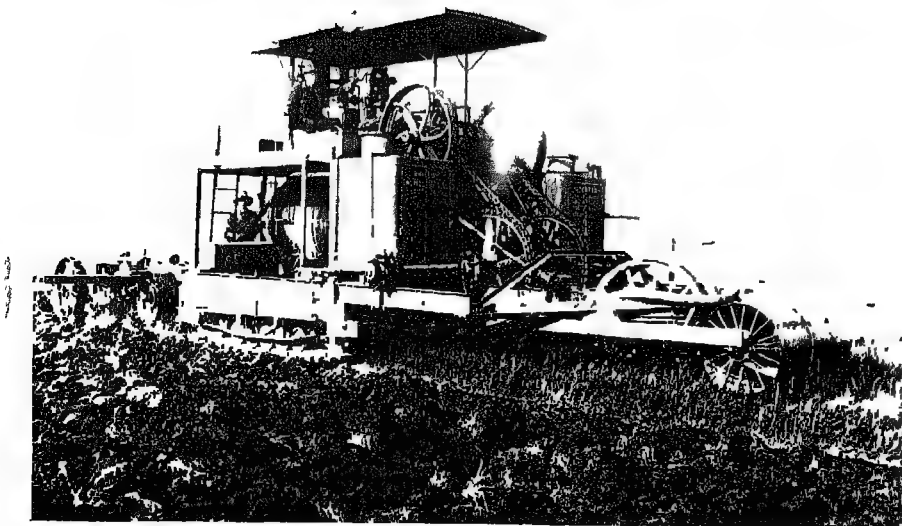
Courtesy, Scribner Art File

The picture to the *left*, made in 1900, shows one of the first applications of a caterpillar drive to a farm engine.

Steel

Just before the turn of the century, the turbulent American steel industry successfully entered the world export market and filled foreign iron-masters with alarm.

In the vast ore-yards of the Illinois Company's South Works (*right*), the steam shovel was used to load the charging buggies.
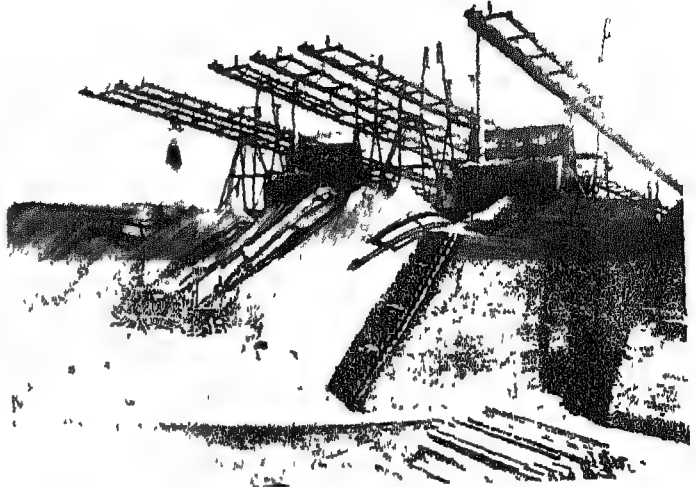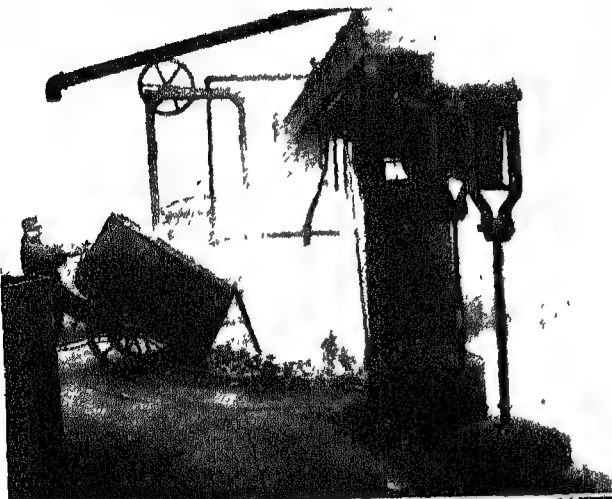
Courtesy United States Steel Corporation, New York City

At the Bellaire Works, the hungry blast furnaces were charged from hand barrows (*left*).

Courtesy, United States Steel Corporation, New York City

At night the glare of the Duquesne Works (*right*) lit the smoky sky.

Harper's Weekly, Apr 21, 1900
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Zinc

A rise in the price of zinc ore to over thirty dollars a ton brought a sudden boom to northern Arkansas where rich deposits lay in the stratified flanks of the Ozarks.
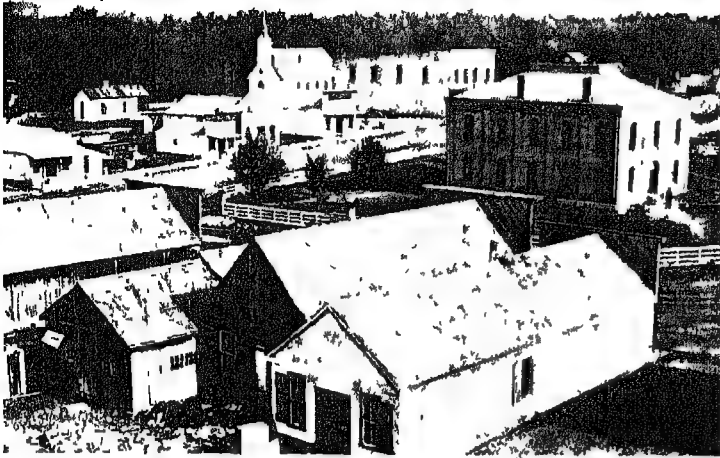
From the town of Yellville, Ark. (*left*), the ore was freighted down the White River to the railroad, and thence by rail and sea to Belgium for reduction into metal.

The mine whose entrance is shown *right* was near Buffalo City, Ark
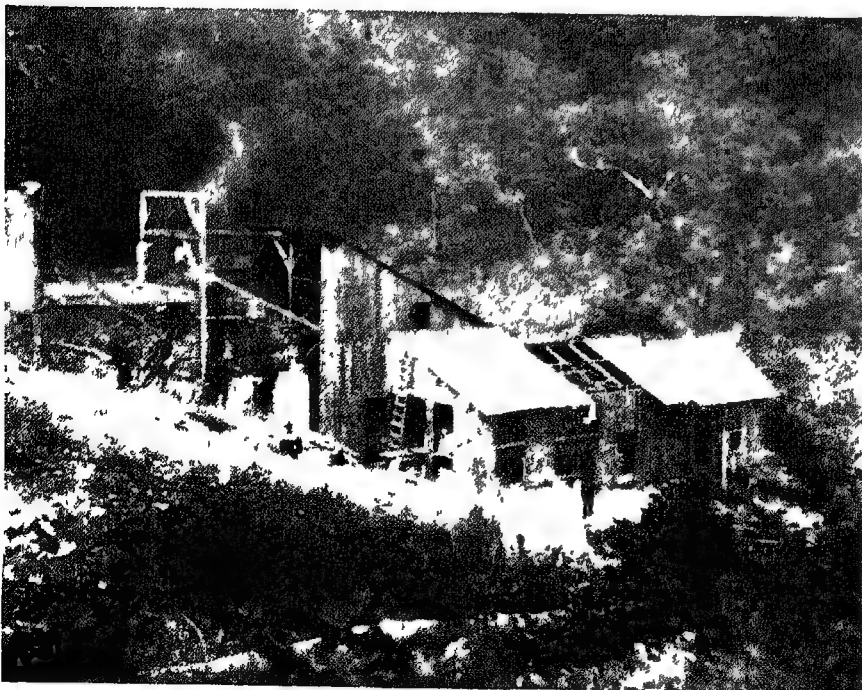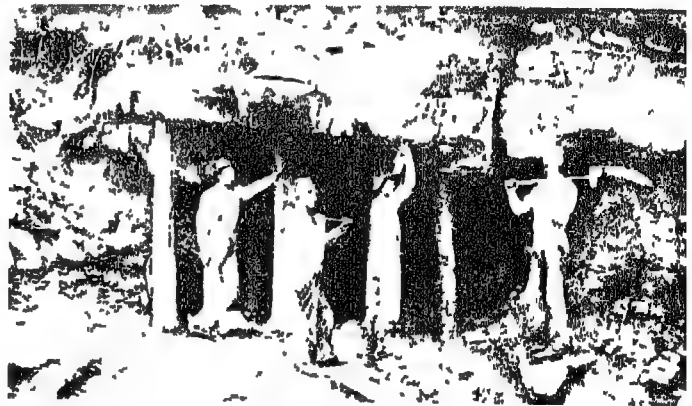
Ore was crushed and separated, at the mill seen to the *left*.

All illustrations on this page are from *Harper's Weekly*, Aug. 25, 1900 *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City

The Nation's Food

A traction engine is shown *right* driving a thrashing machine, as the wheat harvest of 1900 went to market.

Courtesy J I Case Company, Racine, Wis
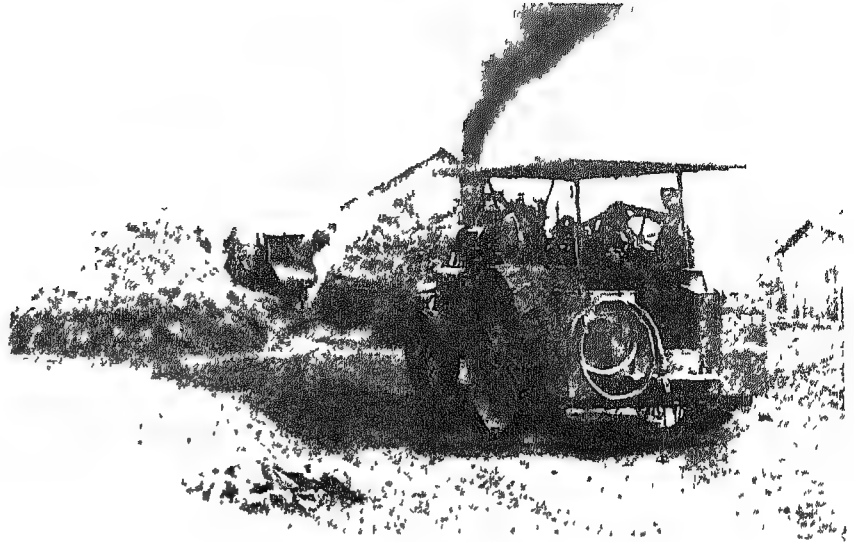
Courtesy, H J Heinz Company, Pittsburgh, Pa.

The men at the *left* are sorting horse-radish roots on a large commercial farm.

Part of the 1900 crop of oranges is being packed for shipment at this Redlands, Calif., plant.
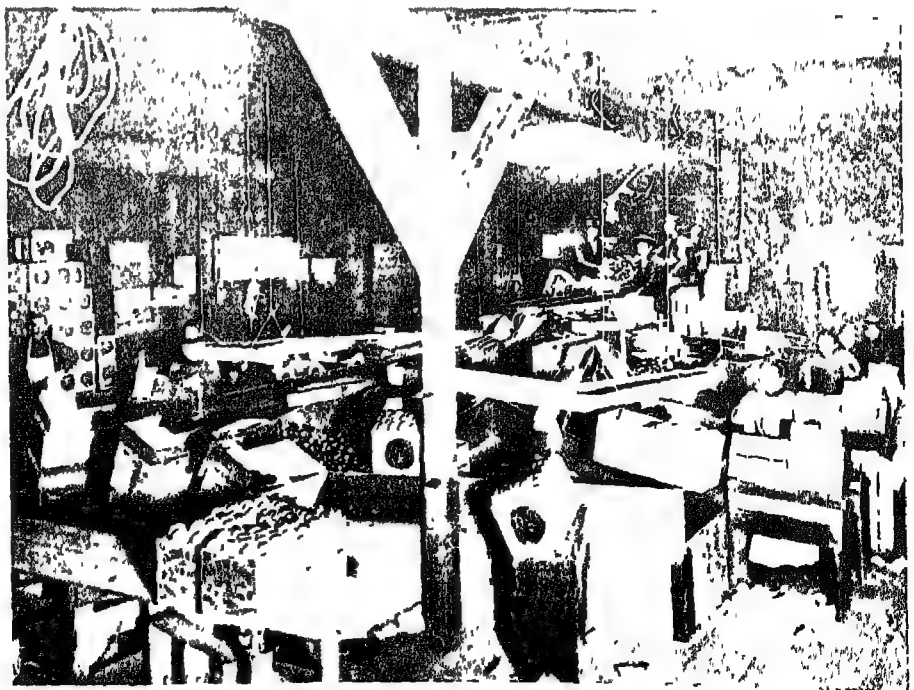
Courtesy, The Edison Institute, Dearborn, Mich.

The Nation's Food (*Continued*)

Courtesy, The Valentine Museum, Richmond, Va

Garden truck for the day-by-day needs of the cities found its way to produce-markets The picture *left* shows the market at Franklin and Eighteenth Streets, Richmond, Va.

Beside the Bayou Teche in Louisiana, sugar cane was fed into the rolling jaws of the crusher pictured at the *right*
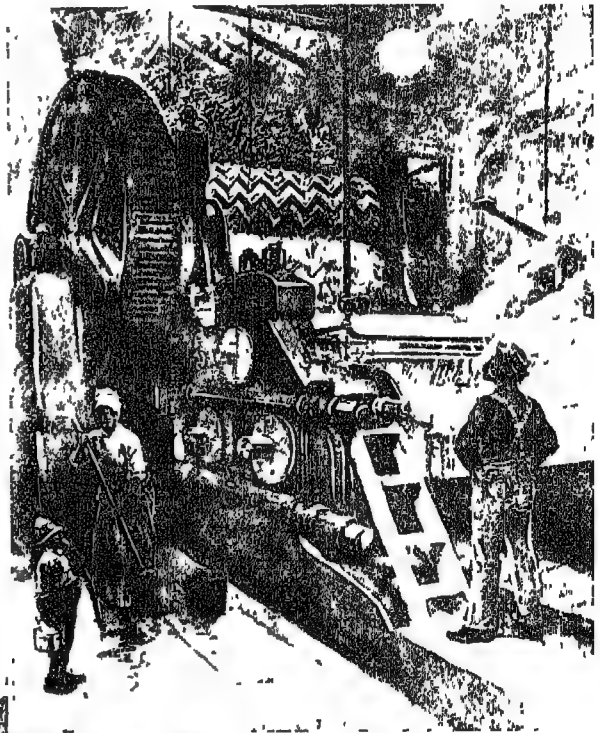
Harper's Weekly Apr 14, 1909
Courtesy Harper & Brothers, New York City
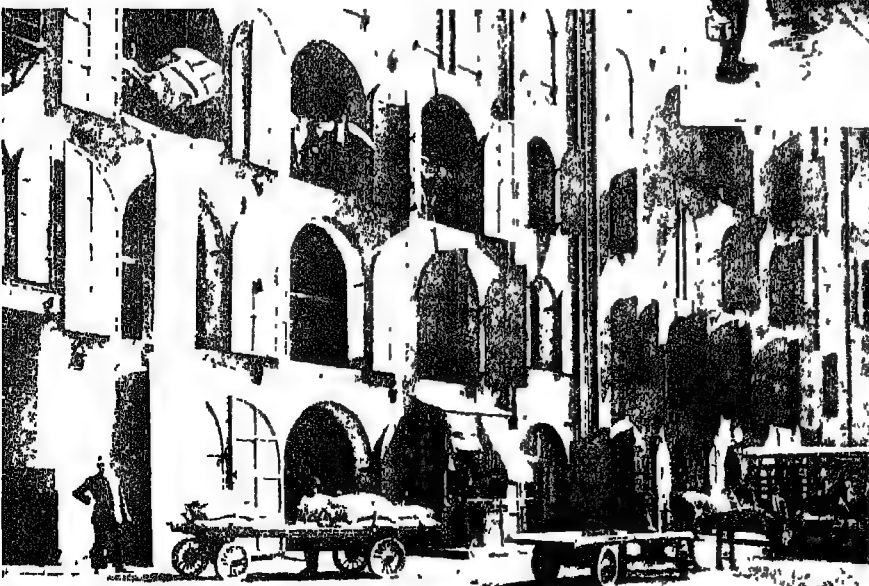
The warehouses alongside the piers at Brooklyn, N. Y, were filled with coffee, neatly classified by mark and chop

W H Ukers, *All About Coffee* 1935 Courtesy, The Tea and Coffee Trade Journal, New York City

The Retail Store

The typical "corner grocery" shown *right* was in a suburb of Chicago
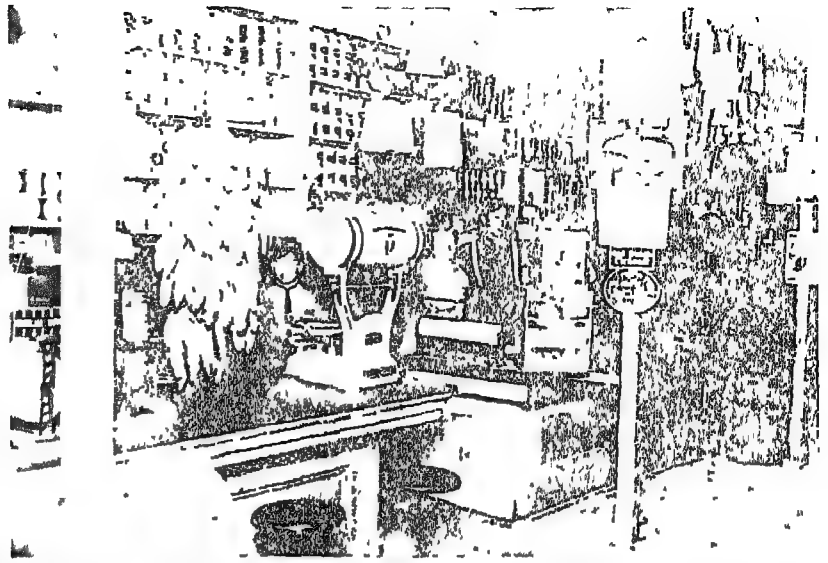
Courtesy, Chicago Lawn Historical Society and Chicago Public Library, Ill

Courtesy, Nebraska State Historical Society, Lincoln

Beer steins were prominently displayed in the stock of this Lincoln, Neb., jewelry shop

The prosperous shoe store shown *right* was at 512 East Adams Street, Springfield, Ill.
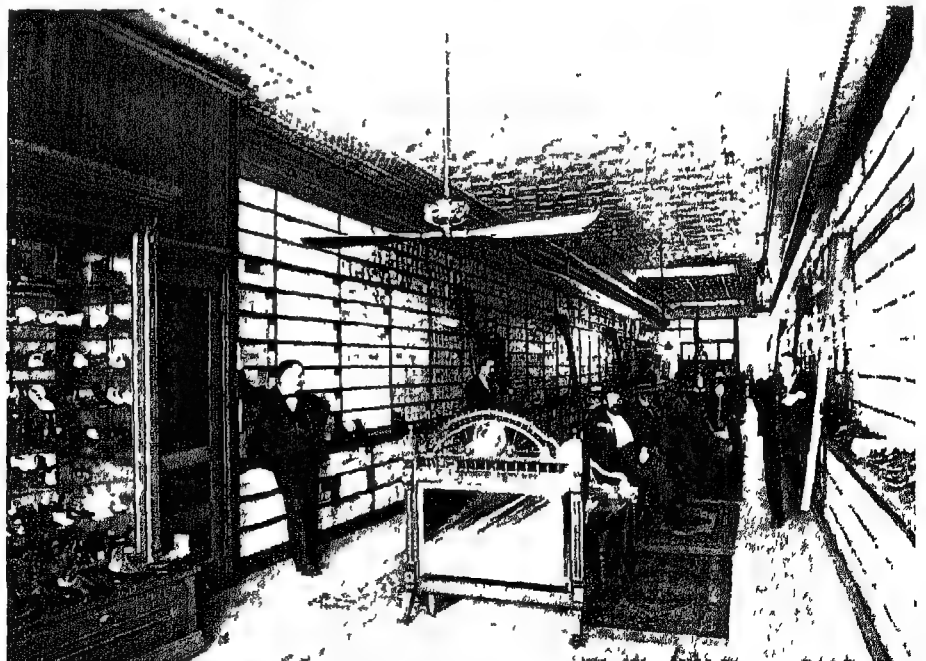
Courtesy, Mr Myron F Henkel, Springfield, Ill.

The Retail Store *(Continued)*

Courtesy, The Great Atlantic and Pacific Tea Company, New York City

The chain stores continued to flourish. As yet they had not expanded their stocks much beyond teas and coffees. The helmeted policeman in the picture *left* was presumably a customer.

Courtesy, Ravenswood Lake View Historical Association, sponsored by The Chicago Public Library, Ill

The milkman and his patient horse were familiar figures

Grocery prices on the list *below* should interest the modern housewife

Don't throw this Circular away

Until you have read it—it will Save you Money and Time....

[illegible]

Ground Pepper, Cinnamon, All... [illegible] Mustard per lb 18c

Powdered or Frosting sugar 7c

[illegible] loaf sugar 7c

Pumpkin per can 8c

[illegible]

Cocoa 20c

Oil 5 gallons 50c

These goods are Standard goods, and we will be glad to show you other goods at the same margins but not quoted on this circular.

Respectfully,

E. E. SCHLIESKE

CASH GROCER

Courtesy, Chicago Lawn Historical Society and Chicago Public Library, Ill
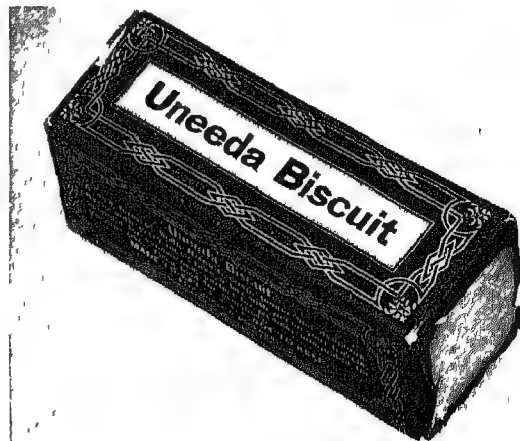
Courtesy, National Biscuit Company, New York City

Above is shown the 1900 Uneeda Biscuit box, a pioneer experiment in packaging and retail trade promotion.

Disasters

Despite general progress and prosperity, there were always local disasters to oppress the too soaring spirit of man.

Courtesy, The Essex Institute, Salem, Mass

On Mar. 26, 1899, the steamer *Norseman* went ashore on Tom Moore's Rocks off Marblehead, Mass.

The spring freshet shown *right* swamped lower Main Street in Richmond, Va.

Courtesy, The Valentine Museum, Richmond, Va

The chemical warehouse of Tarrant and Company burned and exploded, taking the lives of several New York firemen, and wrecking the Greenwich Street Elevated Railroad.

Harper's Weekly, Nov 3, 1900
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Galveston Flood

Galveston, Tex., stood on the northeasterly end of an island off the Texas coast at an elevation of about ten feet above the sea. At ten in the morning of Sept. 8, 1900, a gale was blowing over Galveston, by noon, the wind was at hurricane force and great waves were pounding over the summer pavilions at the beach, at three in the afternoon, the barometer stood at 29. Then a full tropical hurricane struck the city, with the waters of the Gulf flooding in to a depth of eight feet and a wind registering ninety-six miles an hour before the Weather Bureau was wrecked. By midnight the storm was over. More than five thousand lives had been lost.

Harper's Weekly, Sept 29, 1900 *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City

Residential districts were reduced to kindling (*above*).

Harper's Weekly, Sept 29, 1900
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

The storm destroyed the shops along Tremont Street (*left*) and among other public buildings the Orphan Asylum (*below*).

Courtesy, San Mateo County Historical Association, San Mateo, Calif
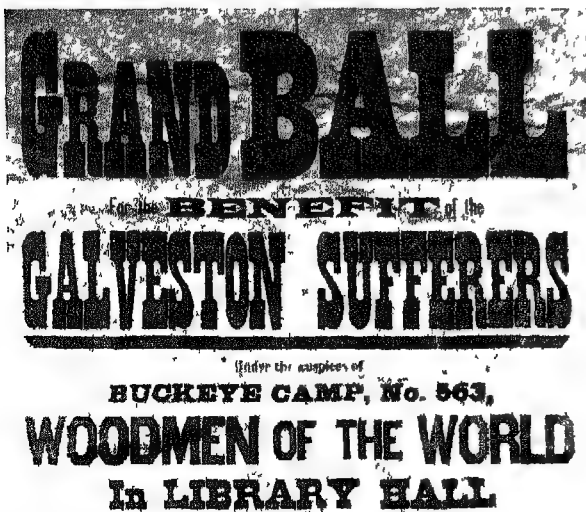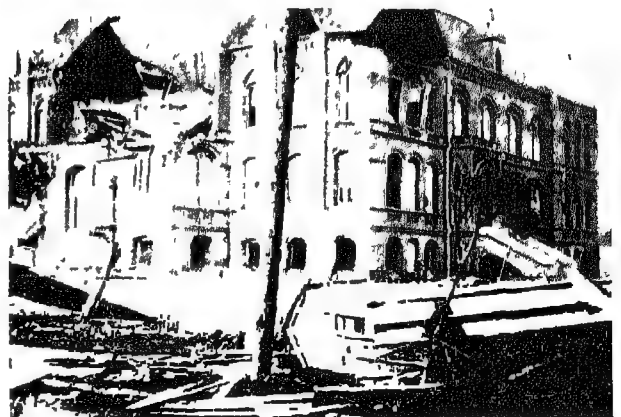
Typical of the sympathetic reaction of the whole nation was the poster at the *left*.

Yellow Fever

A commission of Army medical officers, headed by Dr. Walter Reed, was appointed to search out the cause and means of transmission of the disease after an outbreak among United States soldiers at Havana. In the fall of 1900, building on the researches of Doctors Finlay and Carter, Dr Reed and his associates proved that the bite of the Aedes Aegypti mosquito transmitted the virus of yellow fever.

At the *right* is a portrait of Dr. Jesse W. Lazear, a member of the Commission, who was the first to die in controlled experiments on human subjects He died on Sept 18, 1900, after being bitten by a mosquito previously infected.

U.S Senate, Executive Document No 822, 61st Congress, 3rd Session

Courtesy, Scribner Art File

The theory was worked out conclusively on an oddly assorted group of volunteers and hired men in quarantined Camp Lazear (*above*), near a suburb of Havana.

Below is shown the female mosquito, transmitter of a disease that had ravaged port cities for centuries.
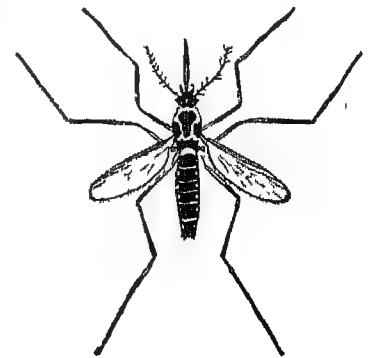
U S Senate, Executive Document No 822, 61st Congress, 3rd Session

Coal Strike

Toward the end of summer, 1900, the anthracite miners struck for a ten percent increase in wages

The mass meeting *left* was held at Scranton, Pa

Harper s Weekly, Sept 29, 1900
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

The strikers dramatized their protest by parades, like the one in Mahanoy City, Pa , shown *right.*
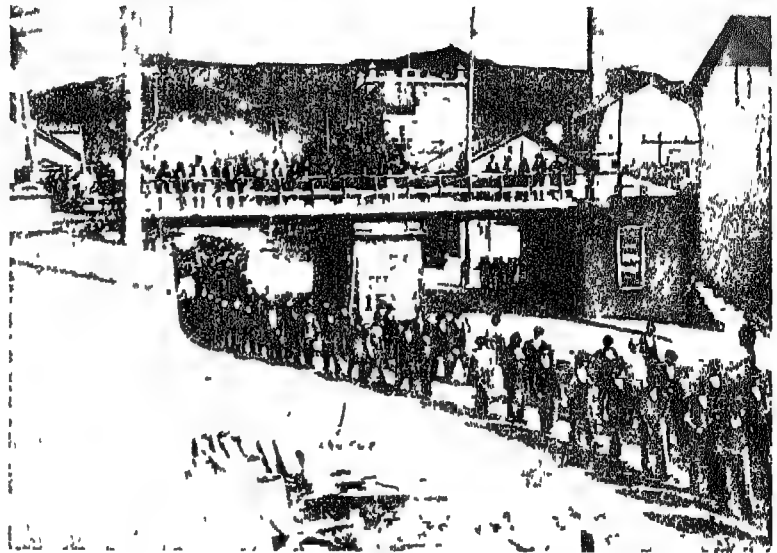
Harper's Weekly, Oct. 6, 1900
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

John Mitchell and his fellow officers of the United Mine Workers (*left*) fought a successful strike. They were aided, perhaps, by Mark Hanna's reminder to the mine owners that it was an election year, and a ten percent raise might be less expensive to them than Mr Bryan in the White House.

Harper s Weekly, Oct 6, 1900
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Campaign of 1900

The Republican Party stood on its record as producer of a "full dinner pail" for the workingman The Democrats reindorsed their platform of 1896, and added to it a blast against the Administration's "Imperialism" and the protection given monopolies by the Republicans. Little of this appeared effective in the apathetic campaign that followed.

Harper's Bazar, Aug 26, 1899
Courtesy, Harper's Bazaar, New York City

After renomination, President McKinley repeated his previous tactics of a campaign from the front porch. At the *right* are seen the President and his invalid wife to whom he was touchingly devoted.

The major chore of Republican campaigning fell to the reluctant candidate for Vice President, Gov. Theodore Roosevelt of New York (*below*), who felt he was being promoted into political oblivion.

Harper's Weekly, Sept 23, 1899
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Harper's Weekly, Oct 27, 1900
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

William Jennings Bryan (*above*) talked from the stump with vigorous and bitter invective against Republican corruption.

Campaign of 1900 (*Continued*)
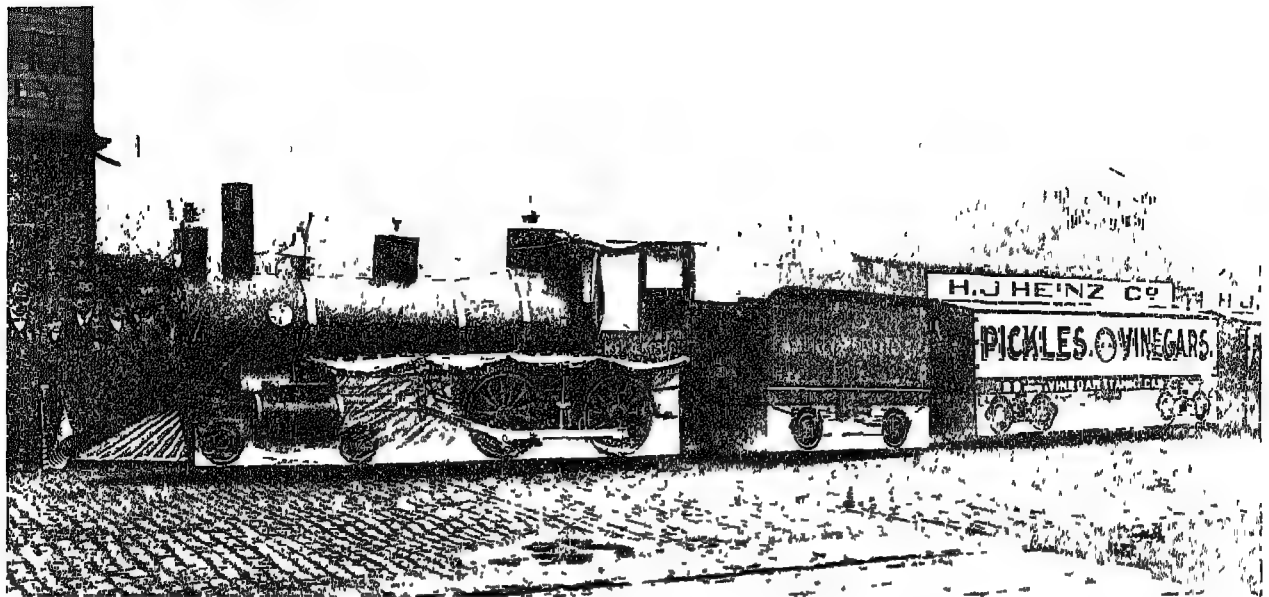
Courtesy, H J Heinz Company, Pittsburgh, Pa

Businessmen rallied behind the Republican ticket and advertised their products along with the candidates, as shown *above*

Col Roosevelt's war record (see pages 117-119) worked in his favor At the *right* is a sketch of him in uniform drawn by Charles Dana Gibson

Scribner's Magazine January, 1899

After the polls were closed, the political mathematicians at the two campaign headquarters began to figure the probabilities. *Left*

Scribner's Magazine June, 1900

5
THE NEW CENTURY

Watch night services of a special solemnity were held in churches all over the nation as the Twentieth Century dawned. There were no signs and portents—although the hectic character of the four years to come might well have been foreshadowed by a few.

President McKinley's victory in November had been an impressive witness to the people's satisfaction with a business government He received in the vote of the Electoral College 292 tallies as against 155 for William Jennings Bryan, and a popular plurality of over 900,000. He was inaugurated for a second term in March, 1901.

Flanked by Secret Service men, the President went to the Capitol.
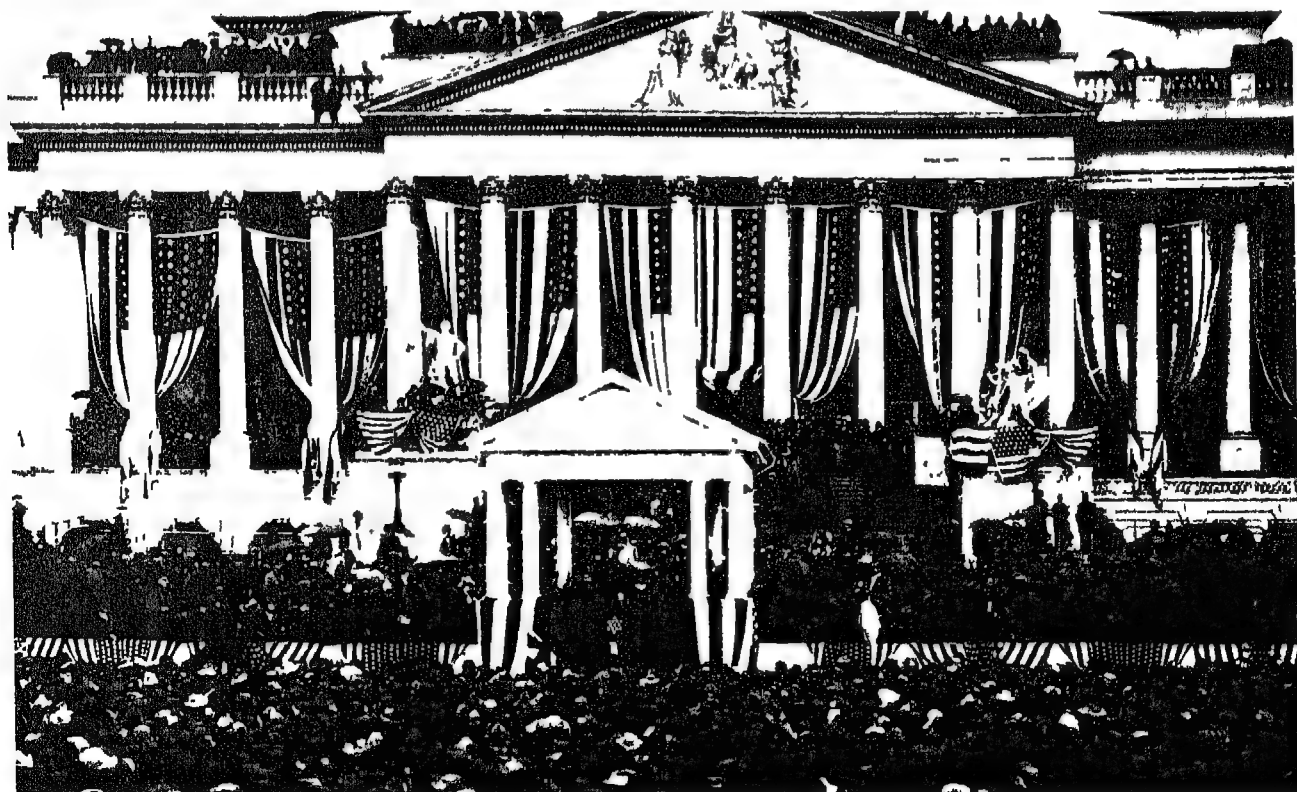
"The advance agent of prosperity" delivered his inaugural address against a background of flags.

Both illustrations on this page are from *Harper's Weekly*, Mar 16, 1901 *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City

Northern Pacific Panic

About two months after the inauguration, two of the President's "big business" friends engaged in a struggle for control of the Burlington Railroad that, among other effects, sent the whole list of securities down about thirty points.

Harper's Weekly, Jan. 26, 1901
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

J J Hill, in Seattle, noticed that the stock of his Northern Pacific Railroad was being bought in larger than normal volume. His banker, J P. Morgan, was on a holiday in Europe, so Hill came hurrying to Wall Street by special train.

It developed that E. H. Harriman, czar of the Union Pacific, was behind the activity. In reprisal for Hill and Morgan's seizure of control of the Burlington route, Harriman was trying to buy control of the Northern Pacific stock and so get the Burlington by controlling its parent road From Morgan came an order to buy at any price, in order to hold control

Above, speculators watching the quotation board.

Right, the rush to buy.

Harper's Weekly, May 18, 1901
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Northern Pacific went to one thousand dollars a share Frantic selling by traders "caught short" on Northern Pacific sent the whole list down By noon many stock exchange houses were broke, but Morgan and Harriman allowed the "shorts" to settle and the market steadied.

Left, lights burned all night in the financial district.

Harper's Weekly, Jan 26, 1901 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Nevada Gold

To add further to the embarrassment of the Democratic Party, new gold strikes were made at Goldfield, Tonopah and Ray, Nev.

The gold hunters headed for the new district by burro pack-train (*right*).
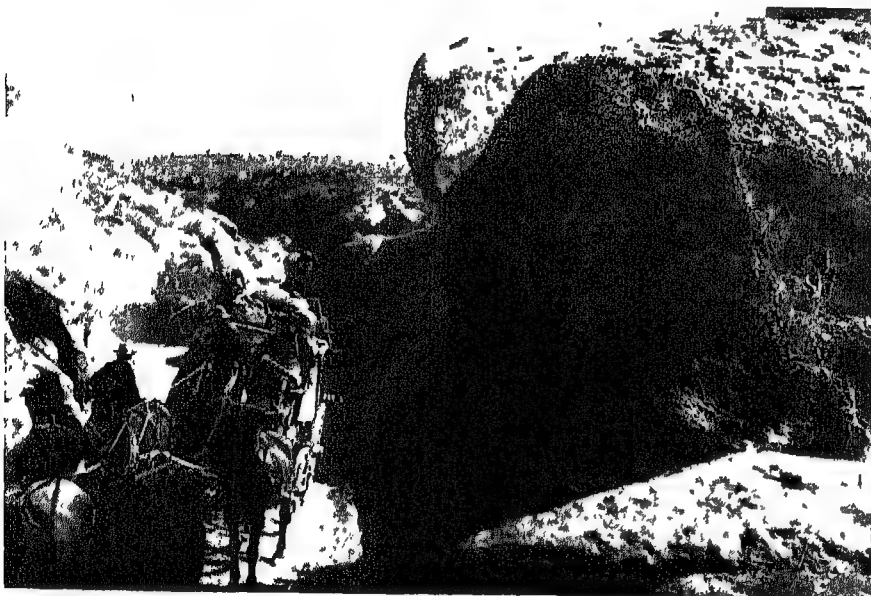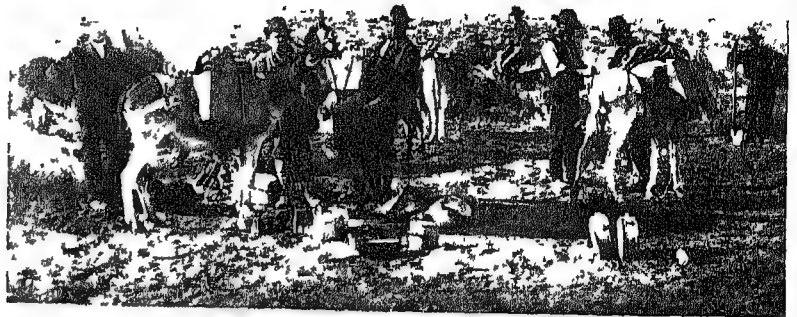
Stagecoaches creaked over narrow canyon trails toward the Goldfield diggings.

The freighting outfit shown *right* operated between Goldfield and Bullfrog, Nev.

All illustrations on this page are by the courtesy of the Nevada State Historical Society, Reno
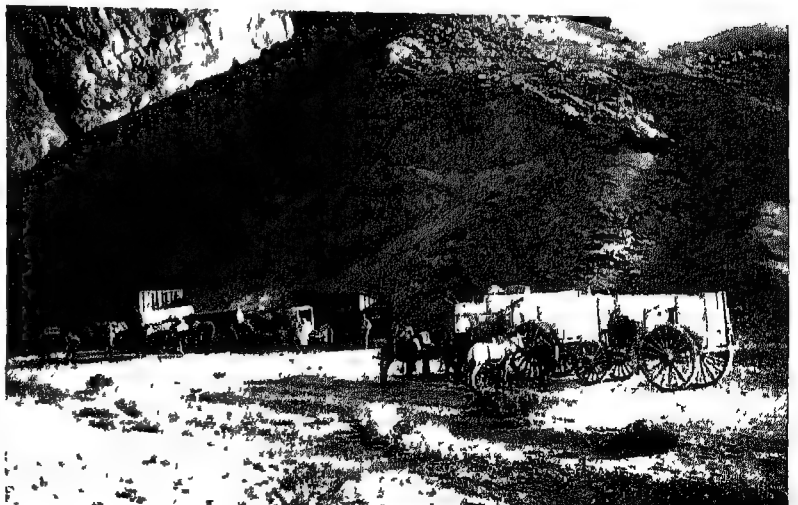
Oil—Texas

Also in the spring of 1901, new wealth spouted out of the earth near Beaumont, Tex. The first well to come in in that section was producing 35,000 barrels a day, and from all over the nation a stampede started to East Texas
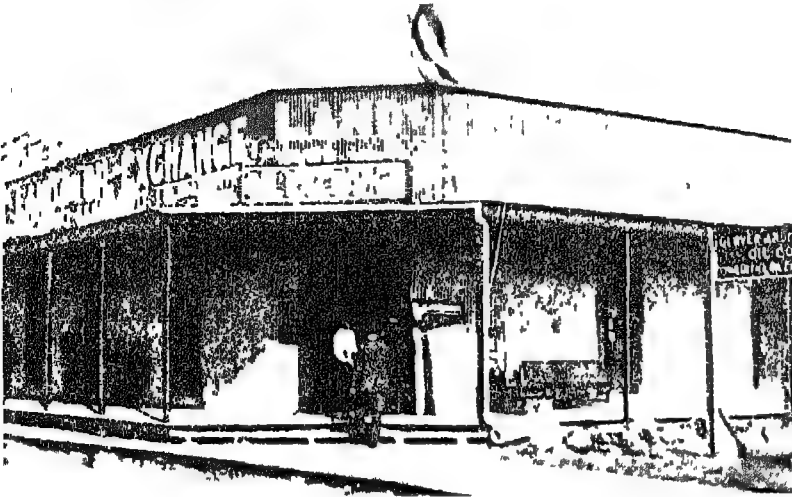
Sleepy little Beaumont forgot all about the lumber and rice business In jerry-built office buildings like those shown *left* and *below*, thousands of dollars changed hands as company promoters and land-speculators jumped from special trains into action.
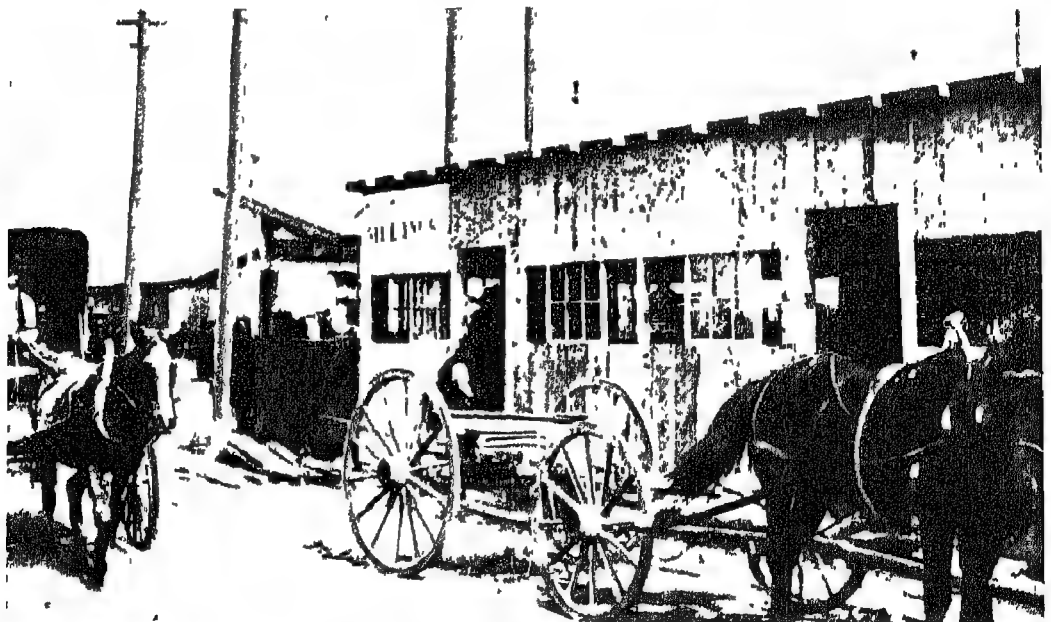
At the *left* is shown a section of the tent city which sprang up on Beaumont's vacant lots

All illustrations on this page are from *Harper's Weekly*, June 22, 1901 *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City

Oil—California

Along the coast, south of Santa Barbara, Californian oil production was pushing toward the 1904 high peak of thirty million barrels. In the view *below*, the oil is caught in an improvised storage tank of banked earth.
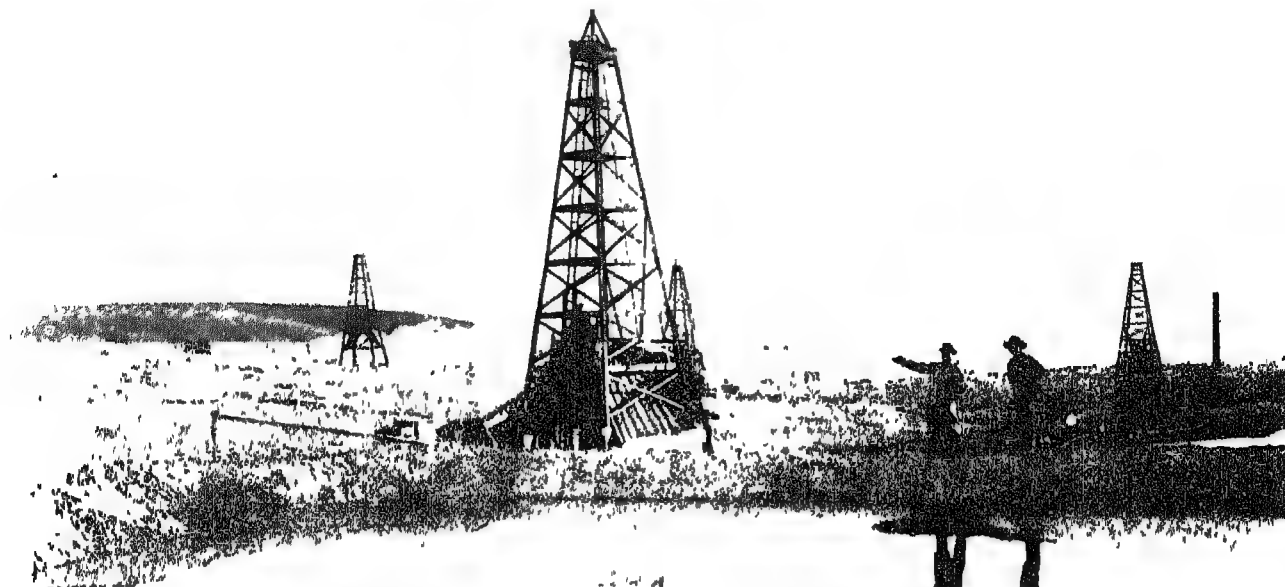
Harper's Weekly Mar 23, 1901 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

At Summerland, wells were sunk in the ocean bed, as seen *right*.

Harper's Weekly, Mar 23, 1901
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

The locomotive *below* was specially designed to burn oil. The tremendous demand for gasoline that would come with the low-priced automobile was yet unimagined, and the oil companies were insisting on the superiority of oil to coal as a general fuel.
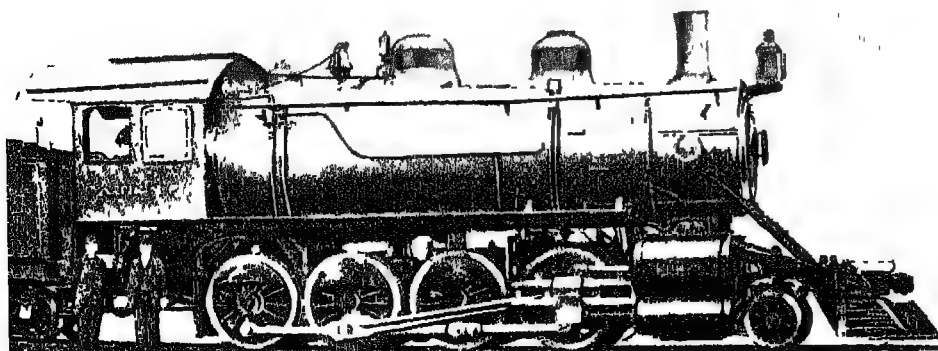
Harper's Weekly, Oct 18, 1902
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

McKinley Assassinated

Harper's Weekly, June 8, 1901 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

The Pan-American Exposition, held at Buffalo, N. Y., was intended to display the progress of the nation through a full century President McKinley finished his speech at the Temple of Music (*above*, at the left) on Sept 6, 1901, and stood shaking hands with a long line of visitors. An anarchist, Leon Czolgosz, pushed up in the line and fired two quick shots into the President's body.

Harper's Weekly, Sept 21, 1901 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Among other watchers at the Millburn house where the President wavered for eight days between life and death were Vice-President Roosevelt and Mark Hanna (*left*)

The wanton stupidity of the act and the general personal regard most Americans had for the President kept anxious groups outside newspaper offices as bulletin followed bulletin. On September 14, Vice-President Roosevelt took the oath of office as President, for McKinley had not survived his wounds.

Harper's Weekly, Sept 14, 1901 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Why Prophets Are Without Honor

In response to President Theodore Roosevelt's first proclamation, the national press blossomed with editorials. Among others of similar character were.

> "The McKinley policy is the Roosevelt policy"—*Washington Post*

> "Discretion and conservatism will be still further developed in President Roosevelt" —*Boston Globe*

But by the end of 1901, it was evident that inevitable change was at work, and that the President was not its foe.

O. Henry's City

Even sacred Fifth Avenue was conscious of change, for it had been invaded south of 32nd Street by the signs of trade (*right*), and the sidestreet brownstones were declining into rooming houses. So it was when William Sydney Porter discovered New York City in 1902 and mirrored its life in his short stories of the *Four Million*
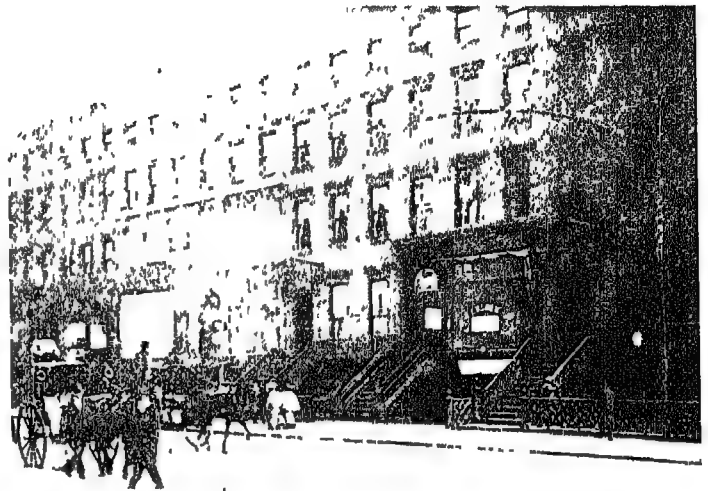
Town & Country, Oct 31, 1903 Courtesy Town & Country, New York City

Harper's Weekly Dec 21, 1901
Courtesy, Harper & Brothers New York City

The shopping district still centered on 23rd Street near Sixth Avenue (*above*), but "uptown" was beckoning.

The New and the Old

Harper's Weekly, Apr 25, 1903
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

A 1903 specimen of the Automat is shown in the sketch at the *left* "The whole service of lunch or dinner takes about a minute," observed the caption writer for *Harper's Weekly*.

In 1902, the Escalator pictured *right* was installed at R. H Macy's New York store The first Escalator used in this country had been set up in Gimbel's Philadelphia shop after its display at the Paris Exposition of 1900.
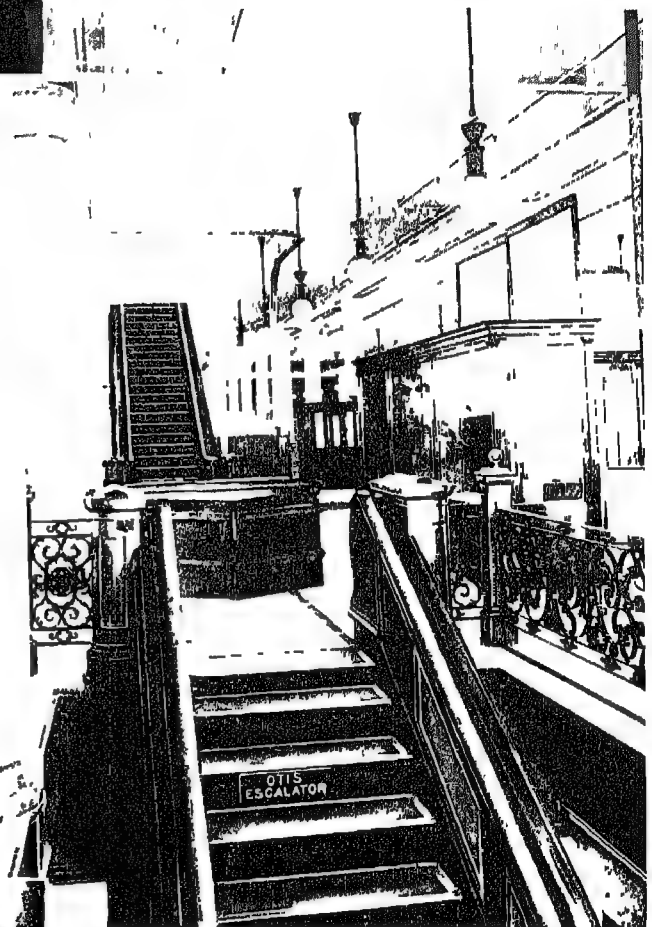
Courtesy, Otis Elevator Company, New York City

Town & Country, Aug 15, 1903
Courtesy, Town & Country, New York City

A patch of green amid the drab walls of East 29th Street and a romantic witness of New York's tolerance was the "Little Church Around the Corner," the Church of the Transfiguration, whose garden is shown *left*

Pittsburgh

The infant aluminum industry, founded at Pittsburgh in 1888, was now making profits through the growing demand for light-weight automobile bodies.

Right, the new Kensington plant of the Pittsburgh Reduction Company, ca 1904.
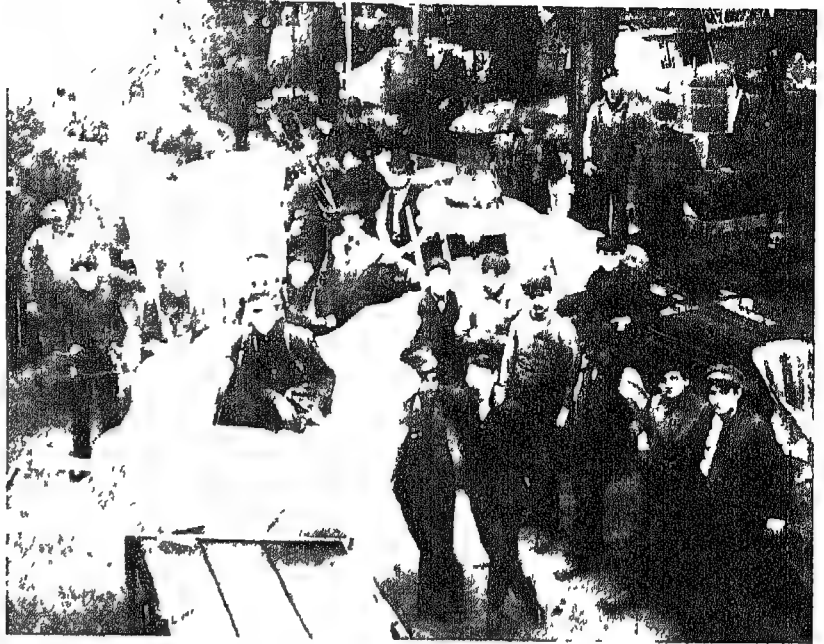
Courtesy Aluminum Company of America Pittsburgh Pa

Over the city hung a pall of smoke that was the subject of endless jokes *Below* is seen a view of part of the city from across the Allegheny River, a background to the pageantry with which Heinz's original pickle works was moved from Sharpsburg to Pittsburgh
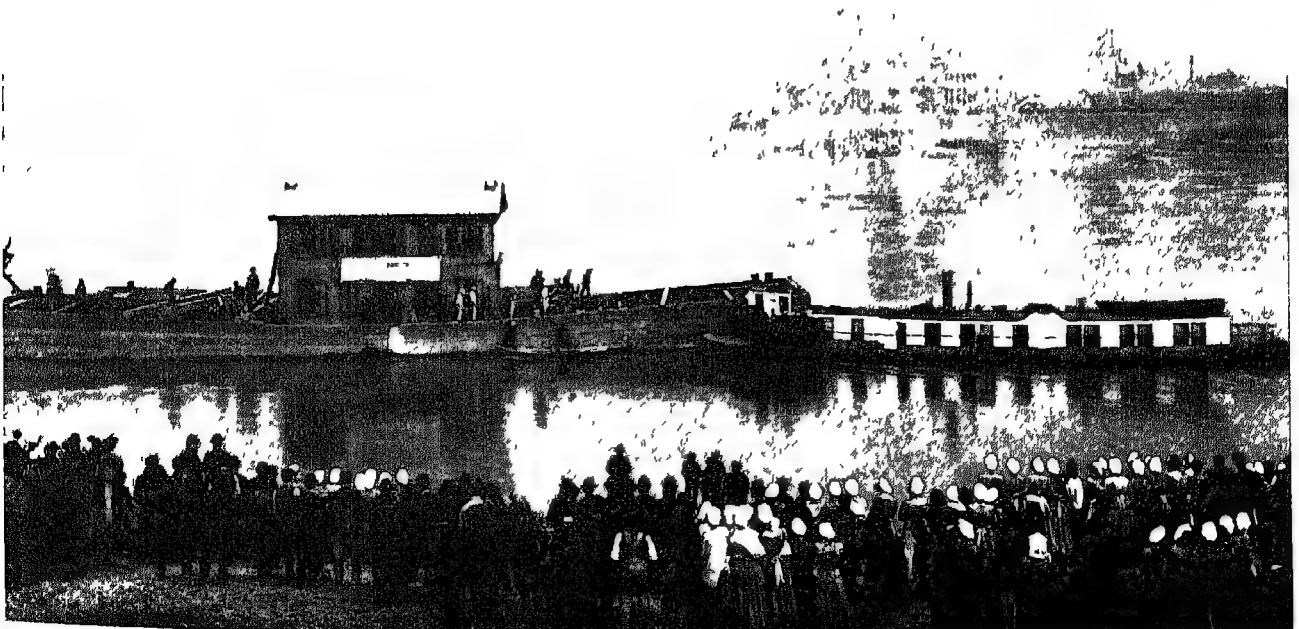
Courtesy, H J Heinz Company, Pittsburgh, Pa

57 Varieties

The transformation and packaging of the humble bean—to say nothing of the 56 other products —grew with the growing city.

At the turn of the century, the beans were weighed and wrapped by hand, as shown to the *left* and *below*
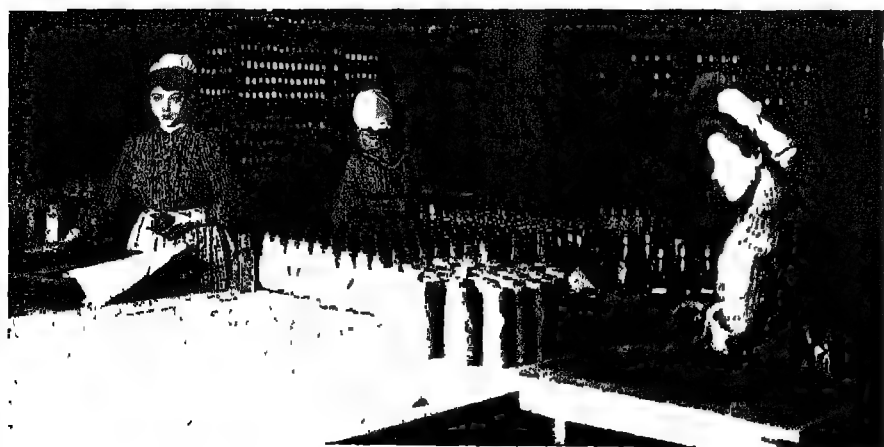
Relishes and ketchups were also hand-labeled and wrapped

All illustrations on this page are by the courtesy of the H J Heinz Company, Pittsburgh, Pa

The Midwest

As the cities of the Midwest grew in population and wealth, their changing manners and racial constituencies were to provide rich material for the novelists of the new century.
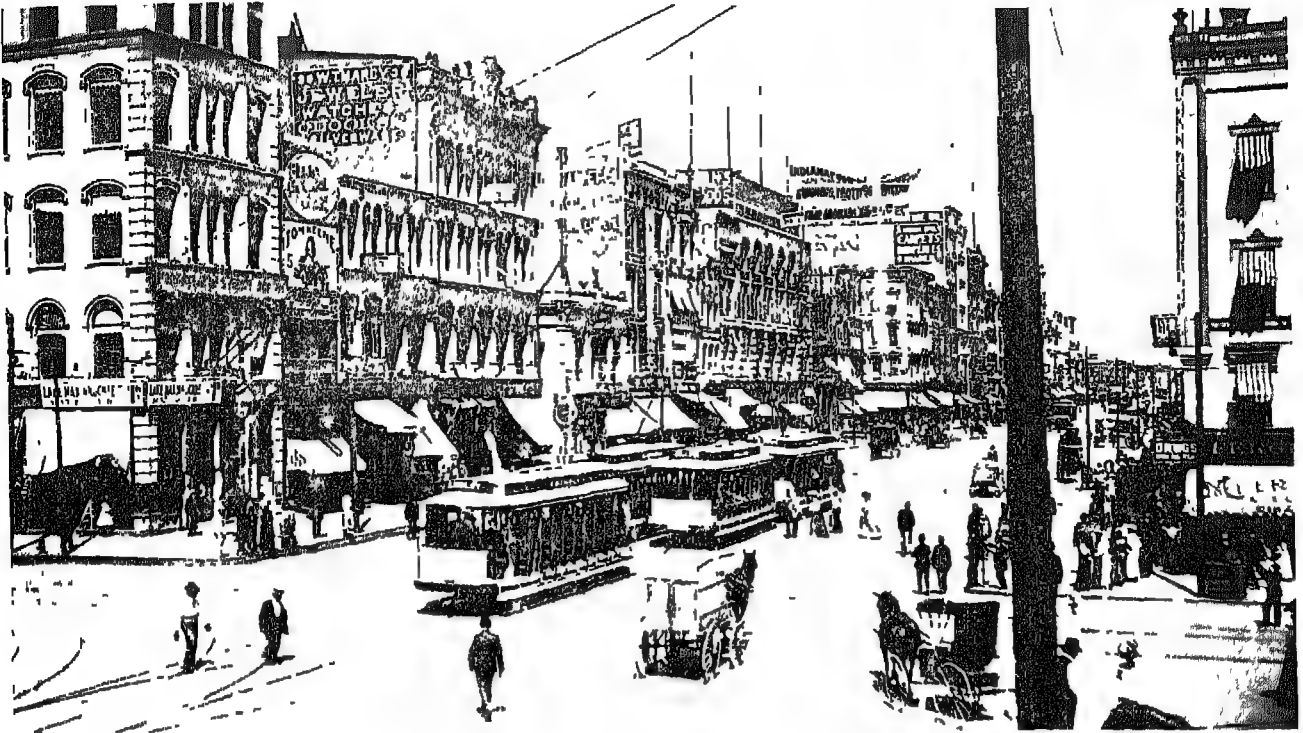
Photo by W. H. Bass Co., Indianapolis, Ind.-Courtesy The Indiana Historical Society, Indianapolis

The view of Indianapolis, Ind., *above*, looks northeast from Illinois and Washington streets. The automobile does not dominate the scene.

The rear of the flour milling district of Minneapolis, Minn., is seen in the picture *below*, as it looked around 1901.

Courtesy, Minnesota Historical Society, St. Paul

The Midwest (*Continued*)
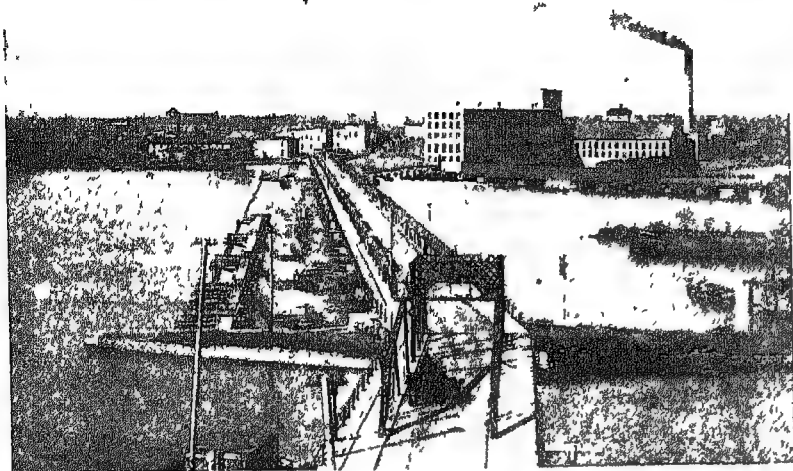
Courtesy Wisconsin State Historical Society, Madison

Depere, Wis , is seen at the *left* as it appeared at the turn of the century.

The view *right* shows the Milwaukee River, looking southwest from the old Wisconsin Street bridge.
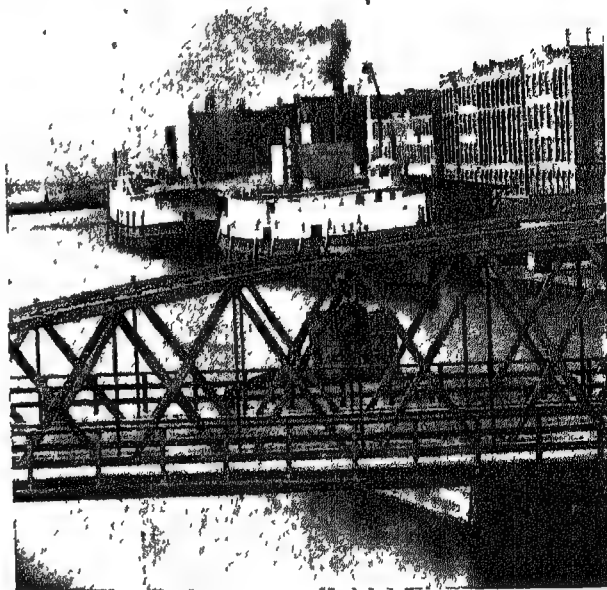
Courtesy Wisconsin State Historical Society, Madison

Harper's Weekly, Mar 1, 1902 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Specially constructed ice-breaking ferryboats carried loaded freight cars from port to port along the Great Lakes.

Midwestern Industry

Slowly but surely, the Midwest area was taking over a new industry—the manufacture of automobiles and their accessories. The advertisements reproduced *below* tell the story.

Harper's Weekly, Mar 8, 1902
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Harper's Weekly, Feb 7, 1903
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Harper's Weekly, Feb 7, 1903
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Harper's Weekly, Aug 23, 1902 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Mass Production

By concentrating all his equipment and skill on the manufacture of one model in large volume, R. E. Olds brought the automobile within reach of ordinary citizens.
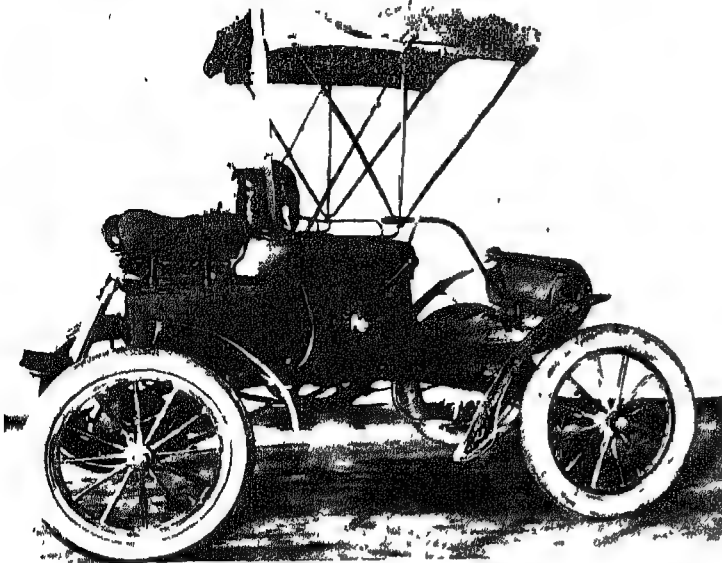
The 1901 Oldsmobile shown at the *left* was one of the famous "curved-dash" runabouts More than four hundred were sold in the first year of production (see advertisement on page 167).

The state of the nation's roads in 1901 made the rather primitive testing method seen at the *right* a valid guide to "actual operation" of the Oldsmobile
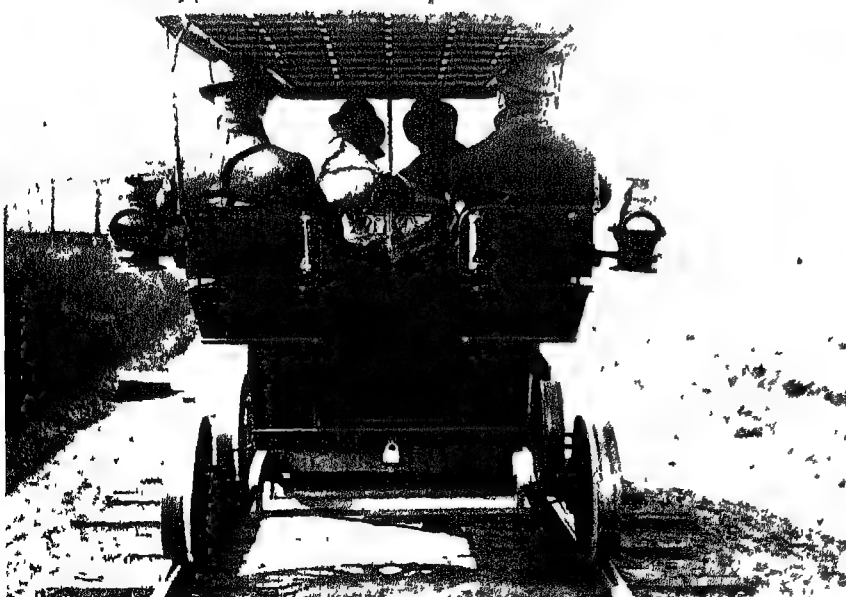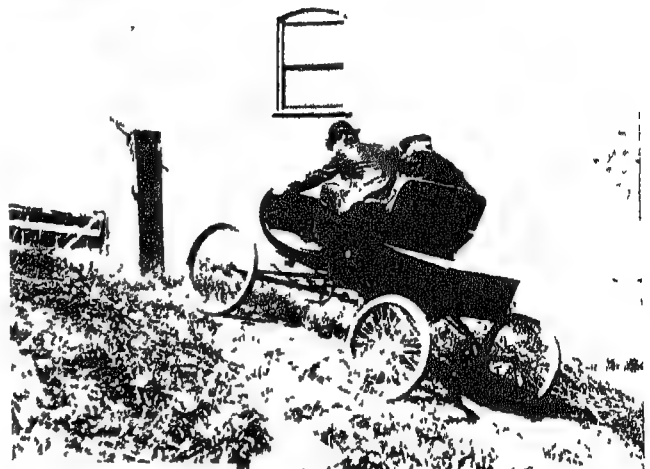
In 1903 an Oldsmobile was produced specially equipped to run on rails.

All illustrations on this page are by the courtesy of General Motors Corporation, New York City

The "New" South

Although, by 1901, Southern manufacturing and industry were conforming perforce to the Northern pattern, the psychology of Southern people remained different, and few of their ancient social problems seemed on the way to solution.

The new textile mills in Georgia were controlled largely by Northern capital The mill shown *right* was at Augusta.
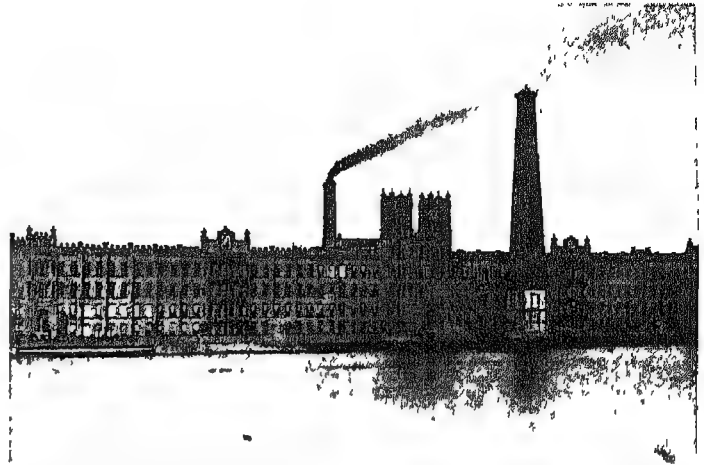
Harper's Weekly Oct 10, 1903
Courtesy Harper & Brothers, New York City
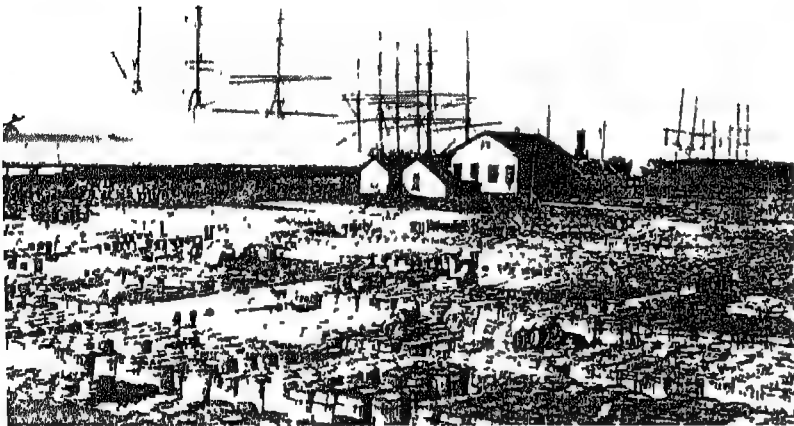
Harper's Weekly Oct 10, 1903 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

The wharves at Savannah, Ga., cleared immense quantities of naval stores at the expense of Georgia's and Carolina's forests.

In the Kentucky mountains a forgotten population went quietly against all modern trends. A "moonshine" still is shown in the sketch to the *right*
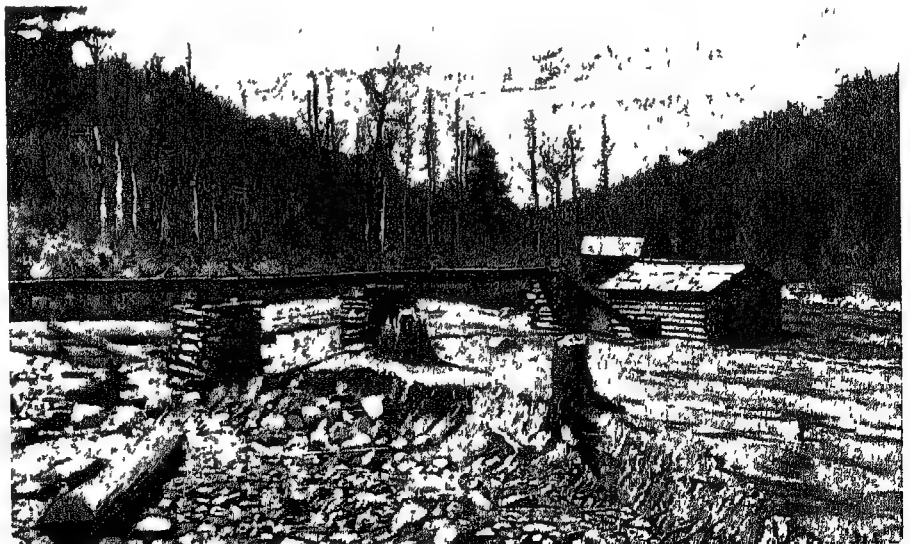
Scribner's Magazine, April, 1901

The "Old" South

Each year the Confederate Memorial Day brought out the old flags and aroused again the old feelings The picture *below* was taken in Richmond, Va , early in the new century.
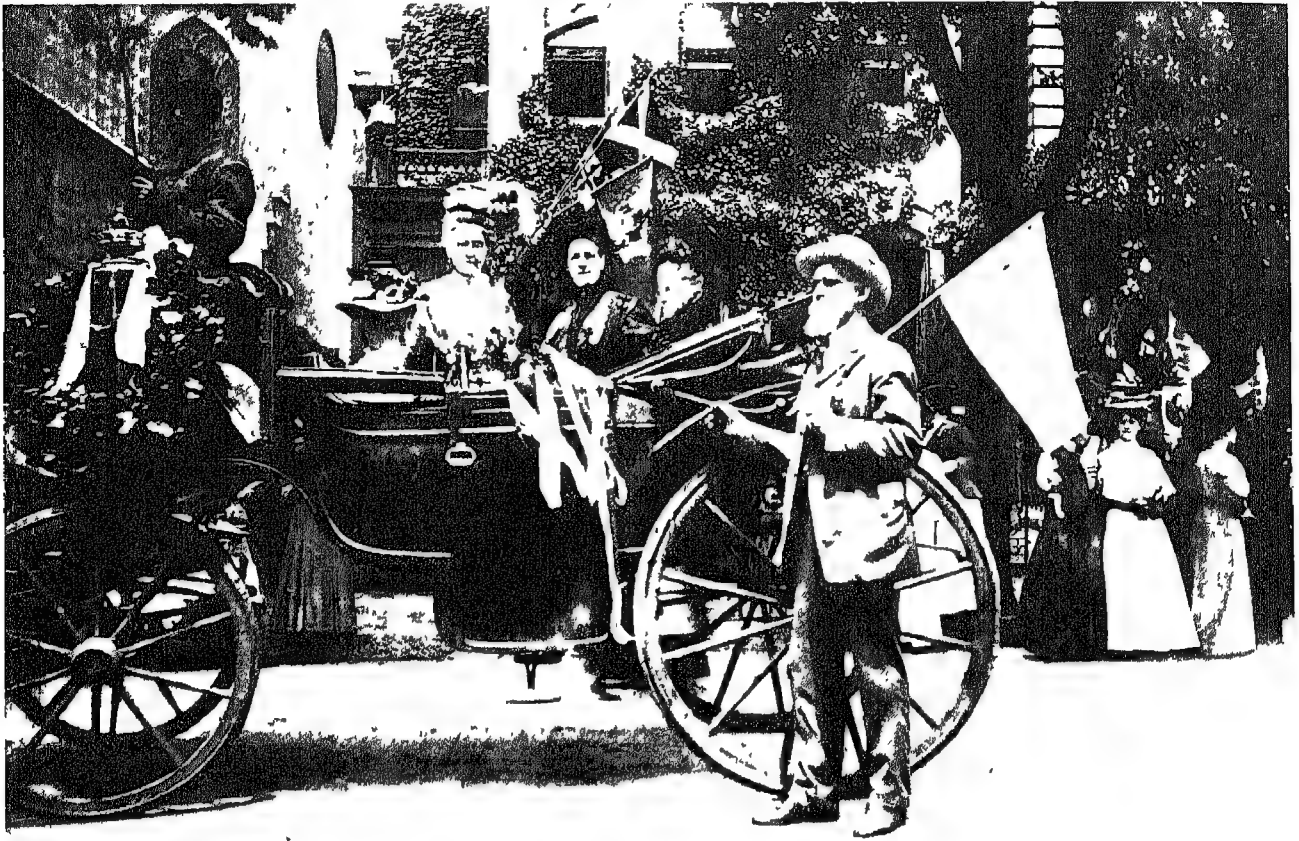
Courtesy, The Valentine Museum, Richmond, Va

Courtesy North Carolina State Department of Archives and History, Raleigh

The Southern negro cherished the thought of a "better day coming" The baptismal ceremony shown *left* took place in Wake County, N. C , around 1903.

Little or nothing had been done to provide a workable way of life for negroes to replace the paternalism bred of slavery

Country Roads

The earlier automobiles had "shown up" the condition of the nation's roads, and now with the low-priced car in view a real effort was made to improve secondary roads as well as highways.

An appeal was made to local pride for the furtherance of the "Good Roads" program At the *right*, a crusher is seen at work.
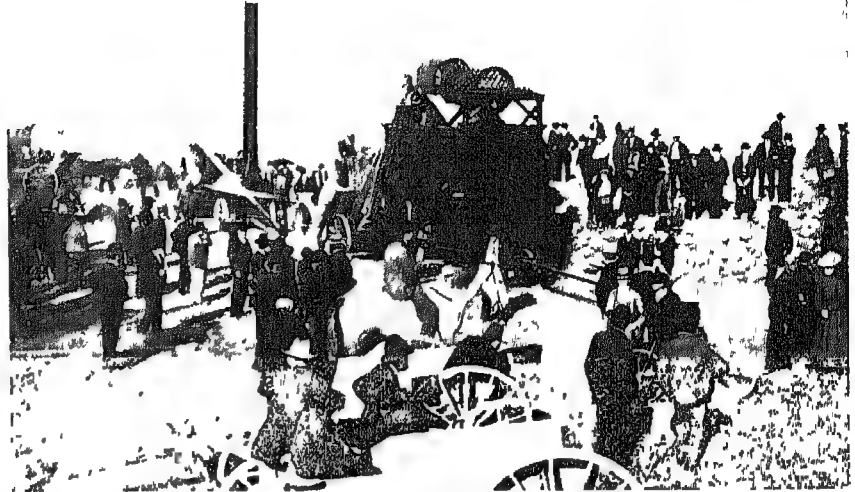
Harper's Weekly Apr 5, 1902 Courtesy Harper & Brothers, New York City

Less elaborate was the horse-drawn "drag" shown to the *left*.

Courtesy, Public Roads Administration, Washington, D C

The R F D driver no longer had the old excuse that he "got stuck in the mud" when he operated over a road like the one shown *right*, near Jackson, Tenn.
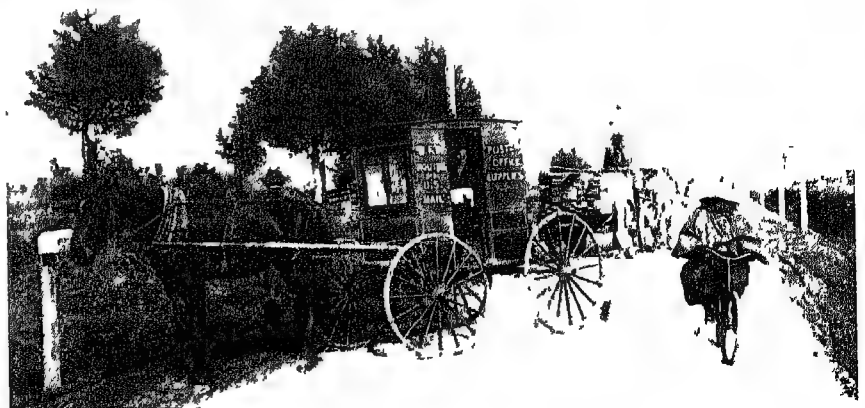
Courtesy, Public Roads Administration, Washington, D C

Oklahoma Opening

When the former Kiowa-Comanche lands were declared open in 1901, the homesteaders were obliged to register and the tracts were assigned by a lottery. This was done in an effort to prevent the usual, disorderly homestead "run."
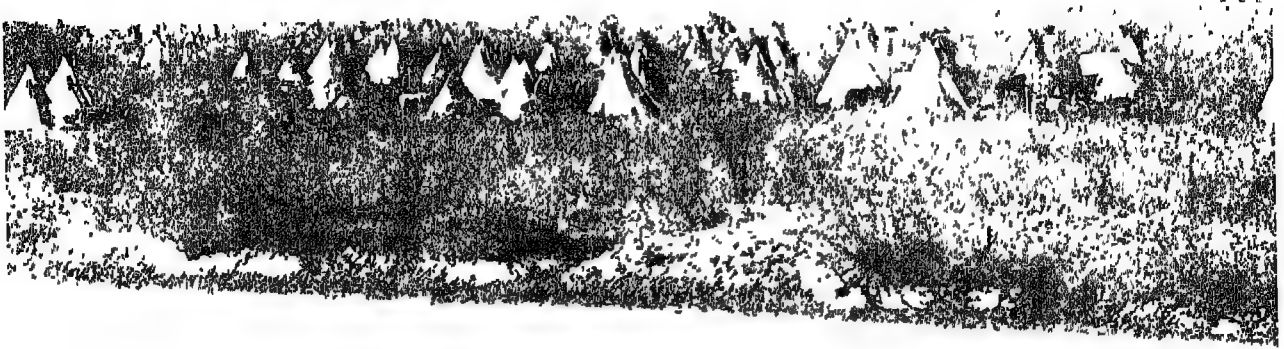
Harper's Weekly Aug 10, 1901 Courtesy Harper & Brothers, New York City

At Lawton, near Fort Sill, prospective homesteaders waited in tents for the day of the drawing. *Above.*
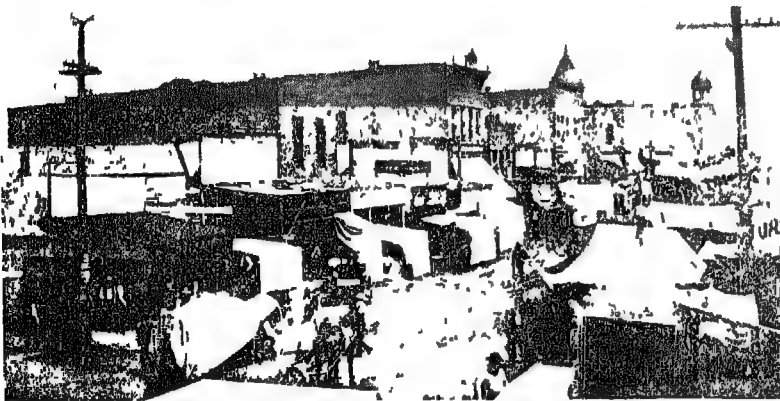
Harper's Weekly, Aug 10, 1901 Courtesy Harper & Brothers, New York City

It was estimated that eighteen thousand land-hungry persons camped in El Reno (*left*), another point where registration was made

Twelve days after the opening, Hobart, Okla , county seat of Kiowa County, had built up to the proportions shown in the view *right*
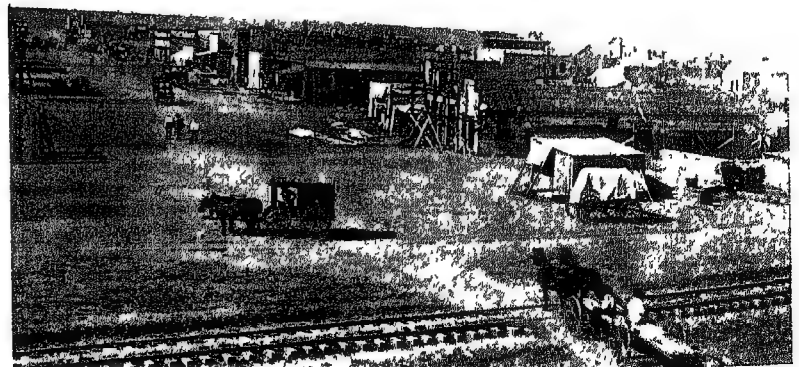
Courtesy Scribner Art File

Water in the Deserts

1901 was a drought year, and this circumstance heightened popular interest in the Congressional debates over the Reclamation Act, Federal irrigation projects and a tighter policy on public land administration.

An electrically pumped artesian well fed the Arizona irrigation system shown *right*.

Harper's Weekly June 21, 1902 Courtesy Harper & Brothers, New York City

Harper's Weekly Aug 30, 1902 Courtesy Harper & Brothers, New York City

The orchard near Phoenix, Ariz., at the *left*, grew in soil formerly considered barren

A Montana distribution flume is seen at the *right*.

Scribner's Magazine June, 1902

Water in the Deserts (*Continued*)
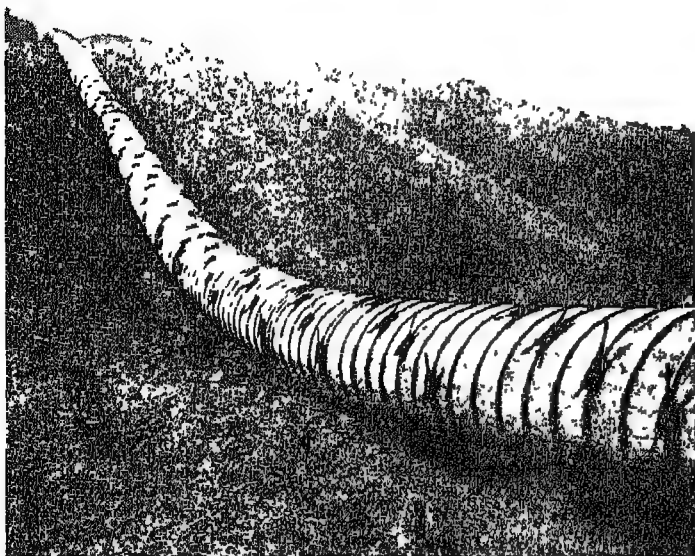
Illustrated World, Technical World, Vol I, 1904
Courtesy, Popular Mechanics, Chicago, Ill

Over the hills came a redwood-stave pipe line with water for the orange groves near Corona, Calif.

Pumping plants like the one at the *right* fed water to the newly established rice-growing industry of southwestern Louisiana.
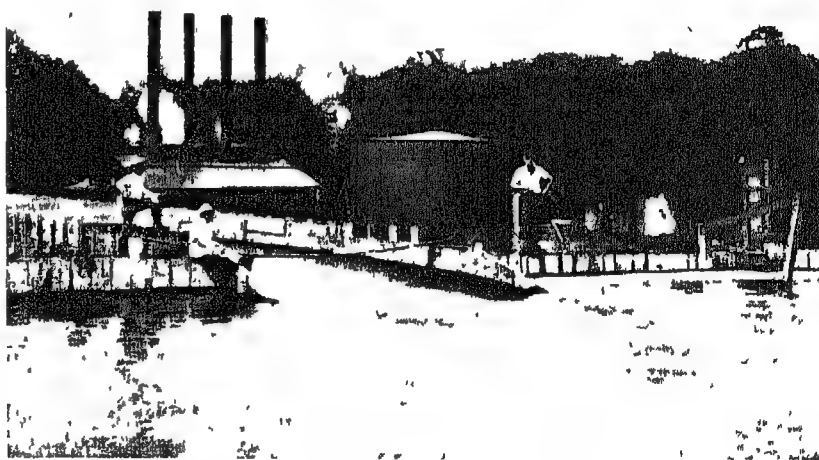
Harper's Weekly, Apr 19, 1902 Courtesy Harper & Brothers, New York City

Harper's Weekly, Apr 19, 1902
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

New towns sprang up to handle the mounting shipments of rice from Louisiana land that had once been useless prairie.

Society Amuses Itself

A new game was imported from England in the winter of 1901.

"Ping Pong has taken vigorous hold of Society. Most dinner parties this spring end in an informal tournament."
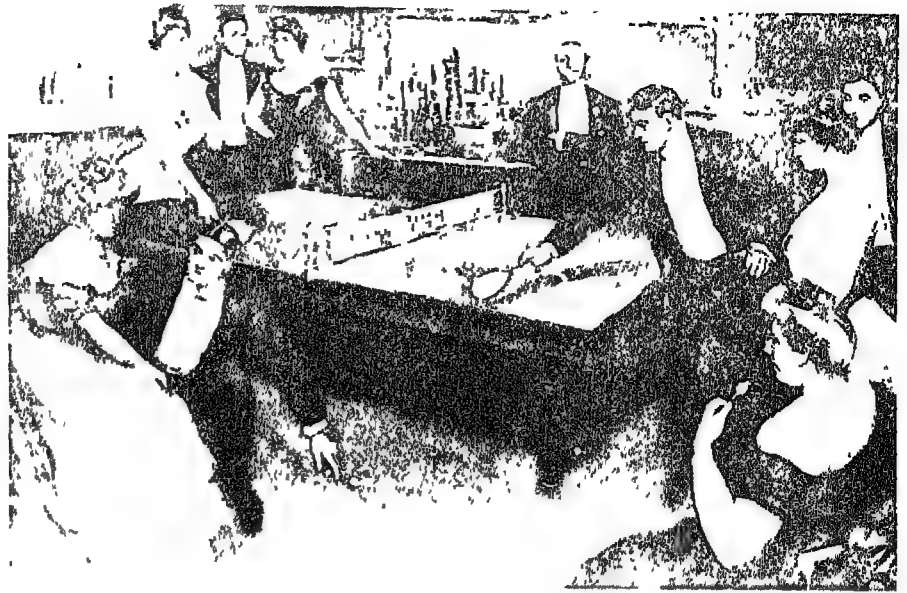
Harper's Weekly, May 10, 1902
Courtesy Harper & Brothers, New York City
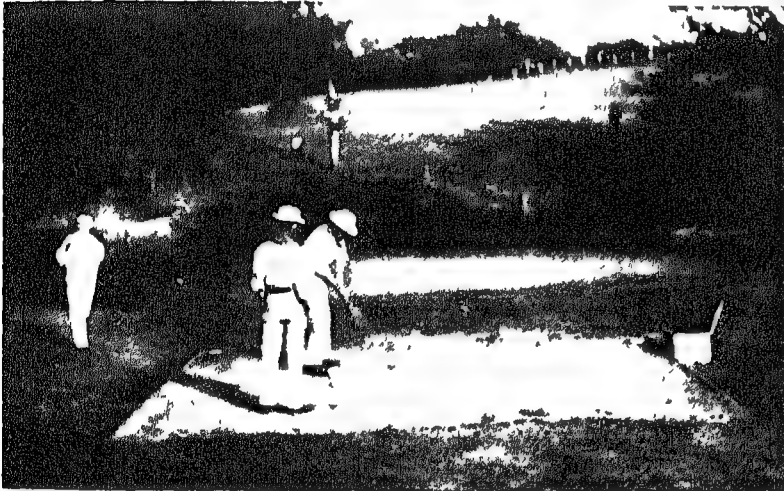
Courtesy, Mr Myron I Henkel, Springfield, Ill

Balmy days brought out the golfers in Springfield, Ill. (*left*).

But at Hot Springs, N. C, the golfing enthusiasts could play all through the winter as seen in the picture to the *right*.

Town & Country, Jan 17, 1903
Courtesy, Town & Country, New York City

Less Strenuous Amusements
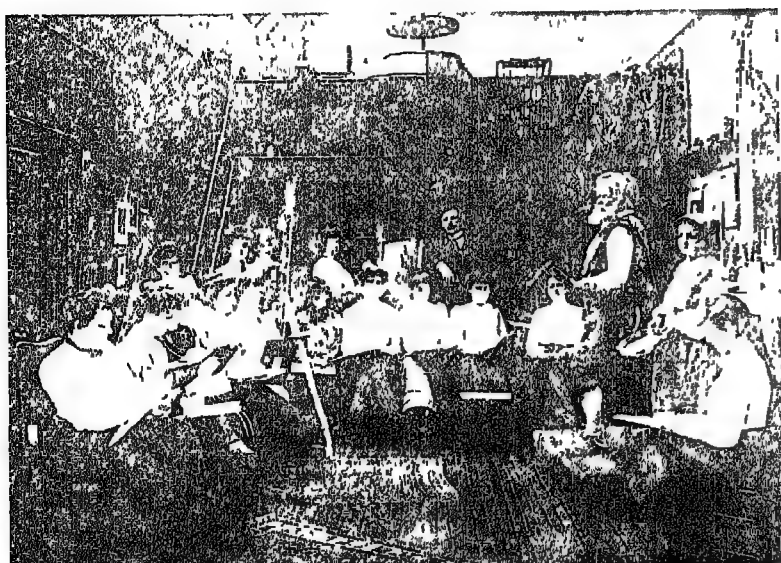
Town & Country, Aug 20, 1904 Courtesy Town & Country, New York City

For the artistic young lady, certain carefully supervised art classes provided a polite Bohemian atmosphere and the rudiments of drawing

Sitting and watching others amuse themselves has always had its devotees In the picture at the *right* is shown a section of the grandstand at the Point Judith Country Club Horse Show, Narragansett, R. I.

Town & Country, Sept 3, 1904
Courtesy, Town & Country, New York City

Courtesy, Mr Myron F Henkel, Springfield, Ill

Sitting on a front porch of noble size and gracious appointments, like the one seen at the *left*, was a soothing experience on a summer day—before the invention of the radio.

Auto Racing

Owners of elaborate motor cars liked to try the endurance of their "machines."

At the *right*, the entry of White Steamers are lined up for the start of the New York to Boston endurance "run" of 1902.
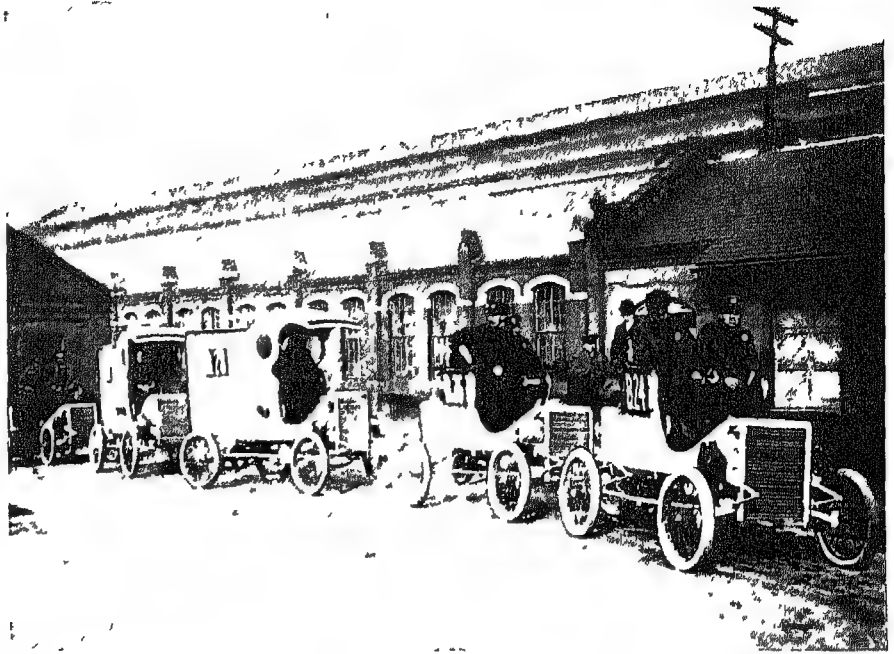
Courtesy, Scribner Art File
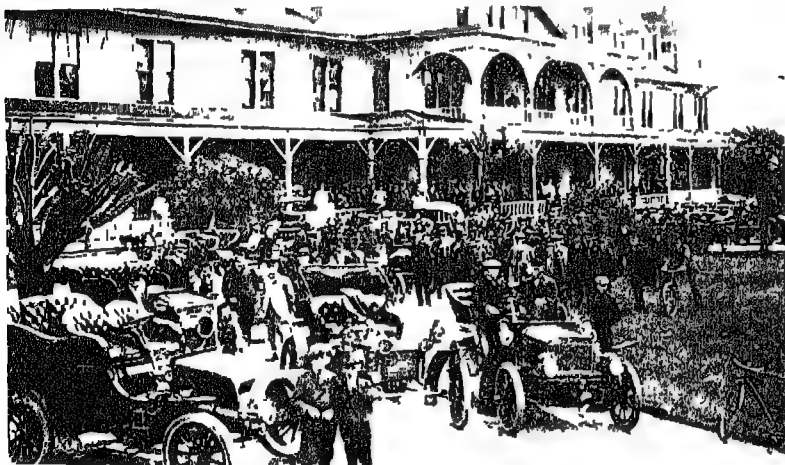
Courtesy, Pomona Public Library, Calif

The first annual "run" of the Auto Club of Southern California in 1904 ended in a big dinner at the Hotel Polomares, Pomona, Calif At the *left* are shown the survivors of the trip, ready for the feast.

Manufacturers were interested in the prestige that came from record smashing and encouraged professional drivers like Barney Oldfield. He is the driver of the Cooper car pictured *right* at Empire City track in 1903.
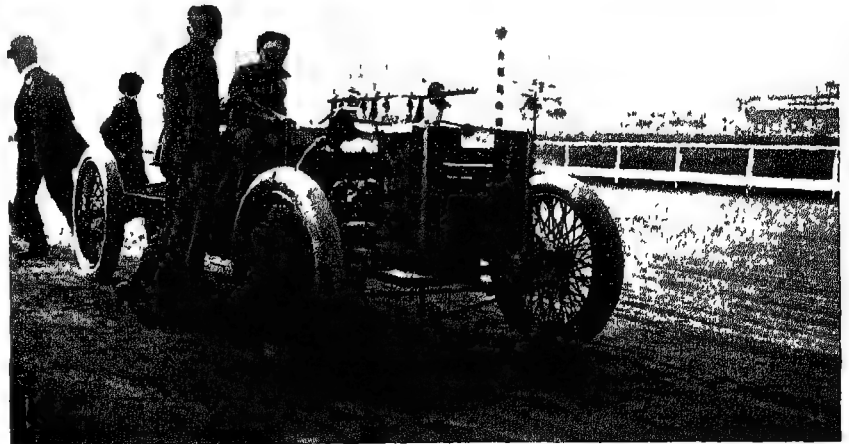
Town & Country, June 13, 1903 Courtesy, Town & Country, New York City

Frippery in the New Century

Chief among the fashionable fads in dress for 1900 and a few years thereafter was the shirtwaist vogue.
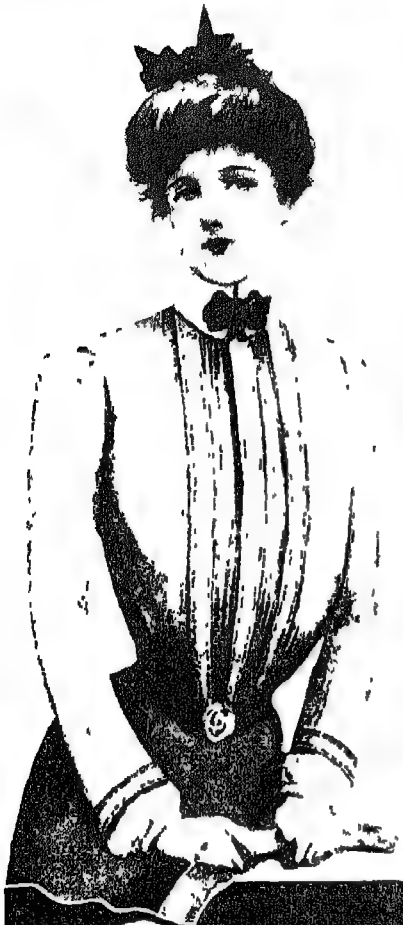
The shirtwaist style shown *left* was made with a plain French back and was considered very "effective and timely" for 1901. The group of ladies shown *below* were residents of the new mining town of Goldfield, Nev. (see page 157), but as this picture proves, they were very much *à la mode de New York.*

Harper's Bazar, January, 1901
Courtesy, Harper's Bazaar, New York City
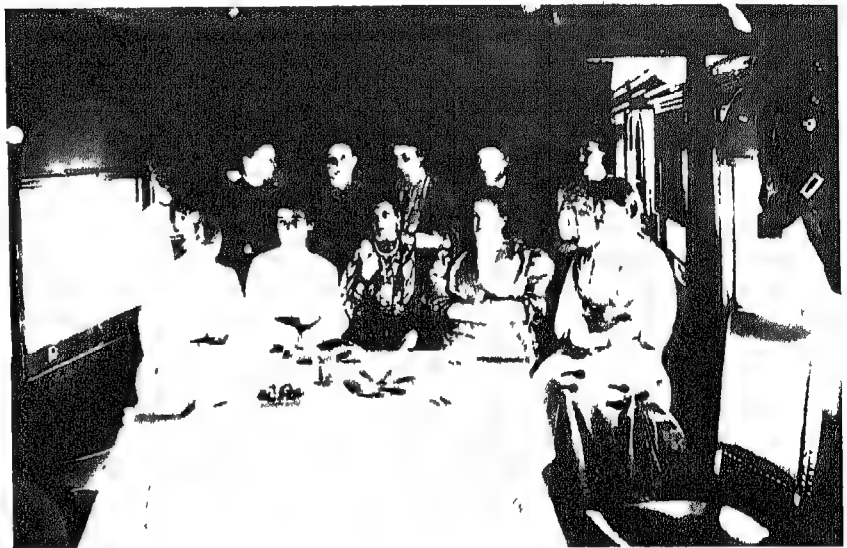
Courtesy, Nevada State Historical Society, Reno

Left is a gown worn by Mrs. Theodore Roosevelt in 1902.

To the *right* is seen a new hat for 1903, "a large, black, picture-hat with the new, high crown and cut-steel buckles."

Courtesy, Smithsonian Institution, Washington, D C

Harper's Bazar, October, 1903
Courtesy, Harper's Bazaar, New York City

Lingerie, etc.
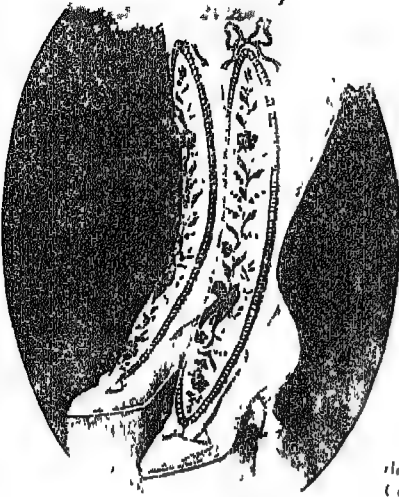
The petticoat to the *right* was made of turquoise taffeta and trimmed with Valenciennes lace.

At the *left* is shown a pair of embroidered silk hose, style of 1902.
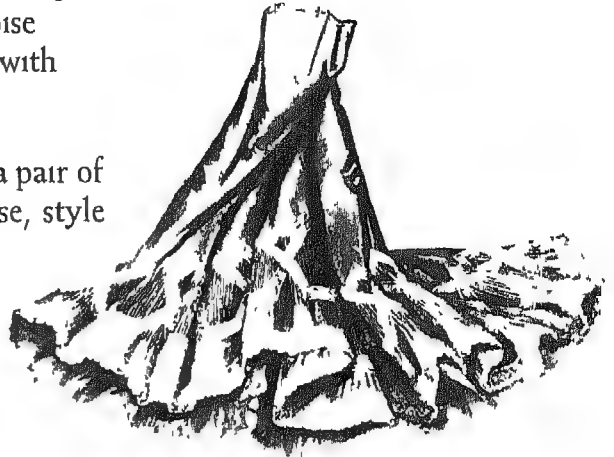
Harper's Bazar, March, 1901
Courtesy, Harper's Bazaar, New York City

Town & Country Oct 25, 1902
Courtesy, Town & Country, New York City

The object on the *right* was a black satin chest-protector "to be worn with evening dress."

Harper's Bazar, June, 1901
Courtesy, Harper's Bazaar, New York City

The Home Journal, Jan 17, 1901
Courtesy, Town & Country, New York City
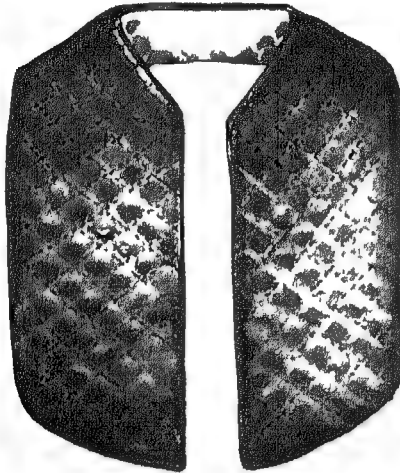
Harper's Weekly, Apr 25, 1903
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Above "A thorough protection against dust and sunburn."

In describing the suit shown *above*, the fashion writer let herself go as follows: "A daring design in blue broadcloth! The bolero is *assertive*!"

Horse Play

A meet of the Meadowbrook hounds at Jericho, Long Island, N Y., is seen *above*. In 1904, when this picture was taken, fox-hunting was becoming more popular than following the drag

The picture *below* shows an incident in the polo match between Princeton and Squadron "A" at Van Cortlandt Park, N Y , on May 14, 1904.

Both illustrations on this page are from *Harper's Weekly*, June 4, 1904 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

The Seventy-Five Million

The census of 1900 set the population of the United States at just under seventy-six million. Of these, the overwhelming majority lived outside the pleasant, rarefied atmosphere of the preceding five pages.

Immigrants poured through the new receiving station on Ellis Island in New York harbor, to find that what loose gold had been lying about the streets had already been garnered

Harper's Weekly, Jan 19, 1901 Courtesy, Harper & Brothers New York City
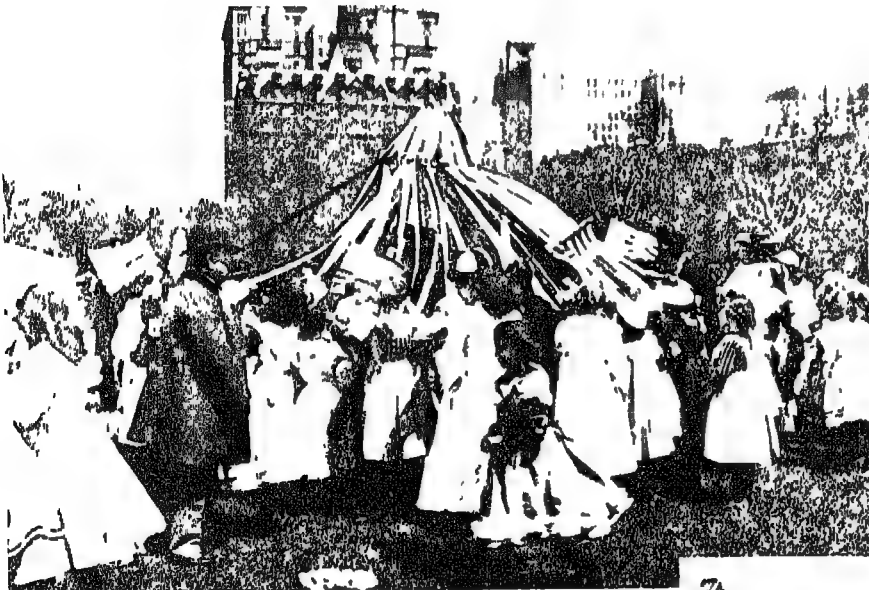
Harper's Weekly, May 18, 1901 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

But the cosmopolitan city received them hospitably, and their children took up America's ways. The May Pole celebration in Battery Park shown at the *left* took place in 1901.

On the western prairies the farmer came to town and found street fairs in progress, ready to catch his eye and his money.

Harper's Weekly, Aug 31, 1901
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

The Seventy-Five Million (*Continued*)

Opportunity awaited everyone. The optimism of the years of the full dinner-pail was contagious.

Courtesy Mack International Motor Truck Corporation, New York City

It was said that science would create new jobs faster than technological improvements could throw men out of work. Skilled mechanics like the Mack Truck builders shown *left* need never worry.

The Steel Works Club "smoker" seen at the *right* was hailed as a great step toward better labor-management relations.
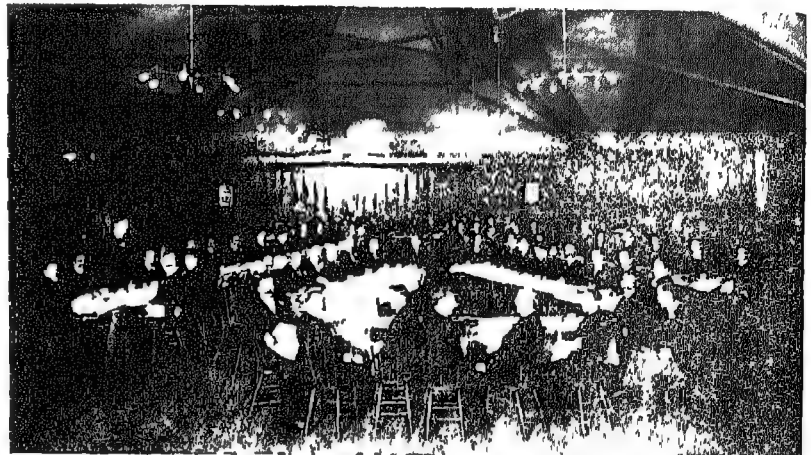
Illustrated World Technical World Vol 1, 1904
Courtesy, Popular Mechanics, Chicago, Ill

Harper's Weekly, Sept 13, 1902 Courtesy, Harper & Brothers, New York City
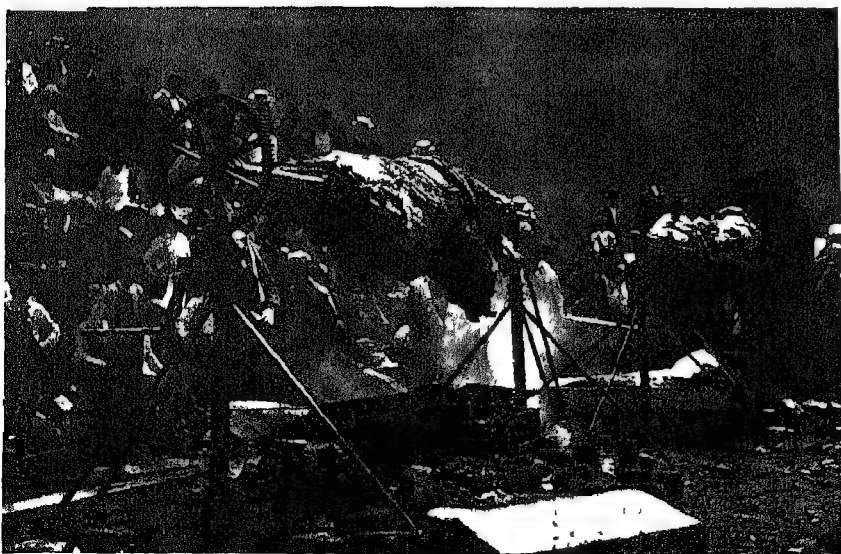
At political barbecues, the faithful followers of the local boss gathered to praise his name and eat the roast meat of municipal corruption.

Family

In the plain folk's world, at the start of the new century, the family was paramount Men worked for their families, their common aim was to "leave the family comfortable."

Courtesy Mrs [illegible] Grand Rapids, Mich

Members of families enjoyed one another's company as a rule Picnics like the one shown *above* were family affairs

From The Alfred E Smith Collection
Courtesy Museum of the City of New York

A very typical family man of around 1903 was Alfred E Smith (at the *left* with Mrs Smith)

The grim story of Carry Nation (*right*) and her saloon-smashing crusade started with a family broken by drink

Courtesy Scribner Art File

Sport from the Stands

College football was growing into a spectacle. At the Harvard-Yale game on Nov 23, 1901 (shown *below*), thirty-six thousand people were on hand to see Harvard win by 22 to 0.

Harper's Weekly, Dec 7, 1901 Courtesy Harper & Brothers, New York City

Professional baseball attracted larger and larger crowds to watch the city teams battle for League pennants, and, after 1903, in the "World Series." The picture *below* was taken at a game between New York and Chicago (National League) as "better than forty thousand people crowded the New York Polo Grounds."
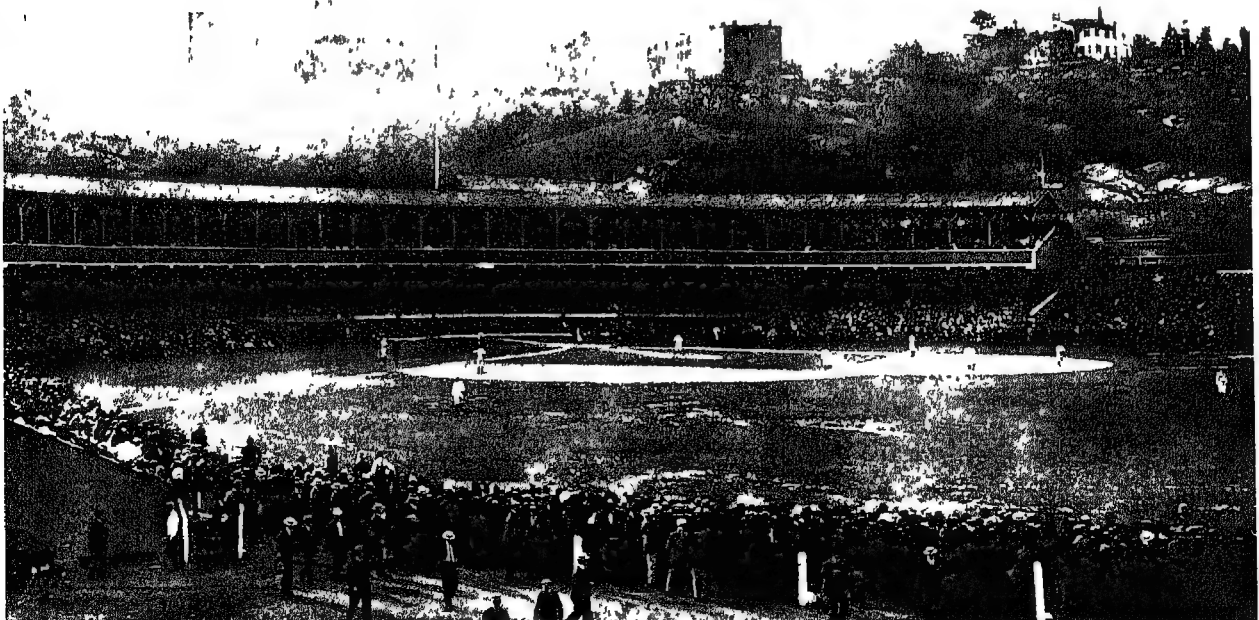
Harper's Weekly, July 2, 1904. Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Basketball

The one popular sport which is completely American in origin had grown greatly in popularity since its invention by James Naismith in 1891. It had become a recognized intercollegiate sport, and was played by girls and boys of all ages.

Junior basketeers from a Chicago suburb are seen at the *right*, in the traditional grouping around their coach

Courtesy Ravenswood Lake View Historical Association sponsored by The Chicago Public Library, Ill

Harper's Weekly Feb 22, 1902 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

A girls' team from a Brookline, Mass , school is shown in action at the *left*.

"Do or die" must have been the motto of this University of Nebraska Varsity Team.

Courtesy, Public Relations Office, University of Nebraska, Lincoln

Theater

New stars, shoddy plays and managers' feuds characterized the American stage at the start of the new century.

Town & Country, May 16, 1903 Courtesy, Town & Country, New York City

David Warfield in *The Auctioneer* (*left*) scored a 1903 triumph.

Miss Maxine Elliott (*below*) was displaying her brunette beauty in Clyde Fitch's *Her Own Way*

Town & Country, Oct 18, 1902
Courtesy, Town & Country, New York City

Miss Ethel Barrymore in a 1902 sketch entitled *Carrots* was said to have "a deft and gracious art which conceals art."

Town & Country Oct 3, 1903
Courtesy, Town & Country, New York City

Film and Frou-Frou

Spurred on by declining public interest in the "movies," an Edison cameraman shot a film in 1903 based on an original, plotted story and produced the first American drama in motion pictures: *The Great Train Robbery* A still from this epic of the screen is shown *below*, complete with flicker effect.

Courtesy, Film Library, The Museum of Modern Art, New York City

Town & Country Oct 10, 1903 *Courtesy* Town & Country, New York City

A scene from a 1903 musical comedy is shown *above* to prove that, like the Rock of Gibraltar, musical comedy never changes in essentials.

Hits of 1904
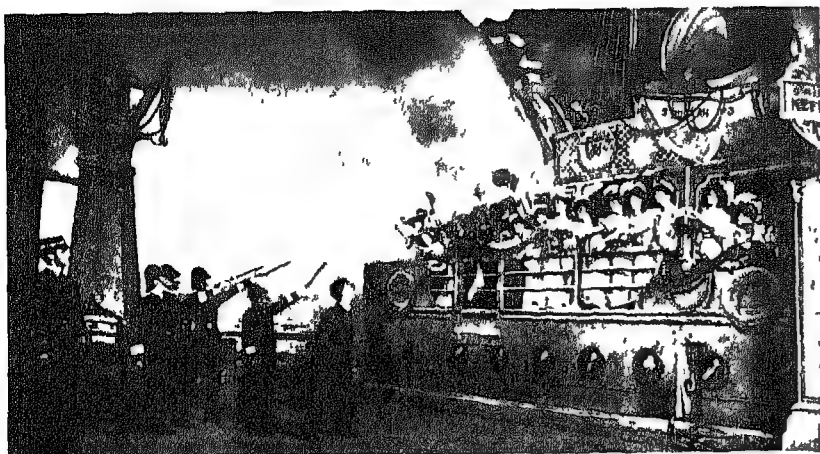
Courtesy, Robinson Locke Collection, The New York Public Library, New York City

The year 1904 found George M Cohan singing "Give My Regards to Broadway" in *Little Johnny Jones* (*left*). He wrote the play, staged it, composed the music and took the star part.

Earlier that year, Arnold Daly had produced a "pleasant play" by George Bernard Shaw entitled *Candida*. A scene from the 1904 New York production is shown at the *right*.

A Souvenir of Candida Courtesy, The New York Public Library, New York City

Courtesy, Purdue University, Lafayette, Ind

At the *left* is a scene from the 1904 production of George Ade's *College Widow*—the first stage treatment of American undergraduate life, and, naturally enough, a comedy

At Home

A desire to identify themselves with the older cultures of Europe had long since influenced the opulent in their choice of house decoration This fashion was now beginning to influence the "comfortably well off"

Decorators seemed particularly fond of reproducing the elegant pomp of the French Courts for their customers in Pennsylvania and New York (to the *right* and *below*).
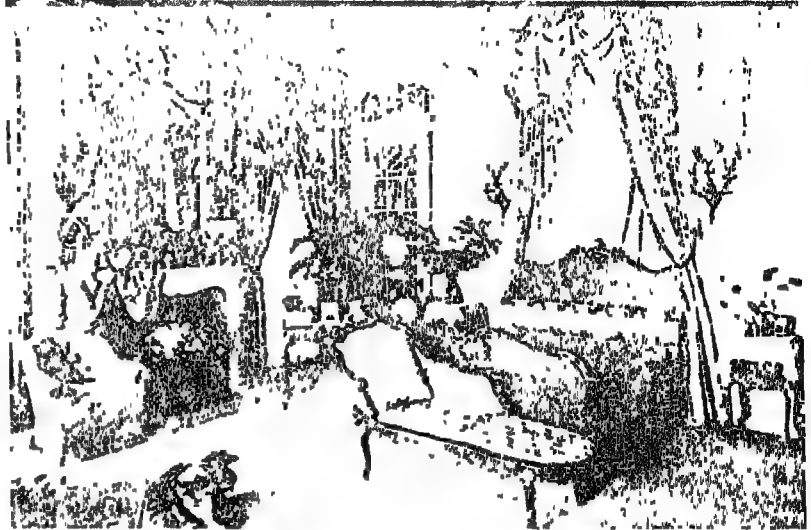
Harper's Weekly, Dec 1, 1900. Courtesy, Harper & Brothers, New York City

The Home Journal, Jan 21, 1901 Courtesy, Town & Country, New York City

But Mrs. Theodore Roosevelt, the new mistress of the White House, planned the colonial garden shown at the *right*.
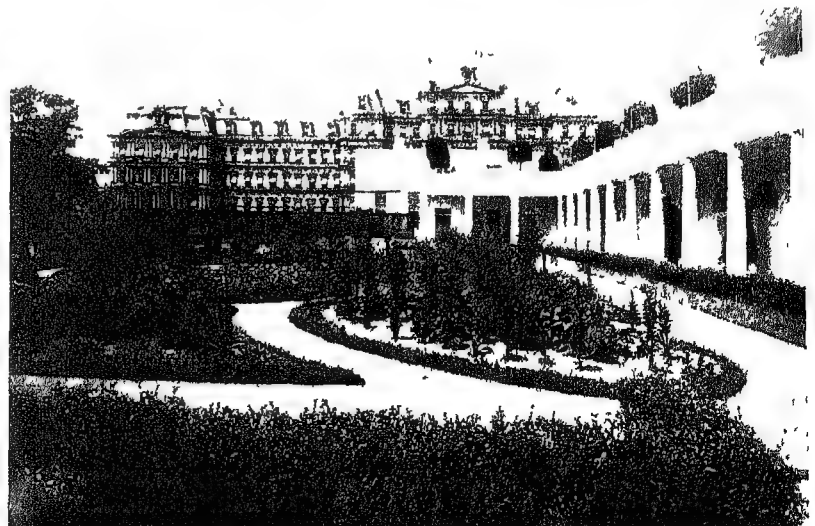
Harper's Bazar, November, 1904 Courtesy, Harper's Bazaar, New York City

Simpler Style

The older Victorian virtues continued to be expressed in the homes of public men.

Courtesy, Nebraska State Historical Society, Lincoln

In the Governor's Mansion at Lincoln, Neb (shown *left* and *below*), any decorative innovations would have caused too much caustic comment.
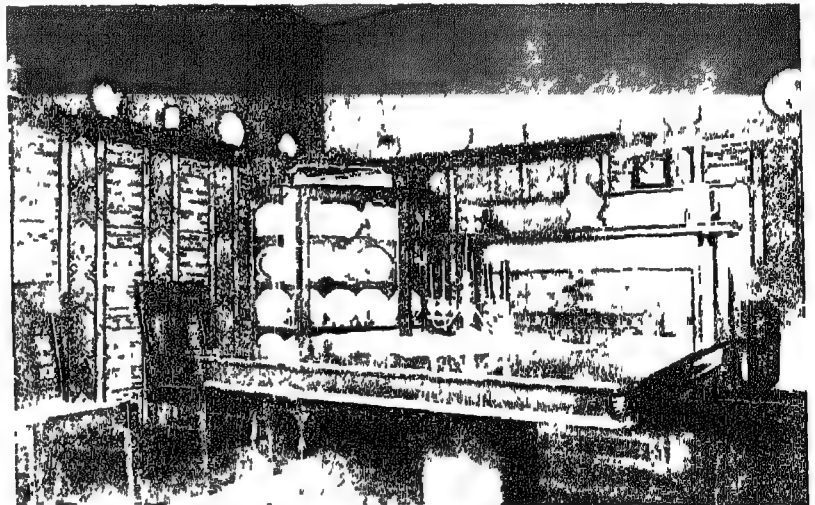
Courtesy, Nebraska State Historical Society, Lincoln

Courtesy, Nevada State Historical Society, Reno

Nor could the Judge, a corner of whose living room is seen at the *left*, afford implied rebukes to popular taste.

Oddments in Decoration

A "cosy corner" is at the left of the room shown *right* Note the decorative iron stove, the wicker rocking chair and the portieres

Typical room of a girl at the University of Nebraska in 1902 is shown *left*

A Lincoln, Neb , dentist provided this waiting room for his clients at the start of the new century. No symbols of his craft are visible except the pile of magazines on the table

All illustrations on this page are by the *courtesy* of the Nebraska State Historical Society, Lincoln

Kitchens

The reform movement in interior decoration extended to the housewife's workshop. Mounting numbers of city people who lived in "flats" or apartments found the kitchen very close under their eyes and noses Furthermore, "the absence of a maid's sitting-room in apartments makes it an ethical obligation upon the employer to provide a commodious and practical kitchen," said the editor of *Harper's Bazar.*
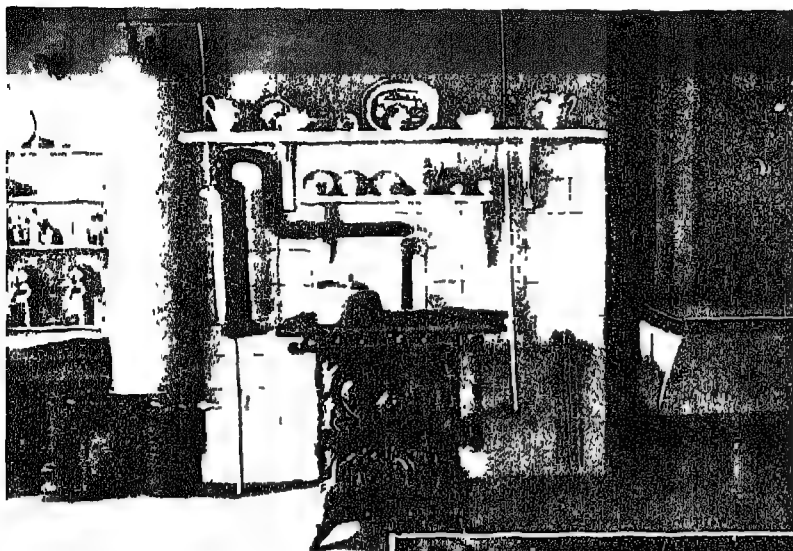
The tiled chimney effect in the kitchen at the *left* was considered an innovation in 1901

Harper's Bazar, January, 1901
Courtesy, Harper's Bazaar, New York City

The use of white paint in the kitchen at the *right* was supposed to set off the sheen of the copper pots and pans.
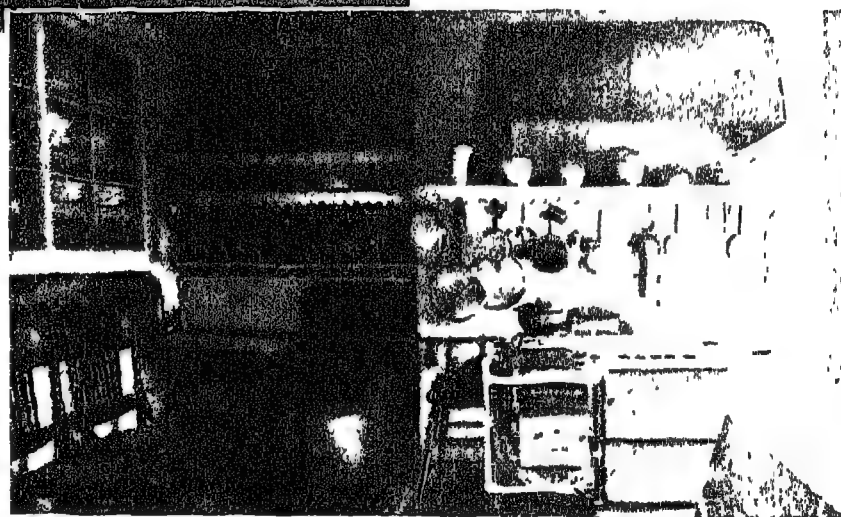
Harper's Bazar, January, 1901 *Courtesy,* Harper's Bazaar, New York City
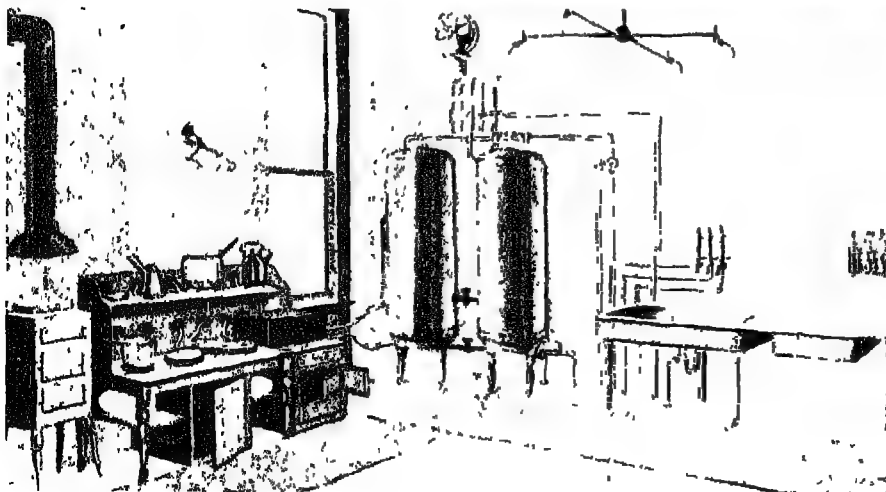
In April, 1901, a daring designer projected the "all-electric" kitchen sketched at the *left*

Harper's Bazar, April, 1901 *Courtesy,* Harper's Bazaar, New York City

Barrooms

Possibly at the request of their customers, saloon-keepers permitted their establishments to be photographed only at slack hours of trade.

The four-sided bar at the old Waldorf-Astoria, New York City, is seen at the *right*
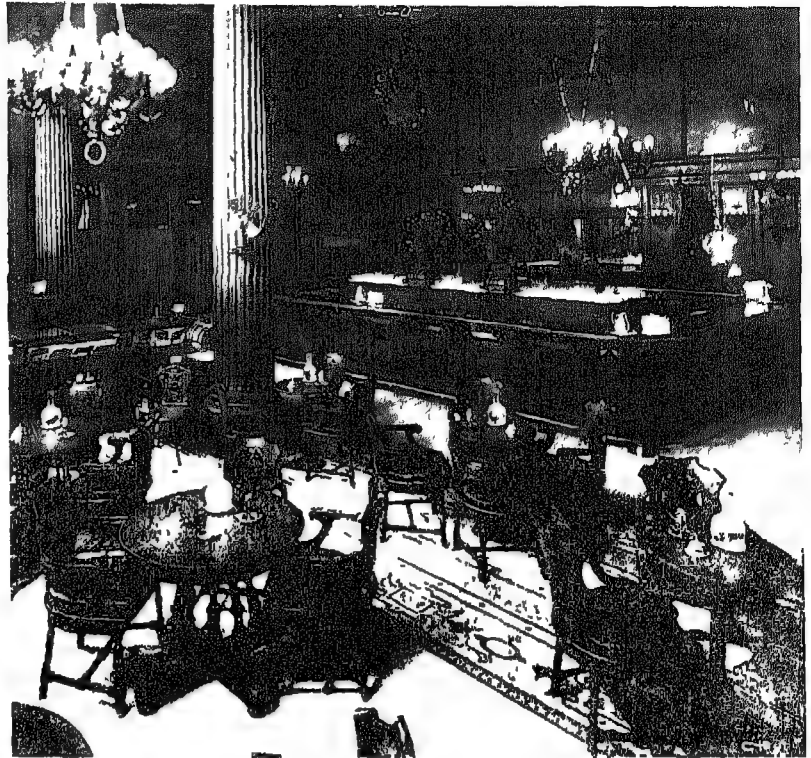
Local industry was featured in the mineral display case at the right of the Tonopah, Nev., bar shown *below*.

Courtesy, The Waldorf-Astoria, New York City
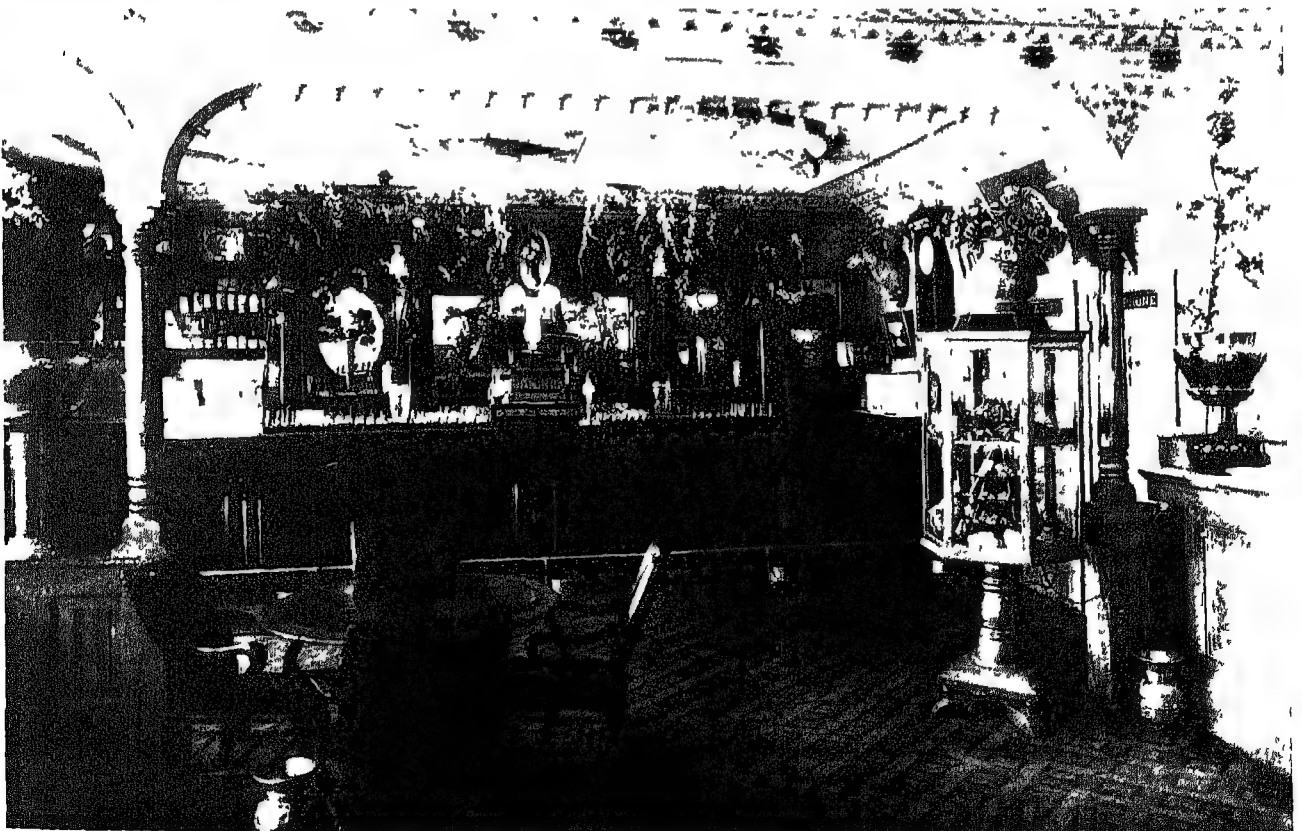
Courtesy, Nevada State Historical Society, Reno

6

SHADOW OF THE BIG STICK

Physical and social changes in the United States already pictured in Chapter 5 were paralleled by upheavals in politics and industry. "Speak softly," Theodore Roosevelt had said early in his career, "and carry a big stick" By December, 1901, the nation found that the big stick could be swung as well as carried, that the President was a reformer at heart.

[illegible]

First domestic victim was J P. Morgan's railroad trust, the National Securities Corporation. Government prosecution under the Sherman Act was begun against it in February, 1902

Conservative businessmen like the New York merchant shown *above* wondered what the world was coming to

In the picture of Wall Street at the *right*, the flags were at half-mast for President McKinley's death The scene expresses equally well the "Street's" reaction to the "treason" of a Republican President against finance

Harper's Weekly Sept 21, 1901
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Harper's Weekly, May 30, 1903
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

The view at the *left* shows the President, the Governor of Arizona, the head of the Santa Fe Railroad and the President of Columbia University standing at the Grand Canyon.

Tours around the country in such oddly-assorted company were part of the President's strategy to enlist popular support for his policies.

Anthracite Strike

On May 12, 1902, the entire body of anthracite coal miners went on strike for adjustment of wages and hours of work, but primarily to secure recognition of their union by the mine operators

There was little violence, but the miners were determined to stick it out All through the summer and autumn of 1902 no coal was dug at the Branchdale Colliery near Minersville, Pa (*right*), or at any other anthracite works
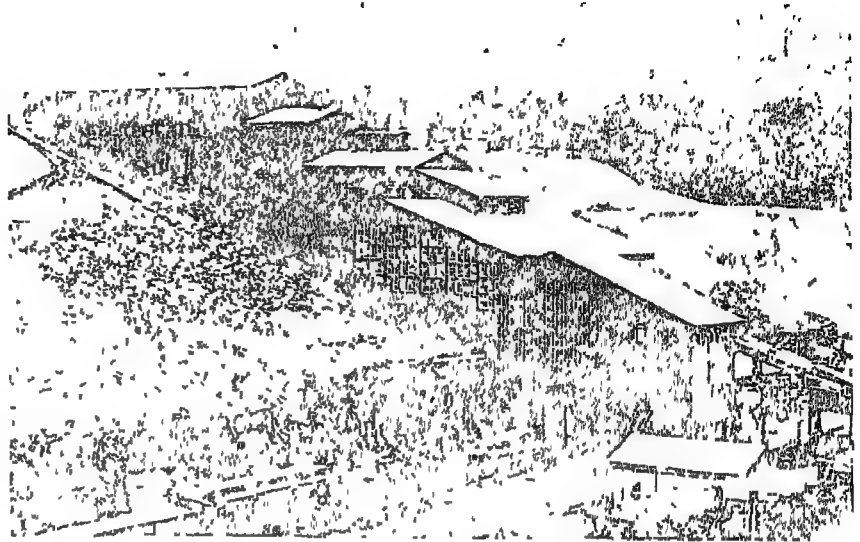
Harper's Weekly Nov 1, 1902 Courtesy, Harper & Brothers, New York City
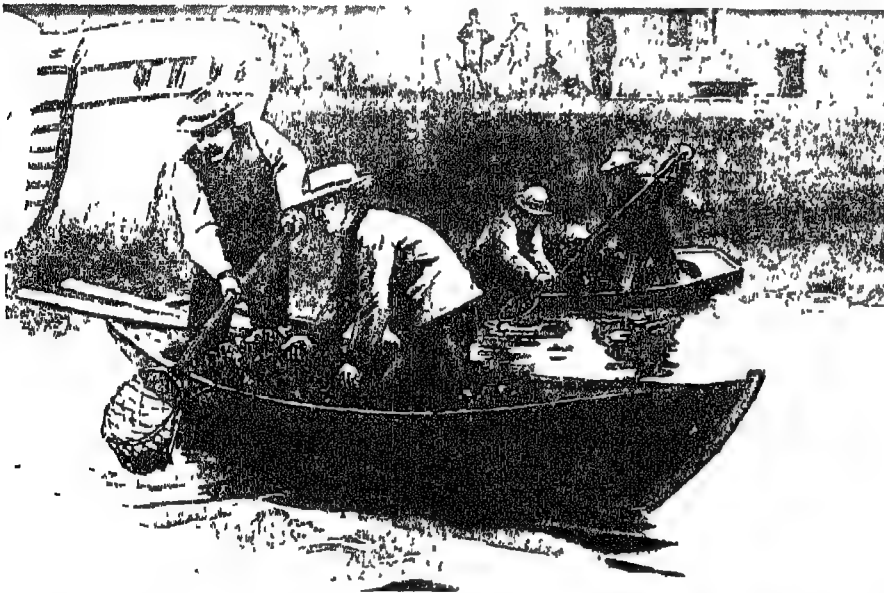
Harper's Weekly Oct 18, 1902 Courtesy Harper & Brothers, New York City

As the price of coal rose from five dollars a ton to almost thirty, the gathering up of lumps that fell from barges (as seen in the sketch *left*) became a profitable minor business. Schools were closed, industries shut down and a winter of tragedy was in prospect.

The President exhausted all diplomatic means of settlement He had made up his mind to protect the public interest by seizure and military operation of the mines, when, at the October 14 conference sketched *right*, Elihu Root, J P. Morgan and the President worked out a plan for an arbitration commission which settled the strike. It was a great personal triumph for Theodore Roosevelt.
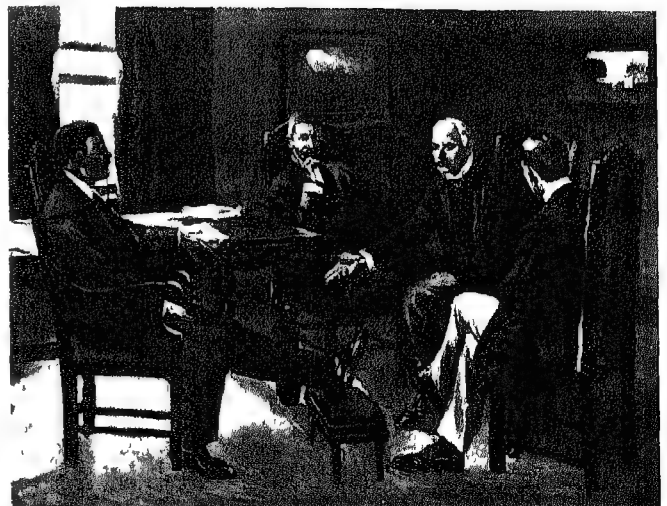
Harper's Weekly Oct 25, 1902 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Army and Navy

Meanwhile all encouragement was given the armed services by the President. A man who had been Assistant Secretary of the Navy and was author of a history of the Navy's part in the War of 1812 was not a President to let barnacles cluster on the warships or their personnel.

Harper's Weekly, June 21, 1902
Courtesy, Harper & Brothers, New York City
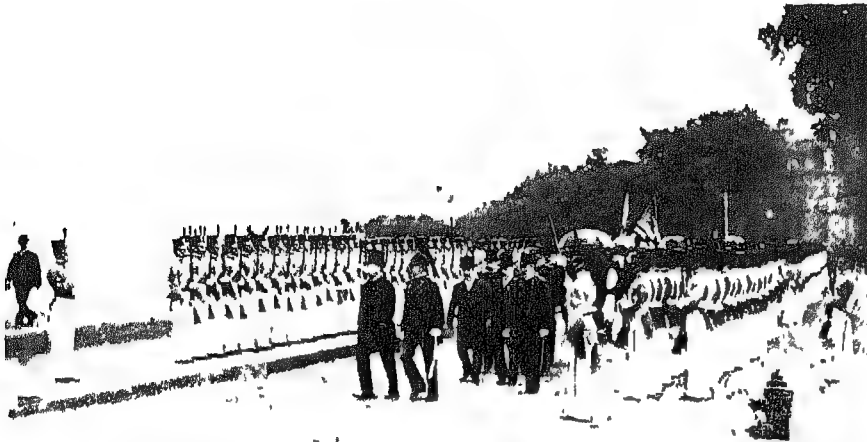
In June, 1902, he attended the Centennial Exercises at West Point (*left*)

August, 1903, he reviewed the Fleet from the bridge of the Presidential yacht *Mayflower*
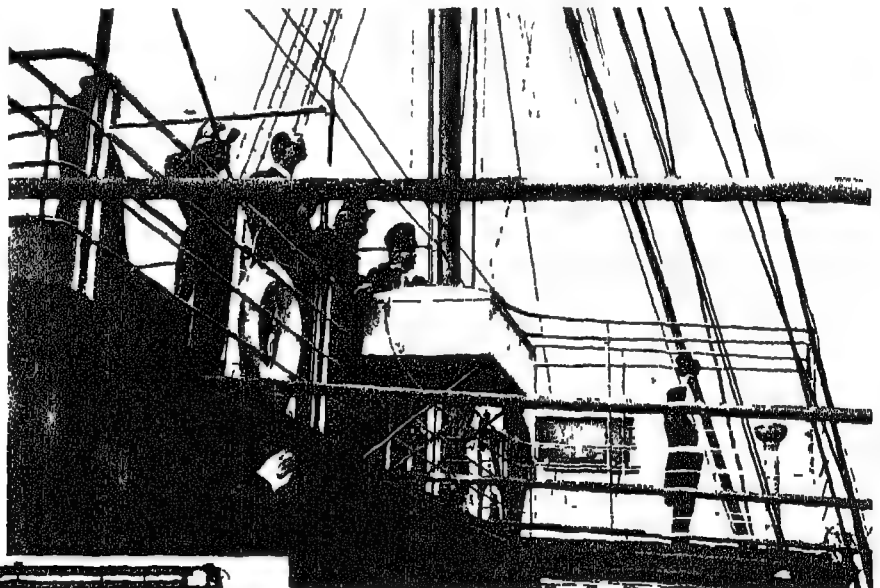
Harper's Weekly, Aug 29, 1903
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Harper's Weekly, Sept. 12, 1903 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

But more significant than pageantry, the launching of the new armored warship *Pennsylvania* at Cramp's shipyard, Philadelphia (*left*), and the promise of many more such vessels to come, served notice on the world of 1903 that the "big stick" could reach across water

Submarines

Experiments with undersea boats were continued, along with development of new types of surface craft and improvements in armor and ordnance.

In 1902 the Navy Department tried out the *Adder* (*right*) in Peconic Bay, Long Island, N. Y
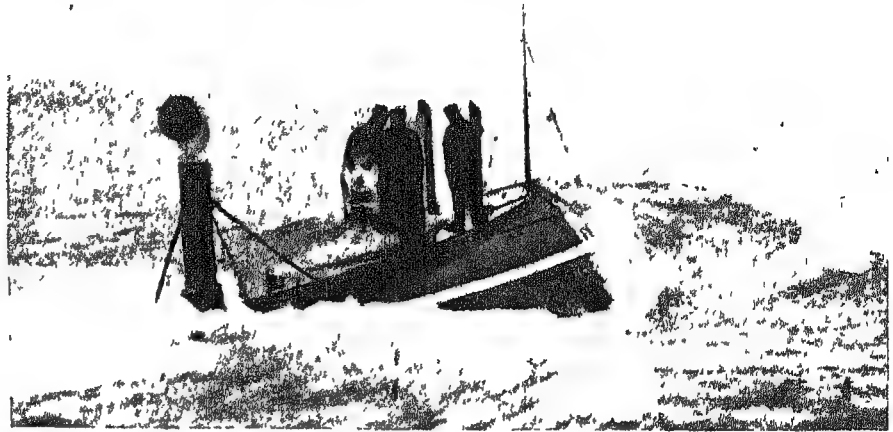
Harper's Weekly, Nov 29, 1902
Courtesy, Harper & Brothers, New York City
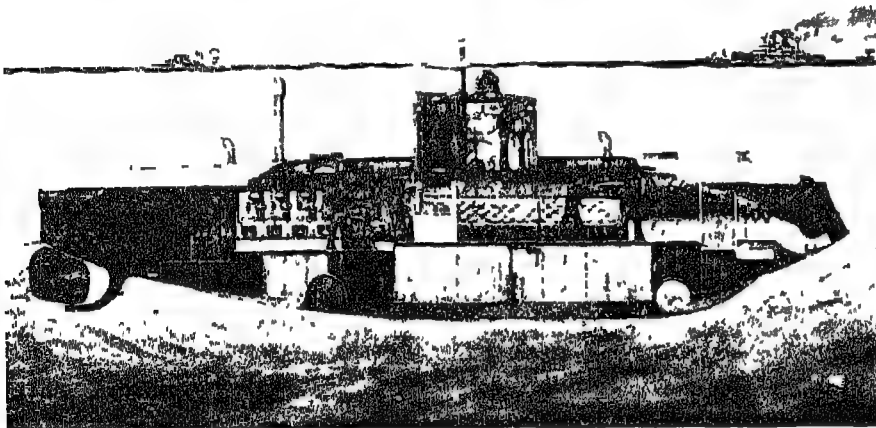
Illustrated World, Technical World, Vol I, 1904
Courtesy, Popular Mechanics, Chicago, Ill

Simon Lake's boat *Protector* (shown *left* in sectional view) was tested under the eye of Navy experts. *Below*, the *Protector* is shown in cruising trim
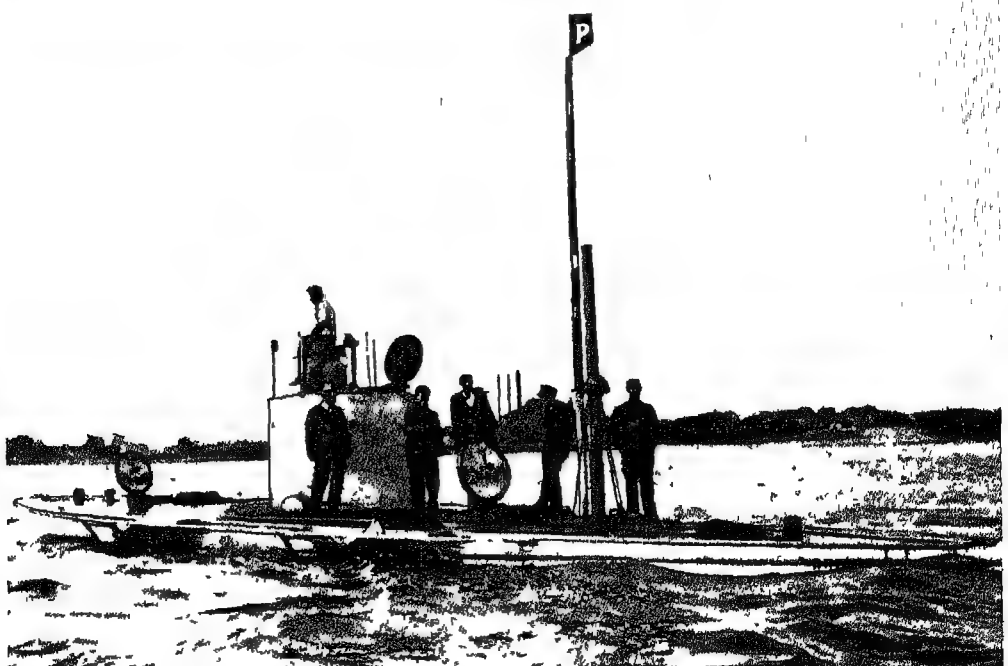
Illustrated World, Technical World, Vol I, 1904
Courtesy, Popular Mechanics, Chicago, Ill

Where Men Were Men

President Roosevelt was pleased when the public associated him with the young and still expanding West rather than with his native New York.

Courtesy The Library of the University of Texas, Austin

He could have held his own in the hurly-burly of the Kimble County, Tex , land rush seen at the *left*

The snows of a Nevada winter would have been a challenge to his hardihood The picture shown *right* was taken in Virginia City.

Courtesy, Nevada State Historical Society, Reno

Courtesy, The Library of the University of Texas, Austin

The railroad surveying party shown *left* at Cleburne, Tex., would have found in him a hearty trail companion

Mushrooming Towns

The West had vigor and life. Its towns were hopeful and democratic.

Courtesy, Nevada State Historical Society, Reno

Goldfield, Nev., *above*, was the center of a mining boom (see page 157).

The north side of El Campo, Tex., *below*, was in 1903 still typical of the frontier.

Courtesy, The Library of the University of Texas, Austin

Conservation

The West was more than a romantic backdrop for the strenuous life It was a region where heedless and wasteful industries had done damage to national resources. Some kind of regulation seemed imperative.
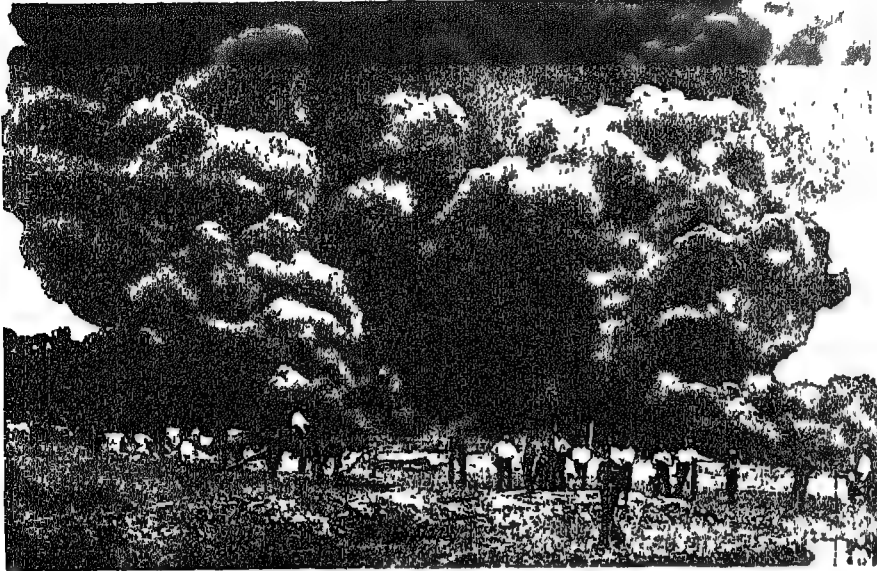
Harper's Weekly, Oct 24, 1903
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

The new oil industry did little or nothing to prevent calamities like that shown *left*.

It remained to be seen whether the cattle industry had been a blessing or a curse to the West

Photograph by W. H. Jackson Courtesy The Edison Institute Dearborn Mich

Courtesy Minnesota Historical Society, St Paul

In the northern Mid-West, the lumbermen continued their waste among the forests

Water, Water Everywhere

The spring of 1903 brought disastrous floods to the West and South, and intensified the drive for flood-control

In Topeka, Kans , the rampaging river flooded Kansas Avenue, *right*, and a pontoon bridge was hastily thrown across that thoroughfare.

Harper's Weekly June 13, 1903 *Courtesy* Harper & Brothers, New York City
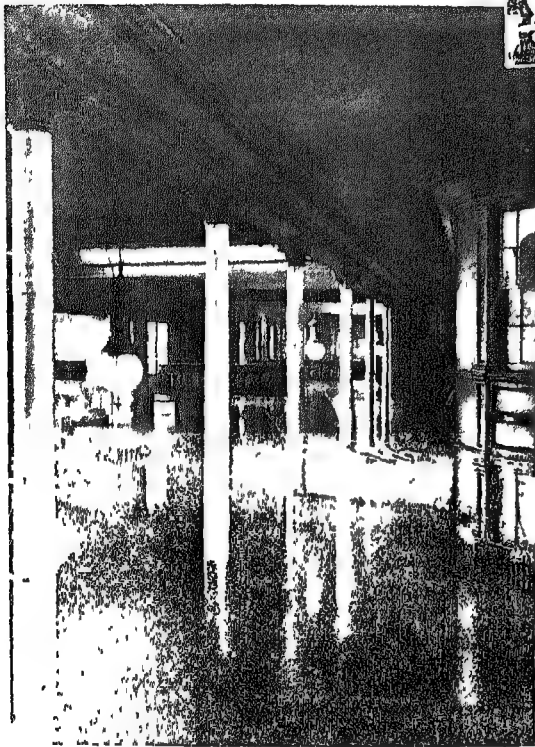
Harper's Weekly June 20, 1903
Courtesy Harper & Brothers New York City

Union Station at Kansas City, *left*, knew an unwonted quiet as three feet of water flooded up to the ticket windows.

At Clifton, S C., flood waters wrecked the mill in the background (*below*) and washed out the trolley tracks.
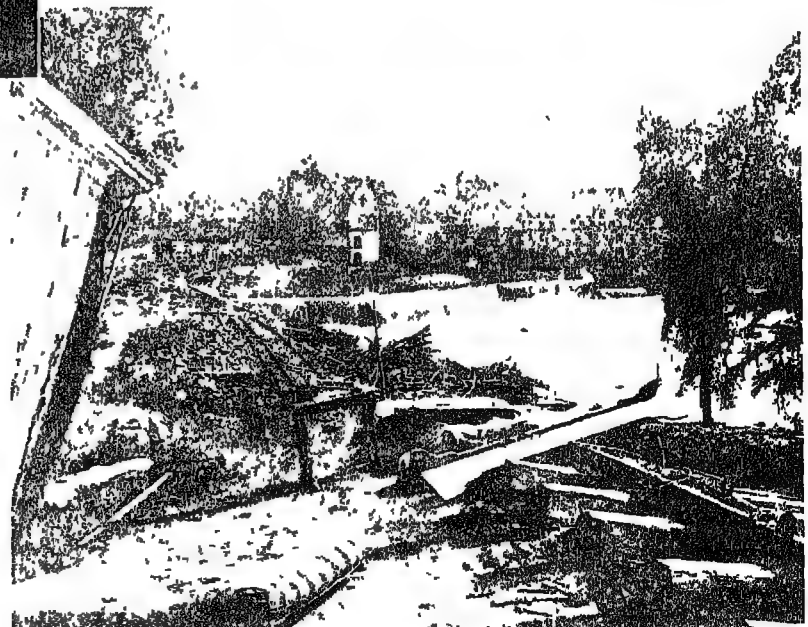
Harper's Weekly, June 27, 1903 *Courtesy* Harper & Brothers, New York City

Up in the Air

Man had dreamed for centuries of controlled flight through the air The capricious balloon was not enough of a triumph over nature's laws
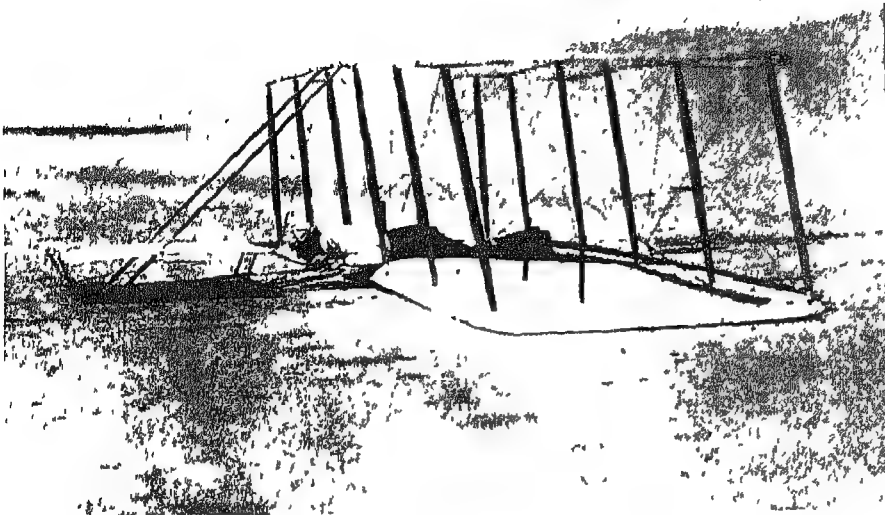
Courtesy Scribner Art File

As early as 1900, Orville and Wilbur Wright, bicycle builders of Dayton, Ohio, had tested a glider like the one shown *left* at Kitty Hawk, N C In October, 1902, several glides of over 600 feet were made

Prof S P Langley had been experimenting since 1896 with a motor-driven air-ship. On Oct 7, 1903, the Langley machine, shown *right* on its launching catapult, fell into the Potomac at Widewater, Va., "like a handful of mortar." At another test in December it failed again
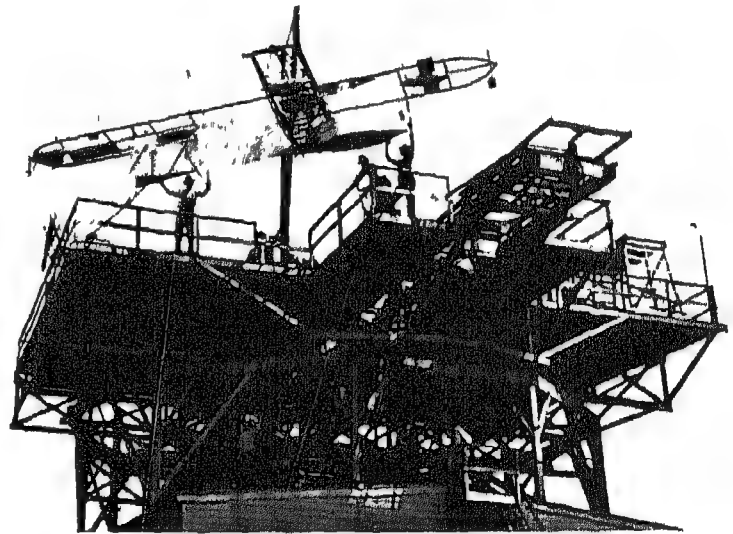
Harper's Weekly, Sept 19, 1903 Courtesy, Harper & Brothers, New York City
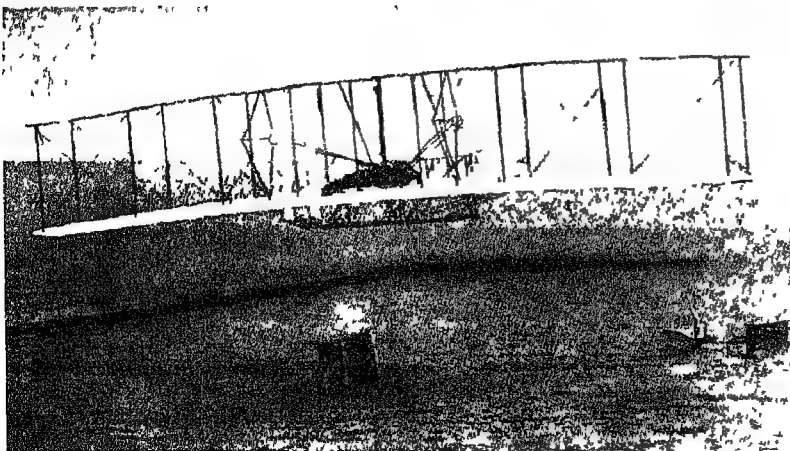
Courtesy, North Carolina State Department of Archives and History, Raleigh

The Wright brothers knew from their glider trials the exact amount of power necessary to sustain their ship in flight They built a suitable engine and propellors Then on Dec. 17, 1903, at Kitty Hawk, Orville Wright piloted the first flight ever made by a heavier-than-air machine At the *left* is shown the original Wright plane in flight.

Ford

Henry Ford and eleven other stockholders formed the Ford Motor Company in June, 1903, so beginning a new phase in automobile history

The low-priced Model "A" shown *right* appeared in 1903
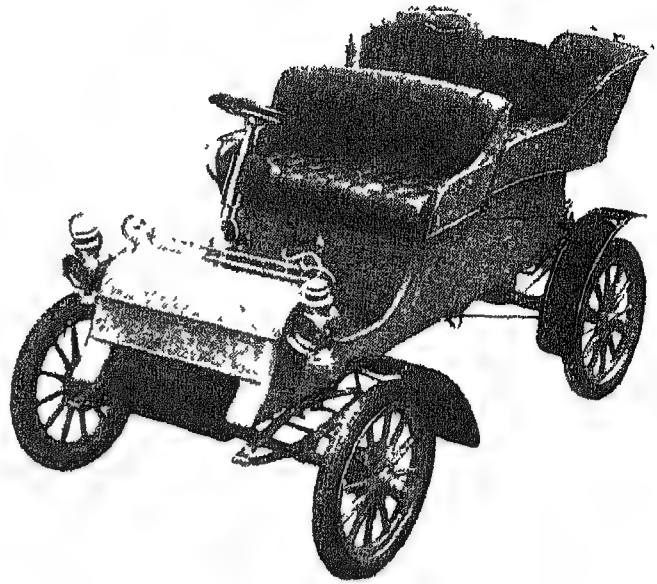
Courtesy, Detroit Public Library, Mich

The FORD MOTOR CAR

In the eyes of the Chauffeur

power, and eliminates the vibration so noticeable in other machines The body is luxurious and comfortable and can be removed from the chassis by loosening six bolts

Price with Tonneau, $900.00
As a Runabout, $800 00

Standard equipment includes 3 inch heavy double tube tires

We agree to assume all responsibility in any action the TRUST may take regarding alleged infringement of the Selden Patent to prevent you from buying the Ford—"The [illegible] of Satisfaction"

We Hold the World's Record

The Ford "999" (the fastest machine in the world) driven by Mr Ford made a mile in [illegible] seconds equal to 92 miles an hour

Write for illustrated catalogue and name of our nearest agent

Ford Motor Co., Detroit, Mich.

Harper's Weekly Feb 13, 1904
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

National advertising like the specimen at the *left* put Ford in active competition for control of the cheap car field

Note the statement· "We agree to assume all responsibility in any action the TRUST may take regarding alleged infringement of the SELDEN PATENT " The holders of this patent claimed royalties on all cars driven by internal combustion engines—a claim not finally disallowed until 1911.

The Mack Avenue plant shown *right* was the 1903 version of River Rouge
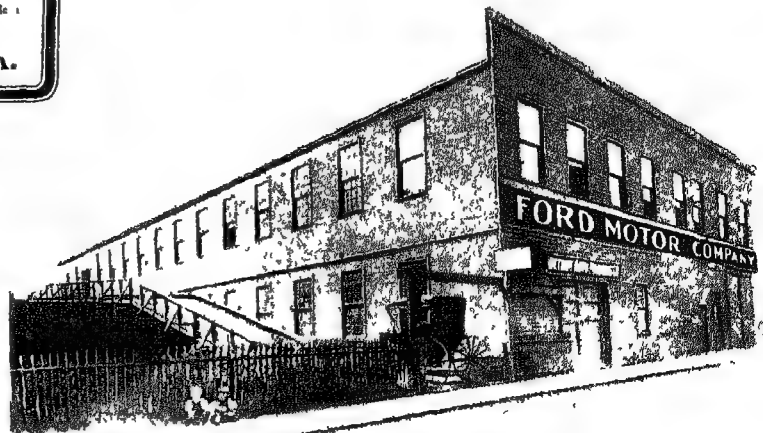
Courtesy, Detroit Public Library, Mich

Telephone
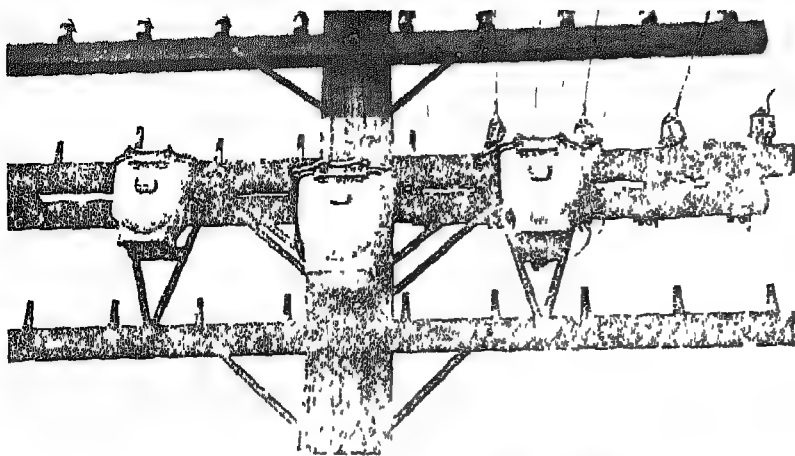
Courtesy, Western Electric Company, New York City

The invention of the loading coil in 1900 by Michael Pupin greatly increased the efficiency of long-distance transmission In the picture at the *left*, three loading coils are seen mounted on the pole

Below is shown a clever 1903 adaptation of the automobile, designed in Raleigh, N. C, especially to haul telephone poles

Courtesy, North Carolina State Department of Archives and History, Raleigh

The dial telephone, or automatic system, was found in an increasing number of places A dial phone of 1904 is shown directly *below*
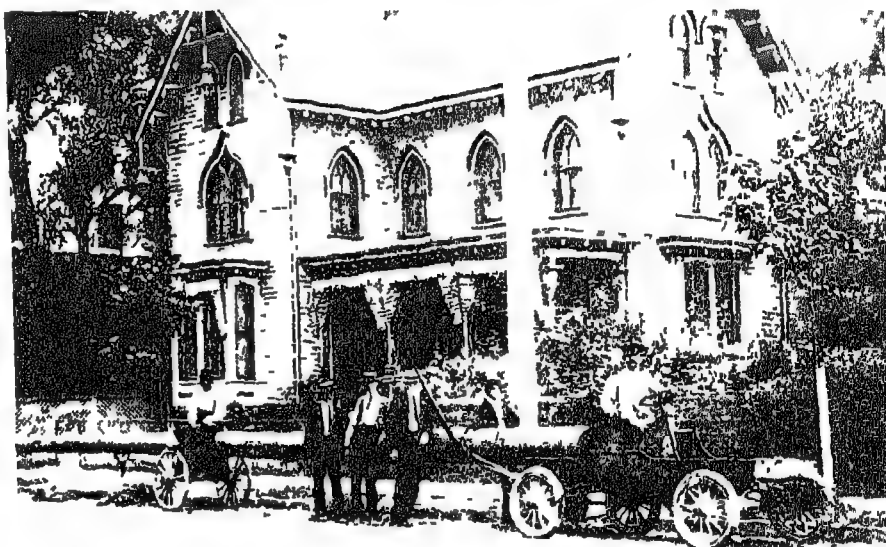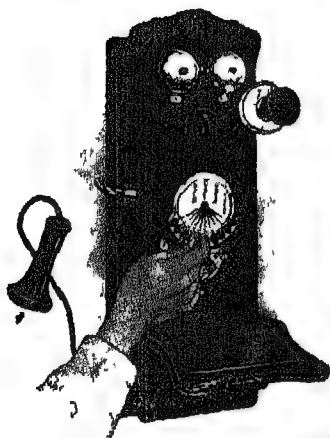
Illustrated World, Technical World, Vol II, 1904 05
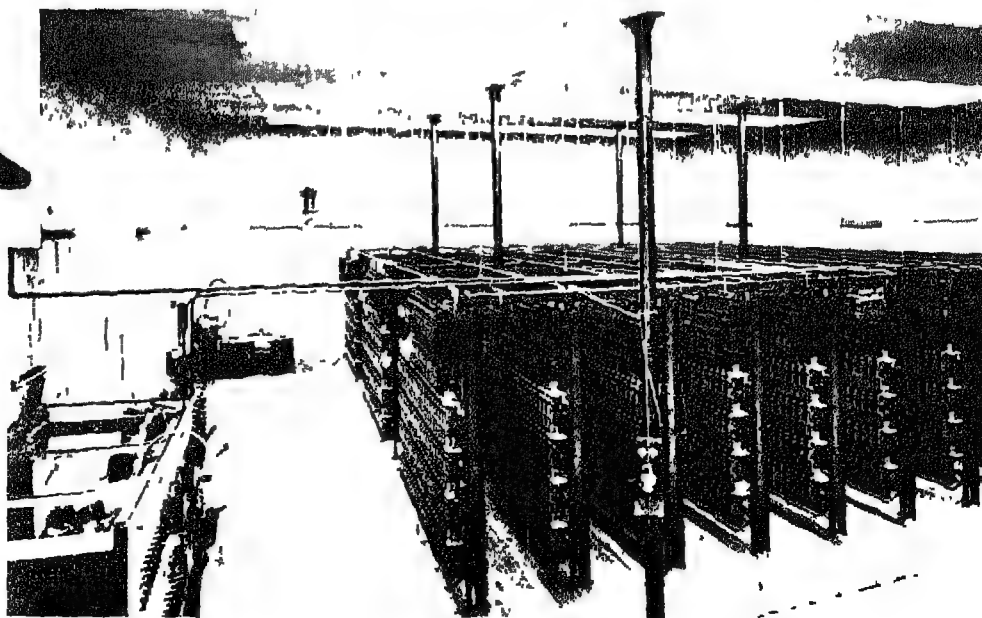
Courtesy, Popular Mechanics, Chicago, Ill

Above is a view of the automatic telephone exchange at Lincoln, Neb., late in 1904.

Dots and Dashes

In 1902 Marconi set up a send-receive station at Glace Bay, Nova Scotia, and achieved the first West-to-East radio transmission across the Atlantic

The interior of the Glace Bay station is seen at the *right*, and the antenna system is shown *below*
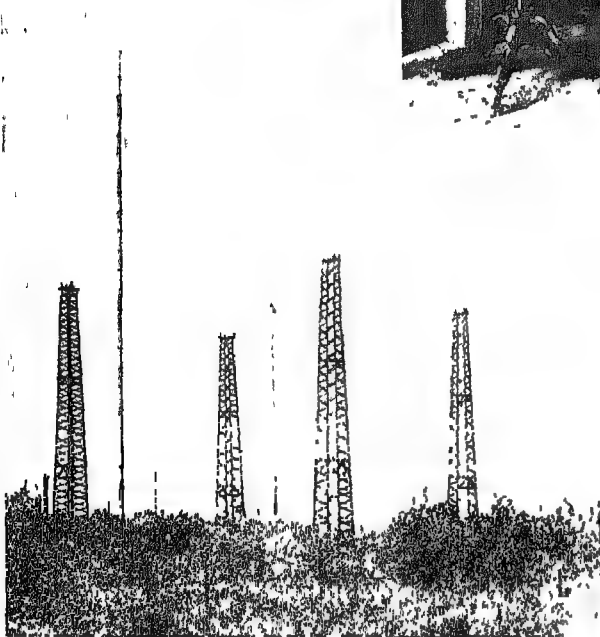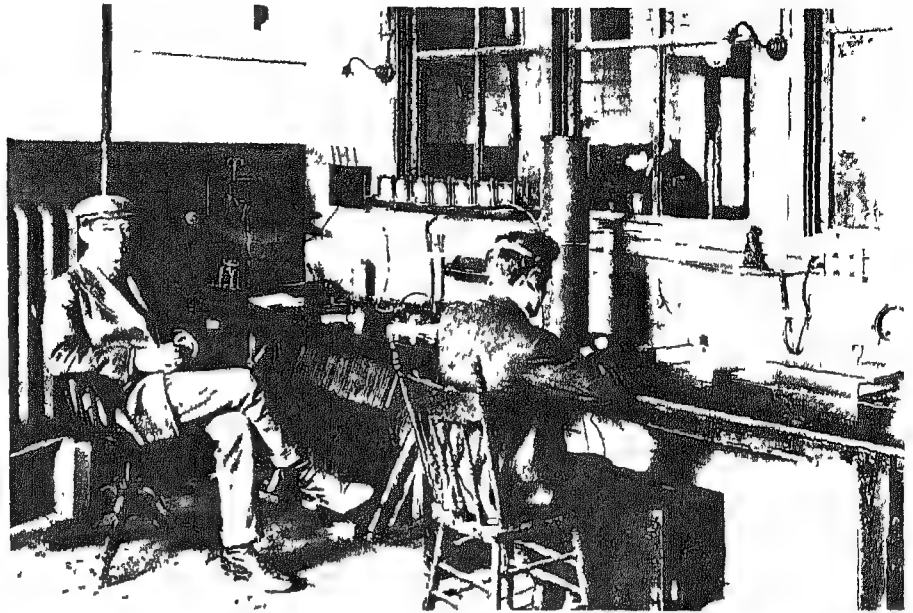
The value of radio (or wireless if one prefers) as a safety device on shipboard was immediately apparent. The *S. S Minnehaha* in 1904 used the installation shown *below*

All illustrations on this page are by the courtesy of the Radio Corporation of America, New York City

Steam and Steel

Although the principle of the steam turbine was simple, problems of design and construction had held up its general employment in power plants. But by 1901 American engineers felt they had their problems solved in a new and radically different type of machine
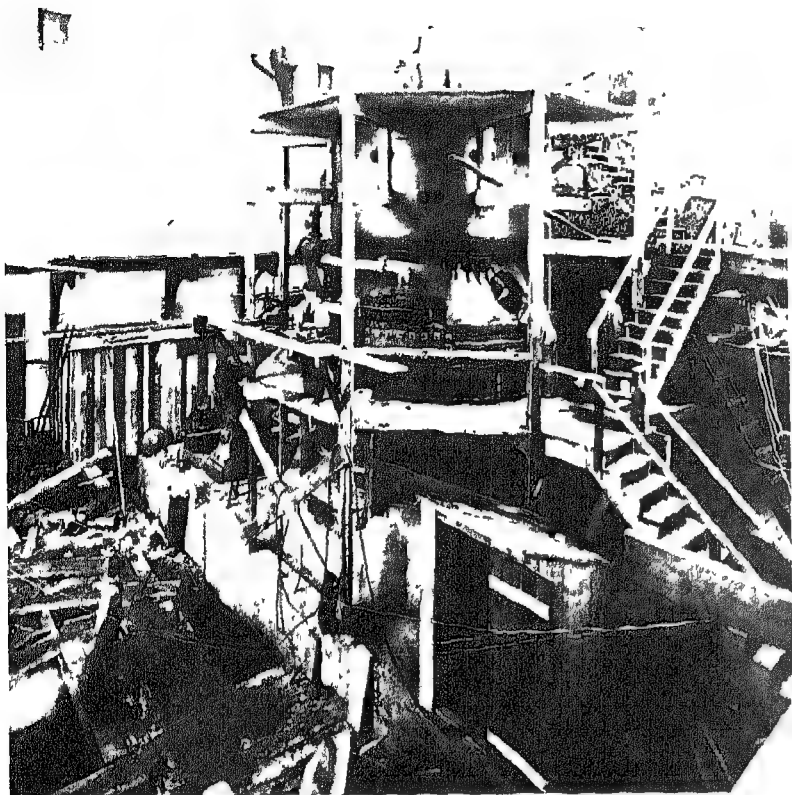
Courtesy, General Electric Company, Schenectady, N Y

A power station on Fiske Street, Chicago, contracted to use a 5000 kilowatt turbine of the new type and stipulated delivery in the spring of 1903.

The picture at the *left* shows the first commercial Curtis-Emmet turbine-generator combination as it made the deadline at Chicago. It took one-tenth the space and weighed one-eighth as much as the reciprocating engines it replaced

By 1904, all-steel thrashing machines were on the market as shown *below*.
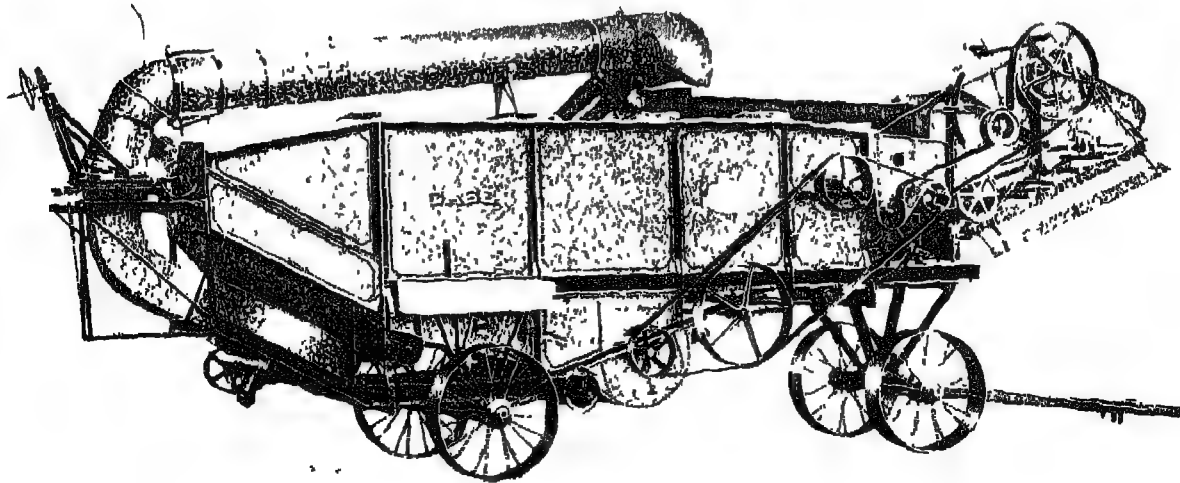
Courtesy, J I Case Company, Racine, Wis

Brand Names and Symbols

Advertisers were quick to discover the value of associating a product with an easily-remembered name or symbol

"Bear in mind" was *Pettijohn's* motto, *Force* trusted to Sunny Jim

Courtesy N. W. Ayer & Son Inc Philadelphia Pa

Courtesy, The Best Foods, Inc , New York City

Bon Ami's chick "hadn't scratched yet"

Hasn't scratched yet
Bon Ami
The Finest Cleaner Made
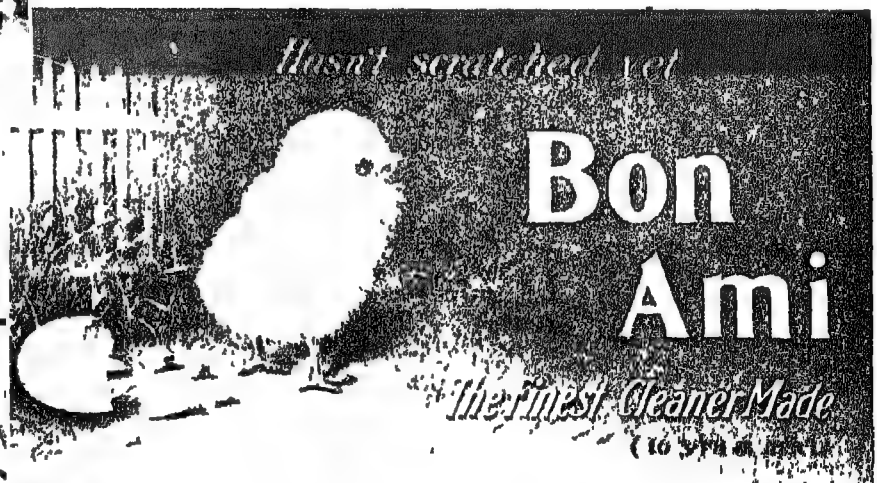
Courtesy, The Bon Ami Company, New York City
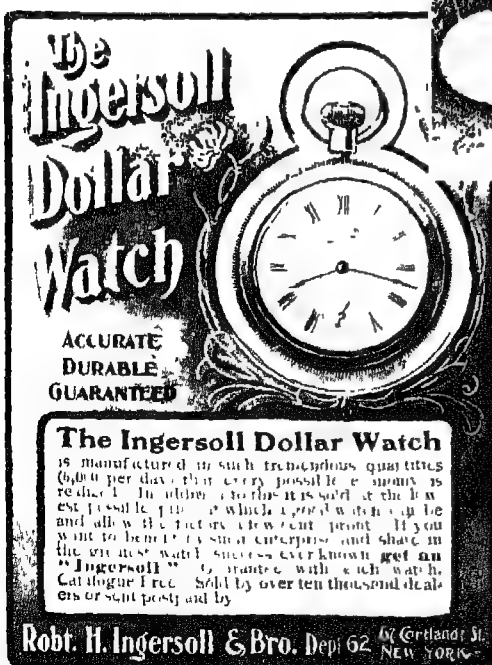
Harper's Weekly, Nov 15, 1902
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

"Ingersoll" became a slang name for all watches, and any housewife would approve of *Baker's* neat serving-maid
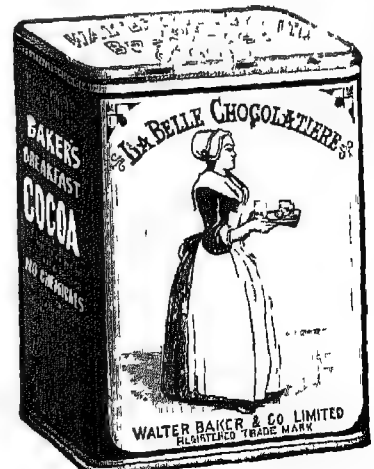
Harper's Weekly, Feb 14, 1903
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Baltimore Fire

On Feb. 7, 1904, began the third largest conflagration in the history of American cities One hundred and fifty acres were burned over in the heart of the business district
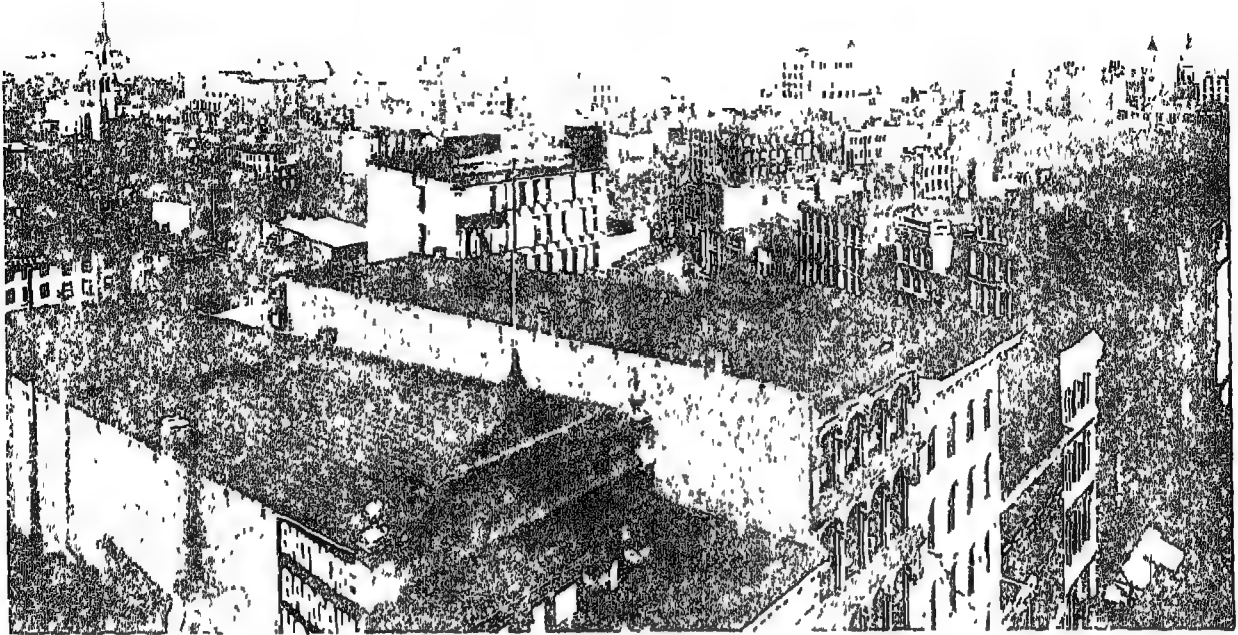
The picture *above* is a view of the city, northeast from Baltimore and Liberty streets, made about 1900. Many of the buildings in this area were destroyed.

In the panorama *below* are seen the ruins along

Both illustrations on this page are by the courtesy of The Municipal Museum of the City of Baltimore, Md

Baltimore Fire (*Continued*)

Engine companies came on flat-cars from as far away as New York City to aid in stemming the fire.
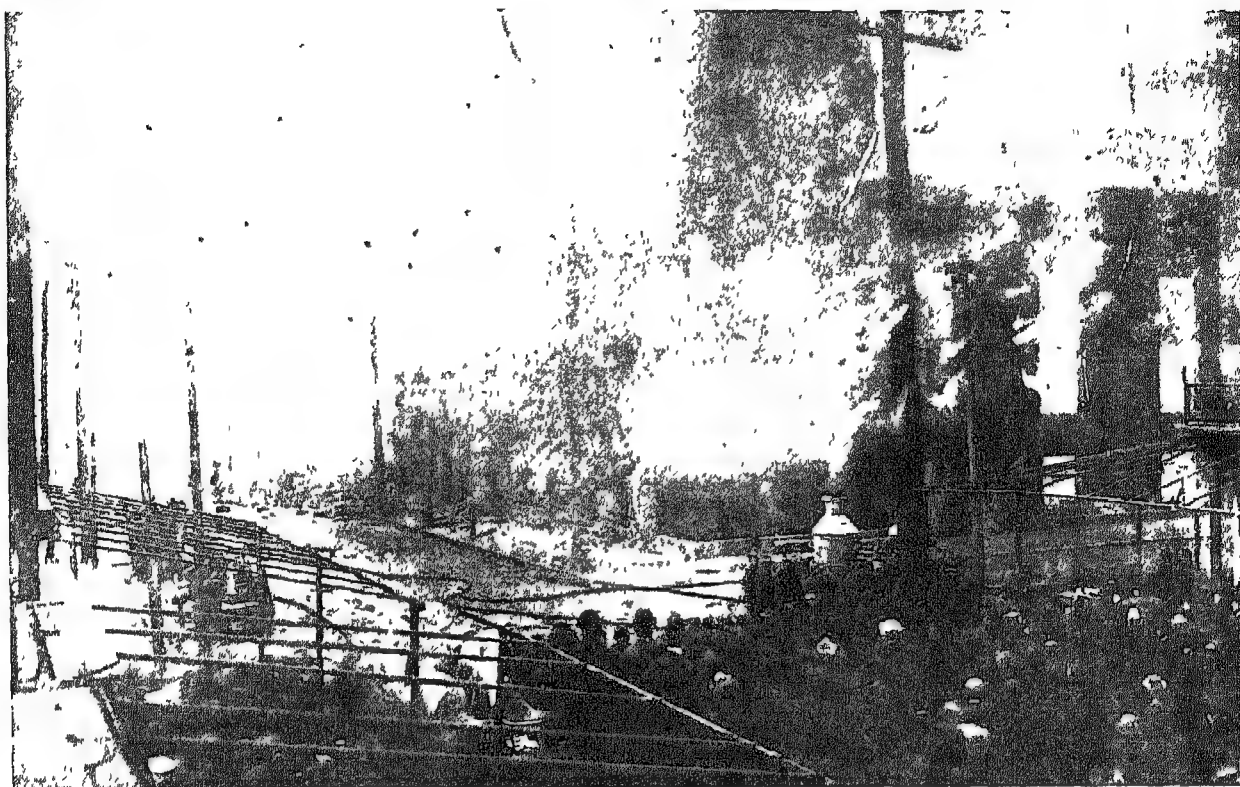
Above is a view of part of the conflagration at its height

Baltimore Street, west of St Paul Street

Both illustrations on this page are by the courtesy of The Municipal Museum of the City of Baltimore, Md

Meat Strike

Handlers, packers and butchers in the Chicago stock yards went on strike July 12, 1904, charging that the packing-house owners were discriminating against union members. The strike spread to Kansas City, Omaha and other centers.
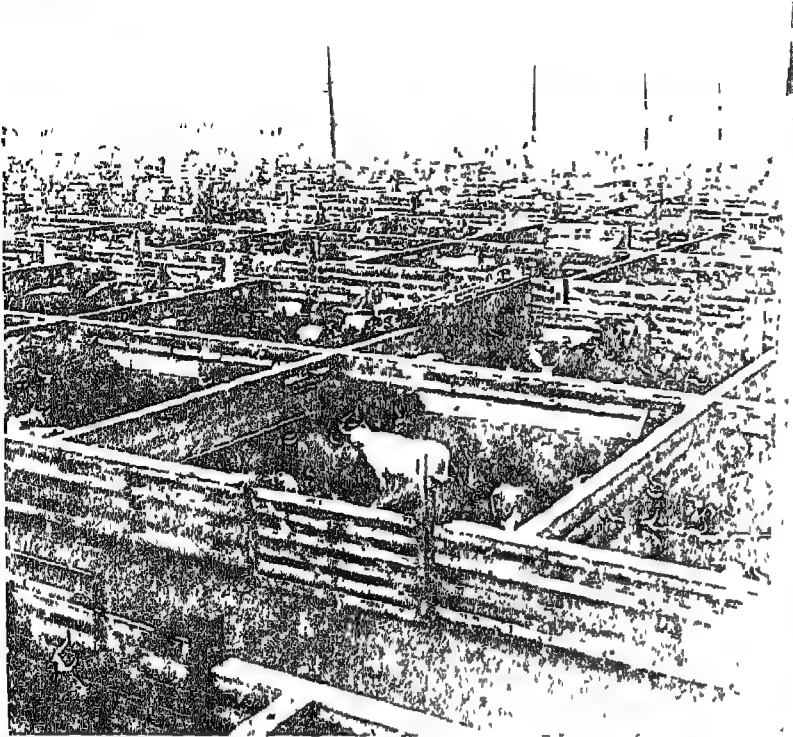
Courtesy, Scribner Art File

This was the beginning of a series of troubles for the meat-packers which climaxed in 1906 with the publication of *The Jungle*, with a Federal investigation of conditions, and a much stricter government check on what was packed and how it was packed

A view of the stock yards is shown at the *left*. *Below*, police hold a crowd of strikers in check at Ashland and 43rd streets, Chicago.

Harper's Weekly, Aug 27, 1904 *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City

Science and Food

The American public was relying more and more for food and medicines on the impersonal, mass-producing, centralized plants which had shouldered aside local food-processers and drug dispensers. Around 1904, it became clear that false claims were being made for many of these products, and that adulteration was a common practice.

Some producers of packaged foods had already set up their own bacteriological laboratories, as shown *right*, and maintained high standards
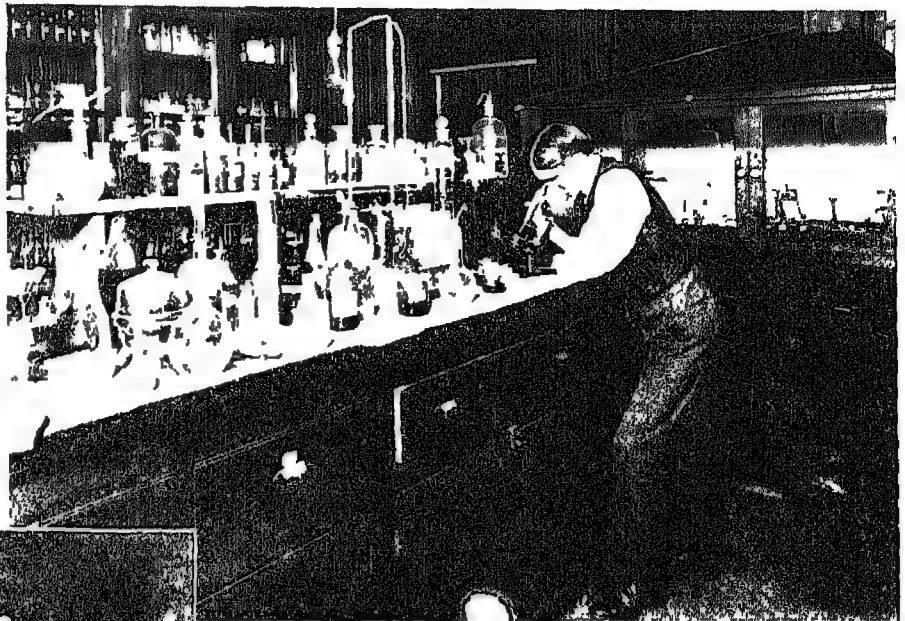
Courtesy, H. J. Heinz Company, Pittsburgh, Pa

Courtesy, Scribner Art File

Dr. Harvey W. Wiley (*left*), chief chemist of the Department of Agriculture, conducted campaigns of public education and made dramatic exposures of offending companies, all of which crystalized popular sentiment in favor of a Federal Pure Food and Drug Act.

At Tuskegee, Ala., Dr. George W. Carver was beginning experiments which led to the discovery of new uses for the sweet potato, soy bean and peanut.

Courtesy, Tuskegee Institute, Alabama

New York Subway

The first unit of the Subway system opened in 1904 and was operated by the Interborough Rapid Transit Company.

Illustrated World, Technical World, Vol II, 1904 05
Courtesy, Popular Mechanics, Chicago, Ill

The picture at the *left* gives an idea of the difficulties in the way of construction. For a good many years New York's streets were torn up like this periodically, as extensions of the Subway were made.

At the *right* is seen the official party ready for the first Subway ride. The electric power had not been turned on and the inspection car was pushed by one of the old "Elevated" locomotives.
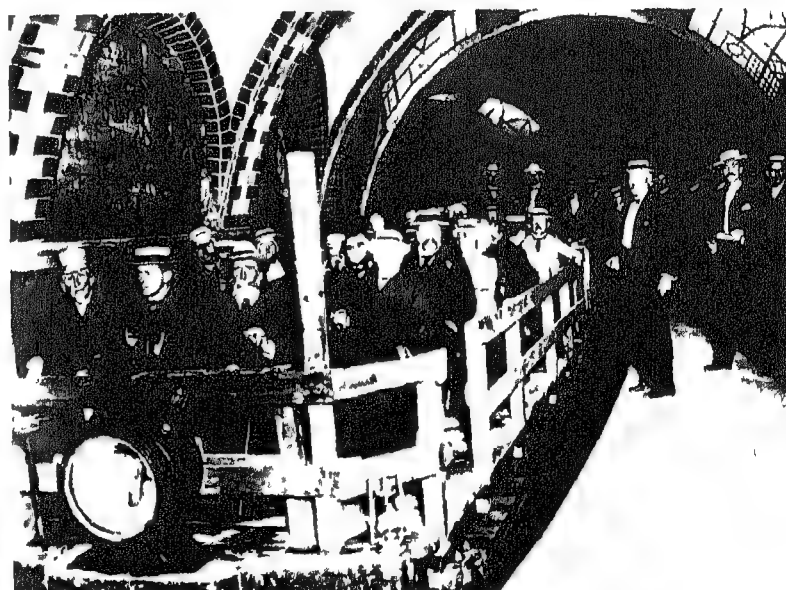
Courtesy, Board of Transporation of The City of New York
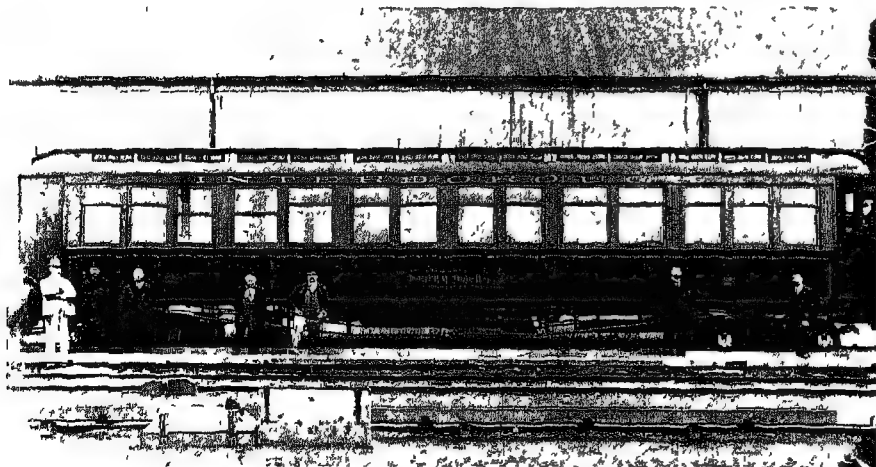
Courtesy, Board of Transporation of The City of New York

One of the first real Subway cars, delivered and ready for the opening of the system, is shown at the *left*. It bore the name of the contractor who had built the first section of the line

"Meet Me in St. Louis, Louis . . ."

From late April to December, 1904, the city of St Louis, Mo., celebrated the centennial of the Louisiana Purchase with a great Exposition It was attended by almost twenty million visitors.
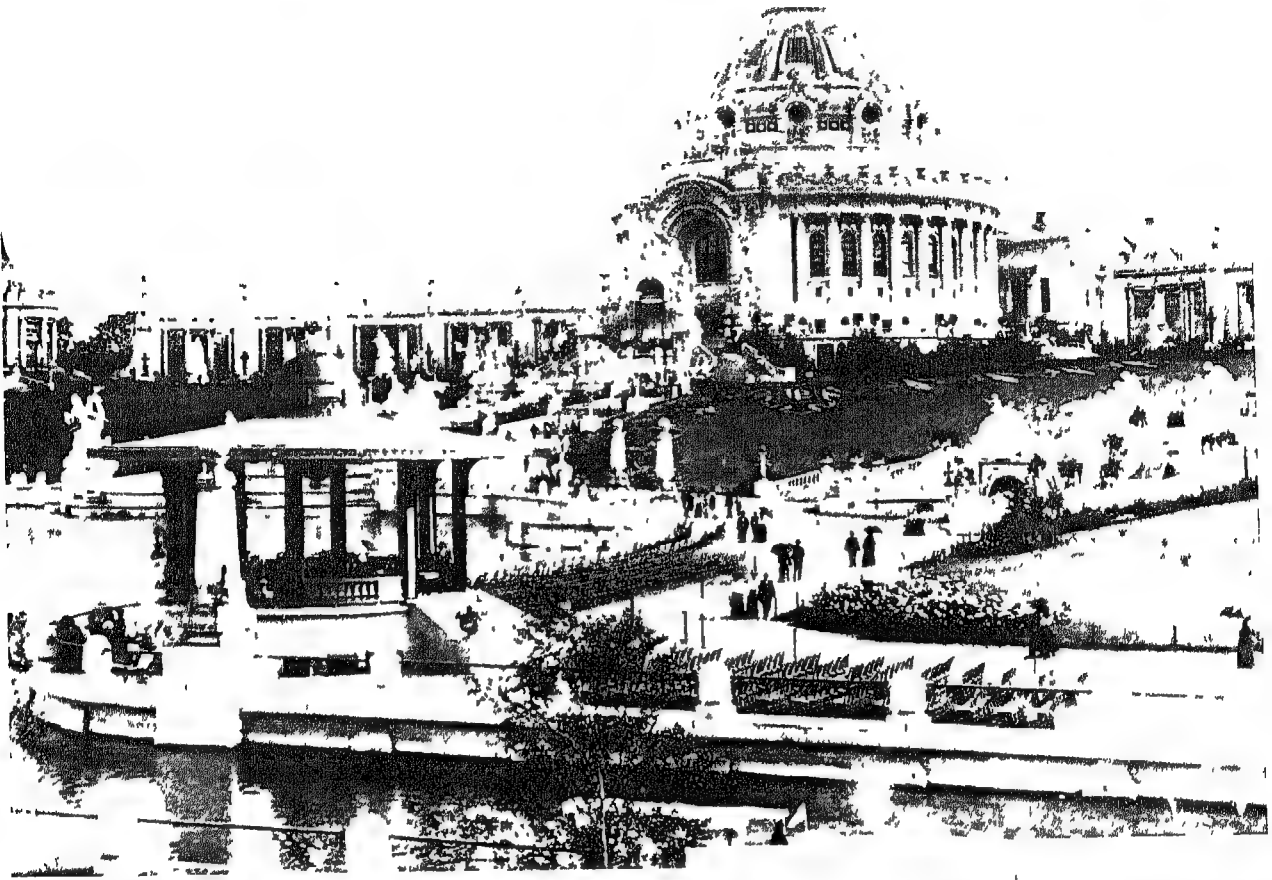
Courtesy, Missouri Historical Society, St Louis

The Festival Hall and the Cascades are shown *above*

But "The Pike," a mile of concessions akin to the "Midway" at the Chicago Exposition, was one of the more popular features. It is seen at the *right*

When the lights went out on the colossal show and the cash deficit was reckoned up, newspaper editors said "it would be in all probability the last big World's Fair."

Harper's Weekly, May 21, 1904
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Campaign of 1904

Mark Hanna's death in February, 1904, left the anti-Roosevelt Republicans without a voice or a rallying-point. They acquiesced sullenly in his unanimous nomination by the Convention at Chicago on June 23.

Harper's Weekly, July 2, 1904 *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City
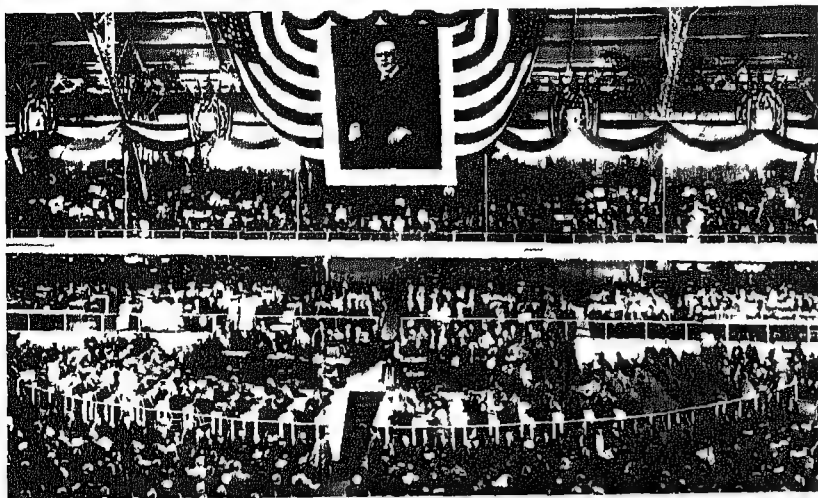
The Republican Convention is shown in session at the *left*

Formal notification was given the Democratic nominee, Judge Alton B. Parker (extreme right in the picture to the *right*), in an August meeting at Esopus, N. Y.
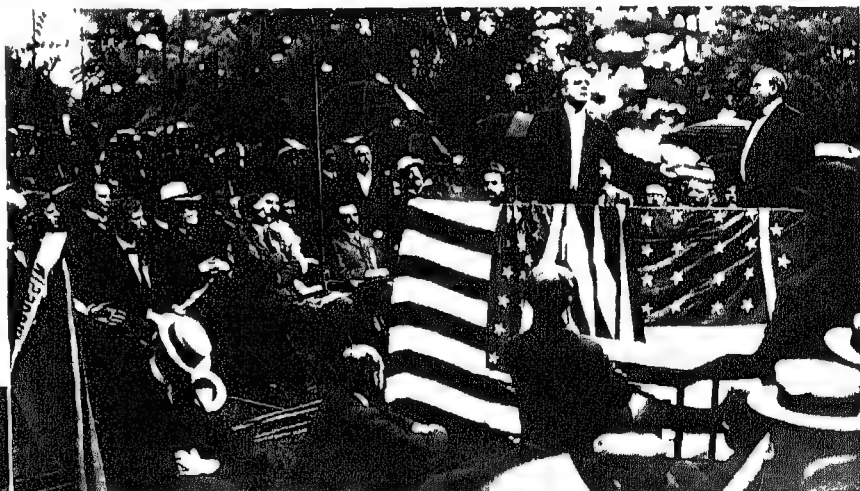
Harper's Weekly, Aug 20, 1904 *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City

Judge Parker had been opposed as a reactionary by Bryan and a strong minority of the Democrats. Although the financial interests preferred Parker personally to the Republican nominee, they feared the Democratic policies he would be forced to support. The bogey of Bryanism lurked behind Parker. President Roosevelt campaigned strenuously and effectively. In the picture at the *left*, fireworks are being released in New York's Madison Square, as a Republican mass-meeting opened on October 19.

Harper's Weekly, Nov. 5, 1904
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

7
STRENUOUS LIVING

Theodore Roosevelt was elected President by a landslide vote—a popular plurality of over two and a half million! Among other trophies, he could boast of wresting Missouri out of the Solid South and into the Republican column. "I am no longer a political accident," he told Mrs. Roosevelt.
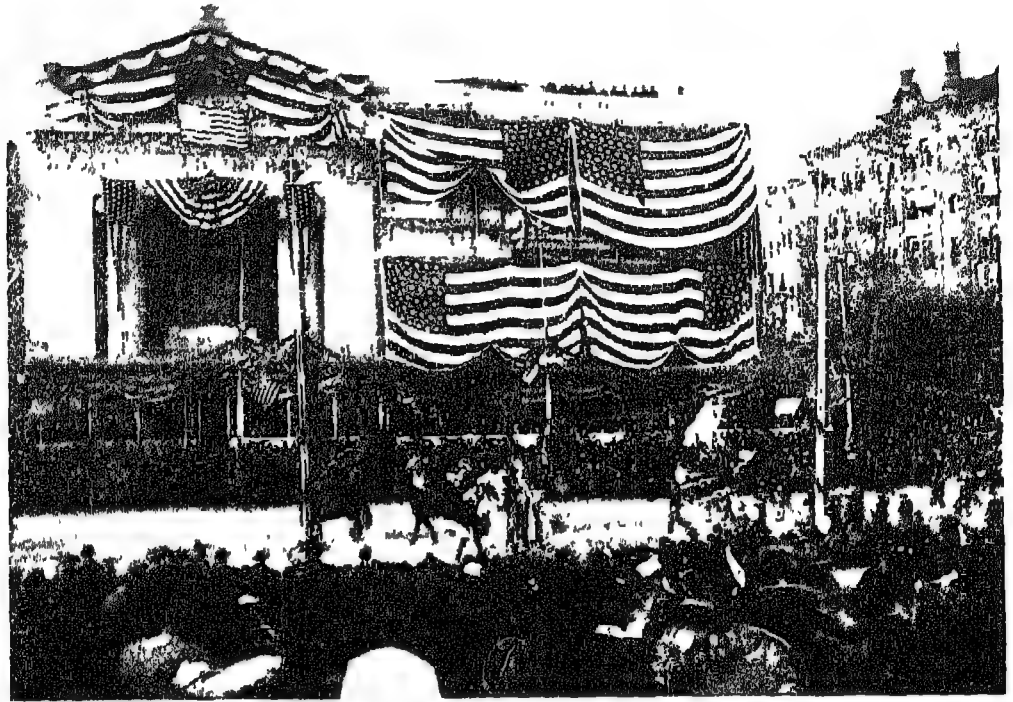
Courtesy, Mr Stephen L Newnham, Philadelphia, Pa

As might have been expected, this inaugural parade was a little different. In the view *above* a band of Indians (including Geronimo) is shown passing the Riggs Bank

Harper's Weekly, Mar 4, 1905 *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City

At the *left*, an artist's sketch of the President delivering (strenuously) his inaugural address.

Steel

In March, 1901, ten great corporations had combined under the sponsorship of J. P Morgan to form the United States Steel Corporation. On Jan 28, 1905, Congress opened the "trust-busting" season with an investigation of practices in the steel industry. The President's war against monopolies had been handsomely endorsed at the polls, but many Americans found a romantic fascination in the very ruthlessness and strength of steel and its manufacture.
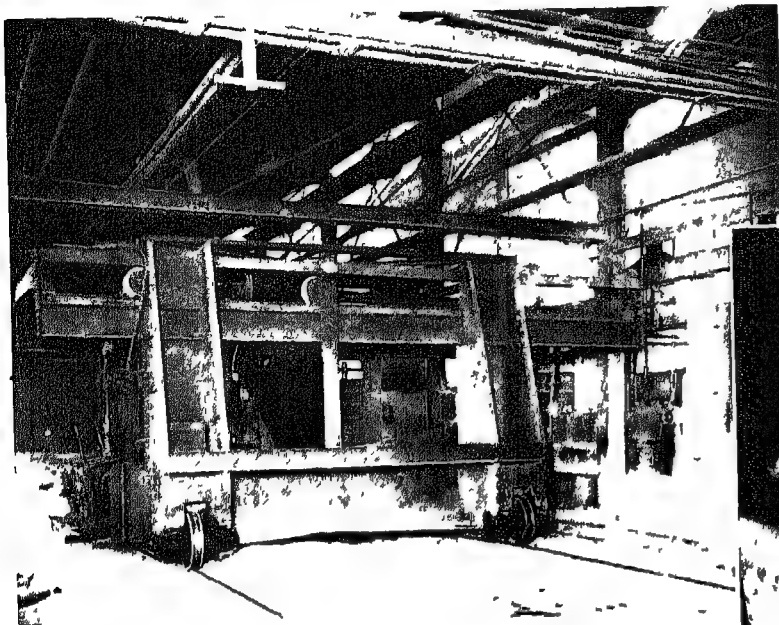
Above is shown an old-type charging machine used on an open-hearth furnace at Homestead

At the *right* yawns the open mouth of a fifteen-ton Bessemer Converter
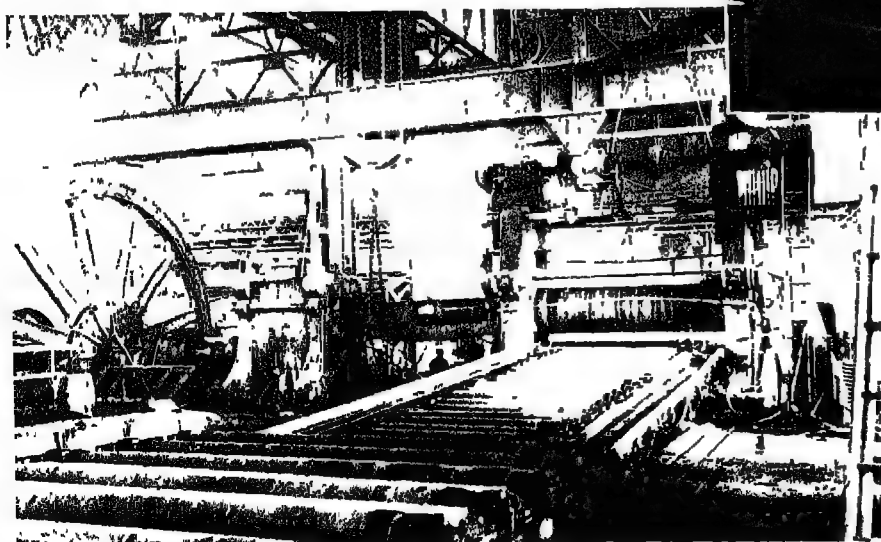
The one hundred and forty inch steam driven plate-mill shown at the *left* was installed in 1903, at the Homestead works

All illustrations on this page are by the courtesy of the United States Steel Corporation, New York City

Countryside

Far from the roaring, smoking mills, rural America was undisturbed by the furore in Washington.

The Morgan County, Mo., farmer seen at the *right* went the placid way of his fathers

Courtesy Charles van Ravenswaay Collection, Missouri Historical Society, St Louis

Courtesy, North Carolina State Department of Archives and History, Raleigh

Wild ponies were corralled on the beach near Beaufort, N. C.

The picture from Camden County, Mo., at the *right* shows how rafts of ties were floated downstream to market.

Courtesy, Charles van Ravenswaay Collection, Missouri Historical Society, St Louis

Country Folk

From the Jacob A Riis Collection Courtesy, Museum of the City of New York

Life was comfortable for the corner-store lounger shown *above*, so long as Maw and the kids kept working.

Below, the mothers and babies of the Cradle Roll Department of the First Methodist-Episcopal Church at Two Harbors, Minn., proudly pose for a group picture in 1905.

Courtesy, Mrs Ruth Locker MacDonald, Two Harbors, Minn

On the Farm

Although farm machinery had helped speed the shift from subsistence farming to single-crop commercial farming, many an individualistic small farmer found that machines could help him without swamping him The multiple-disc plough shown *below* did in one operation the work of several, old-style ploughs, and permitted the derby-hatted farmer additional leisure or expansion of activities, as he might choose
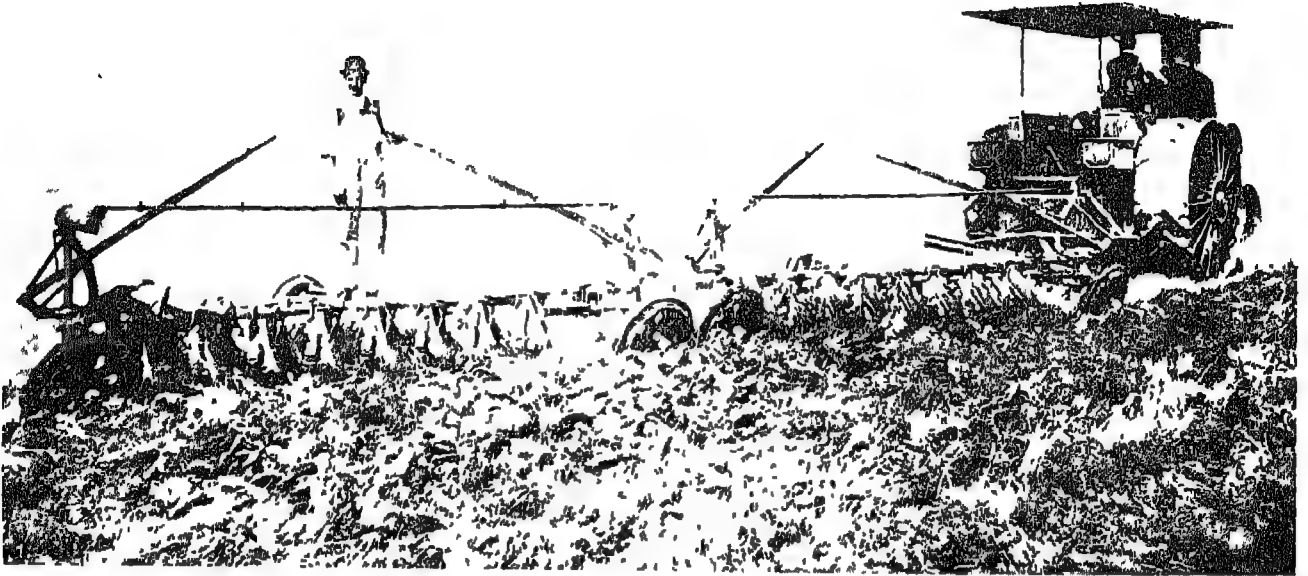
In the picture *below*, a small crew handles the harvest with the aid of a traction-engine, a blower thrasher and an automatic twine-cutter Notice the belt-transmission in place of the tumbling-rod, the barrels of water for the boiler and the pile of coal in the foreground.

Both illustrations on this page are by the *courtesy* of the J I Case Company, Racine, Wis
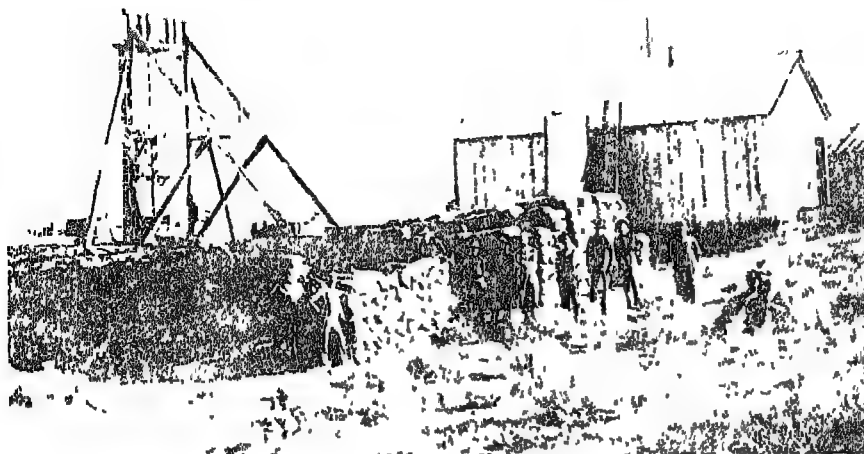
Nevada

Through 1905 the mines at Goldfield, and elsewhere in Nevada, continued to flourish. The picture at the *left* shows a pile of sacked ore at the Red Top mine.

The Surveyor General was an important person in a mining state At the *right* is shown his office in the capitol of Nevada at Carson City. Note the teakettle simmering on the base-burner stove.
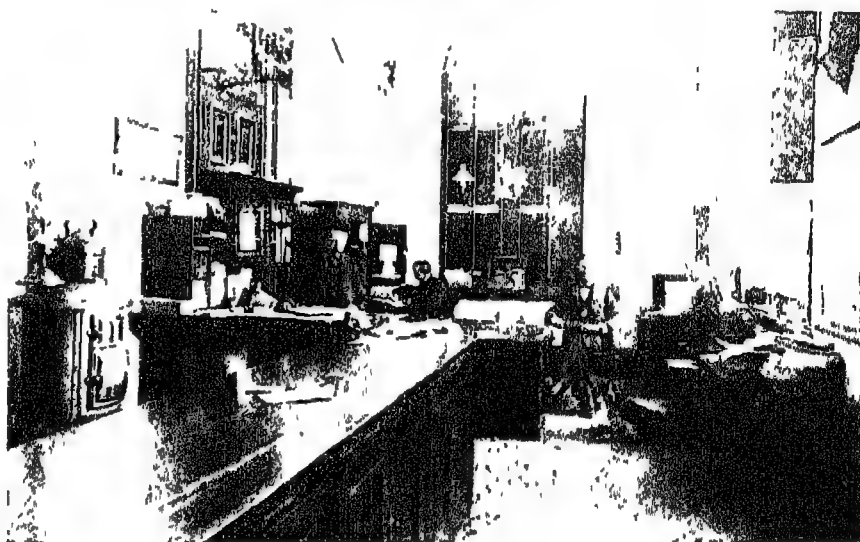
Governor Sparks and a party of friends are seen at the *left* as they were leaving Goldfield for the town of Bullfrog, Nev. The date is around 1905.

All illustrations on this page are by the *courtesy* of the Nevada State Historical Society, Reno

City Children

Communities and individuals began to feel a sense of responsibility toward underprivileged children of great cities—like the East Side New Yorkers shown *right*

Town & Country, May 11, 1907. Courtesy, Town & Country, New York City

Courtesy, H. J. Heinz Company, Pittsburgh, Pa.

In Pittsburgh, Pa., a local industry opened a settlement house, as shown *above*, where the energy of youth was directed into learning useful skills and away from breaking windows

The young Kansas merchant at the *right* worked out his own problems.

Courtesy, "The Jayhawker," University of Kansas, Lawrence

Chain Stores

Two of the practices which established the chain food stores in popular favor are obvious in the 1905 pictures shown *below*
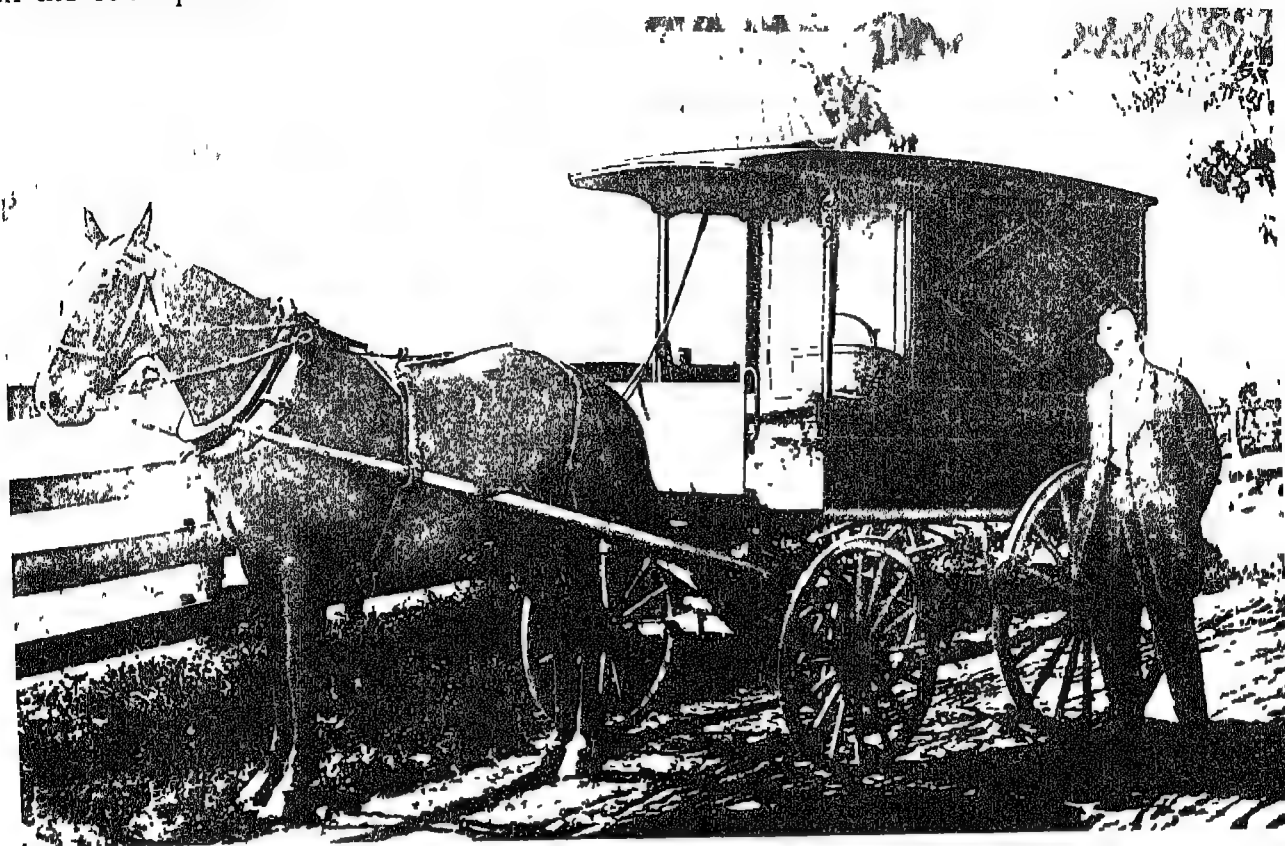
The use of delivery wagons brought to outlying customers low prices possible through mass purchasing.

The never-failing "something-for-nothing" chord was touched in stores like the Davenport, Iowa, one shown *left*, by distribution of "trading stamps" with each purchase. These were saved and traded in for household utensils, china, etc

Both illustrations on this page are by the *courtesy* of The Great Atlantic and Pacific Tea Company, New York City

Trends in Advertising

Across Main Street in Richmond, Va., a banner proclaimed the virtues of "My Sweetheart" cigarettes.
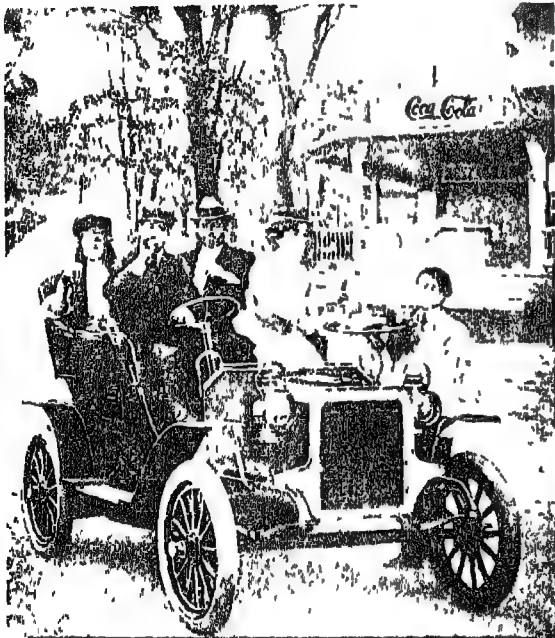
Courtesy, The Valentine Museum, Richmond, Va

Coca-Cola advertising linked the product with the rising popularity of the automobile. "People who drive cars drink Coca-Cola" was the corollary to the scene *left*.

Quality of the 57 Varieties was proved to the teeth, in the demonstration room shown *below*

Courtesy, The Coca Cola Company, Atlanta Ga

Courtesy, H J Heinz Company, Pittsburgh, Pa

Advertising (*Continued*)

The contrast between styles in the 1907 Goodyear and the 1907 Packard advertisements shown *below* is quite marked. One packs as much copy into the available space as possible. The other simply shows a sketch of next year's model and permits the reader to fill in the blanks with compliments.

Courtesy, N W Ayer & Son, Inc, Philadelphia, Pa.

Above is a 1906 echo from the bucolic past

Harper's Weekly Dec 7, 1907
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Furniture

"Grand Rapids" was more than a city in Michigan, it was a symbol Mass-produced furniture sets for bedroom, dining-room and parlor were the pride of many a humble home, let the aesthetes and the new school of "interior decorators" rage as they might. *Below* are shown a few pieces from Grand Rapids catalogues issued between 1905 and 1907.

All illustrations on this page are from *The Grand Rapids Furniture Record*, 1907 Courtesy, Vincent Edwards Magazines, New York City

Public Servants

The Fire Department of Dearborn, Mich., is shown at the *left*

Courtesy, Dearborn Historical Commission, Mich

Detectives of the Baltimore, Md., police department are pictured at work on a difficult case.

Courtesy, J E Henry Collection, Enoch Pratt Free Library, Baltimore, Md

At the *left*, the Regents of Kansas State College are seen discussing the state of education in 1905.

Courtesy, "The Bell-Clapper," Kansas State College, Manhattan

Telephone Goes Underground

Through 1906, progress was made in transferring city telephone cables from the unsightly poles to underground conduits, as seen in the picture *below*
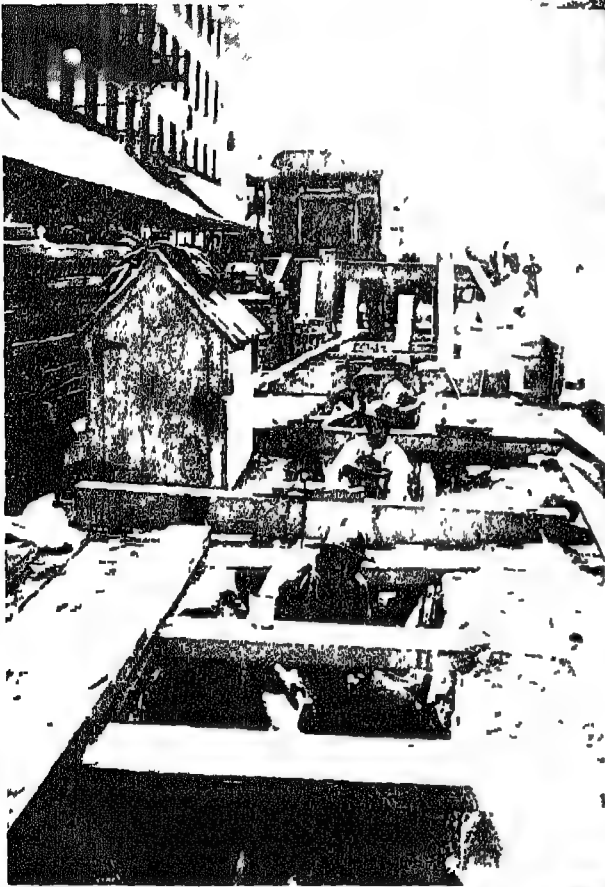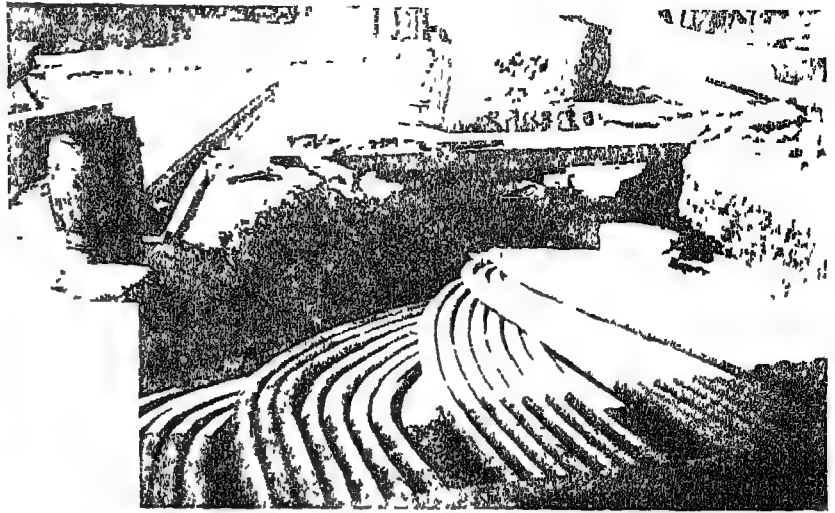
Before the day of the pneumatic drill, the task of tunnelling through rock was done by hand-drillers. The picture *left* was taken at Eighth Avenue and 36th Street, New York City.

Below, a class of new operators is shown taking instruction at the Telephone Company School, New York City.

All illustrations on this page are by the *courtesy* of the American Telephone and Telegraph Company, New York City

Cut Glass

Every Grand Rapids sideboard was adorned with cut glass bowls, vases, épergnes and pitchers —rarely put to use.
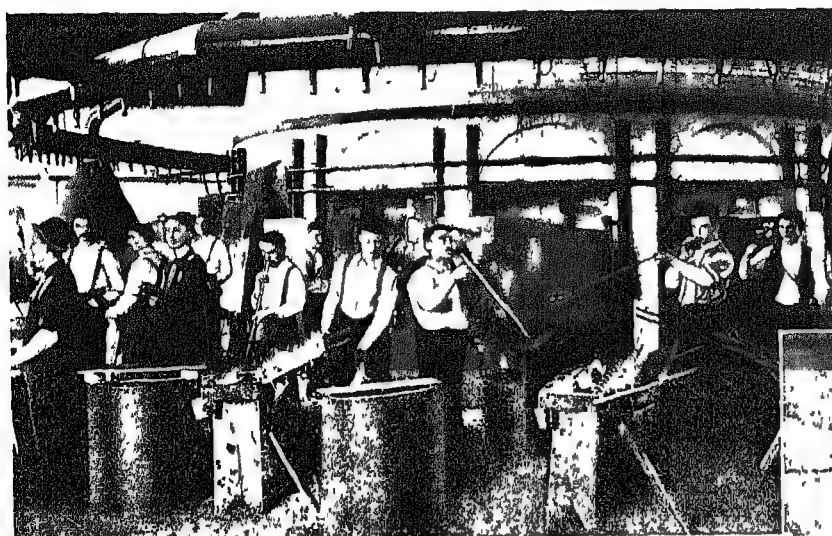
In the picture of a 1905 glass-blowing plant at the *left*, the men are giving initial form to the molten glass from the furnace.

Illustrated World, Technical World, Vol II 1904 05
Courtesy Popular Mechanics Chicago Ill
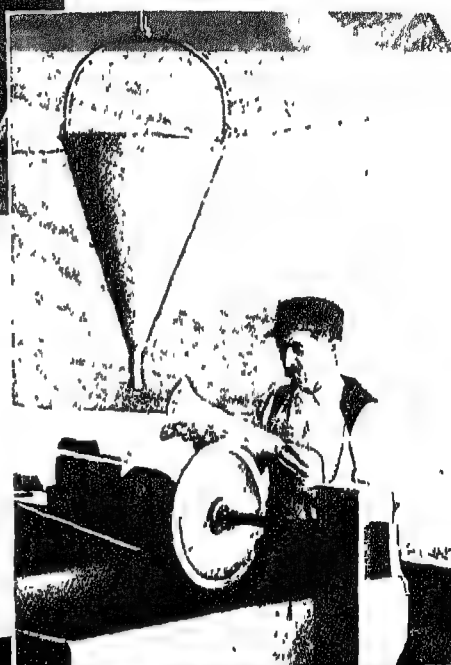
At the *right*, a workman cuts the design on a vase

Illustrated World Technical World Vol II 1904 05
Courtesy Popular Mechanics Chicago, Ill

Below are shown some of the cut glass patterns for 1905
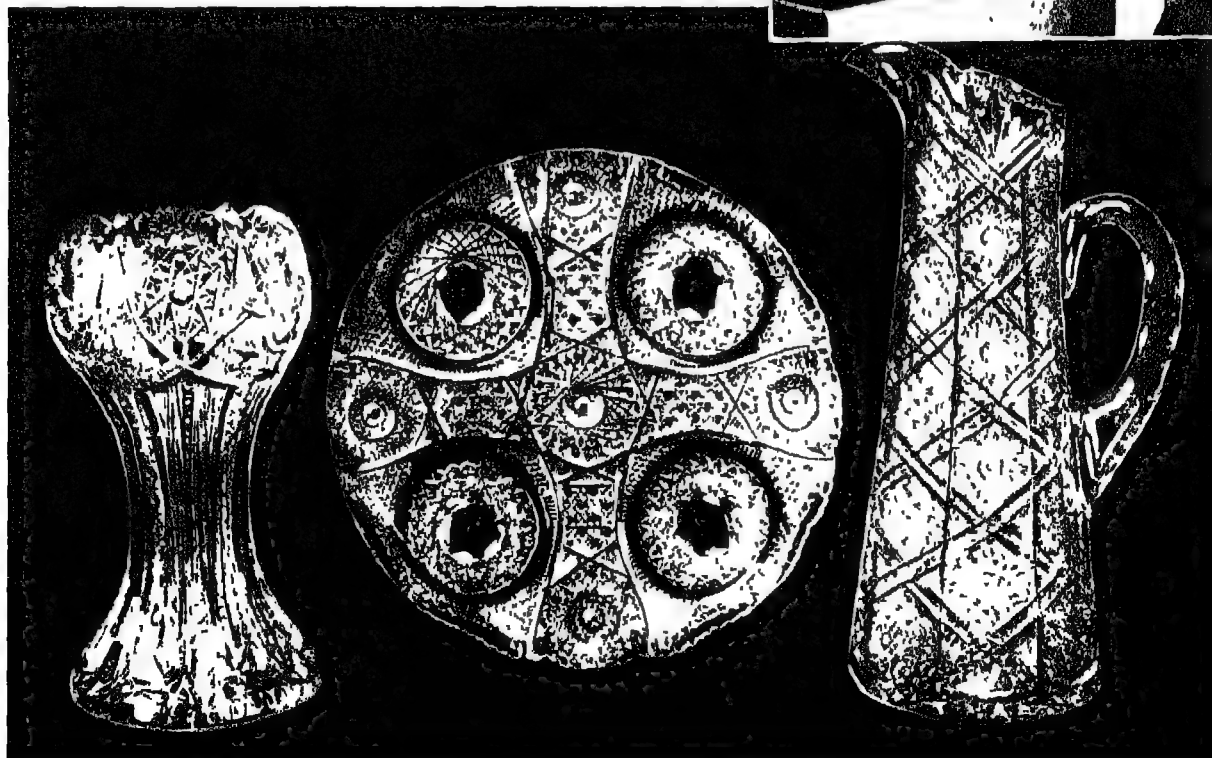
Harper's Bazar, May, 1905 Courtesy, Harper's Bazaar, New York City

Insurance

From Sept. 6, 1905, to the end of that year, Charles Evans Hughes made a national reputation by his pitiless exposure of the practices of great American insurance companies and their exploitation and waste of policy-holders' money entrusted to them.

The extravagance of a costume ball given at Sherry's on the night of Jan. 31, 1905, by the head of one of the companies first drew public attention to what was to prove a sensational scandal. *Above*, a group of the "younger set" are practicing a figure for the ball. *Below*, Madame Réjane (an ornament of the French stage imported for the occasion) steps out of a sedan-chair for the Versailles Pageant presented at the party.

Both illustrations on this page are from the Byron Collection, *courtesy*, Museum of the City of New York

Schools

Courtesy, Charles van Ravenswaay Collection, Missouri Historical Society, St Louis

Near Arnhold's Mill, Mo., the patriarchal master of the three "R's" shown at the *left* presided over all grades

Below, a kindergarten group is seen in Monroe Park, Richmond, Va.

Courtesy, The Valentine Museum, Richmond, Va

The Private School

At the *right*, crew candidates at St. Paul's School clutter up Long Pond, Concord, N H
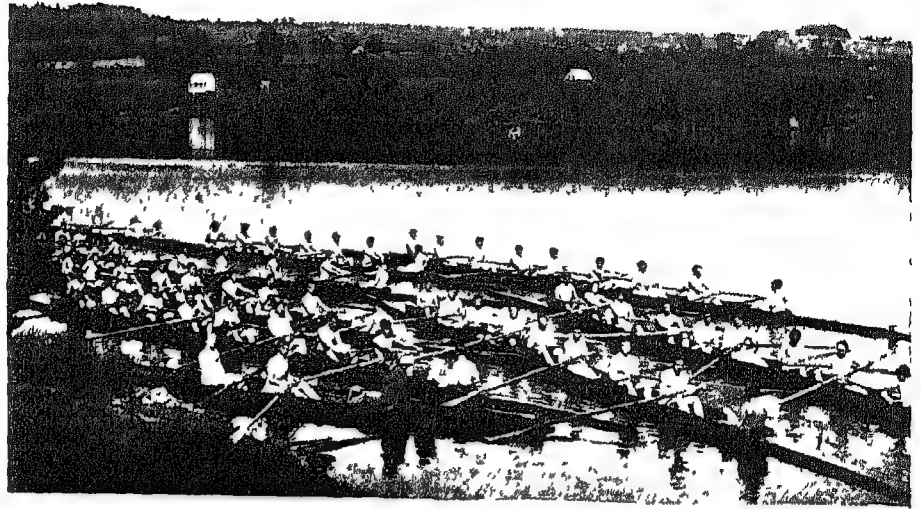
Town & Country, Aug 20, 1904. Courtesy, Town & Country, New York City

Town & Country, Aug 18, 1906
Courtesy, Town & Country, New York City

Women's Colleges

Each returning spring brought its graduation pageantry. At the *left*, the Wellesley seniors of 1906 go to bid farewell to their tree. *Below*, hard-working Vassar sophomores of the same year bear the Daisy Chain.

Town & Country, Aug 18, 1906 Courtesy, Town & Country, New York City

College and College Men
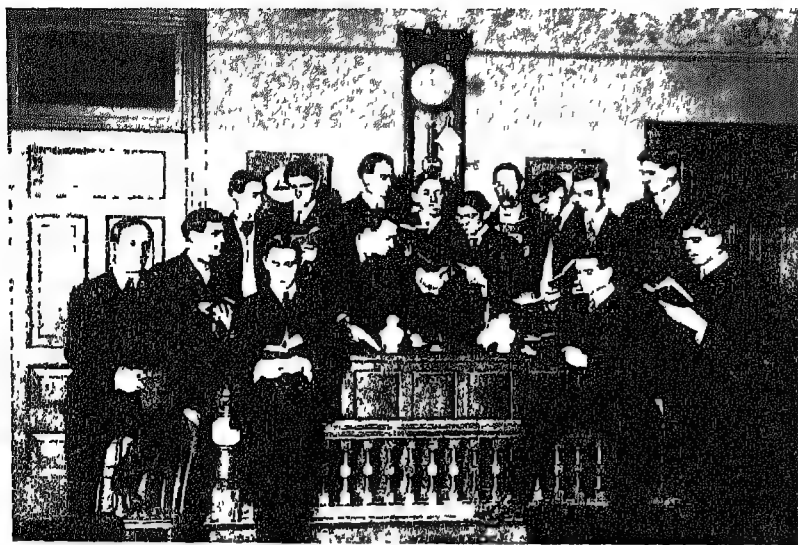
Courtesy, "The Bell-Clapper," Kansas State College, Manhattan

The books so avidly studied by men of the Senior Debating Society at Kansas State College (shown at the *left*) were copies of *Roberts' Rules of Order*.

The 1907 advertisement from a college publication seen at the *right* set a fast sartorial pace.

We Want You to See Our

STEDWOR CLOTHES

Made by a concern in the East that makes only *best* men's clothing. A concern that keeps abreast of the tailors instead of getting style changes six months late

And the fabrics?

Beauties! You'd have to pay half more to get a tailor to put such distinctive materials into a suit Let us show them to you the next time your in town.

$15, $16.50, $18, and $20

JONES DRY GOODS CO

12th, Main and Walnut Streets — KANSAS CITY, MISSOURI

Courtesy, "The Jayhawker," University of Kansas, Lawrence

Note in this 1906 picture of a student's room at Princeton, the bric-a-brac, the "Morris" chair and the Gibson Girl prints on the wall.

Courtesy, Princeton University Library and R C. Rose and Son, Princeton, N J

West Point

The new, dynamic foreign policy of the United States looked to its service schools for intelligent support The Army did not lag behind the Navy in modernizing and improving its educational program
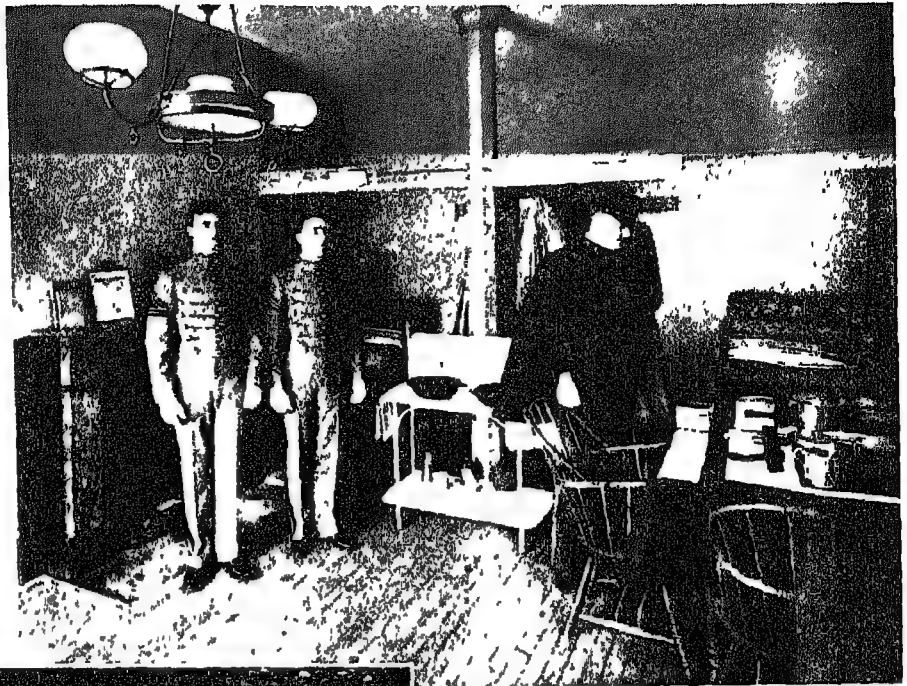
Town & Country, June 16, [illegible]
Courtesy, Town & Country, New York City

But regardless of changes in theory and curriculum, inspection (*above*) was still a cadet ordeal Occasionally an Academy social function, like the garden party shown *left*, broke in on the grind

Town & Country, May 30, 1908
Courtesy, Town & Country, New York City

To the Pole

At the *right*, Commander Robert E Peary is shown with his sailing master aboard the auxiliary schooner *Roosevelt*, as he talks over his 1905 try for the North Pole
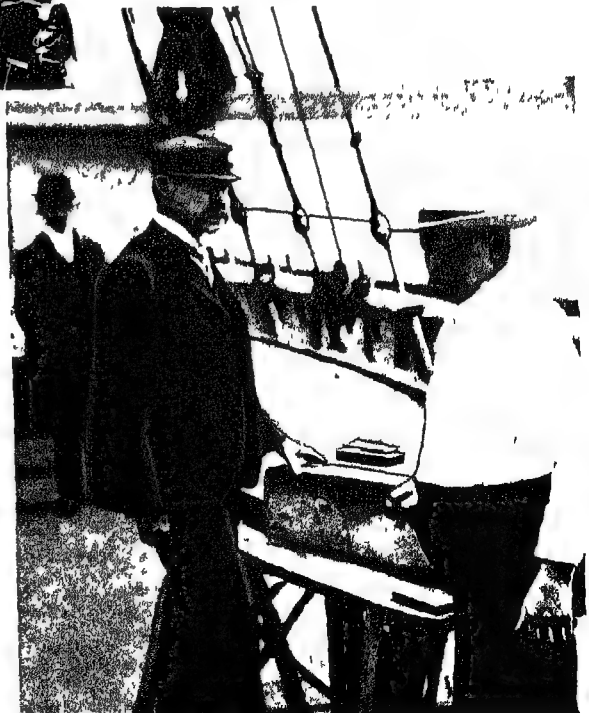
Harper's Weekly, July 22, 1905
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Art

Some American artists of the early Nineteen Hundreds employed the technique of the French Impressionists in their studies of the American scene.

The painting at the *left*, by E. C. Tarbell, depicted a Boston living-room of about 1907, complete with Winthrop desk and Japanese prints.

Courtesy, The Corcoran Gallery of Art, Washington, D. C.

John Singer Sargent's great portrait-group of the "Four Doctors" was unveiled at Johns Hopkins University in January, 1907. The doctors are William H. Welch, William Osler, William S. Halsted and Howard A. Kelly
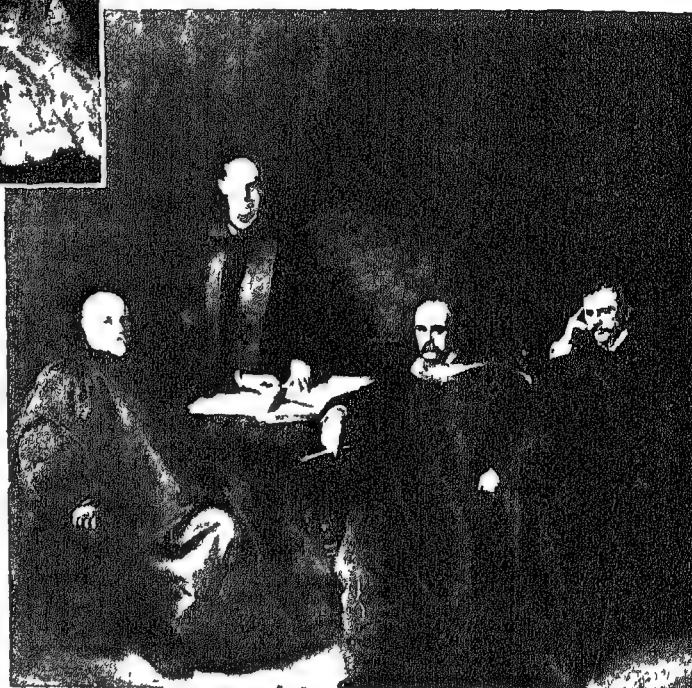
Courtesy, The Johns Hopkins University, Baltimore, Md

John Sloan caught in his "Wake of the Ferry" (*left*) the mood of a dull day in New York harbor.

Courtesy, Phillips Memorial Gallery, Washington, D. C

Popular Art

Popular illustrators rang the changes on a subject of perennial fascination—the pretty American girl

The 1905 girl is shown at the *right* as she was seen by Harrison Fisher. *Below*, she is seen as J C Leyendecker sketched her.

Scribner's Magazine, June, 1905

Scribner's Magazine, July, 1905

In 1907, James Montgomery Flagg drew the pretty girl on tour, shown *right*

The gentlemen in all three pictures were properly incidental.

Scribner's Magazine, August, 1907

Broadway: 1905

The New York Hippodrome was offering "A Yankee Circus on Mars." At the *left* is shown the Dance of the Hours from that masterpiece.
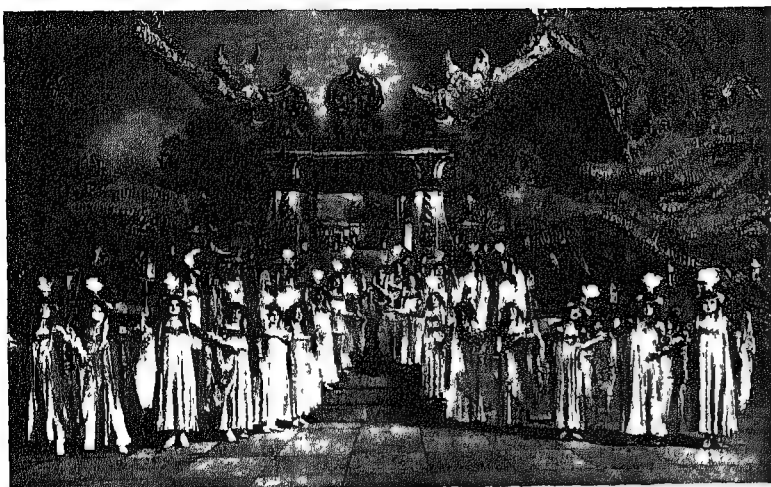
Harper's Weekly May 27 1905
Courtesy Harper's Brothers New York City

The ever-beautiful Lillian Russell appeared in a musical version of the "School for Scandal" as Lady Teazle (*right*)

Town & Country Mar 30, 1907
Courtesy, Town & Country, New York City

Anna Held opened at the Knickerbocker in "Mam'selle Napoleon" At the *left* is a scene from Act I

Robinson Locke Collection
Courtesy, The New York Public Library, New York City

Broadway: 1906-1907

Town & Country, Apr 6, 1907 Courtesy, Town & Country, New York City

"The Parisian Model" at the Broadway Theater took occasion of the latest fad to present a Teddy Bear Chorus (*above*). A once-famous cartoon on President Roosevelt's big-game hunting started the vogue for Teddy Bears.

The playbill to the *right* explains itself

Town & Country, Mar 24, 1906
Courtesy, Town & Country, New York City

Maude Adams, *above*, was memorable as "Peter Pan"

JARDIN DE PARIS

(THE GARDEN OF PARIS)
ATOP THE NEW YORK AND CRITERION THEATRES,
Broadway from 44th Street to 45th Street

MANAGEMENT OF F ZIEGFELD, JR.

WEEK BEGINNING MONDAY EVENING, JULY 22, 1907.
Every Evening, Commencing at 8.30

1 OVERTURE . . . . Jardin de Paris Orchestra

2 SELECTION . . . . "Follies of 1907"

The ZIEGFELD Musical Revue,

3 **FOLLIES OF 1907**
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13

Another One of Those Things, in Thirteen Acts
Conceived and Produced by F. ZIEGFELD JR
Words by Harry B Smith Music and Lyrics by Everybody.
Principals Directed by Mr. Herbert Gresham.
Chorus Directed by Mr. Julian Mitchell
Frederick Solomon, Musical Director

[illegible]
All songs restricted

Courtesy, Museum of the City of New York

Ethel Barrymore appeared in "The Silver Box," by John Galsworthy. She is seen *below* in the trial scene from that play.
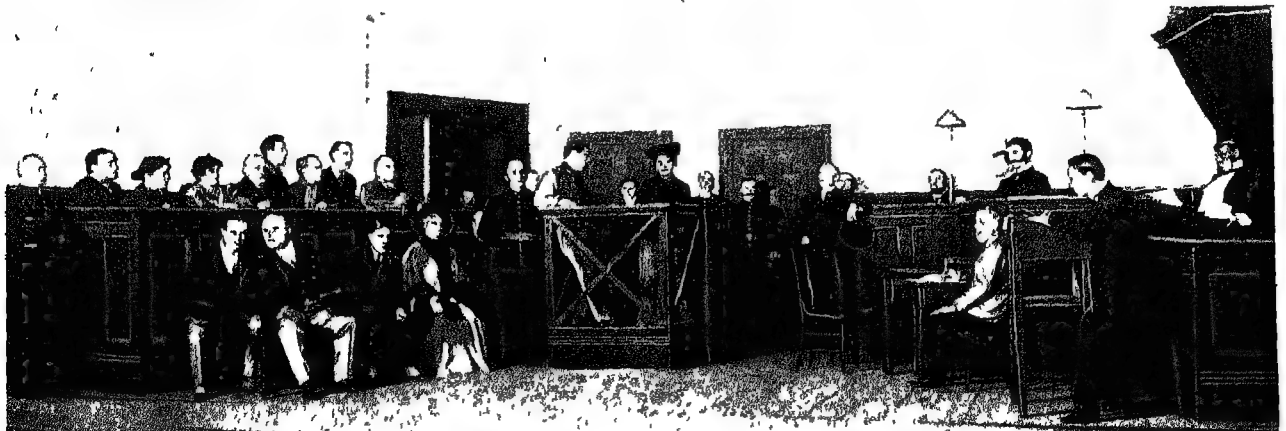
Town & Country, Apr 6, 1907 Courtesy, Town & Country, New York City

Minor Theater
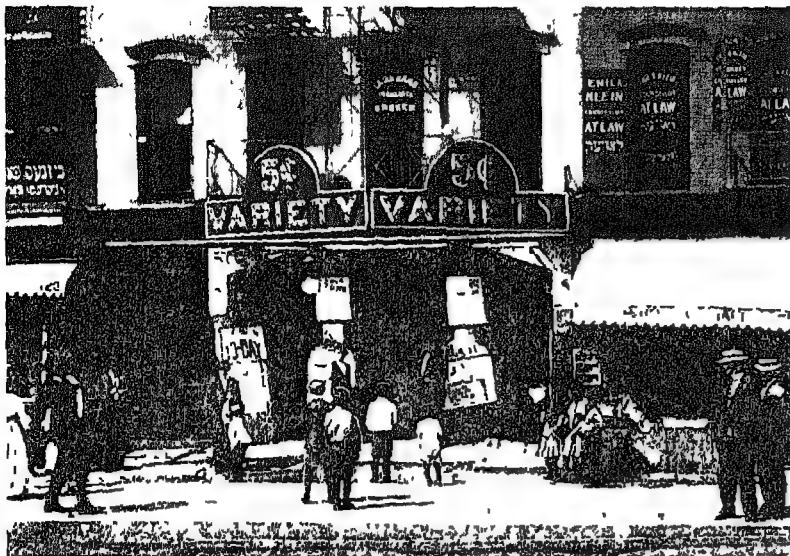
Courtesy, Scribner Art File

The "nickelodeon" days of the motion-picture are typified in the picture at the *left*, taken on New York's East Side around 1906.

"Joe Joker," the wonder horse who ran against time without driver, sulky or hobbles, was a star attraction at State Fairs.
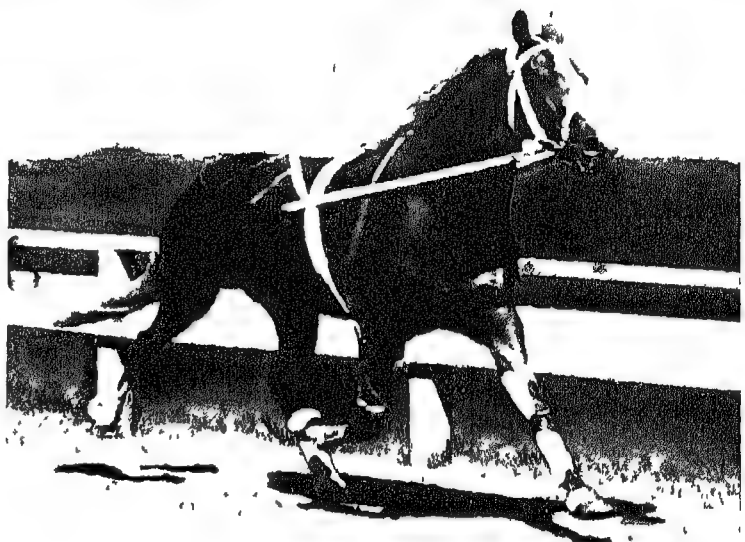
Courtesy, Mr Myron F Henkel, Springfield, Ill
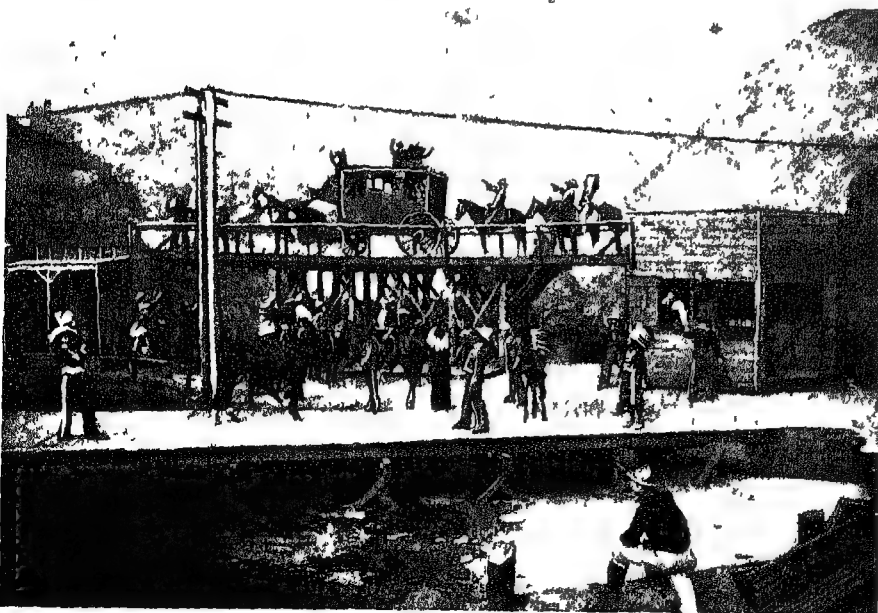
Town & Country, Aug 3, 1907 Courtesy, Town & Country, New York City

At Luna Park, Coney Island, the big show for 1907 was "The Days of Forty-Nine," shown *left* There was a creek with real water through which the stagecoach splashed, and ears rang with the roar of .44 Colts in expert (?) hands.

The Common Touch

Americans enjoyed non-exclusive group activities of all kinds, sponsored as a rule by churches or clubs.

Participants in a 1905 crab feast at Back River, Md , are seen at the *right*.
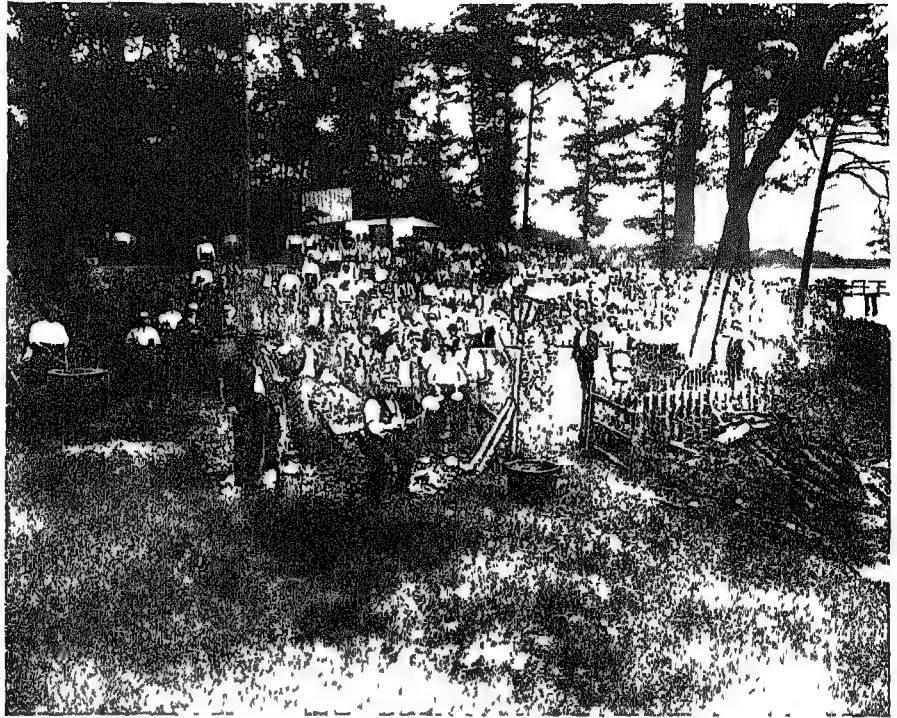
Courtesy, J F Henry Collection, Enoch Pratt Free Library, Baltimore, Md

The Tally-Ho excursion shown *below* set off for Milwaukee from Ravenswood, Ill., on Aug. 11, 1907.

Courtesy, Ravenswood-Lake View Historical Association, sponsored by The Chicago Public Library, Ill

How to Pass a Summer Day

Courtesy Mr Myron F Henkel, Springfield, Ill
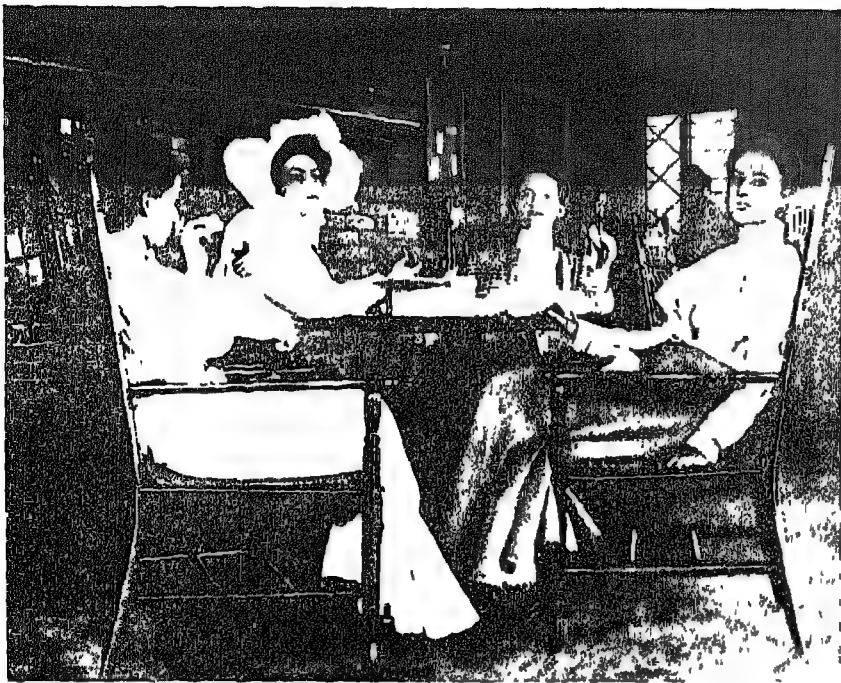
The "new woman" wound up a leisurely round of golf with lunch at the club-house as seen *left* in a 1905 picture from Springfield, Ill.

But under the watchful eye of the old first sergeant behind the gun, these ladies of the older school amused themselves with a walk through the grounds of the Soldiers' Home.

Courtesy, Mr Stephen L Newnham, Philadelphia, Pa.

Patriotic Occasions

The Fourth of July, 1906, was observed in San Mateo, Calif., with the parade shown at the *right*
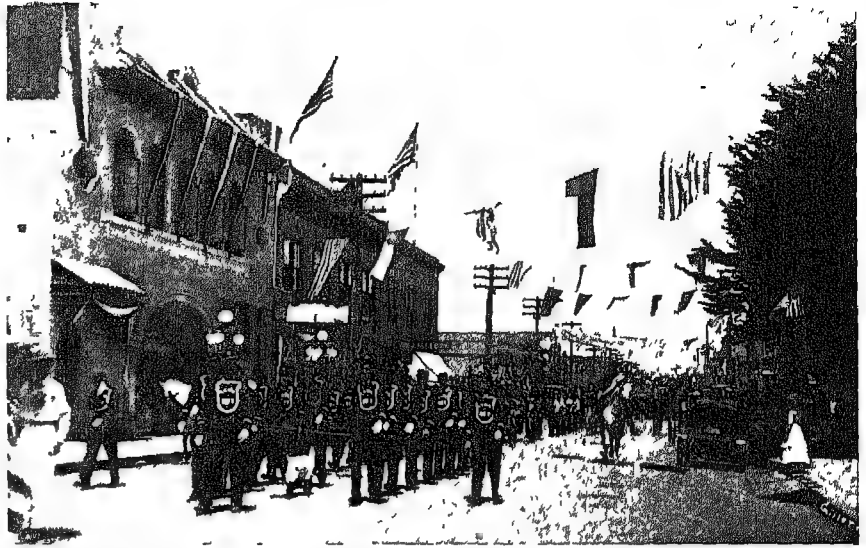
Courtesy, San Mateo County Historical Association, San Mateo, Calif
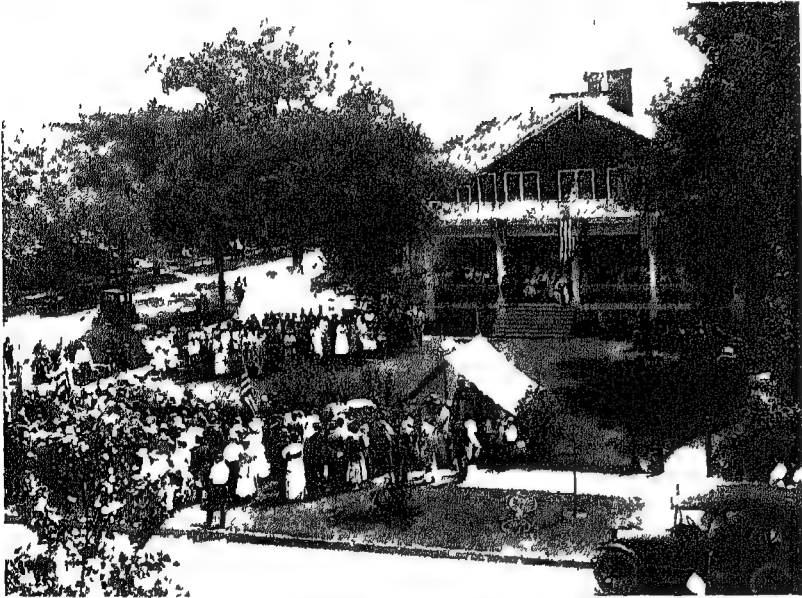
Courtesy, Ravenswood Lake View Historical Association, sponsored by The Chicago Public Library, Ill

In a Chicago suburb, celebration of the glorious Fourth was a community affair, opened with a formal flag-raising at the local club.

As shown at the *right*, a parade through the streets of Richmond, Va., preceded the unveiling of a monument to General J. E. B. Stuart.
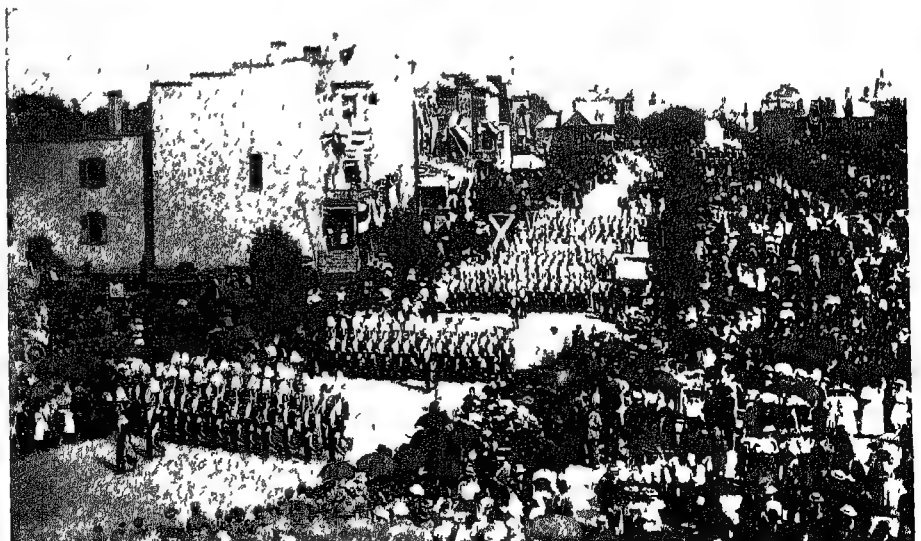
Courtesy, The Valentine Museum, Richmond, Va

Folk-Lore of Motoring
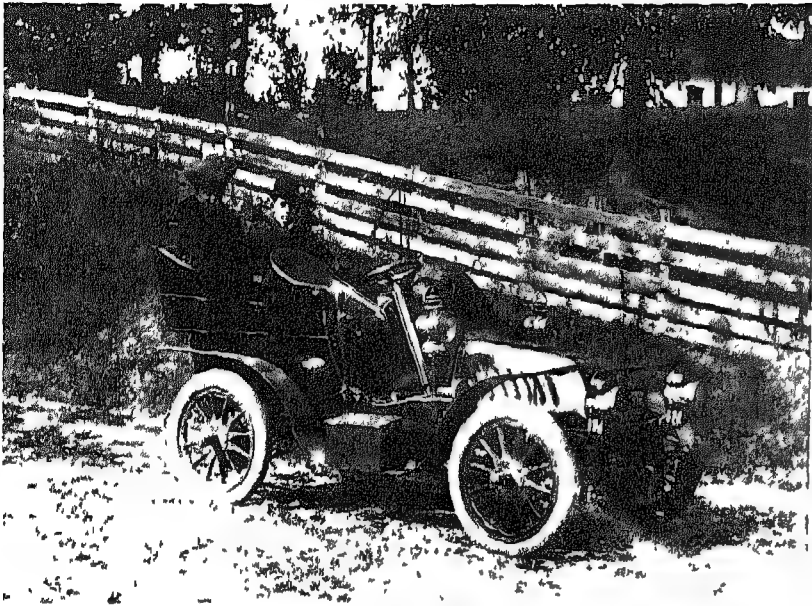
Courtesy, Mr Myron F Henkel, Springfield, Ill

Get out and get under is exemplified at the *left* in a 1905 picture taken on the road to Clear Lake, near Springfield, Ill. The driver is on the far side of the car, making "slight, mechanical adjustments"

Pull over to the curb! as it was ordered in Detroit, Mich, some time around 1906, is recalled in the picture at the *right*

Courtesy, Detroit Public Library, Mich

Harper's Weekly, Mar 24, 1906 Courtesy, Harper & Brothers, New York City
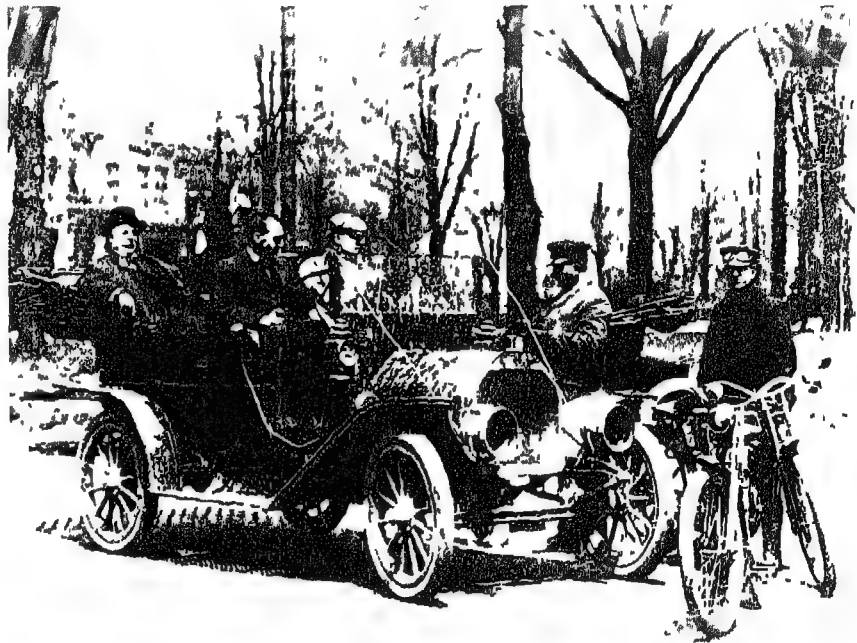
Let me teach you to drive It's easy.

At the *left*, the consequences of such lightly-uttered words are seen.

Pride of Possession

Ownership of a motor-car in 1906 carried with it a certain *éclat* In the picture *below*, the celebrated actress Rose Melville, "Sis Hopkins," enjoys the feel of her Pope-Hartford.
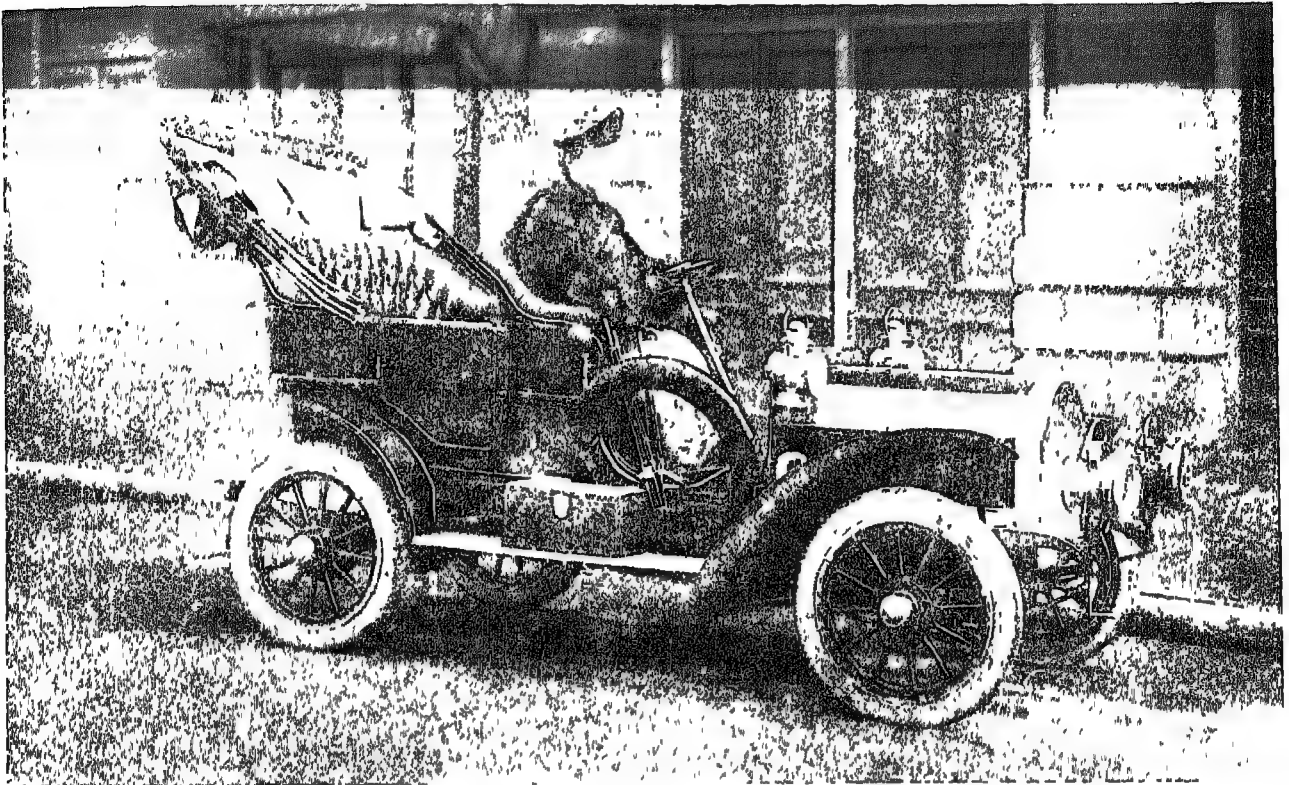
Photo by W H Bass Co., Indianapolis, Ind Courtesy, The Indiana Historical Society, Indianapolis

And Mr. Goldstein himself posed proudly at the wheel of his brand-new 1906 Mack truck.
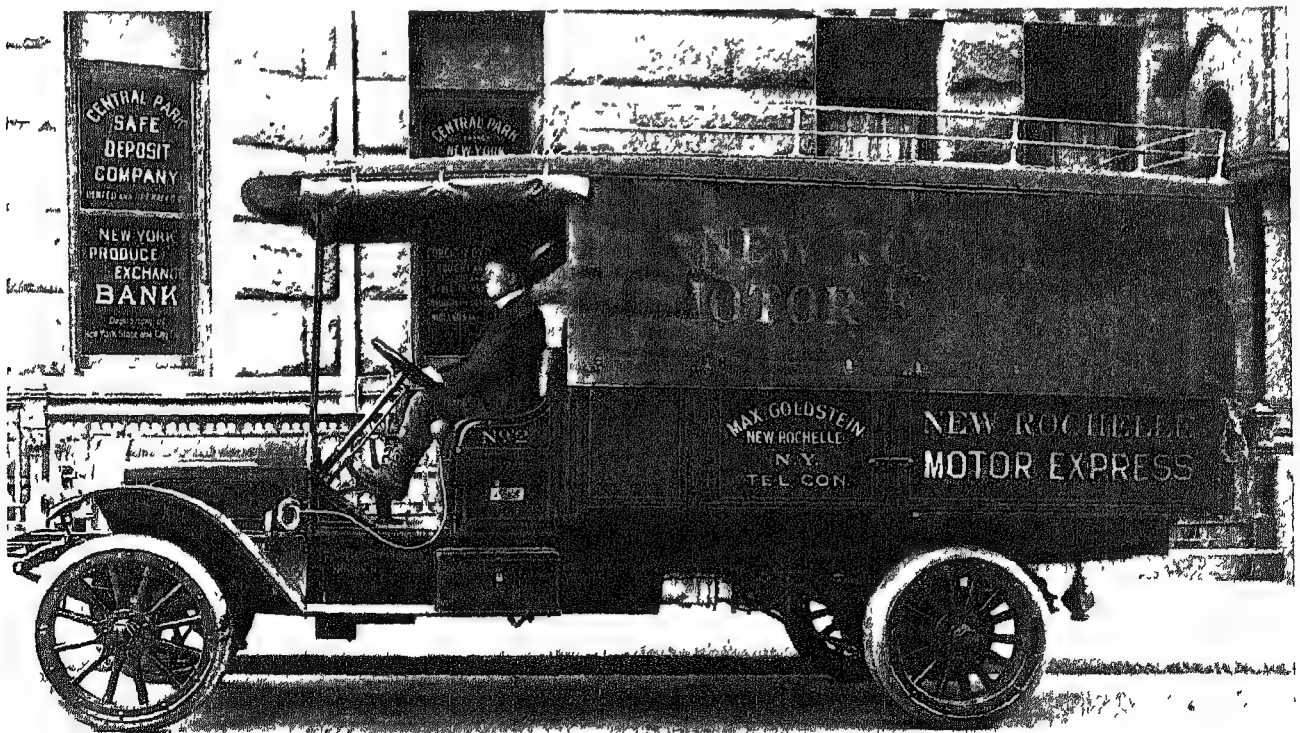
Courtesy, Mack-International Motor Truck Corporation, New York City

Transport by Motor

Courtesy, American Car and Foundry Company, New York City
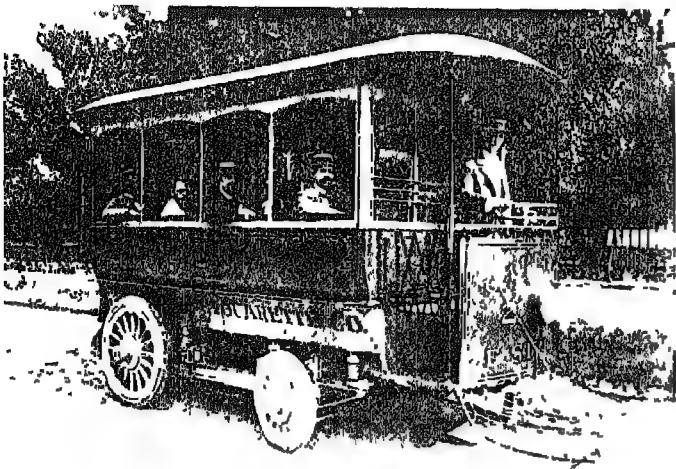
The "autocarette" shown *left* operated in Washington, D. C.

Between towns and cities in the Midwest, "interurban" lines like the one shown *right* cut deep into steam railroad passenger traffic.
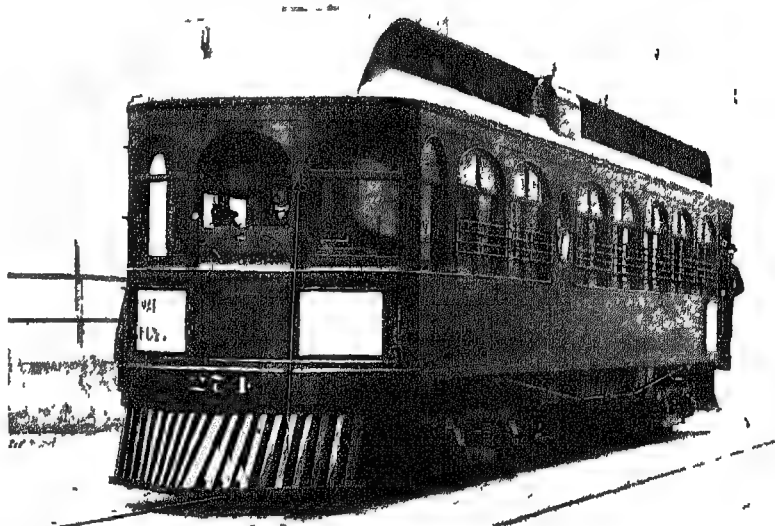
Photo by W H Bass Co , Indianapolis, Ind
Courtesy, The Indiana Historical Society, Indianapolis

Courtesy, International Harvester Company, Chicago, Ill.
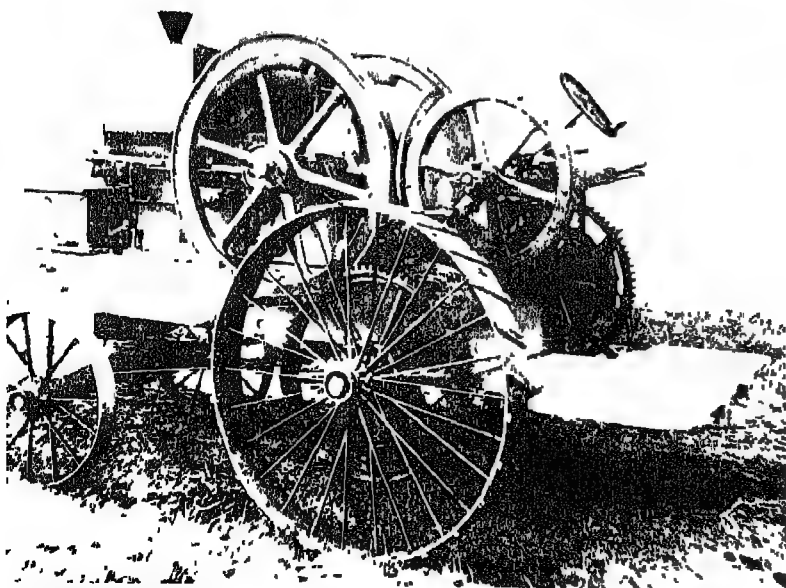
Around 1905, the experimental motor tractor shown *left* foreshadowed a new era for the small farmer

Panama Canal

President Roosevelt ended all political difficulties in the way of a canal across the Isthmus of Panama by encouraging a Panamanian revolution against the Republic of Colombia, then recognizing the insurgent government and accepting its offer of a special zone across the Isthmus. Construction had been begun in 1904 By 1905, many technical difficulties were being encountered.

French engineers had already failed to overcome the sanitary and engineering problems involved. Some of the abandoned French equipment is shown at the *right*

Illustrated World, Technical World, Vol I, 1904 Courtesy, Popluar Mechanics, Chicago, Ill

Harper's Weekly, Dec 9, 1905 *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City
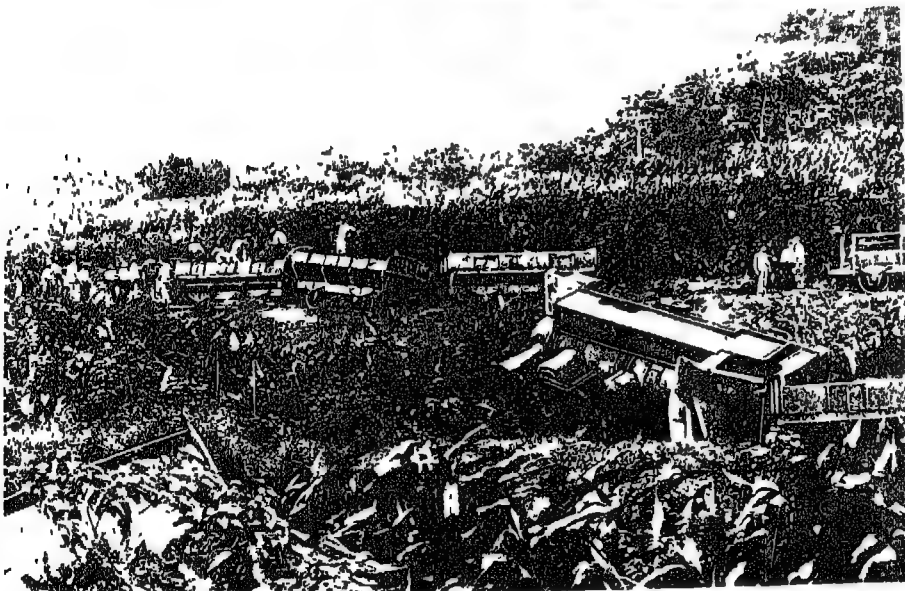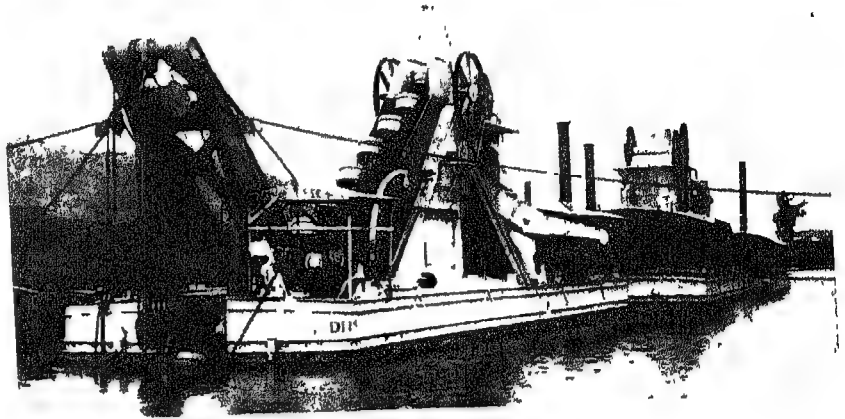
Tropical rains caused washouts and wrecks

After Dr William Gorgas was given authority to develop a campaign against yellow fever and malaria among the workmen, greater progress was made. At the *right*, the hospital at Ancon Hill is shown.

Harper's Weekly, Dec 9, 1905 *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City

The Chicago Stock Yards
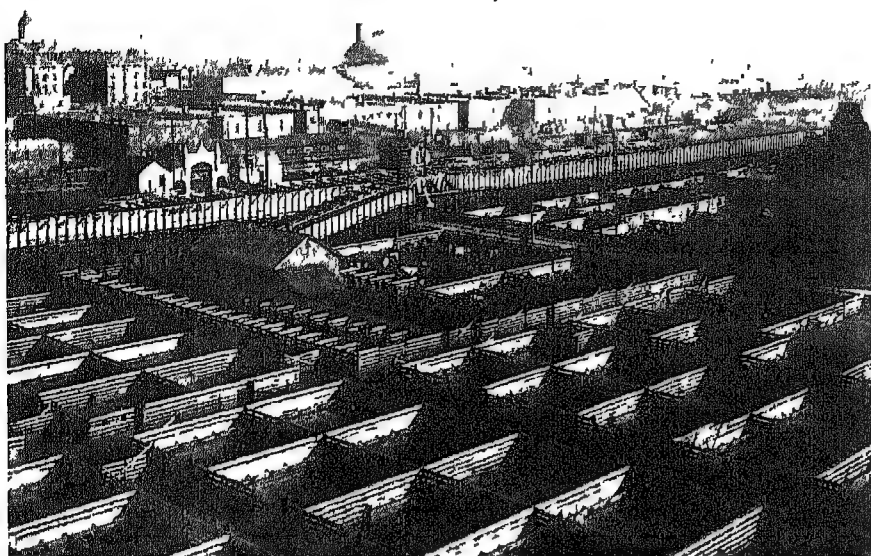
From a photo by William H Jackson
Courtesy, Scribner Art File

To the President's friends, they stood for loathesome working conditions and unsanitary practices which he had countered with his Meat Inspection Law of 1906. To the President's foes they stood for a battleground of private enterprise against political opportunism.
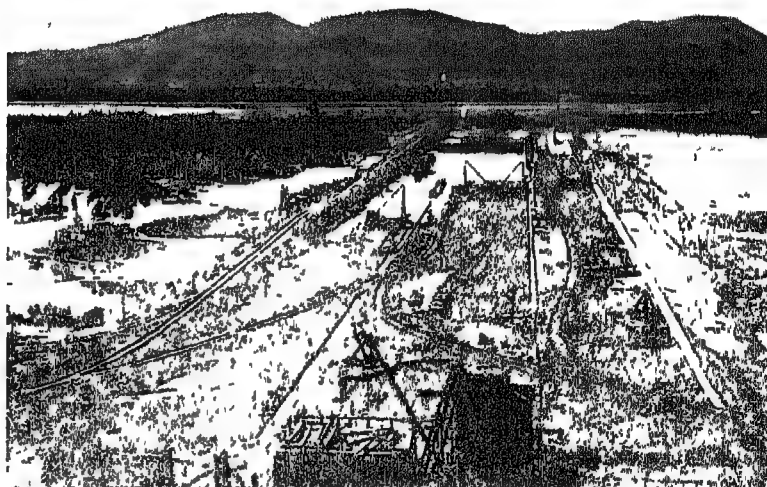
Harper's Weekly, Feb 2, 1907
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Reclamation

of arid land went on apace *Above*, the Laguna Dam on the Colorado River is shown as it looked in 1906.

W S Harwood, *New Creations in Plant Life* 1905
Courtesy, The Macmillan Company, New York City

Burbank

Out in California, Luther Burbank was becoming a household name for his hybrid species of fruit At the *left*, he is seen in the center of the group, at work on a giant pie-plant

San Francisco Tragedy

Early in the morning of Apr. 18, 1906, a series of heavy earthquake shocks hit San Francisco and a wide area about the city For three days, fire raged uncontrolled and about a third of the city was razed.

At the *right* is shown a view of the stricken city taken through the ruins of a doorway on the hill. The City Hall, seen in the distance, is shown in close-up *below*, its steel skeleton stripped of masonry by the shocks.

Courtesy, California Historical Society, San Francisco
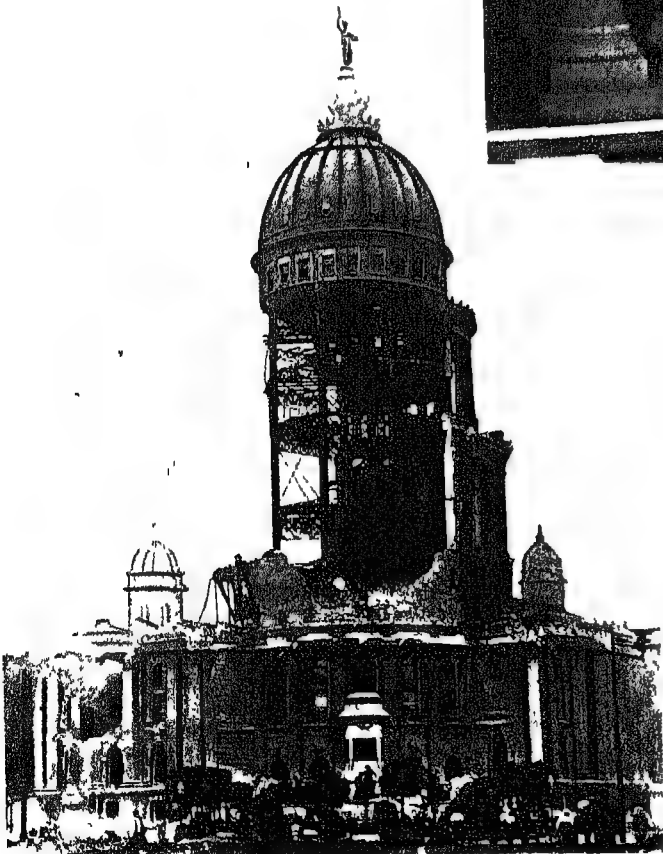
Harper's Weekly May 5, 1906
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

At the *right* is a reproduction of the seismograph record from Lick Observatory Ten seconds after the beginning of the earthquake, the pendulum was thrown from its pivots.
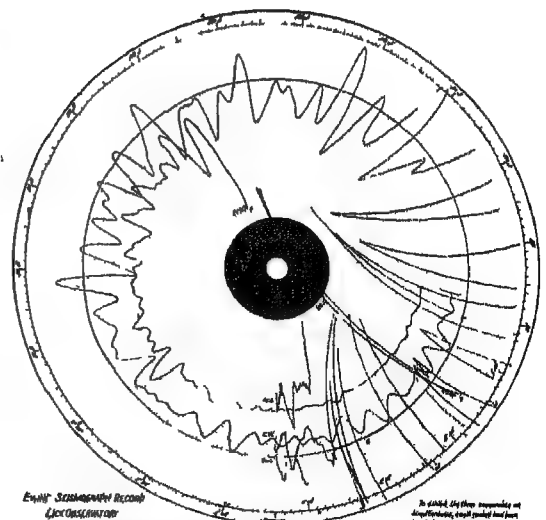
Courtesy, Lick Observatory, Mount Hamilton, Calif

San Francisco Tragedy (*Continued*)

Ruptured gas mains quickly caught fire, and failure of water by reason of broken lines made it necessary to fight the fire with dynamite. The convulsive force of the earthquake is readily appreciated in the picture *above*.

Survivors did not stay for long passive as in the picture *below* Order was restored, looting severely punished and a new San Francisco began to rise.

Both illustrations on this page are by the *courtesy* of the California Historical Society, San Francisco

New York Slums

For many years the seamier side of New York life had been played down in view of the city's increasing wealth. Reformers and social workers, however, were by 1906 making their appeals to the conscience of the general public, and political repercussions followed

Harper's Weekly, Apr 28, 1906 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

The picture *above* shows a street in the notorious "Tenderloin" district — the prey of grafting policemen and criminals

Some of the Chinese who lived on squalid lower Mott Street, Pell and Doyers Streets (*right*), engaged in numerous private wars between family associations or "tongs."
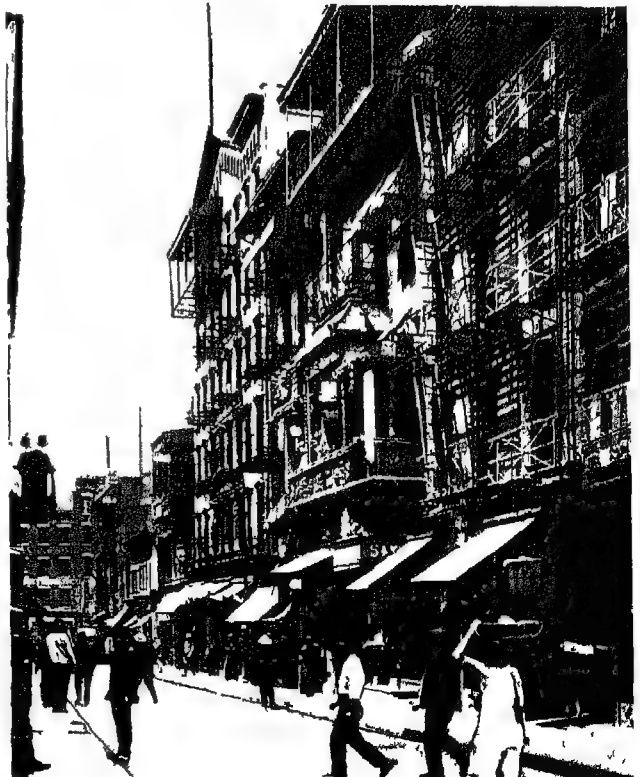
Harper's Weekly, Aug. 17, 1907
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

In the News
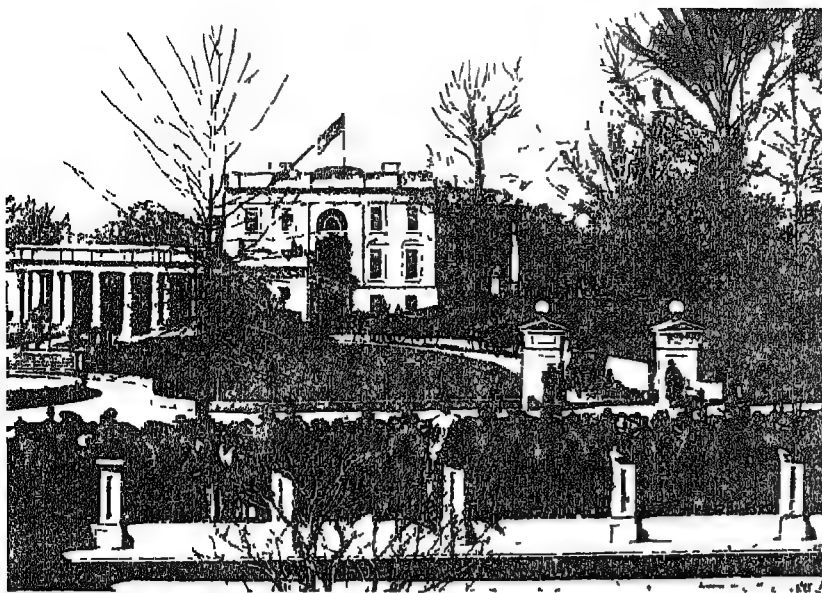
Harper's Weekly, Mar 3, 1906
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

On Saturday, Feb 17, 1906, the crowd shown *left* had gathered to watch the guests arriving for the marriage of "Princess Alice" Roosevelt to Representative Nicholas Longworth in the East Room of the White House

Roy Knabenshue piloted a dirigible airship around the dome of the Capitol on June 14, 1906 (as shown at the *right*), and seriously disturbed the deliberations of Congress.

Harper's Weekly, June 30, 1906
Courtesy, Harper & Brothers, New York City
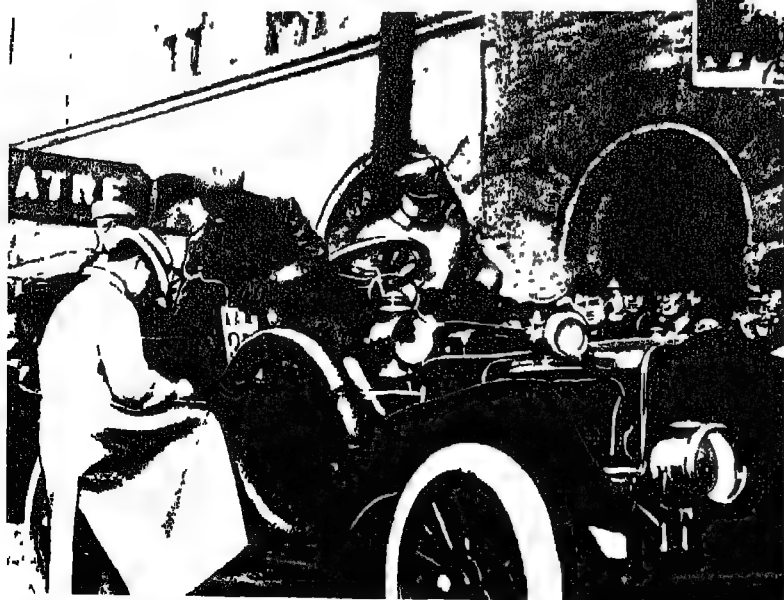
Harper's Weekly, July 28, 1906
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

At the *left*, August Post and Charles Glidden are shown at the start of the 1906 "Glidden Tour," from Buffalo, N Y, to Bretton Woods, N H

These "reliability runs" were important in popularizing auto touring and stressing the need for better roads

Assorted Riots
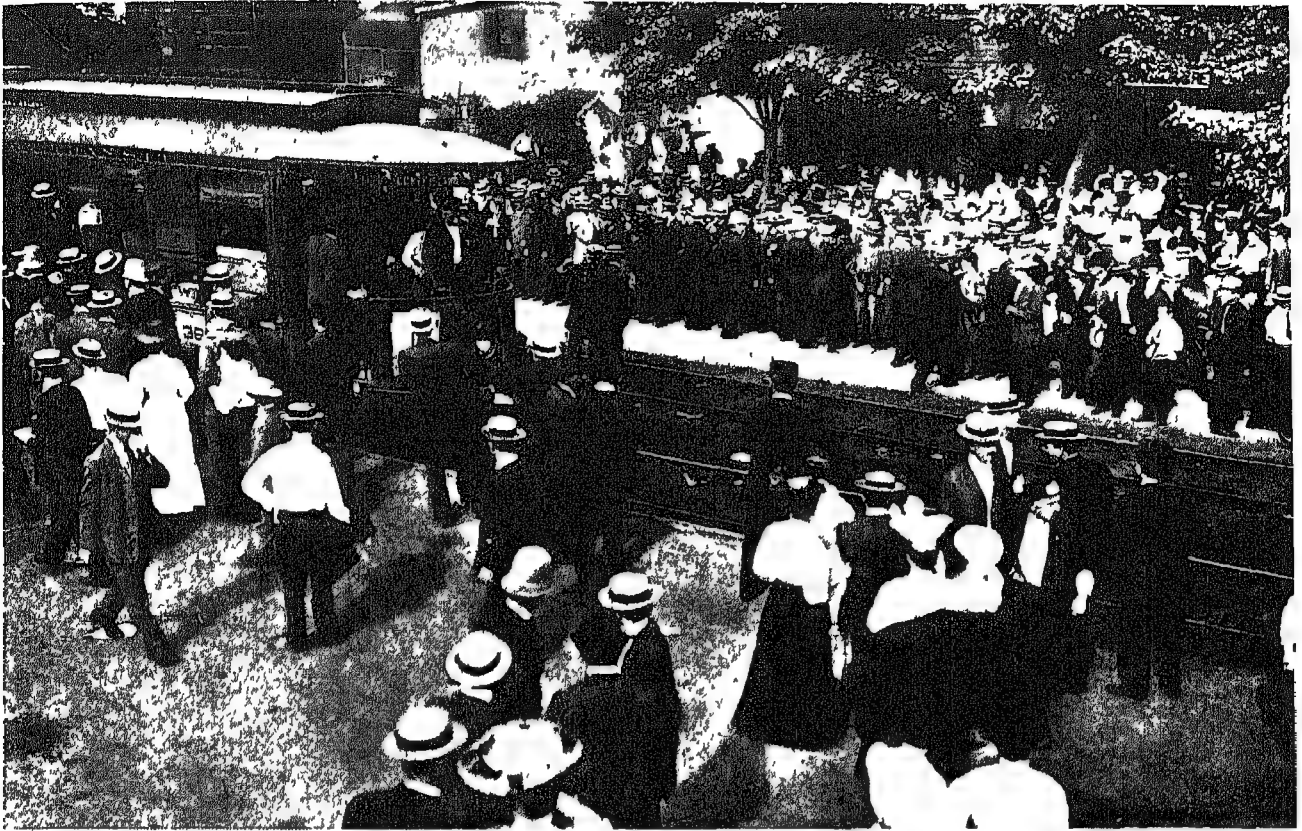
Harper's Weekly, Aug 25, 1906 *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City

During the early summer of 1906, the Brooklyn Rapid Transit Company doubled the fare to Coney Island, in violation of a Supreme Court injunction. The picture *above* shows police restraining protesting Brooklynites at the point where the double fare was collected.

The trial of Bill Haywood and other officers of the Western Federation of Miners at Boise City, Idaho, for the murder of ex-Governor Frank Steunenberg, had repercussions all through the nation as labor groups protested President Roosevelt's denunciation of the men. *Below* is shown a demonstration in New York.
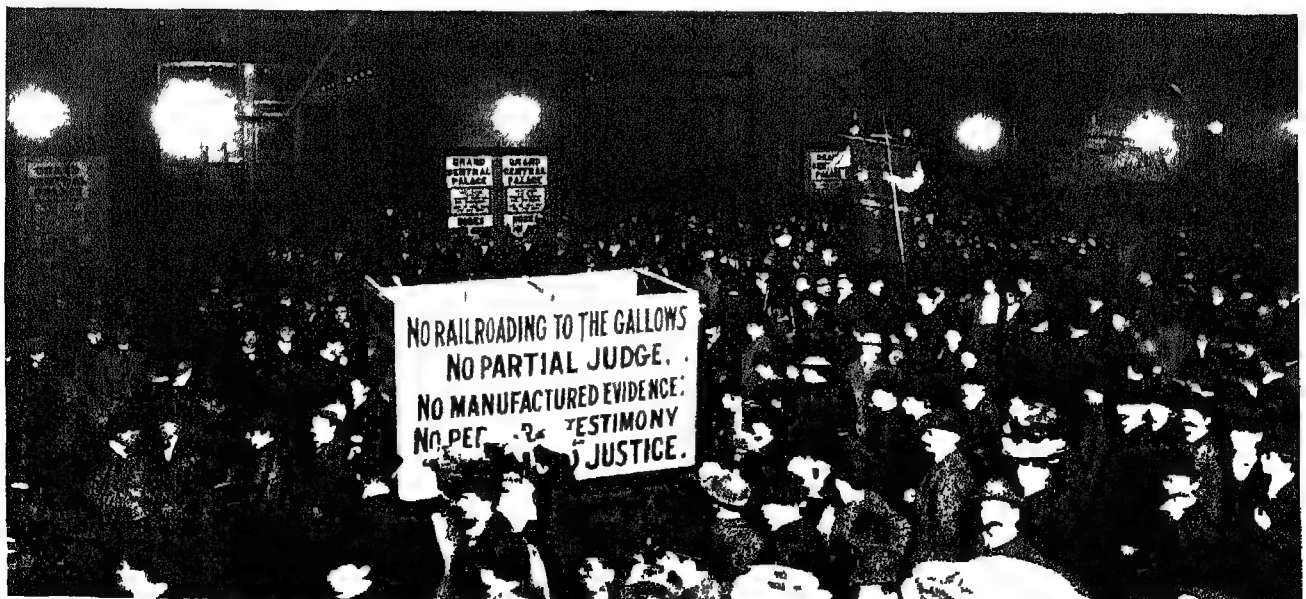
Harper's Weekly, May 18, 1907 *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City

Great Outdoors

The National Parks attracted increasing numbers of vacationing visitors. President Roosevelt's enthusiasm for the "great outdoors" was contagious.

Courtesy, National Park Service
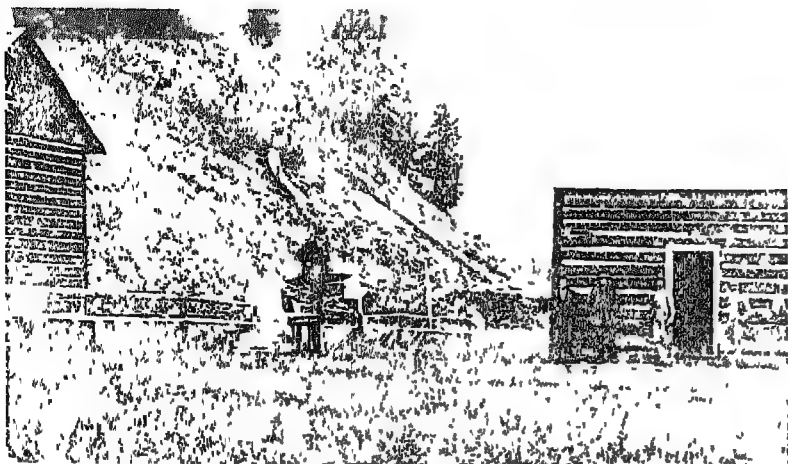
Yancey's Stage Station near Tower Falls in Yellowstone Park is seen at the *left* as it looked in 1905. Over the dusty roads, there came to it stages full of tourists like the one shown *below*

Courtesy National Park Service

Scribner's Magazine, November, 1905

With a trophy of his keen eye and straight-shooting rifle, the President is seen *left* His penchant for bears has already been noticed on page 237.

Conservation Crusade Continues

In February, 1907, the President recommended once again an organized program for conservation of natural resources. But the approach was more emotional than scientific.

Pictures like the view of Wisconsin stump land at the *right* were circulated to highlight the waste of lumbering operations

Illustrated World, Technical World, Vol II, 1904 05
Courtesy, Popular Mechanics, Chicago, Ill

But the stubbornly destructive (and picturesque) industry continued its old practices.

At the *left* is shown a driving crew at work on a jam above Chippewa Falls, Wis.

Courtesy, Minnesota Historical Society, St Paul

Some Wisconsin lumberjacks are seen at the *right* in their bunk-room. The picture dates from about 1905.

Courtesy, Minnesota Historical Society, St Paul

Balloon Race

Hailed as "the greatest event yet, in the history of aeronautics," the 1907 race for the Gordon Bennett cup was won by the German entry "Pommern" Five dirigibles entered in the contest. The start was made from St. Louis, Mo, as shown in the view *below*.
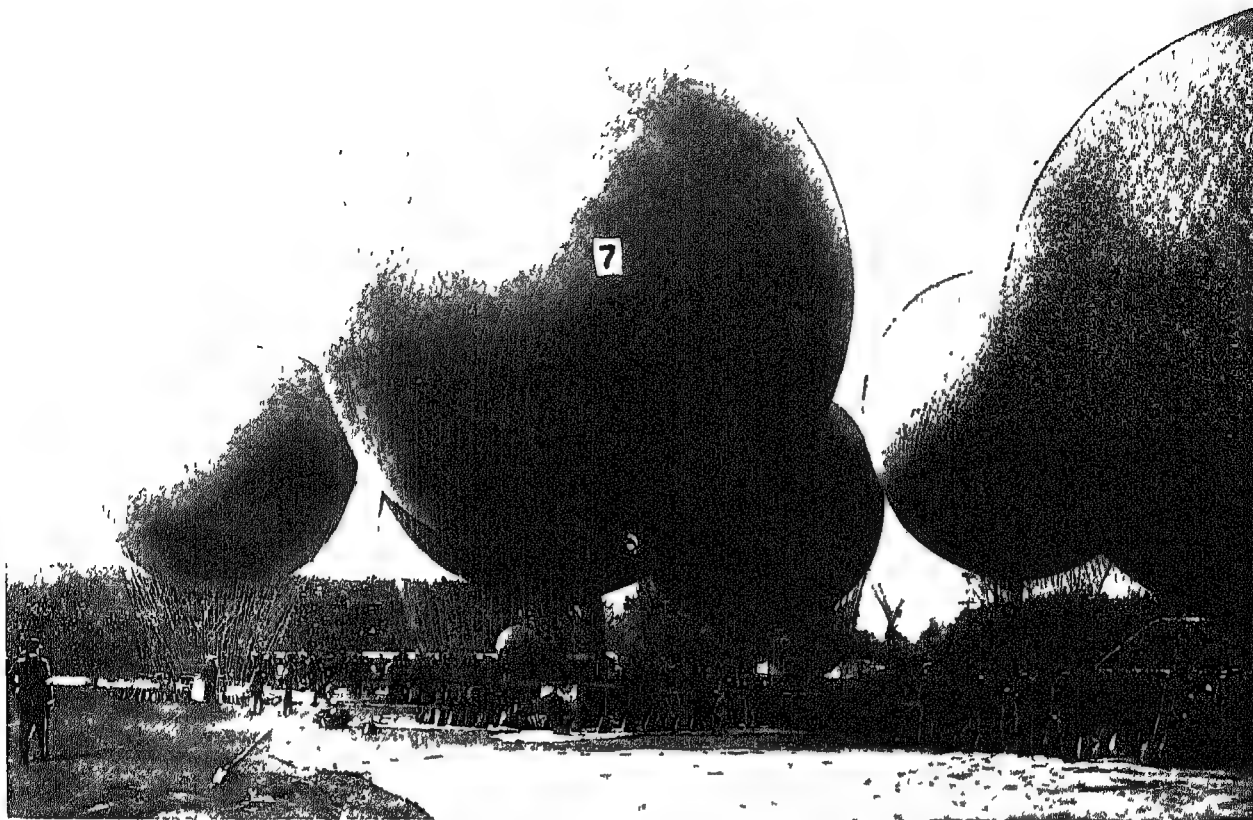
Courtesy, Missouri Historical Society, St Louis
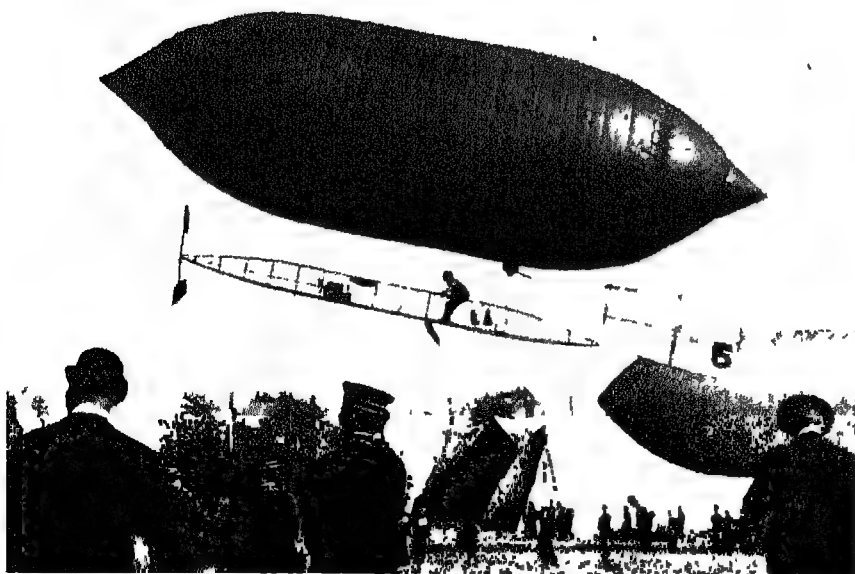
Lincoln Beachey is seen at the *left*, taking off in one of the dirigibles.

Popular Mechanics, December, 1907
Courtesy, Popular Mechanics, Chicago, Ill

Panic of 1907

For more than a year, interest on short term loans had been fluctuating between ten and one-hundred-and-twenty-five per cent. Experienced bankers were expecting a currency panic and it came on Oct. 21, 1907, with a failure of public confidence in the ability of banks to meet obligations.

The Knickerbocker Trust Company of New York was the first victim. As police controlled the anxious depositors waiting to withdraw their cash (*right*), the bank officials tried to borrow cash in order to meet the drain.

Harper's Weekly, Nov 9, 1907
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Since each bank stood alone in 1907, support from other banks was a matter of good will There was no national banking system

With the suspension of payment by many banks, Wall Street ceased trading and the Street filled with anxious crowds (*left*) In home neighborhoods, branches of banks were in a state of siege (*below*)

Harper's Weekly, Nov 9 1907
Courtesy Harper & Brothers New York City

Scrip was issued in lieu of pay checks, the President blamed the crisis on "malefactors of great wealth", J P. Morgan rallied the money forces and restored public confidence.
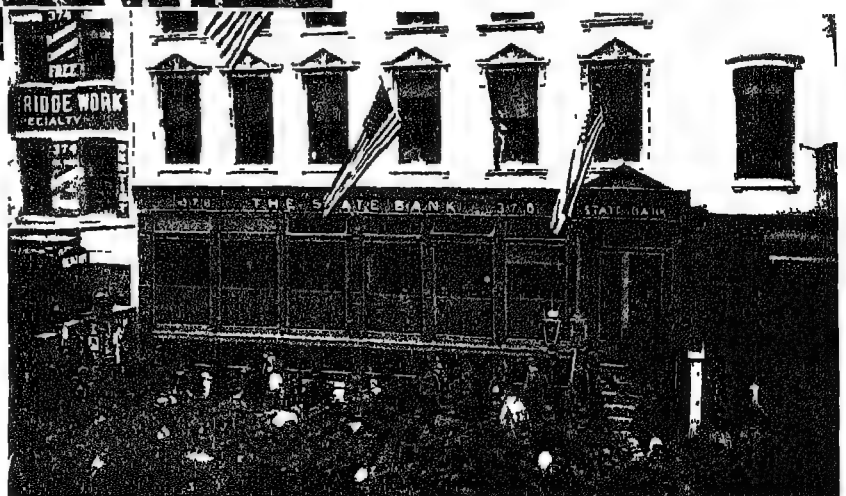
W. H Hillyer, *James Talcott Merchant* 1937

The Peace Doves Sail

American interference in the Russo-Japanese War, and recent Japanese exclusion legislation had stirred up anti-American feeling in Nippon. President Roosevelt felt that the Oriental mind might be inclined more toward peace if the United States battle fleet paid a friendly call to Eastern waters. In December, 1907, sixteen battleships sailed from Hampton Roads under Admiral "Fighting Bob" Evans—destination, San Francisco and the Pacific.
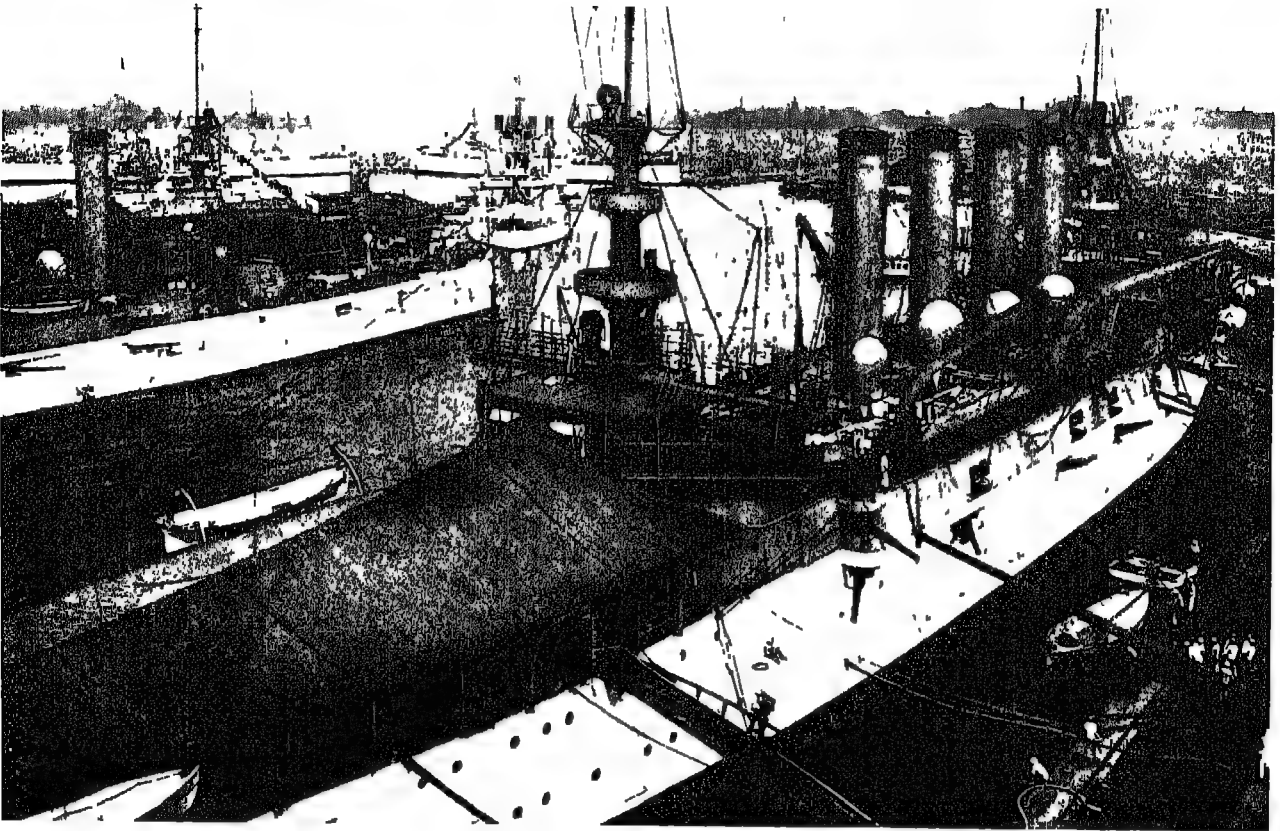
Harper's Weekly Dec 7, 1907 Courtesy Harper & Brothers, New York City

In the picture *above*, components of the fleet are being prepared at Brooklyn Navy Yard for the long voyage. In the foreground is the *West Virginia*.

Harper's Weekly, Dec 28, 1907
Courtesy Harper & Brothers, New York City
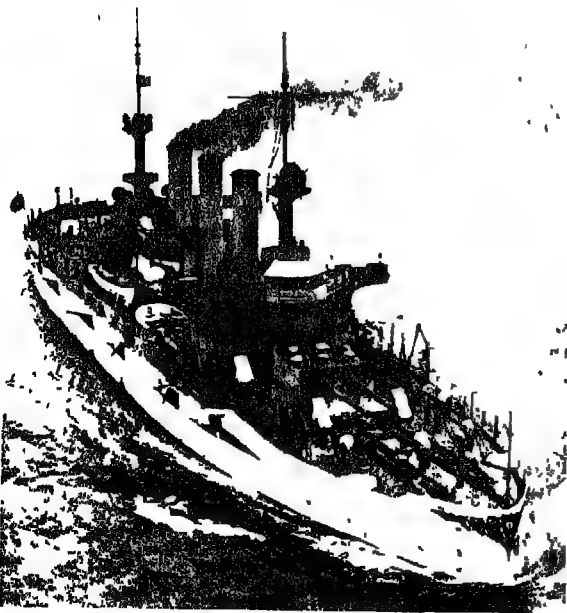
At the *left*, the flag-ship *Connecticut* is shown as she got under way.

8

A CHANGE OF HORSES

Economic consequences of the 1907 financial panic were felt in the ensuing year

The Illinois "toggery shop" at the *right* was one of many small businesses with full stocks and low sales.

Courtesy, Mr Myron F Henkel, Springfield, Ill

Unemployed men and boys studied the "Help Wanted" pages of the newspapers. The picture *below* was taken in City Hall Park, New York City.
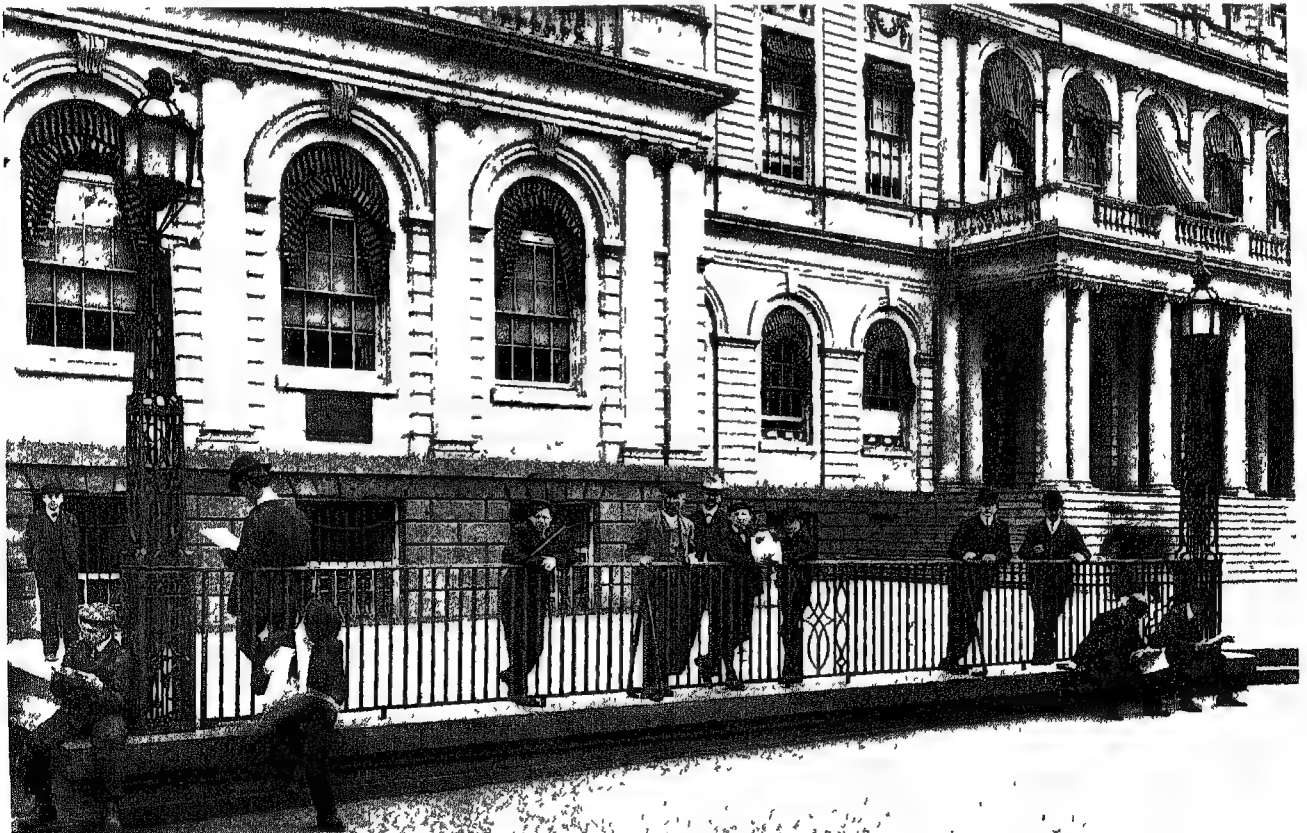
Courtesy, Consolidated Edison Company of New York, Inc , New York City

Steel

The United States Steel Corporation continued to prosper and expand in this heyday of heavy metal, despite the growth of a strong public sentiment against its size and monopolistic character.

Courtesy St Louis County Historical Society, Duluth, Minn
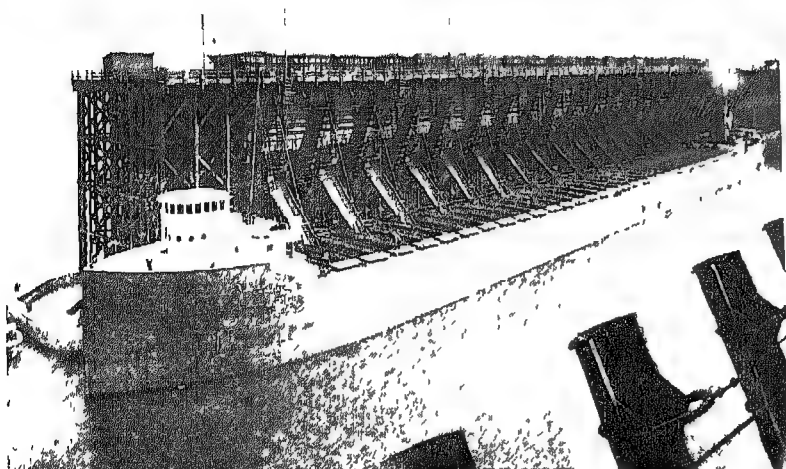
At the *left* is shown an ore freighter loading iron ore at Duluth in 1909

Gary

There were three reasons why the Steel Corporation raised a city on a waste shore, twenty-six miles southeast of Chicago. It provided an exclusive Great Lakes port, its rail facilities were perfect, it was closer to the sources of ore than older steel cities. At the *right* is seen Gary, Ind., under construction in 1907.

Courtesy, Scribner Art File

Harper's Weekly, July 4, 1908 Courtesy, Harper & Brothers, New York City
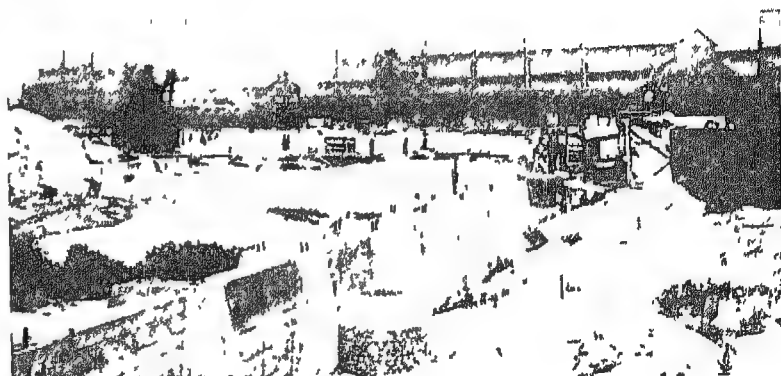
At the other end of town, the residential section was planned and administered by the Corporation. The workmen's houses shown *left* rented for sixteen dollars a month in 1908.

Votes for Women

The reform atmosphere engendered by President Theodore Roosevelt encouraged fighters for women's rights to renew their struggle in 1908.

"Foreign agitators" helped boil the pot. At the *right*, Mrs. Cobden Sanderson, a leader of English suffragettes, is shown speaking at Labor Hall, New York City.
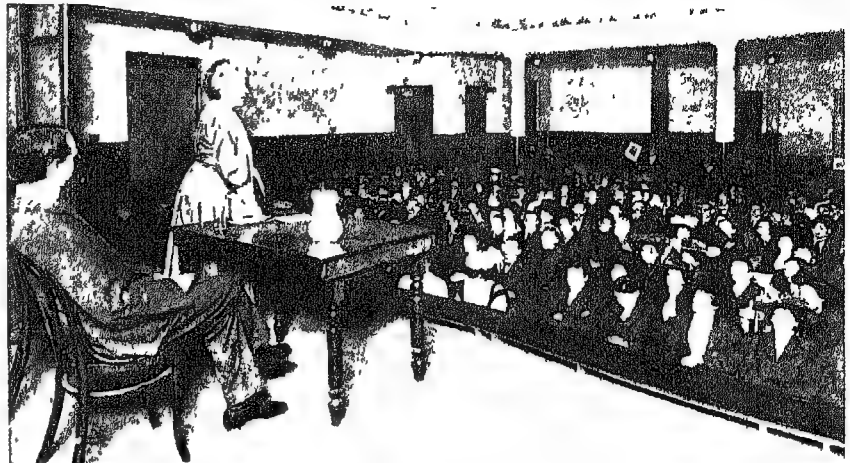
Harper's Weekly, Jan 18, 1908
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Harper's Weekly Jan 18, 1908
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

At the *left*, Mrs. Borrman Wells, another embattled British feminist, is seen addressing an open-air meeting in Madison Square, New York City

A mass demonstration of suffragettes in New York, late in February, 1908, was gently but firmly discouraged by the police At the *right*, Mrs. Wells and Miss Maud Malone (left foreground) are being "moved on"

Harper's Weekly, Mar 7, 1908
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Prohibition

The drive against liquor, had become by 1908 a moral crusade of disconcerting power

Courtesy, Scribner Art File

Signboards like the one shown *left* preached silent sermons, usually in close proximity to beer and whiskey advertisements
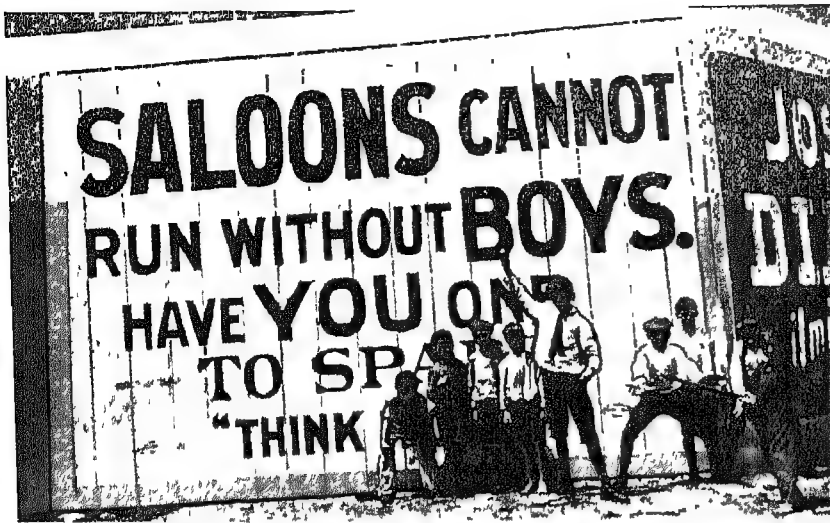
The man at the wheel in the picture *right* was W. E. (Pussyfoot) Johnson, scourge of the booze peddlers and once a household name.
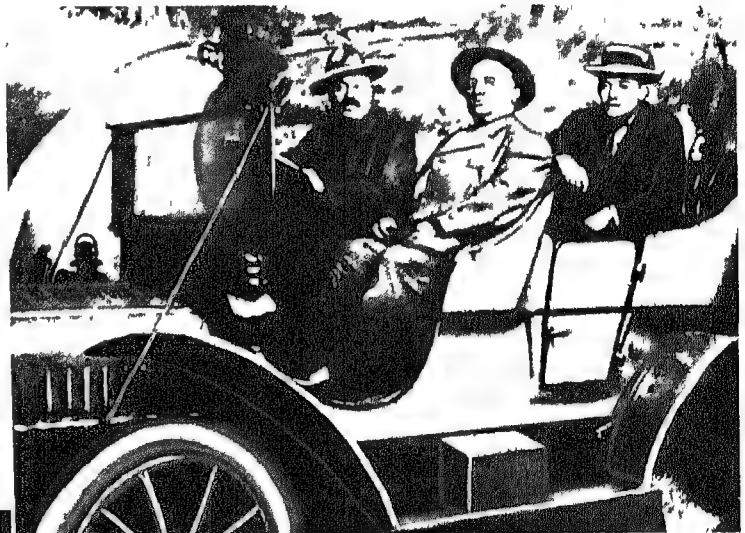
Harper's Weekly, Feb 26, 1910
Courtesy Harper & Brothers, New York City
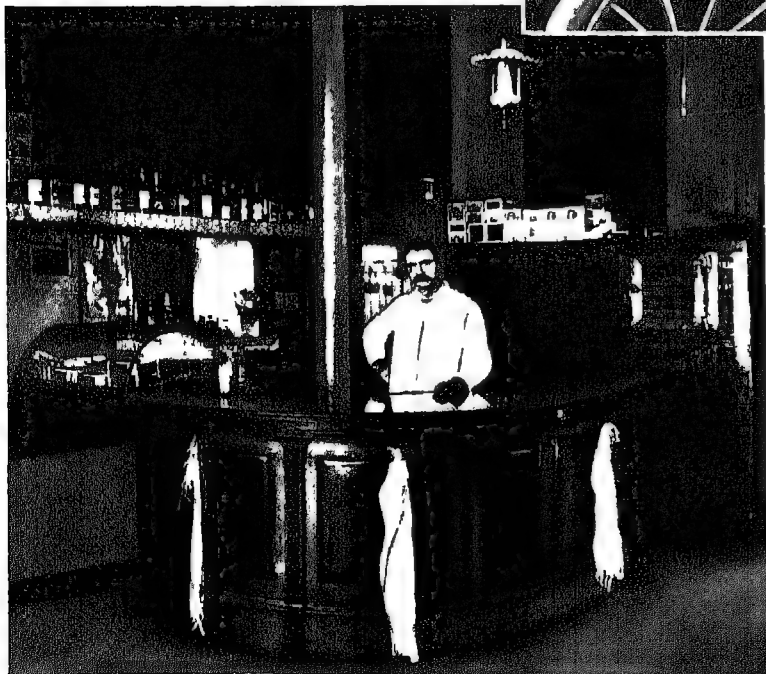
Harper's Weekly, Feb 6, 1909
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

The State of Maine had tried to enforce its pioneer prohibition statutes, long nullified in fact; but in January, 1909, the Maine saloon shown *left* was still operating defiantly, and all that had been achieved was a split in the local Republican Party.

On the Boards

Rising costs and the tight hold on the entertainment industry exercised by the "Theater Trust" were bringing about vast changes in the American theater.

"Girlie shows" like those advertised at the *right* were expensive to produce and could afford to play only the larger cities
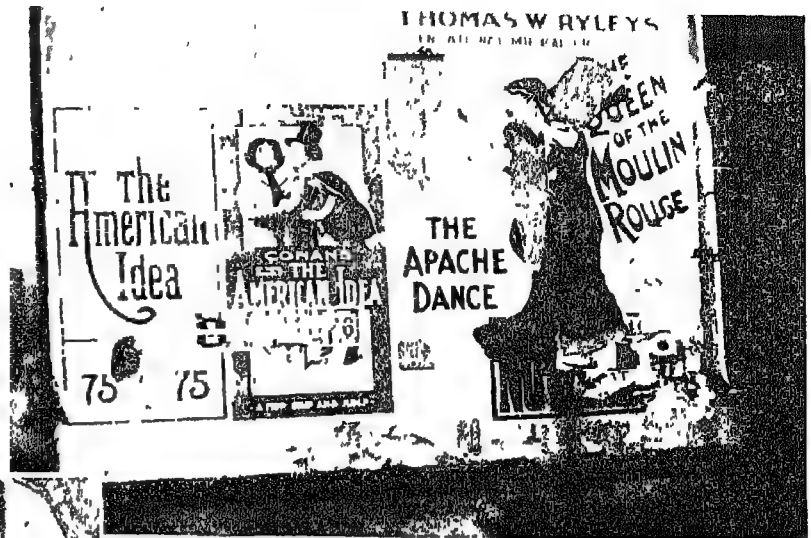
Courtesy The Managing Editor
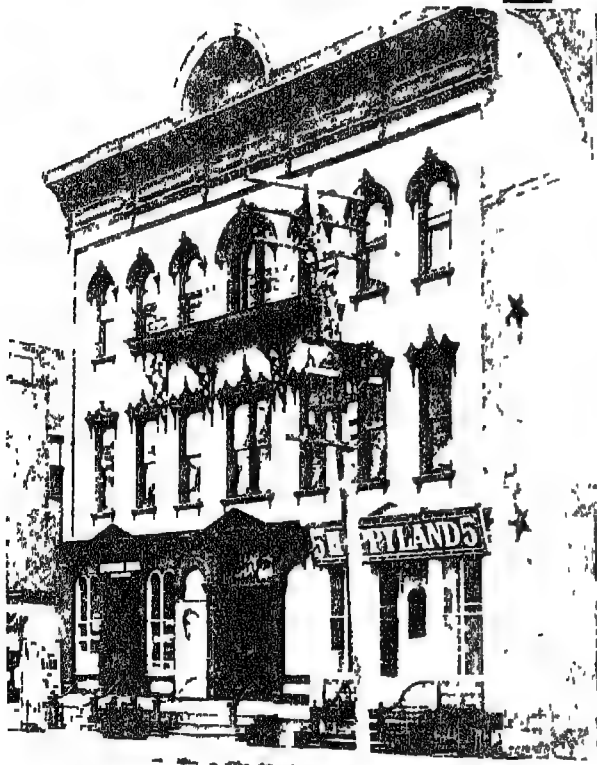
Courtesy, Fort Edward Public Library and Stone Studio, Fort Edward, N Y

Local "opry houses" like the Bradley in Fort Edward, N Y, shown *left*, housed an occasional "Tom Show" and paid the interest on the mortgage with the rent from the penny arcade and nickelodeon downstairs It was the end of the "road."

In July, 1908, the picture at the *right* was taken at an actors' picnic. Left to right stand three veterans of the older stage. Tom Lewis, Lew Dockstader the Minstrel, and Tony Pastor.

Harper's Weekly, Sept 5, 1908
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Stage in 1908

The veteran actor of the Yiddish theater, Jacob Adler, appeared in "King Lear." *Below* is shown the Grand Street Theater, New York City, where his English début took place

Courtesy, Byron Collection, Museum of the City of New York

George Ade's "Fair Co-Ed" carried on the college-boy-baiting spirit of the "College Widow." The picture of the 1908 production *below* shows Elsie Janis at the front and center.
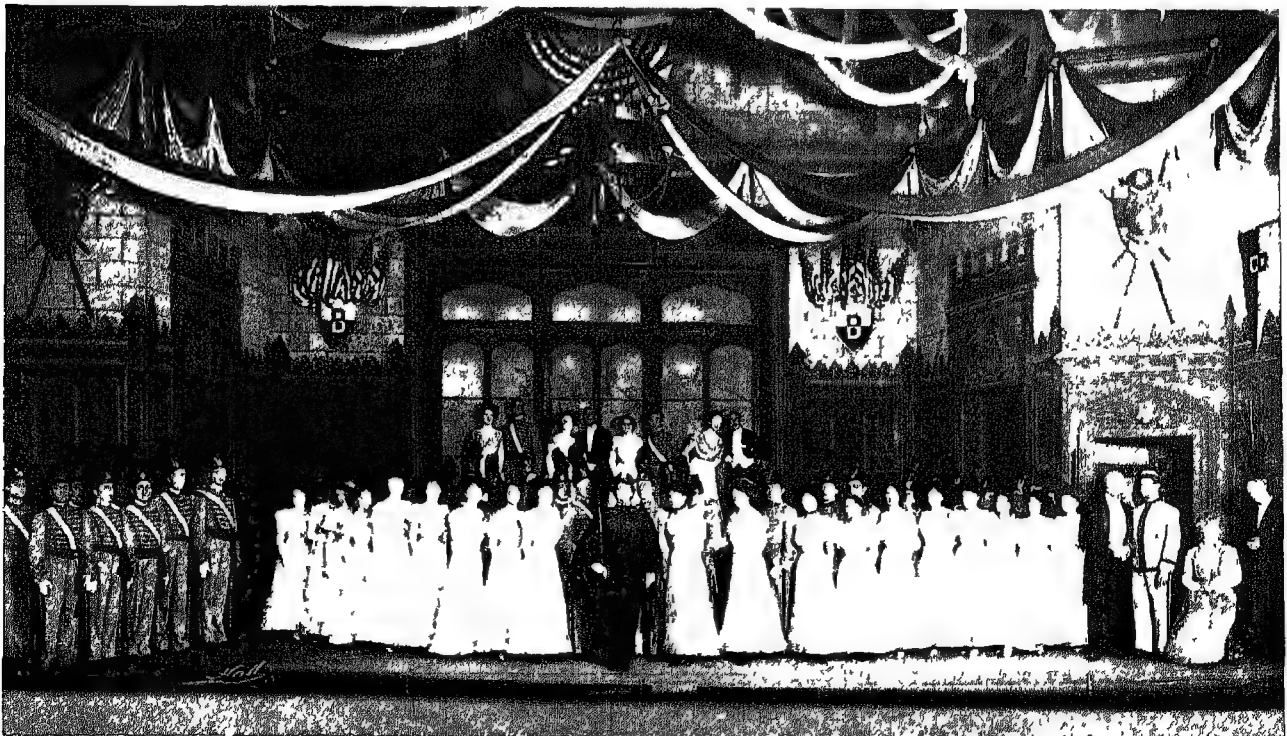
Courtesy, Purdue University, Lafayette, Ind

Olympic Victory

Athletes from the United States led the nearest competition by forty-eight and one-third points at London Stadium in July, 1908.

At the *right*, A C Gilbert of Yale tops the wood in the pole vault at twelve feet, two inches.
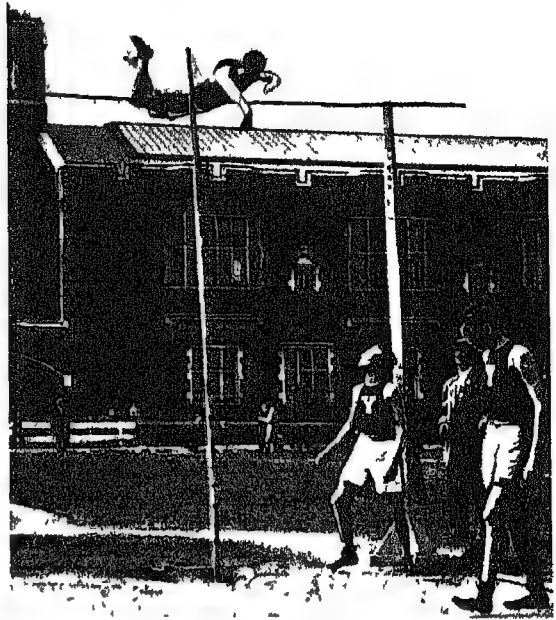
Harper's Weekly, Aug 1, 1908
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Harper's Weekly, Sept 5, 1908
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

When the winners returned, New York City turned out to welcome them The parade is seen at the *left* as it passed Madison Square on Aug. 29, 1908.

Part of the reception at City Hall is shown *below*. The standing figure is J J. Hayes, winner of the disputed Marathon run
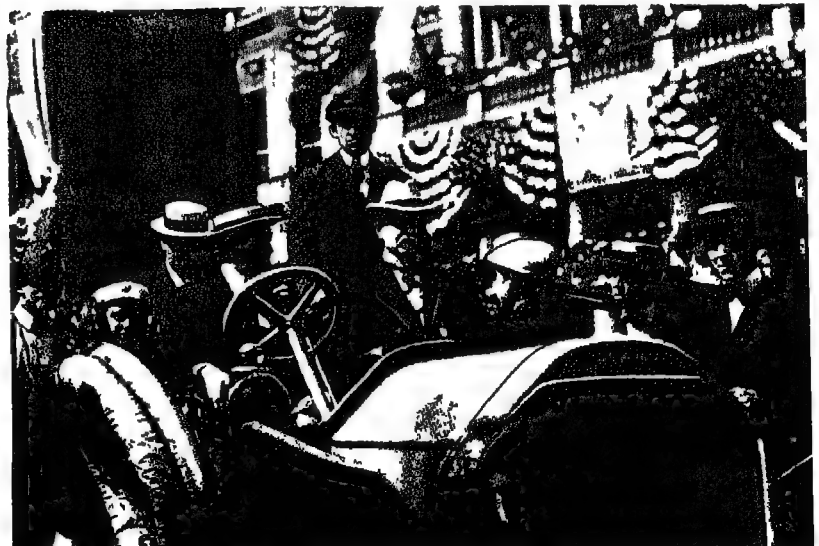
Harper's Weekly, Sept 5, 1908. *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City

Flight

At Fort Myer, Va., on Sept. 9, 1908, Orville Wright flew his plane continuously for fifty-seven minutes thirty-one seconds, at a speed of thirty-five miles an hour.
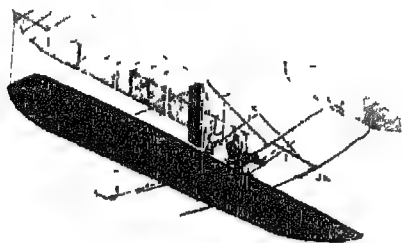
The picture *left* shows Orville Wright as he was achieving the then world's record for flight in a heavier than air machine.

Photo by United States Signal Corps
Courtesy, Scribner Art File

In late May of the same year, C. A. Morrell's dirigible had collapsed and fallen on its trial flight as shown in the picture at the *right*, taken just as the bag ruptured.

Popular Mechanics, July, 1908
Courtesy, Popular Mechanics, Chicago, Ill

Wilbur Kimball's 1908 helicopter (shown *left*) caused Thomas Edison to proclaim it the "aeroplane of the future."
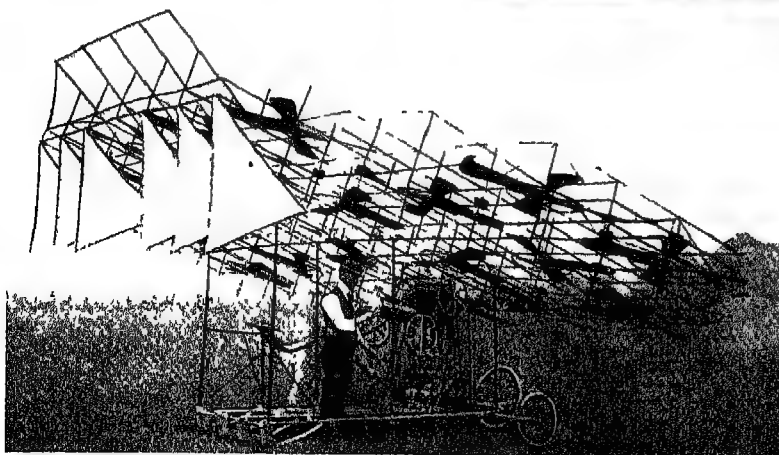
Popular Mechanics, December, 1908
Courtesy, Popular Mechanics, Chicago, Ill.

Naval Emphasis

The United States was not lagging in the international race for sea-power. First American "Dreadnought" class battleship was the *North Dakota,* launched in November, 1908 Submarines were not neglected
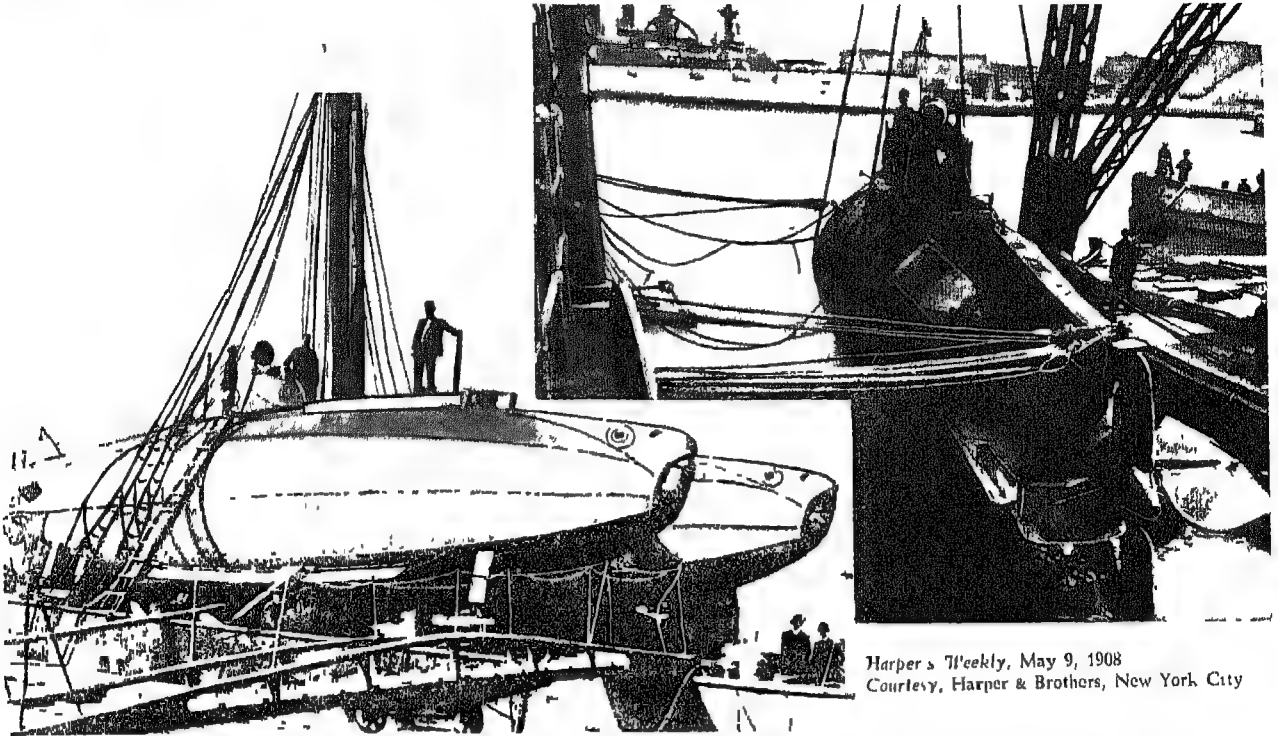
Harper's Weekly, May 9, 1908 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Harper's Weekly, May 9, 1908 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Shark and *Porpoise* nest side by side on the deck of a transport vessel in the picture *above.*

Above, a submarine is being hoisted aboard a collier at Brooklyn Navy Yard for shipment to Manila, P I

At the *right, Tarpon* is launched in April, 1909, at Quincy, Mass.
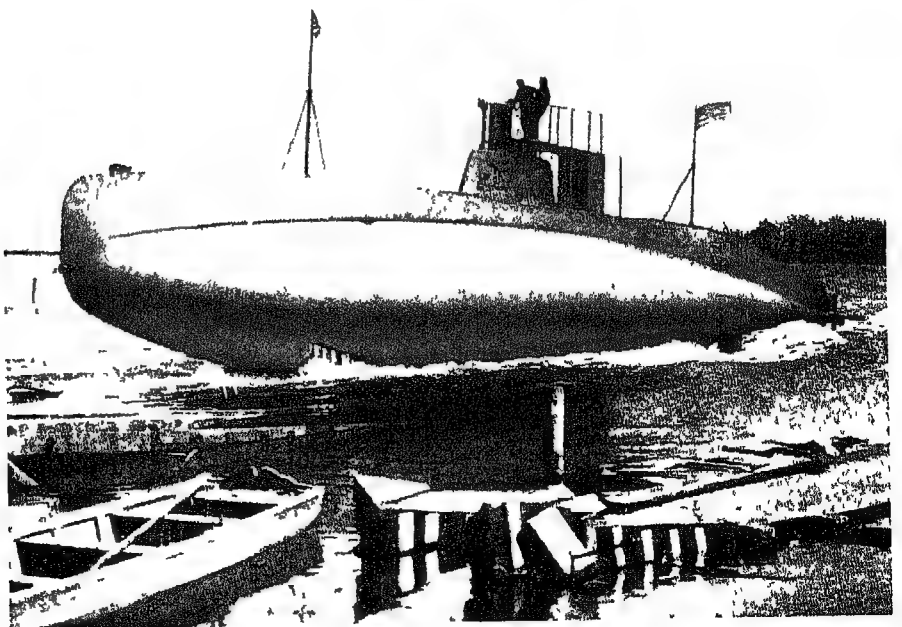
Popular Mechanics, June, 1908 Courtesy, Popular Mechanics, Chicago, Ill

A Mild Campaign

Theodore Roosevelt hand-picked his successor as Republican candidate for the Presidency. His loyal, genial Secretary of War, William Howard Taft, was the man who could be trusted to carry on the Roosevelt policies His fine record of public service was eloquent in his favor.

Harper's Weekly, July 4, 1908 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Taft and J S Sherman, candidate for Vice-President, are seen at the *left*, as they arrived at Cincinnati, Ohio, after leaving the Chicago convention.

At Denver, Colo., William Jennings Bryan dictated his own renomination as Democratic candidate. After the fiasco of 1904, the delegates had no choice In the picture *below*, Bryan is shown "accepting" the nomination on the steps of the Capitol, Lincoln, Neb.
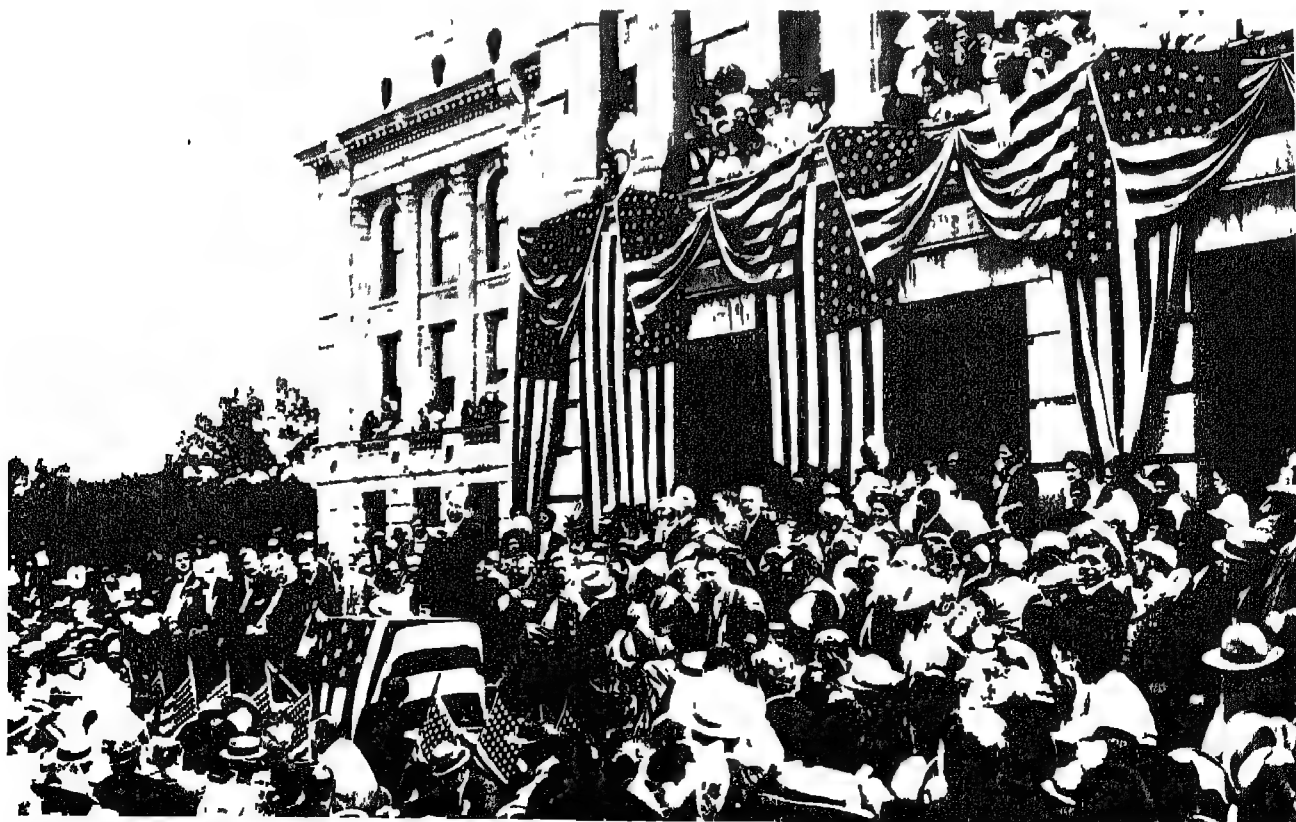
Harper's Weekly, Aug 29, 1908 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

A Mild Campaign (*Continued*)

To the man in the street, the differences between platforms of the parties seemed academic Taft was elected President by 321 electoral votes to Bryan's 162, the Republicans took a majority in both houses of Congress. But not before—

Bryan had shaken hands with Boss Murphy of Tammany Hall, as seen at the *right*.
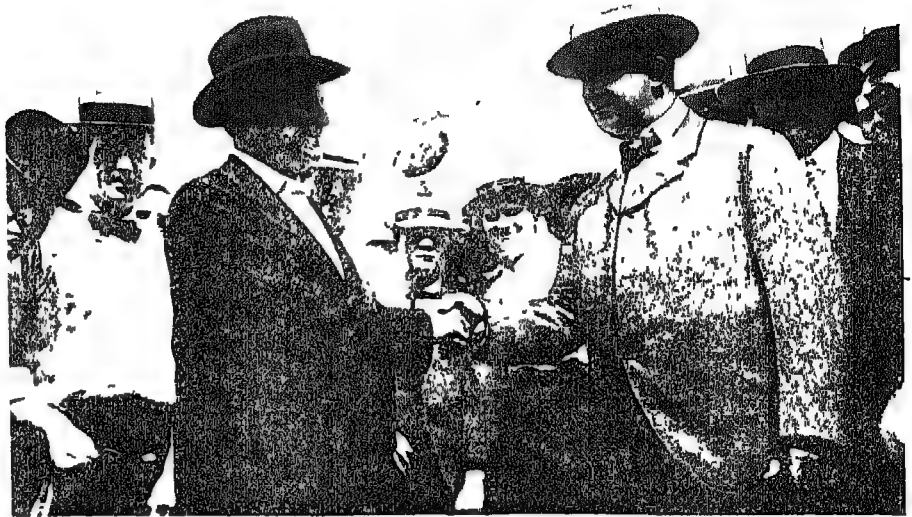
Harper's Weekly, July 25, 1908 *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City

Taft had displayed unsuspected talents as a baby-kisser (The incident *left* took place at Sandusky, Ohio)

Harper's Weekly, Sept 26, 1908 *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City

And Eugene V. Debs aboard "The Red Special" (*right*, at Waterbury, Conn.) had toured industrial cities of the East with his Socialist denunciations of the senior parties
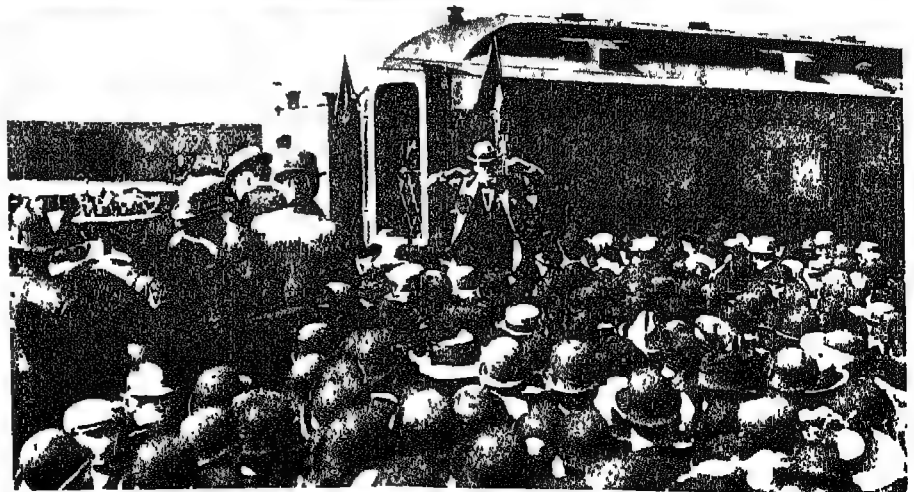
Harper's Weekly, Oct 17, 1908 *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City

The People

The new President was not given to generalizing men and women into "the people," a unitary mass for which something had to be done In an honest endeavor to understand the diversity of American character which lay beyond his urban experience, he toured the country

Courtesy, North Carolina State Department of Archives and History, Raleigh

He might have seen in rural North Carolina the Monday morning "washday" ritual at the *left*.

Courtesy, North Carolina State Department of Archives and History, Raleigh

Or the Croatoan Indians shown *right* outside their North Carolina cabin

Courtesy, Minnesota Historical Society, St Paul
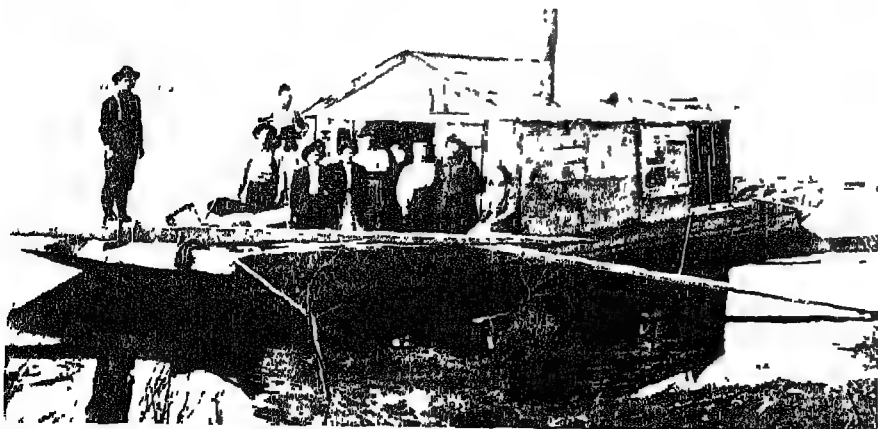
To the north and west at Eagle Rapids, Wis , he might have visited the hard-working group shown *left* on the deck of the *Dancing Annie*, supply boat for a lumber camp.

The Farmer

But the charming, jovial Taft did not get to meet the people he should have met "Important" persons diverted him from the grass-roots people shown *below*, whose loyalties still lay with the Republican party.
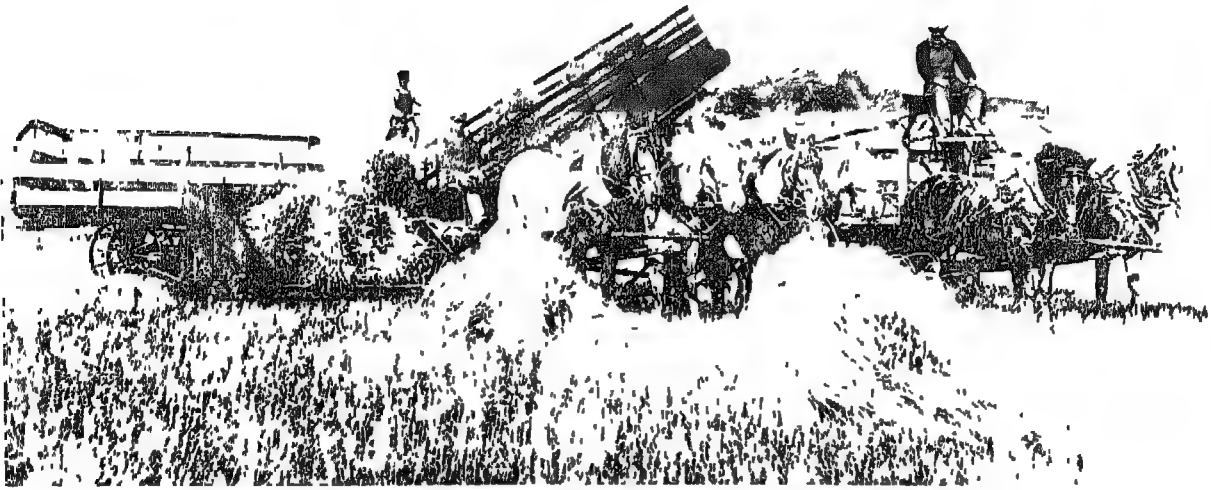
From the North Dakota wheat farmers (*above*, loading bundles; *below*, ploughing stubble) he might have learned that agriculture was beginning to question the wisdom of Republican policies.

Both illustrations on this page are by the *courtesy* of the Great Northern Railway Company, St Paul, Minn

America the Unbeautiful

Without design or plan beyond the imperative of the real estate speculator, the cities of the United States had continued to sprawl farther and farther out from their original centers.

Upper Broadway, New York City (*left*), had developed by 1908 at the expense of former "downtown" residential areas which in many cases were fast becoming slums

Courtesy, Consolidated Edison Company of New York, Inc, New York City

The billboards which decorated Broad Street, Richmond, Va (*right*), were becoming a blight along country roads as well. The auto tourist made his way between walls of shrieking ads.

Courtesy, The Valentine Museum, Richmond, Va
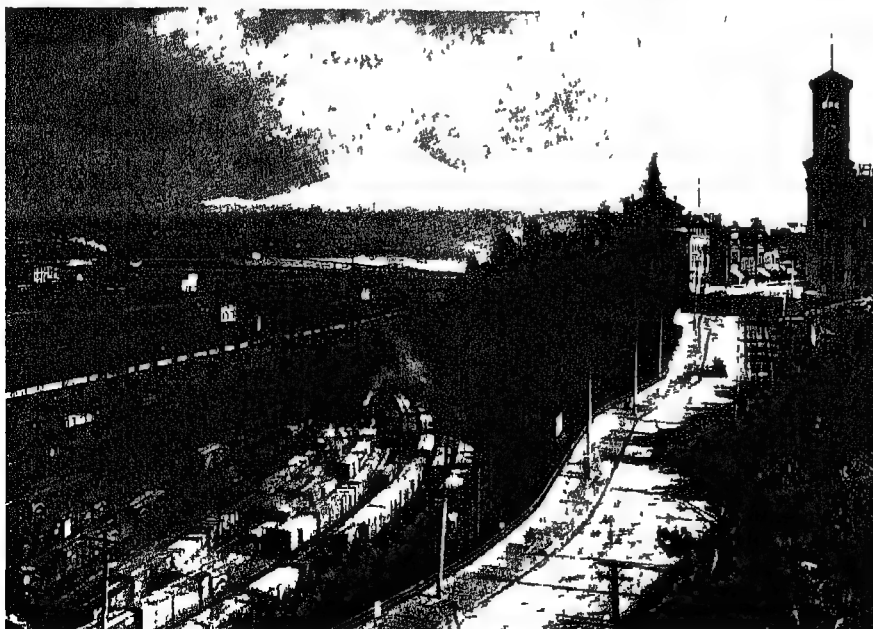
The average citizen of Tacoma, Wash (*left*), felt that the Northern Pacific yards in the foreground did more for him than the view of Mount Rainier.

Harper's Weekly, Apr 3, 1909 *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City

Family Life

As yet, few fashionable innovations in family organization and discipline had filtered down to the average family.
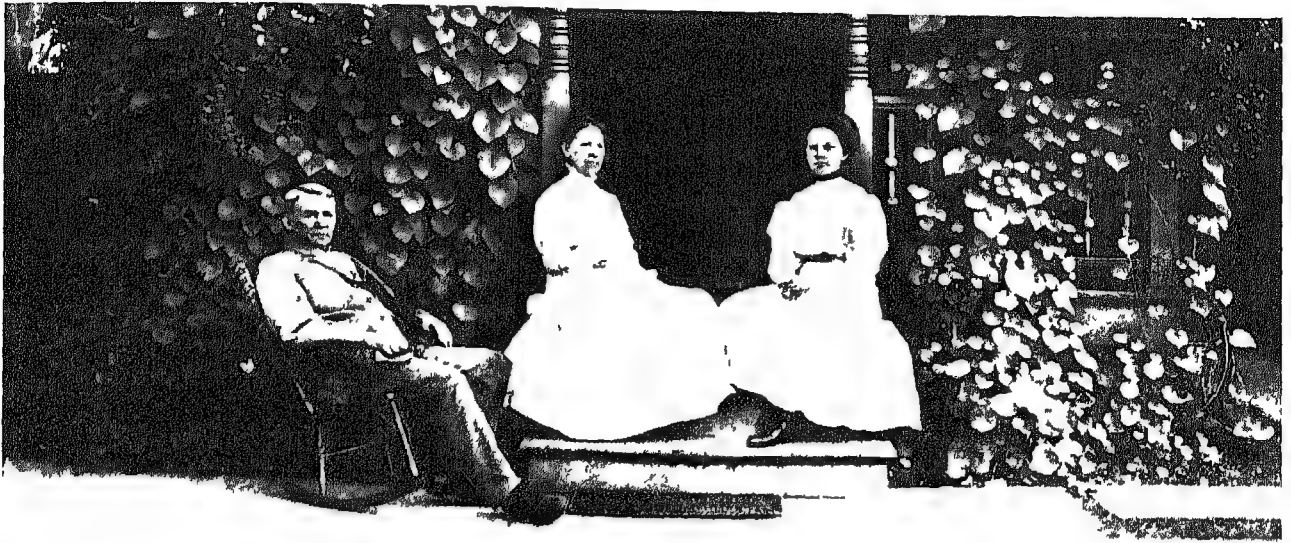
Courtesy, Associate Editor

The Columbus, Ohio, family *above* believed in the solid virtues of loyalty, co-operation and forbearance.

The evening "at home" in Chicago, pictured *below*, was possible in the days before cheap motorcars and the "movies" altered traditional ways.
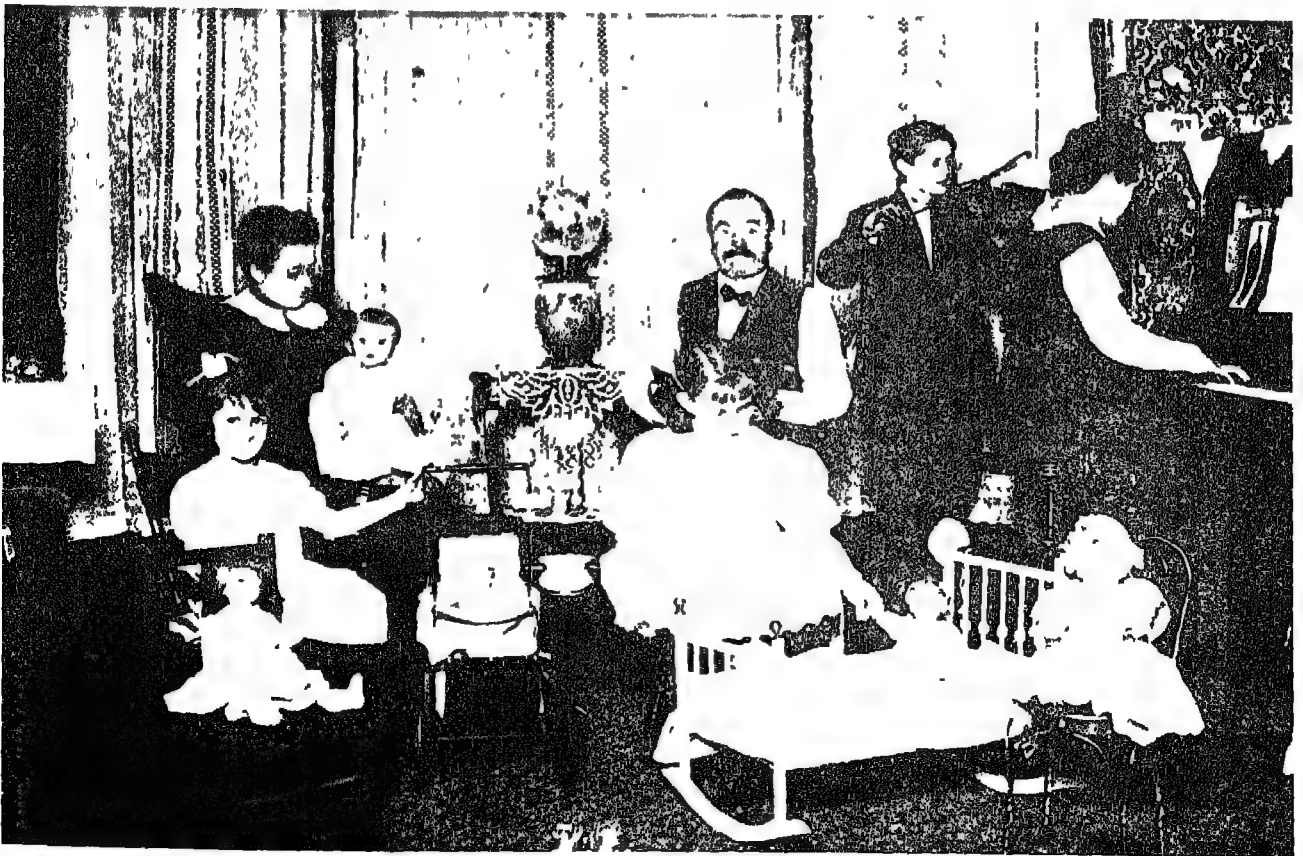
Courtesy, Chicago Lawn Historical Society and Chicago Public Library, Ill

Furniture

The three "parlor suites" shown *below* were standard equipment for the average home of 1908-1909.
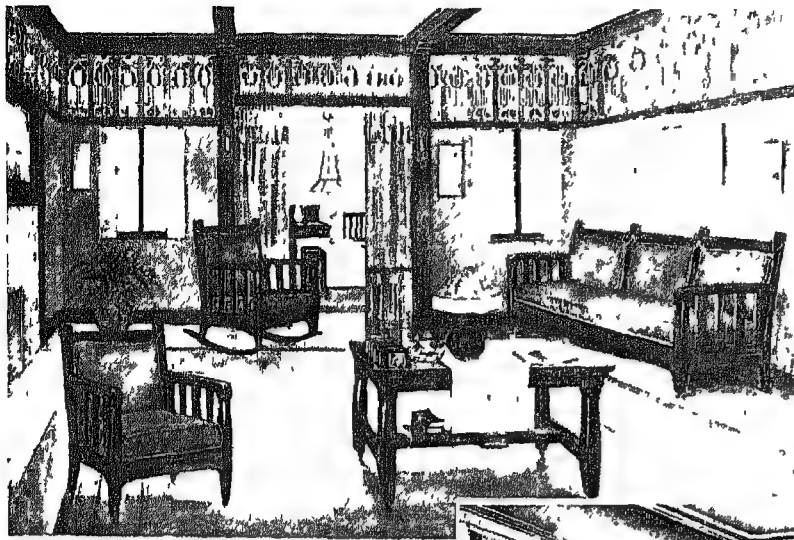
At the *left* is a nondescript parlor-library set in mahogany.

The influence of the fashionable decorator is seen in the catalogue illustrations *right* and *below* At the *right* is a "colonial" set *Below* is the magnificence of Louis Quinze —at a price.

All illustrations on this page are from *The Grand Rapids Furniture Record*, 1908 *Courtesy*, Vincent Edwards Magazines, New York City
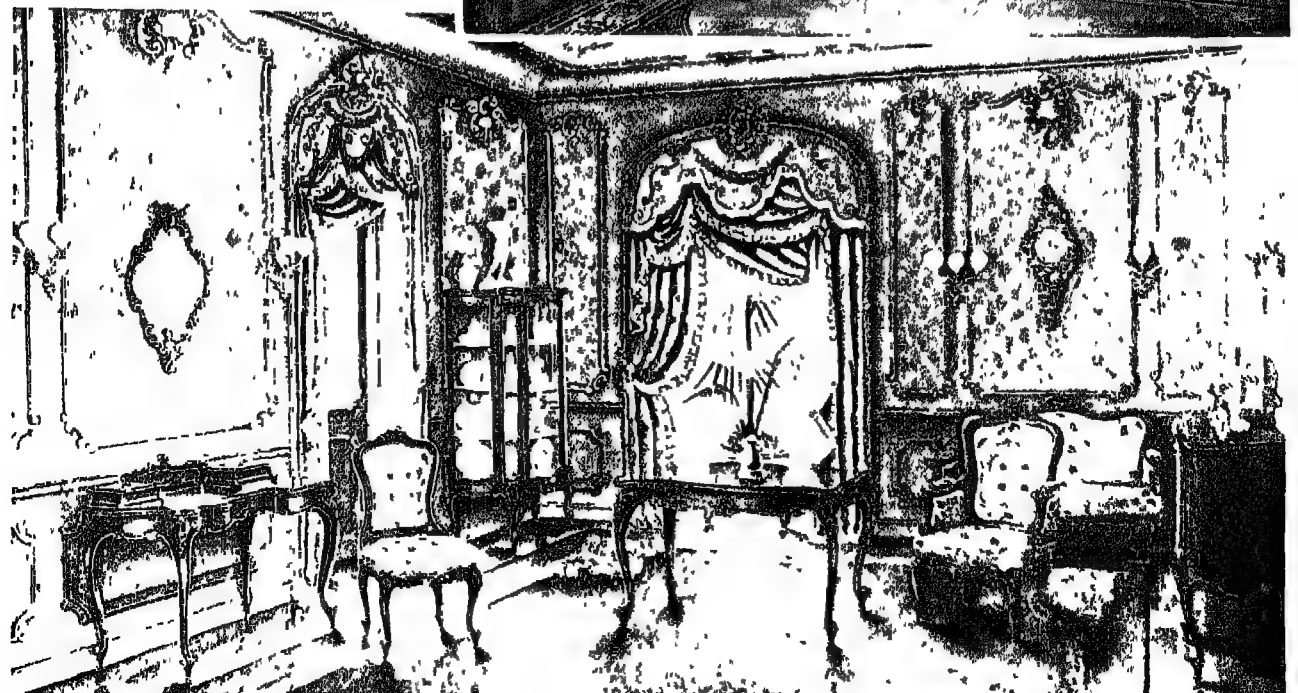
Sunday Clothes

At the *right*, is what happened when lively, little New York boys were taken to have their pictures made.

Although Paris had decreed otherwise for the fashionable, an average American family would have arrayed itself for a Sunday outing in the style of the Chicago family shown *below*

Courtesy, Associate Editor

Courtesy, Chicago Lawn Historical Society and Chicago Public Library, Ill

Relaxation

From The Alfred E Smith Collection
Courtesy Museum of the City of New York

The photo-postcard at the *left*, showing Alfred E. Smith as *Annie Oakley* and Judge James Hoyer as *Buffalo Bill*, was sent to Mrs. Smith from the 1908 Democratic Convention at Denver, Colo.

Below is seen one of the 1908 activities of the Women's Club of San Mateo, Calif The higher seriousness and lecture-mindedness of women's clubs came at a later date.

Courtesy, San Mateo County Historical Association, San Mateo, Calif

Billy Sunday

The big-league ballplayer turned evangelist was at the height of his career in 1908.

The picture at the *right* shows Sunday (second from the left) and members of his party as he arrived for a two-month revival in Springfield, Ill.
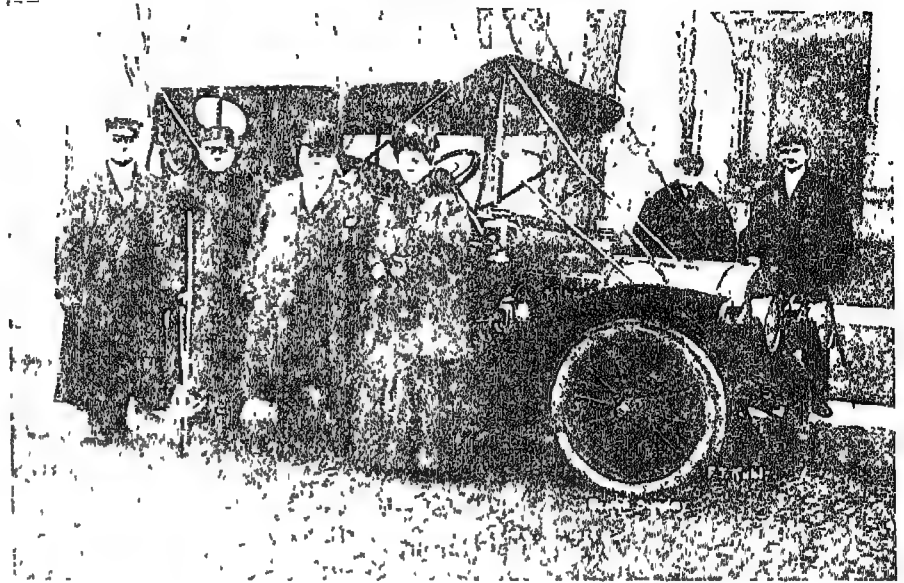
In a specially built tabernacle on the northwest corner of First and Adams streets, he addressed meetings like the one shown *below*. This picture was taken from the rear of the auditorium on Mar. 7, 1909.
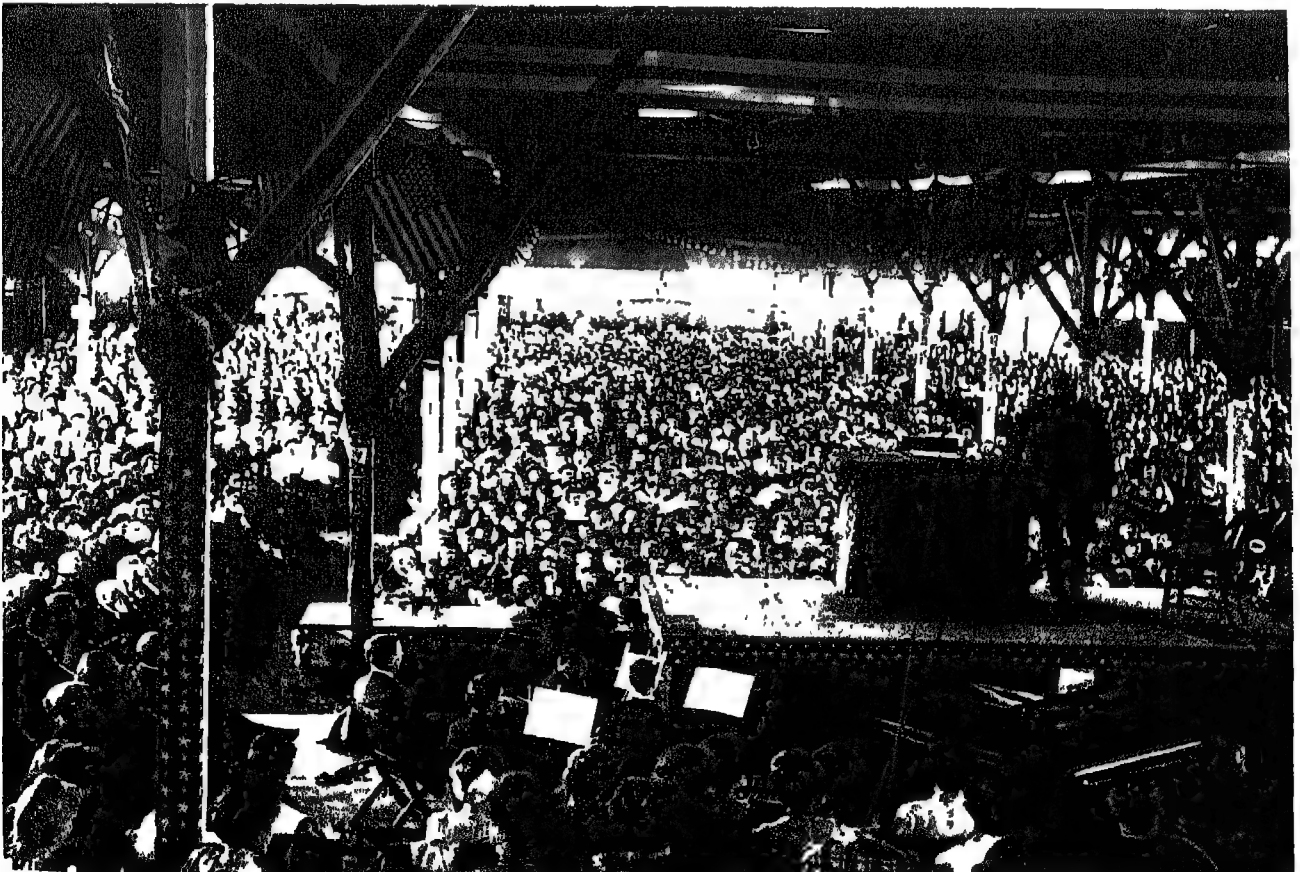
Both illustrations on this page are by the *courtesy* of Mr Myron F Henkel, Springfield, Ill

The Humble

Not all Americans were successful, energetic and optimistic. There were some who served in patience.

Courtesy, North Carolina State Department of Archives and History, Raleigh

Aunt Dolly, *left*, had nursed four generations of a North Carolina family

The elderly lady *below* was pictured at her post of duty in a Chicago suburb

The wandering scissors-grinder shouldered his wheel and rang his bell from town to town.
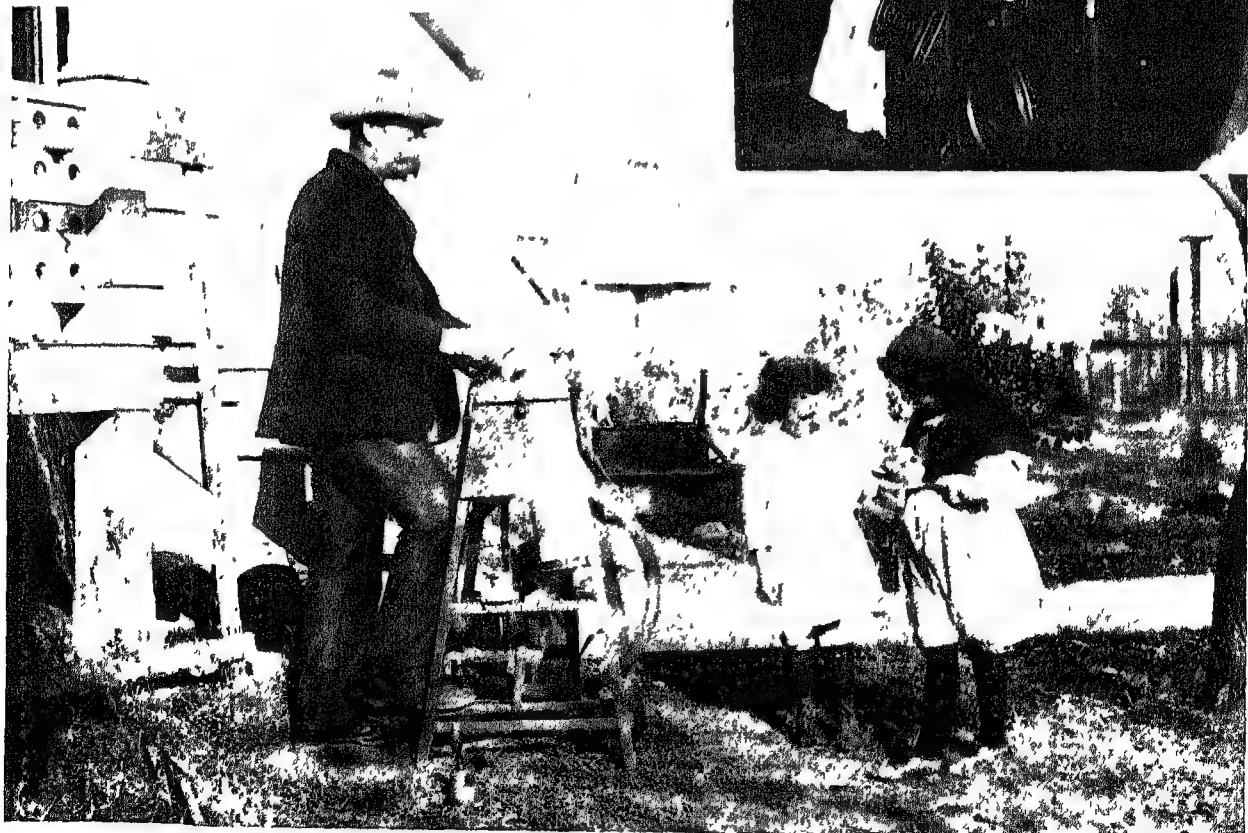
The two lower pictures, Courtesy Chicago Lawn Historical Society and Chicago Public Library, Ill.

Education

Many onerous parts of the child-rearing process were being absorbed into public education by progressive teachers and school administrators. *Below*, a school nurse teaches Cincinnati children how to brush their teeth.

L W Rapeer, ed , *Educational Hygiene* 1915

Below is shown the chemistry laboratory at Two Harbors, Minn., High School. Technical training was useful; therefore it was good and was rapidly pushing out the older classical curriculum.

Courtesy, Mrs Ruth Locker MacDonald, Two Harbors, Minn

Advertising

WOOL SOAP

Courtesy, Swift & Company, Chicago, Ill

Advertising continued to play to a mass audience with carefully chosen symbols. At the *left* are the famous Wool Soap children.

The Modish Figure—
You can have it too.

American Lady
CORSETS

Courtesy, N W Ayer & Son, Inc, Philadelphia, Pa

The three "modish figures" in the advertisement at the *right* gave each feminine reader an idea of the way she might look —if.

Courtesy, N W. Ayer & Son, Inc, Philadelphia, Pa

A somewhat similar claim was made for the "Bias Girth" blanket advertised at the *left*

Famous Firsts in Motoring

The Ford Model "T" of 1908 is shown at the *right*.
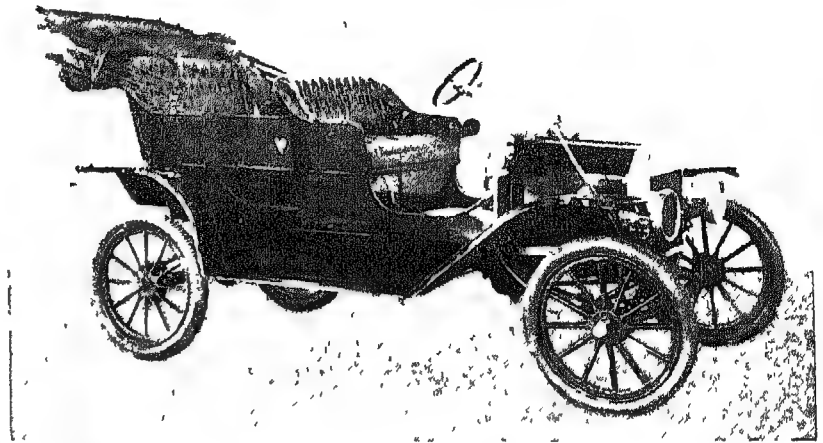
Courtesy, Ford Motor Company, Dearborn, Mich
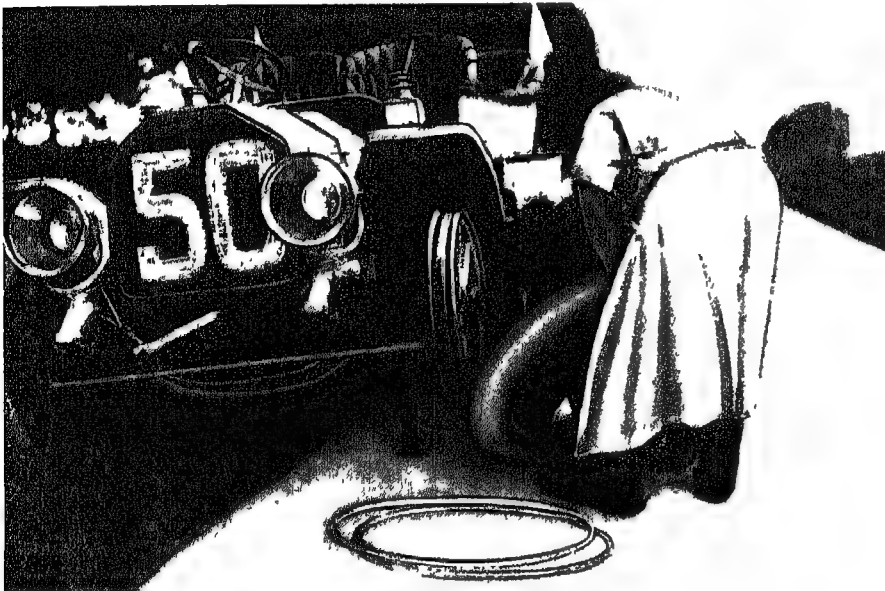
Harper's Weekly, Feb 1, 1908 *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City

Propagandists for the motor industry were stressing the "dependability" of automobiles. In February, 1908, the new, demountable-rim tire was a factor in this campaign. At the *left*, a motorist changes a blown tire "easily and quickly" by the new method.

The picture *right* purports to show "the first horseless funeral in the United States" In May, 1910, Henry Stephens of Detroit was the occasion of this event. It was noted that "good, fast time was made from the house to the cemetery."

Harper's Weekly, June 4, 1910 *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City

Out For a Spin
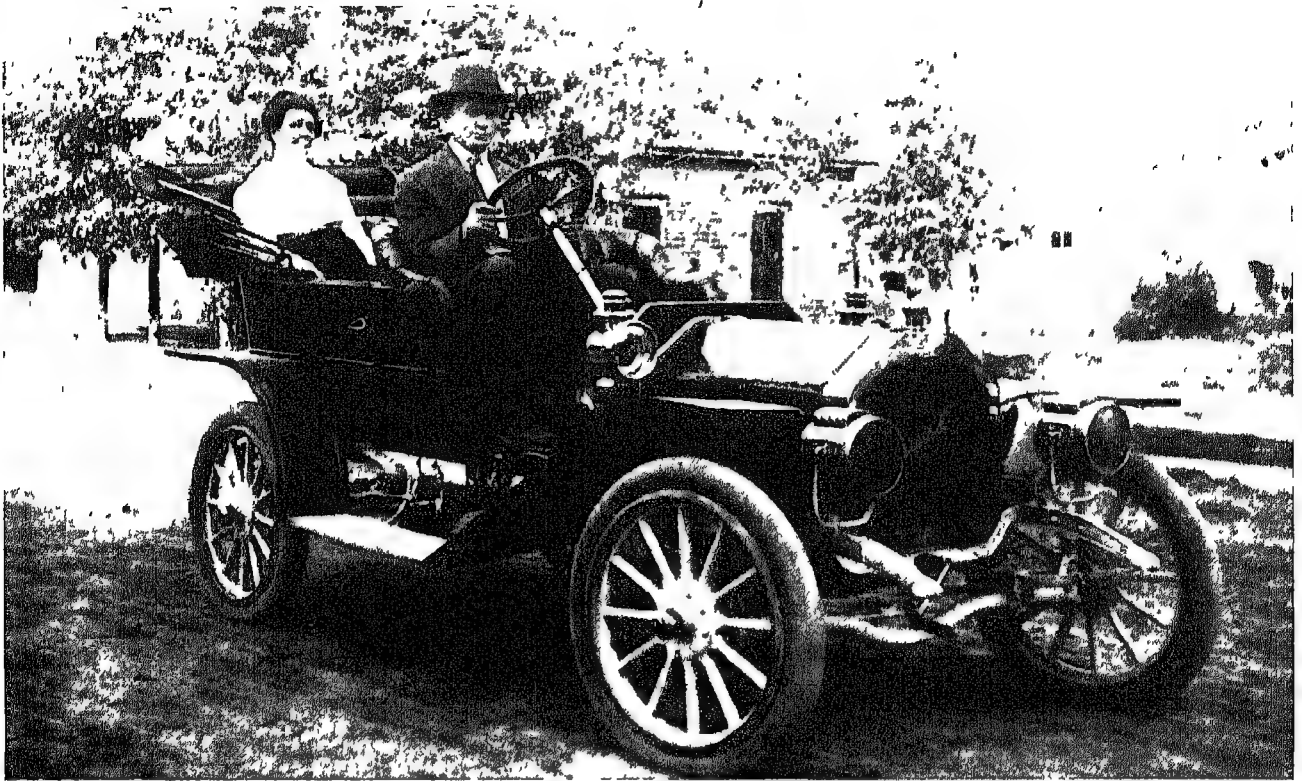
Courtesy, Managing Editor

Above, a Kansas couple try out their brand-new 1909 Buick. Mother is obviously pleased with the effect on the neighbors.

An early specimen of a new industry is pictured *below*· the first garage in Hempstead, N Y.

Courtesy, The Hempstead Library, Hempstead, N Y.

Trucks

By 1910, the motor-truck was accepted for all kinds of haulage.

The International auto-wagon *right* worked on a farm.
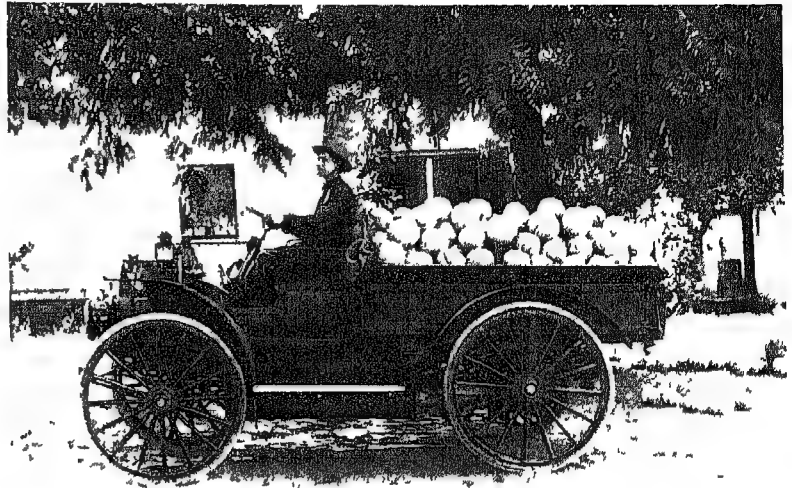
Courtesy, International Harvester Company, Chicago, Ill
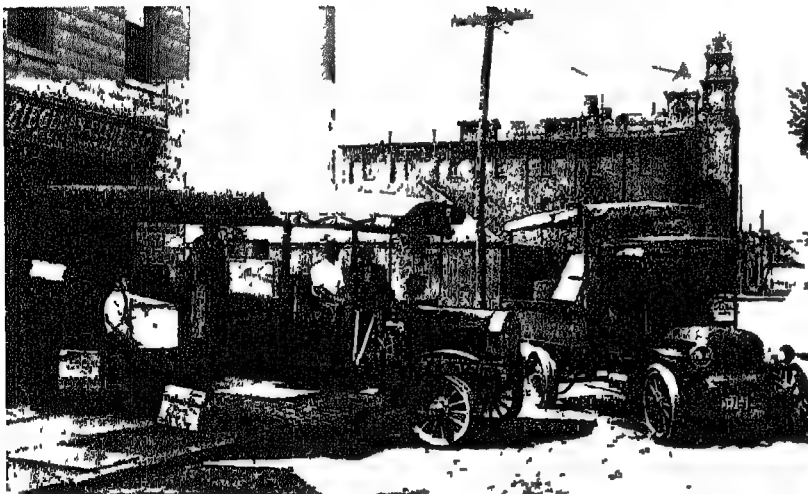
Courtesy, Mack-International Motor Truck Corporation, New York City

Express companies overcame the prejudice in favor of horses for short hauls Note in the picture *left* that one of the Mack trucks has its wheel at the right-hand side

Coca-Cola distributed its product by motor-truck in Hamlet, N. C., as seen in the picture at the *right* Note the French horn.

Courtesy, The Coca-Cola Company, Atlanta, Ga

Vanishing Americana
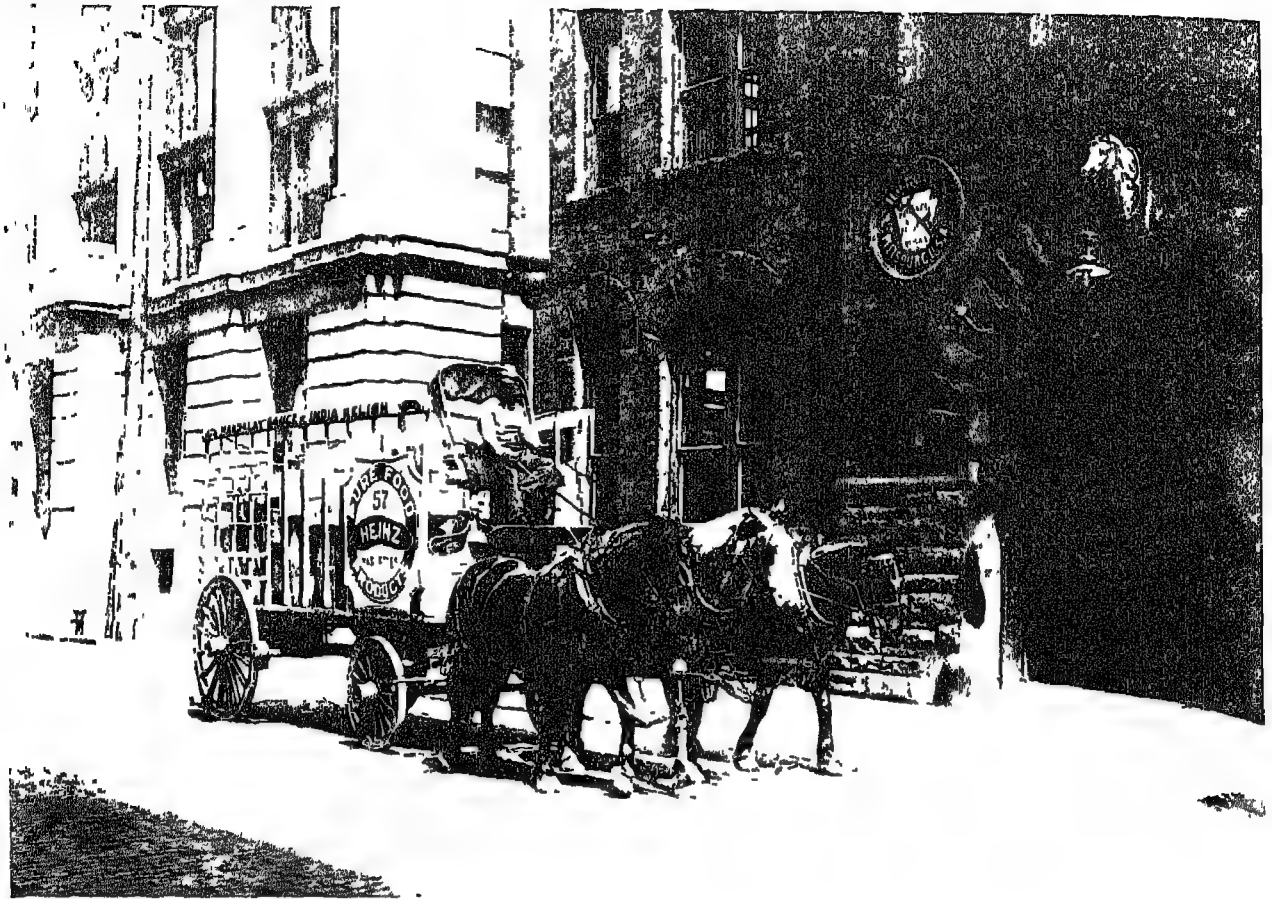
Courtesy, H J Heinz Company, Pittsburgh, Pa

As late as 1909, the older generation of brewers and merchants entered "Blue Ribbon" teams like the one shown *above* in prize competitions.

The queens of the Mississippi still put in at Bienville Street wharf, New Orleans.
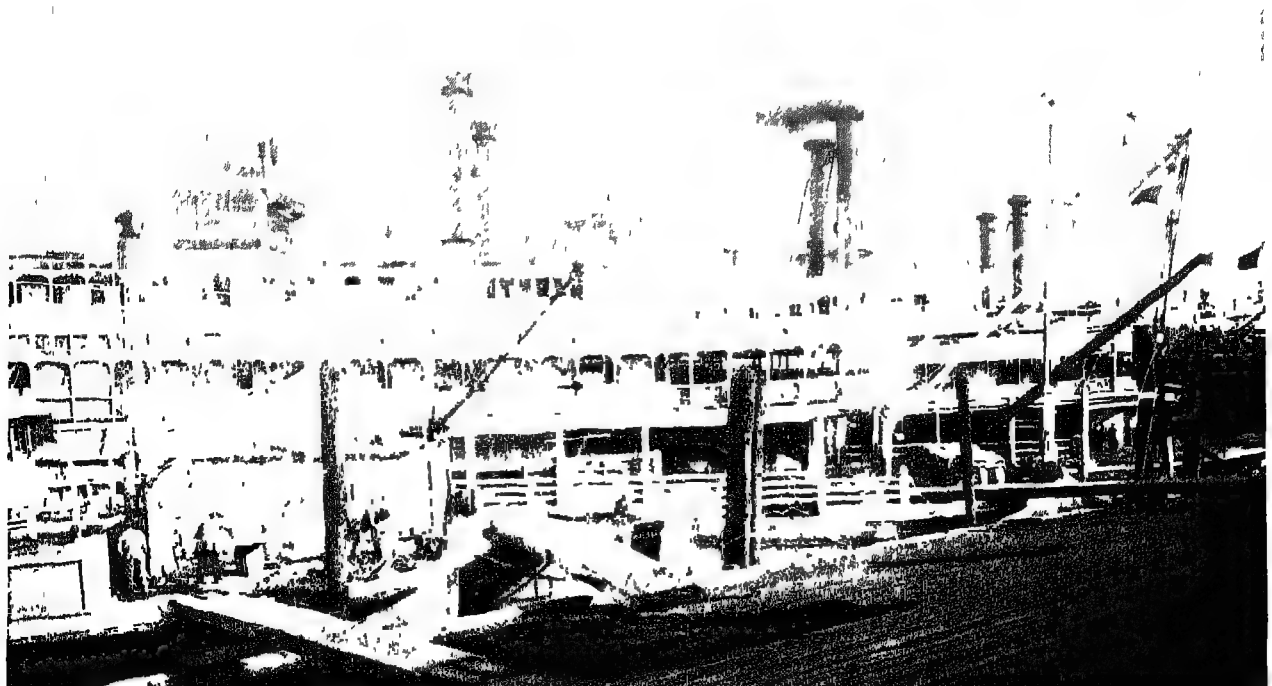
Courtesy, Board of Commissioners of the Port of New Orleans, La

Firemen

The small boy of 1909 could thrill to the sight shown *right* But in the 1910 view of part of the Baltimore, Md., Fire Department *below*, the chief's car and one engine were motorized.

Courtesy, The Home Insurance Company, New York City

Courtesy, The Municipal Museum of the City of Baltimore, Md

Better Roads

The Glidden Tours; the automobile manufacturers; an aroused public spirit, all aided in the continued improvement of highways and secondary roads.

The Johnston County, N. C., road shown at the *left* was no longer a local joke. It was felt to be an unnecessary nuisance which hindered the development of the region

Courtesy, North Carolina State Department of Archives and History, Raleigh

At least an oil-dressing could be applied to bind the surface and keep dust down. (*Right*).

Courtesy, Public Roads Administration, Washington, D. C.

Some towns and cities were laying down full concrete roads and sidewalks in 1908.

Courtesy, Public Roads Administration, Washington, D. C.

Oil

As the coming of the motor age increased the demand for petroleum products, new fields were located and drilled, new methods of processing crude oil were developed

At the *right* is a newly developed well near El Campo, Tex , as it looked in 1908
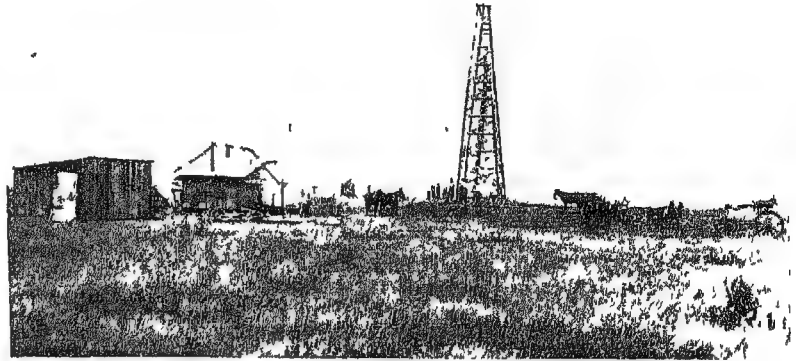
Courtesy, The Library of the University of Texas, Austin
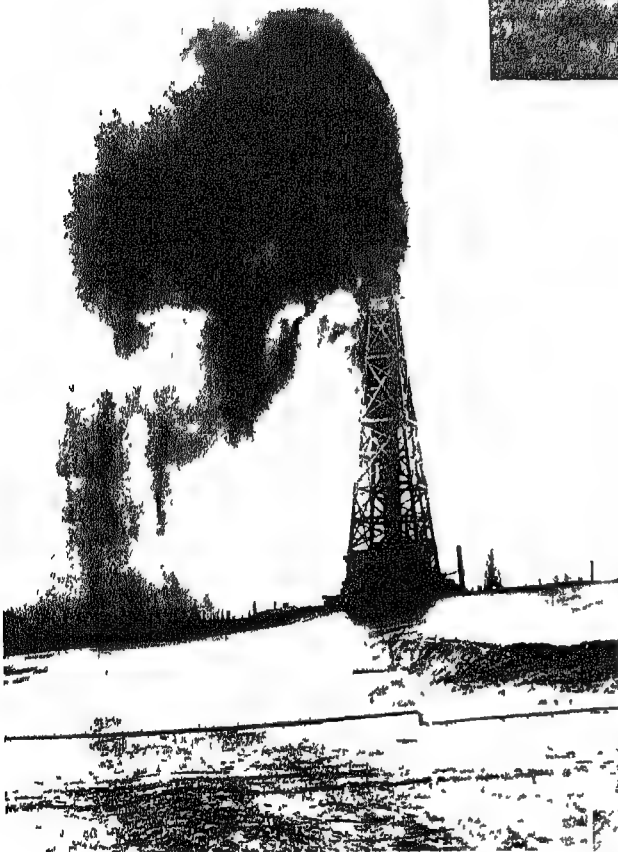
Photo by United States Geological Survey
Courtesy, Scribner Art File

At the *left* is a 1910 gusher at Lakeview, Okla A few hours after this picture was taken, the derrick was blown away

In many small communities, the "kerosene" wagon continued to call with oil for lamps and stoves. The picture *right* was taken in 1909 at Hempstead, N. Y.

Courtesy, The Hempstead Library, Hempstead, N Y

Air News: 1909-1910
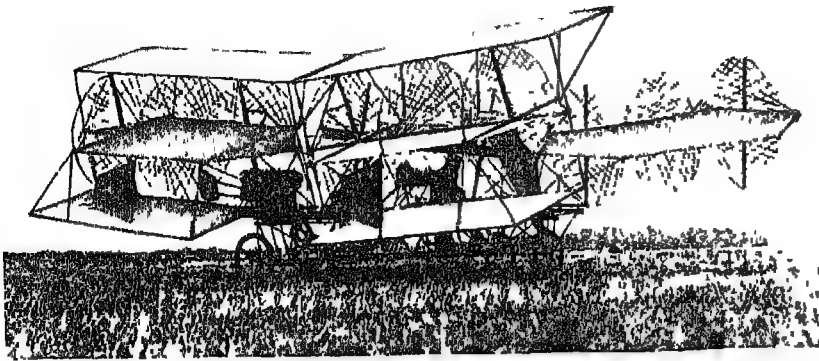
Popular Mechanics, June, 1909 Courtesy, Popular Mechanics, Chicago, Ill

Airplane design was still fluid. The contraption at the *left* was being offered the Army for military use.

At the *right* is an unusual picture of the Wright Brothers in 1910 Orville wears the moustache.

Courtesy, Scribner Art File
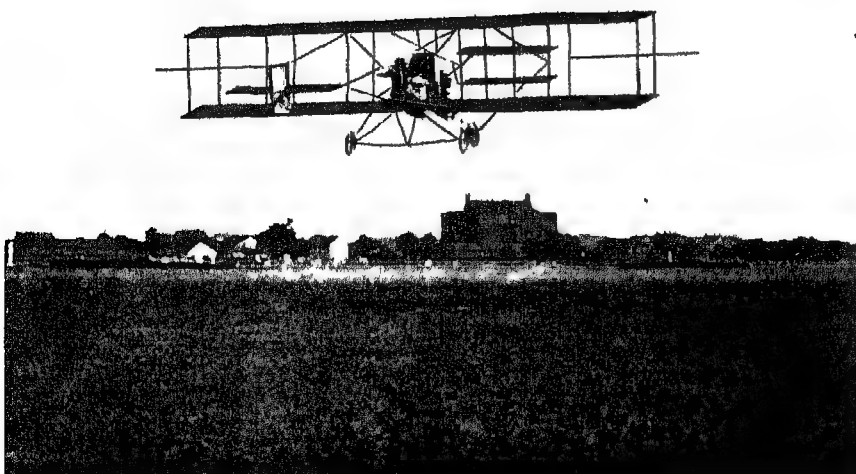
Town & Country, Sept 10, 1910 Courtesy, Town & Country, New York City

Glenn Curtiss was at the controls of the craft shown *left* as an Army officer tested flight marksmanship with a rifle

In Panama

The great ditch across the Isthmus was being pushed on towards completion. Col. Goethals, chief engineer, and Dr. Gorgas, sanitary chief, had had their differences but each had done his indispensable work and the end was in sight. *Below* is shown the site of Gatun Dam as it looked in 1909.

Courtesy, The National Archives, Washington, D C

A year later, this picture of the eastern lock of Gatun Dam was made, a testimony of remarkable progress
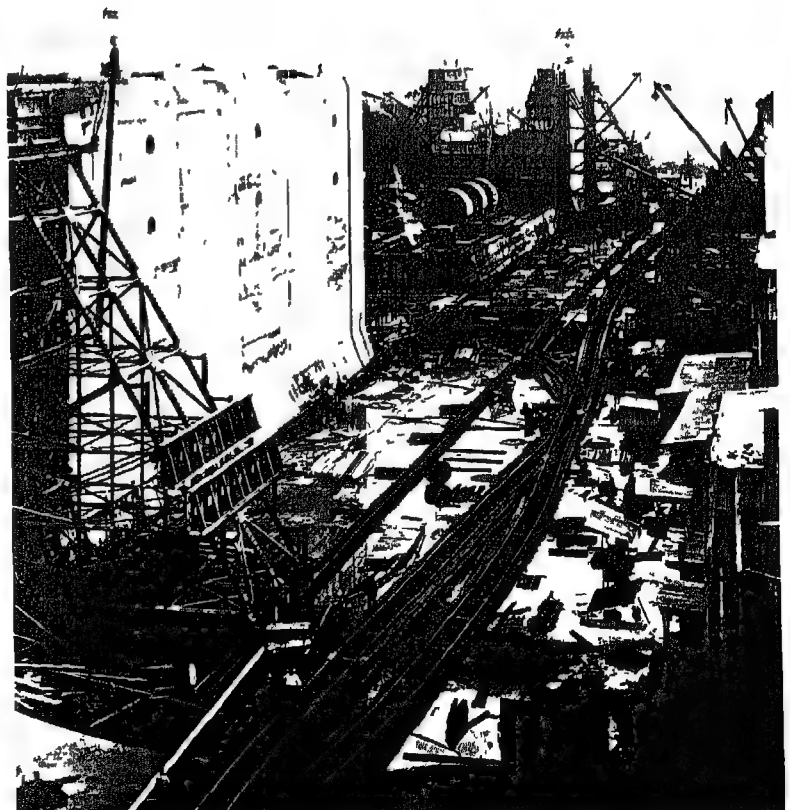
Harper's Weekly, Aug 13, 1910 *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City

Presidential Embarrassment

President Taft was finding the going rather rough. He had been edged and nagged into actions which roused against him the progressive elements of his own party.

Harper's Weekly, May 7, 1910 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

When he opened the 1910 baseball season at Washington (as shown *left*), the effect of the democratic gesture was lost on the public. The popular hero he had succeeded was back in the picture.

Theodore Roosevelt, fresh from a European tour on which he had received unprecedented honors and attention, is seen at the *right* as he greeted cheering New York crowds in June, 1910.

Harper's Weekly June 25, 1910
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

"T. R." lost no time rebuilding his political fences. He is shown *below* greeting his Rough Riders at Central Park Plaza.

Harper's Weekly, June 25, 1910. *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City

9
THE ENGINES OF CHANGE

By 1911, social and political reformers were publicizing their respective blueprints for the celestial city with all the resources of contemporary advertising They had learned the value of "pressure" applied to the recalcitrant

Supporters of suffrage for women claimed that politics would be purged of sin, once the ladies had a vote. The picture at the *right* shows part of the great demonstration of suffragettes on Fifth Avenue, New York, in May, 1911

Harper's Weekly, May 20 1911 Courtesy Harper & Brothers New York City
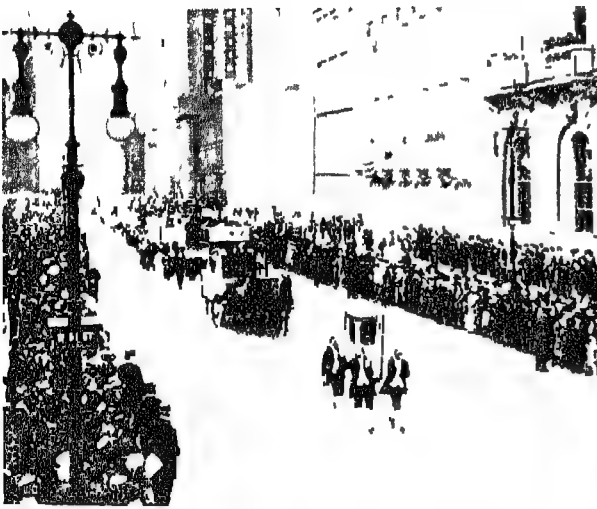
Headed by a band of pipers, the parade featured tableaux like the one shown *above*, wherein were pictured woman's estate and influence down through the centuries.

Less spectacular but just as hard-hitting, the anti-liquor drive of the Women's Christian Temperance Union rolled towards its objective. At the *right*, Mrs. Lillian Stevens, the Union's President, is seen at a Maine rally in September, 1911.

Harper's Weekly, Oct 7, 1911 *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City

Child Labor

Aggressive action to prevent employment of minors in mills and factories began as the public was made to realize the vast number of children so employed. The pictures *below* were given wide distribution around 1912 in support of reform.

The boy shown *above* worked a sixty-hour week in a Virginia glass factory.

The wage for child oyster-shuckers in the Louisiana cannery shown *below* was ten cents a day.
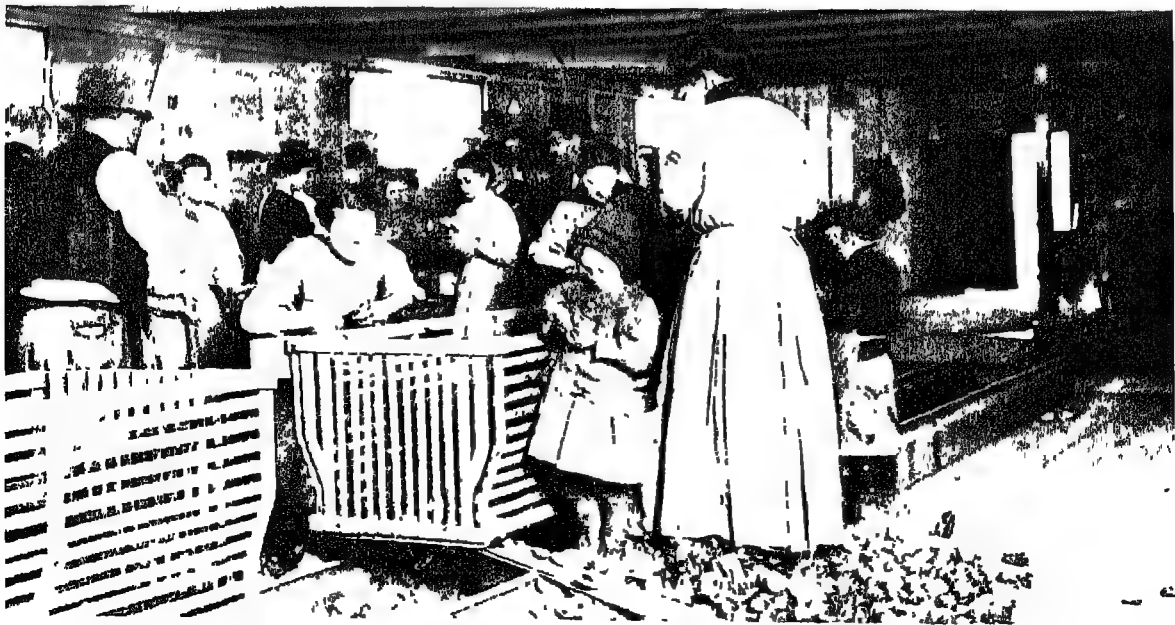
Both illustrations on this page are from the Jacob A Riis Collection *Courtesy*, Museum of the City of New York

Hookworm

Favorable climatic conditions had made the Southeastern states a focus for hookworm—a parasite whose infection reduced industrious, intelligent people to mere shiftless automata. Dr. C. W. Stiles enlisted the aid of the Rockefellers in studying the disease and effectively controlling it.

In the picture *above*, Dr. Stiles is seen in the center by the tent post as he supervises a field clinic at Jacksonville, N. C

To county dispensaries like the one in Lincoln County, N C., shown *below*, people from every part of the back country flocked for a diagnosis and treatment.
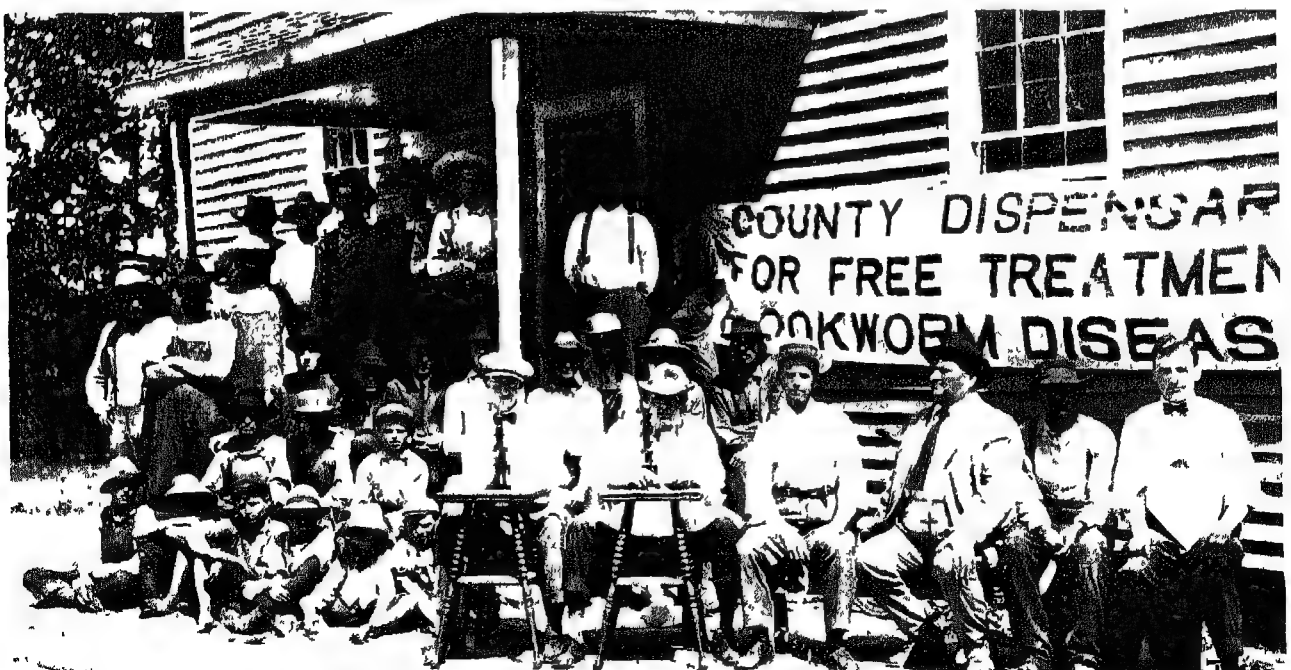
Both illustrations on this page are by the *courtesy* of the Rockefeller Foundation, New York City

The Role of Science

As nature continued to reveal her secrets to American scientists and engineers, the public began to look up to such men just as earlier generations had reverenced powerful preachers and astute statesmen. Science was going to make the better world possible.

The "white plague"—tuberculosis — was successfully fought in new ways. Open-air treatment in the Adirondack Mountains of New York State is shown at the *left*.

Courtesy, Stony Wold Sanatorium, New York City

The first Gyro-Compass (*right*) was installed aboard the *U.S.S. Delaware* in 1911. This navigational necessity operated free of stray magnetic disturbances.
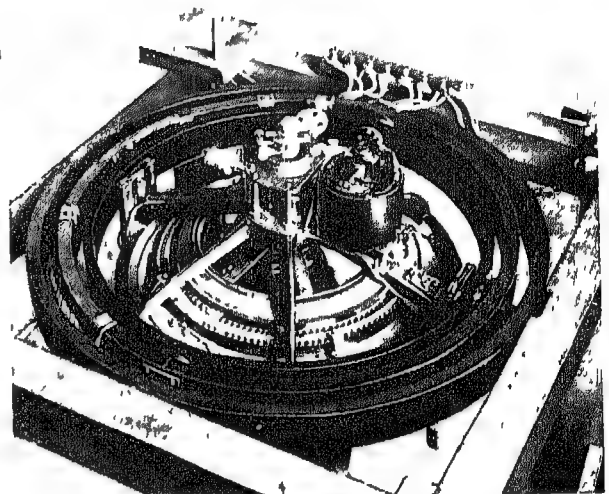
Courtesy, Sperry Gyroscope Company, Inc., Great Neck, N Y

Curtiss's 1911 flying-boat *below* was the prototype of modern seaplanes.
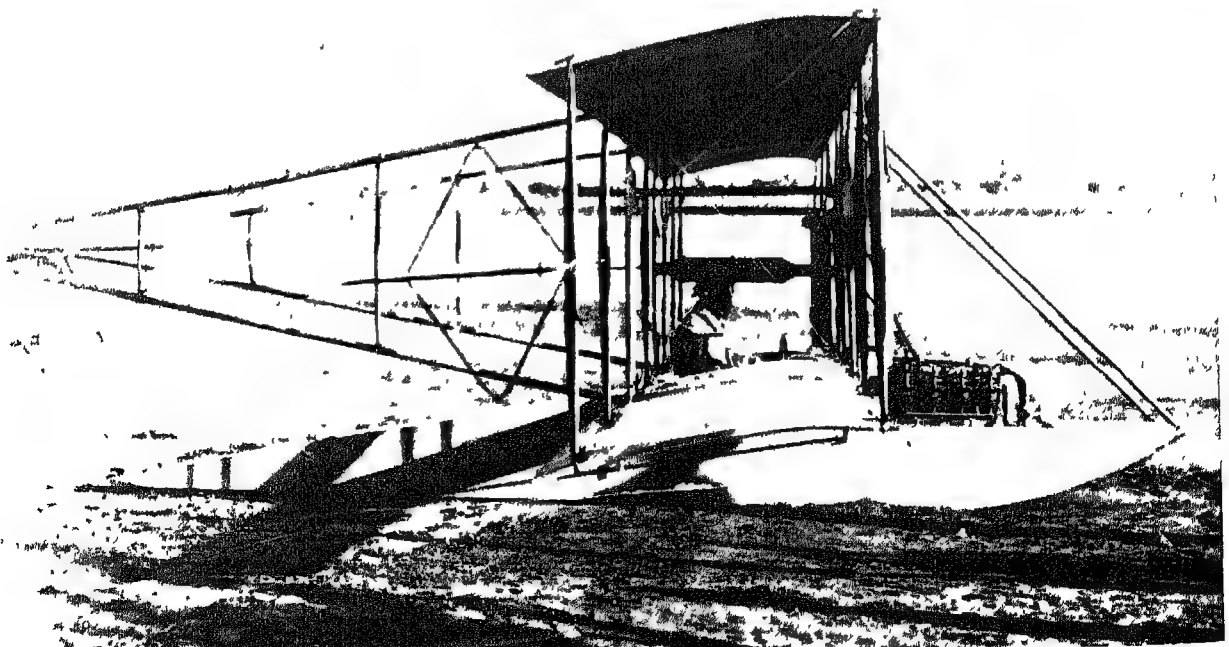
Courtesy, Scribner Art File

Scientific Hobbies

Children played with miniature steel beams and construction parts; with mechanical railroads and chemistry "sets." One of the newest electrical arts, that of radio, was given notable impetus by the experiments of amateur or "ham" operators.
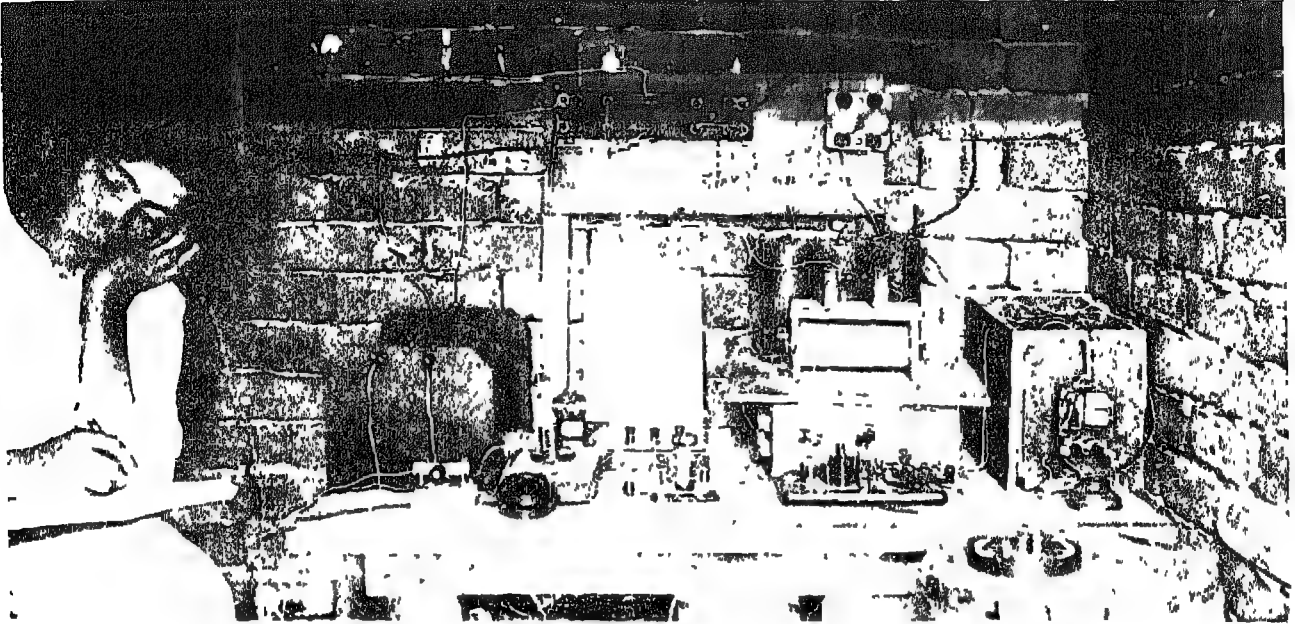
The homemade "rig" shown *above* was typical of thousands of cellar "wireless" stations in 1911.

The amateur station shown *below* could match many professional installations. Note the De Forest audion detector just right of center.
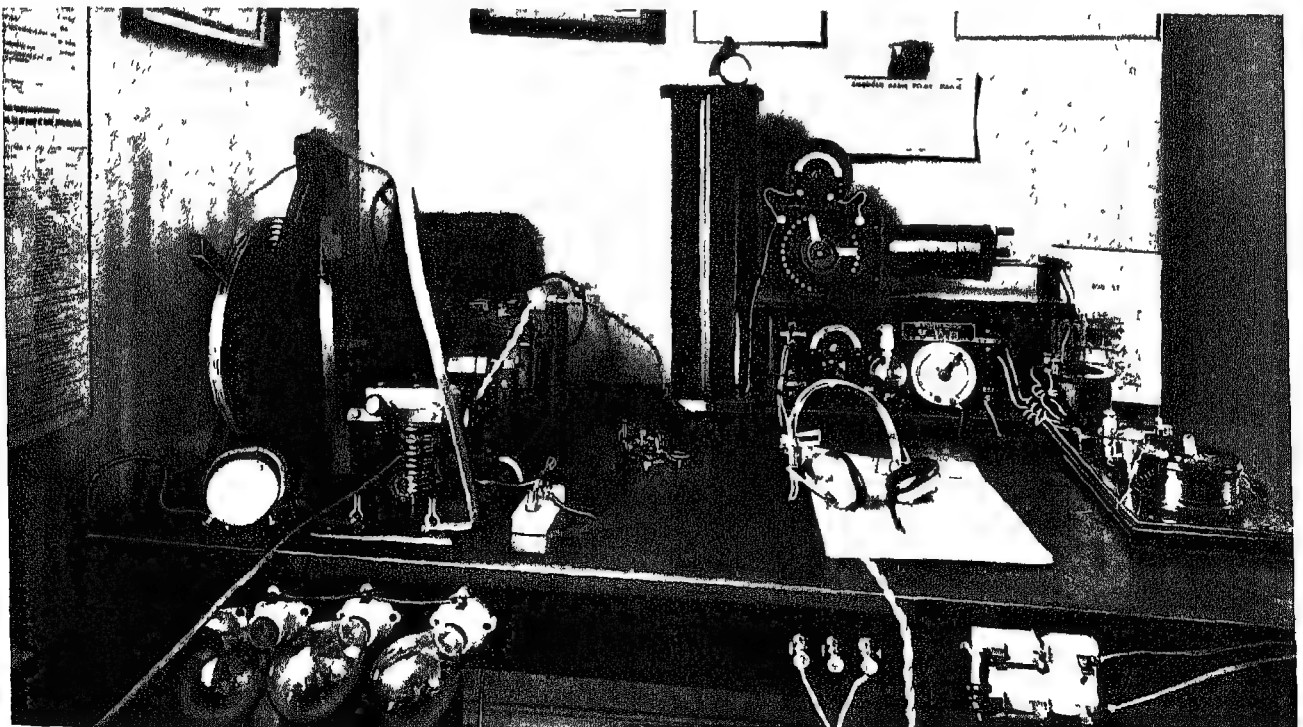
Both illustrations on this page are by the *courtesy* of The American Radio Relay League, West Hartford, Conn

Copper

Copper production rose as electric power, light and heat were more extensively applied in industry and the home

The miners at the *left* were drilling deep under the Montana soil, preparatory to blasting

Back east in New Jersey, the refined metal was produced by an electrolytic process. The picture *below* shows the cathodes lifted from the solution

Both illustrations on this page are by the *courtesy* of the Anaconda Copper Mining Company, New York City
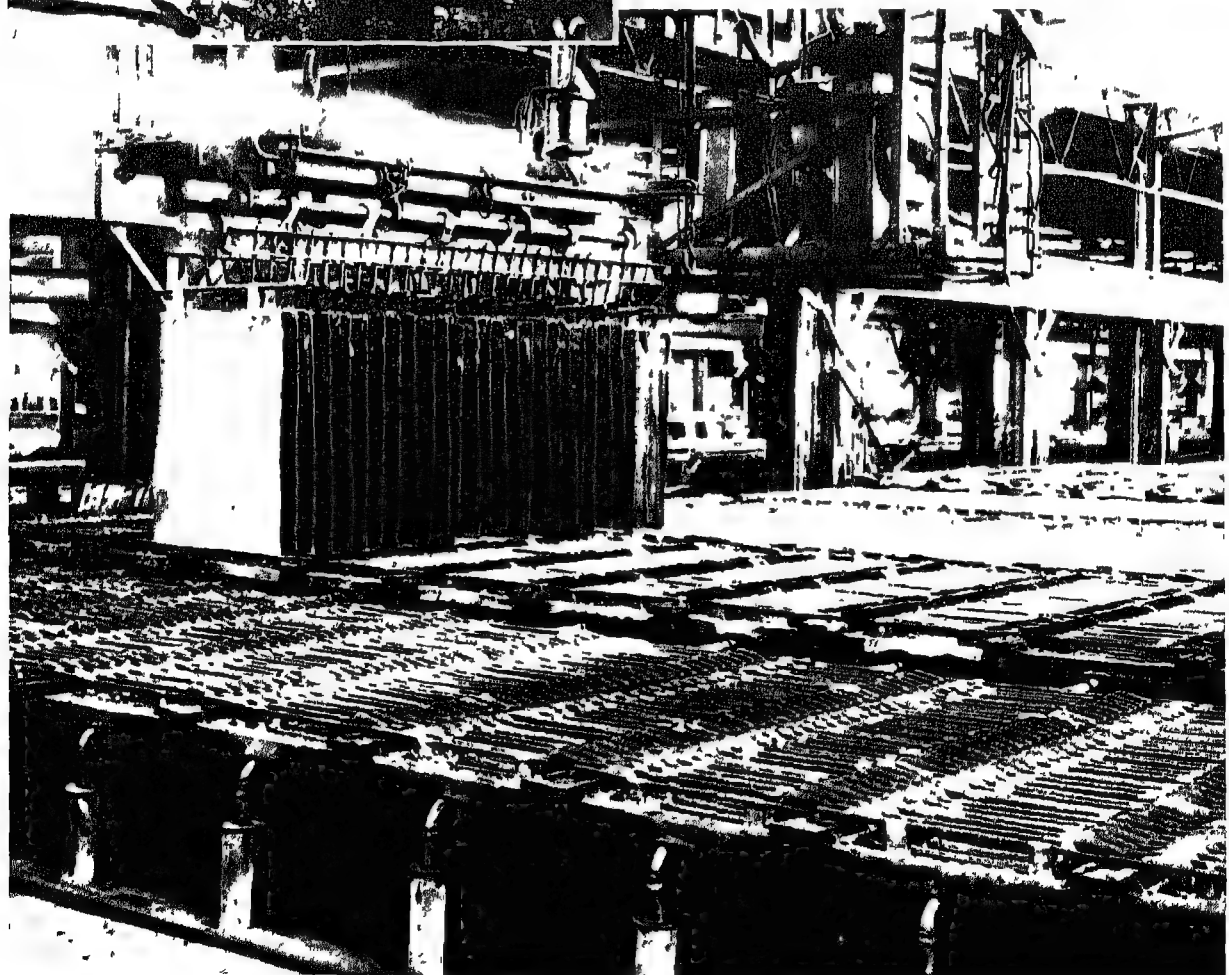
Shipbuilding
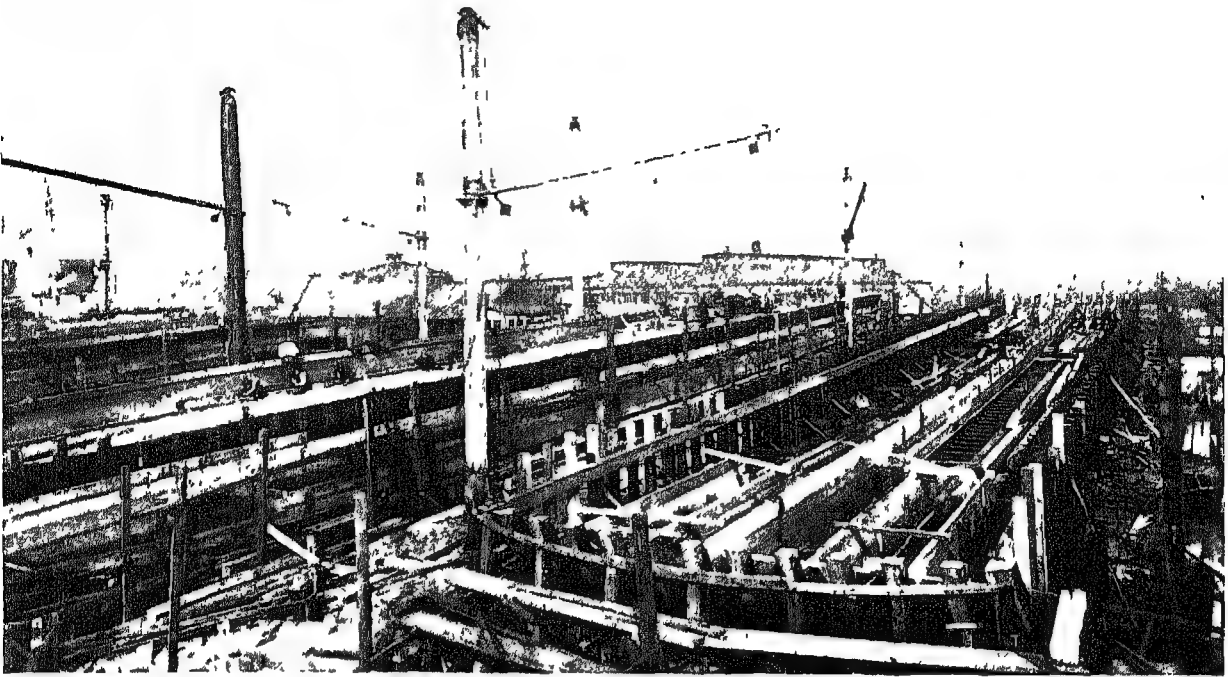
Courtesy, American Car and Foundry Company, New York City

The slow death of what had been a great American industry continued without much hope of revival. So long as American merchants gave their business to foreign ships, shipyards like the one in Wilmington, Del., shown *above* did the best they could with scows and coasting vessels. The thriving commerce on the Great Lakes, however, produced a demand for home-built carriers like the grain ship shown *below*, loading at Duluth, Minn.
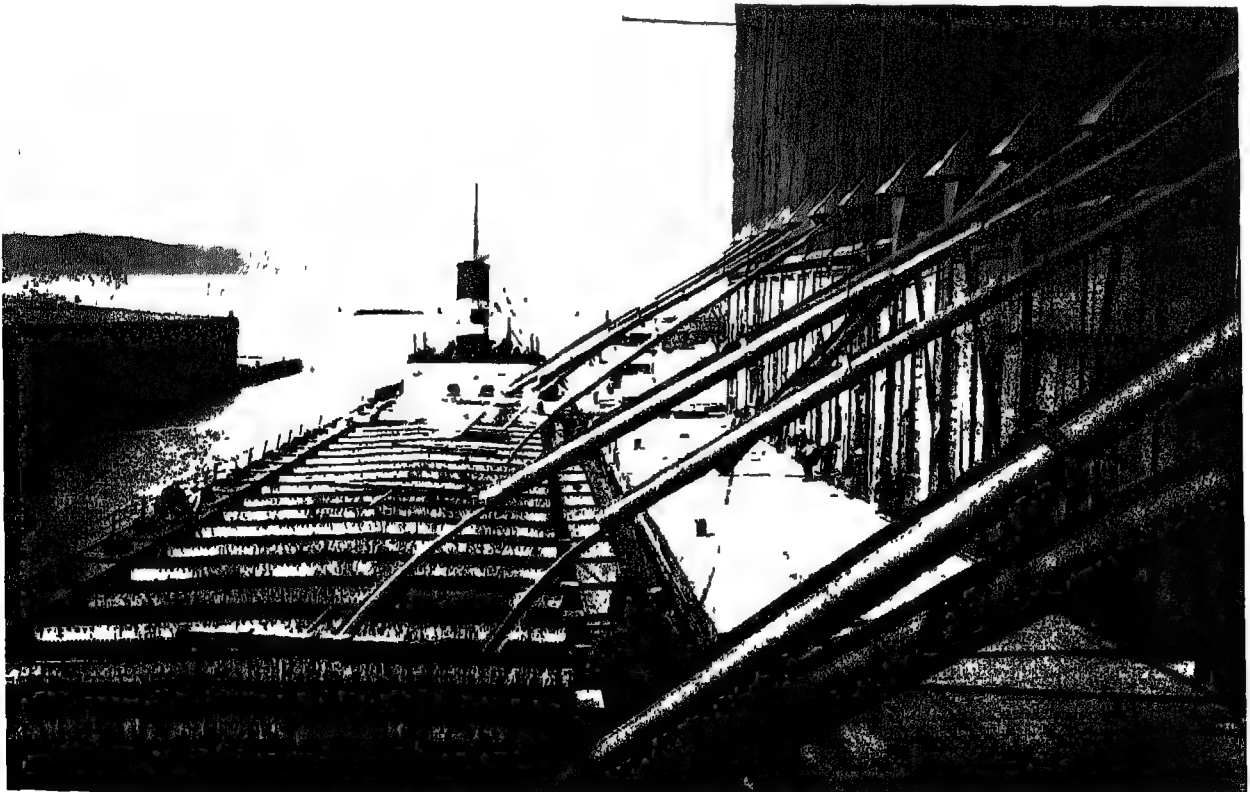
Courtesy, St Louis County Historical Society, Duluth, Minn

Finance

Alarmed by popular clamor against capital, Wall Street men insisted that the primary job of "the Street" was the financing of new business and not the encouragement of speculation. The floor of the New York Stock Exchange is seen at the *left* as it looked in 1911.
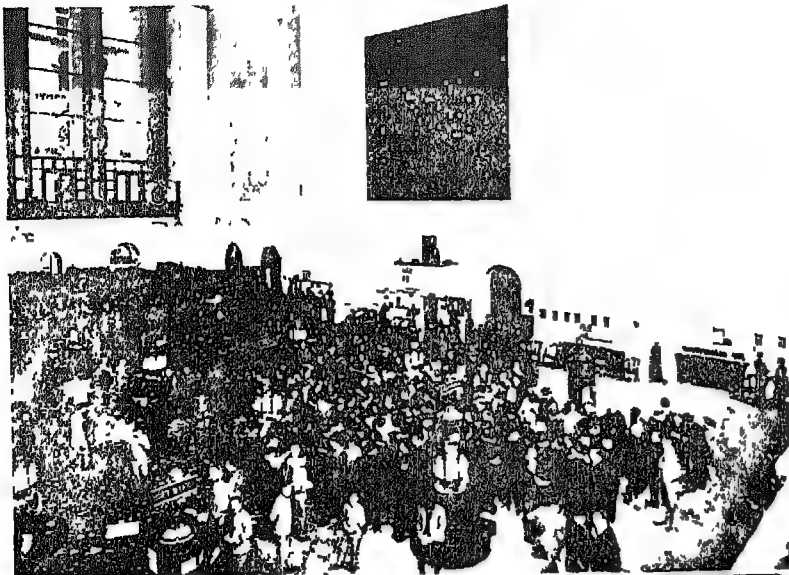
Harper's Weekly, Nov 18, 1911
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

Anti-Trust

Legendary figures of American finance were now anxious and ready to justify their operations to the public. At the *right*, John D. Rockefeller is testifying in one of the anti-trust actions brought against his oil companies.

Courtesy, Underwood Stratton, New York City

Courtesy, Underwood-Stratton, New York City

Labor Trouble

The trial of the McNamara brothers (shown *left* with Samuel Gompers) for the bombing of the anti-union Los Angeles *Times* was a sensation of 1911. The unexpected "guilty" pleas entered by the men gave a severe shock to the forces of labor which had organized to defend them.

The "Curb" in 1912

At Broad Street and Exchange Place, New York City, where of old the merchants of New Amsterdam met for trading, members of the Curb Exchange dealt in securities which the conservative Stock Exchange declined to list. Many of the newer industries were financed on the Curb. In rain, in blizzards or under the burning sun the members had only the middle of the street.
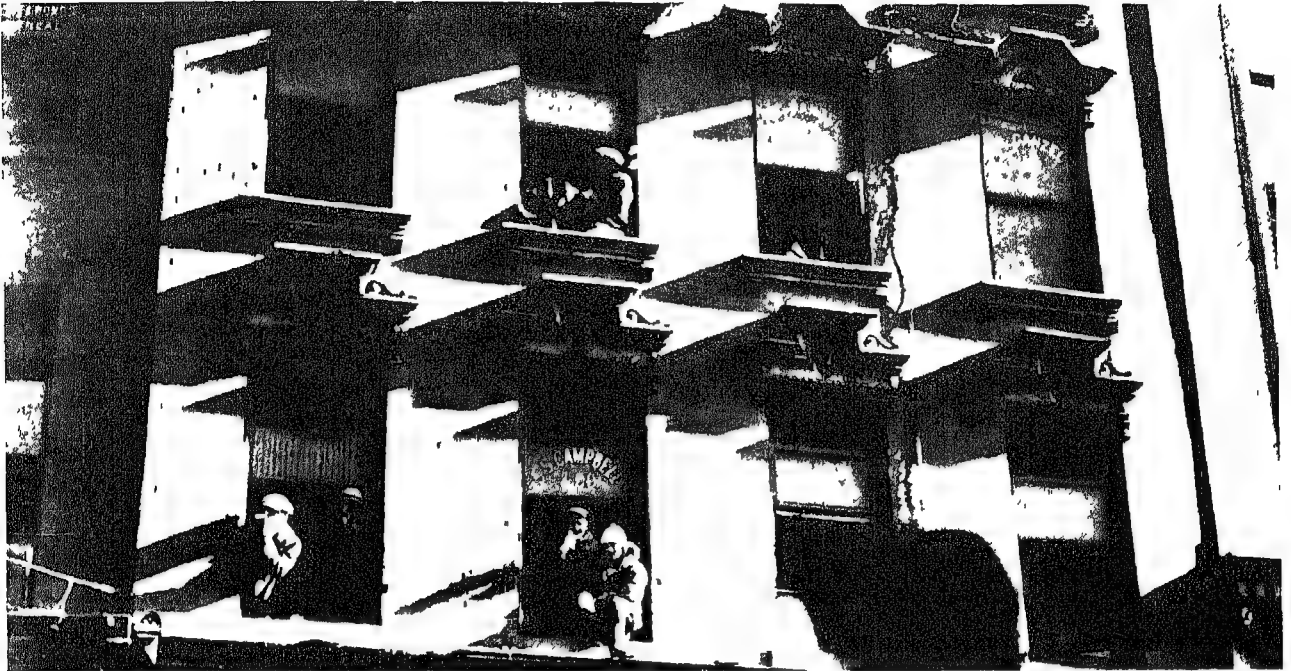
In the window "offices" shown *above*, the clerks of the Curb brokers watched for signals of transactions from the traders in the street *below*.

Both illustrations on this page are by the *courtesy* of The New York Curb Exchange, New York City

Education on the March

Leaders in education felt that they, rather than the men of science or the men of money, could ensure the golden age to come The teacher became the "educator," much as the undertaker became the "mortician."
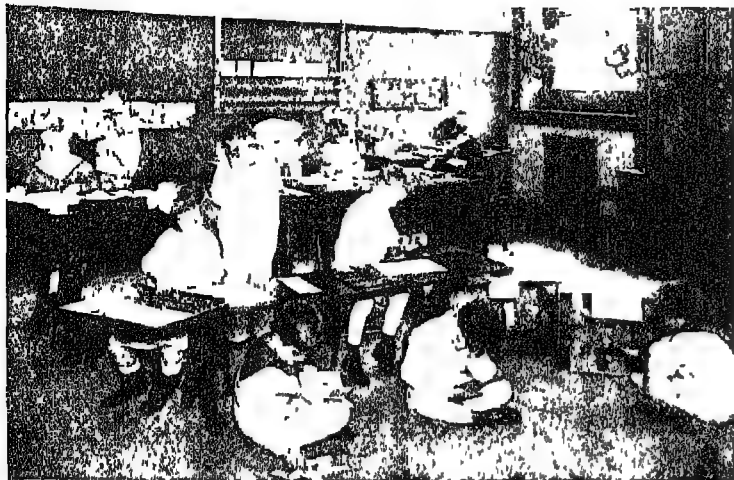
The old disciplines of learning were replaced by the "motivated" lesson In the picture at the *left*, the children are learning to read and spell by printing labels for their toys.

Prospective teachers of the class of 1914 at a Pennsylvania normal school are being taught to play in the picture at the *right*.
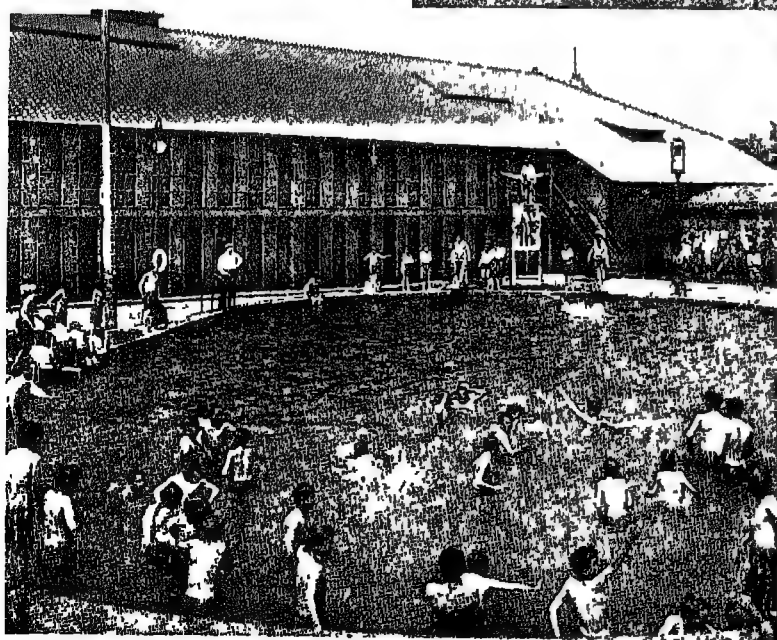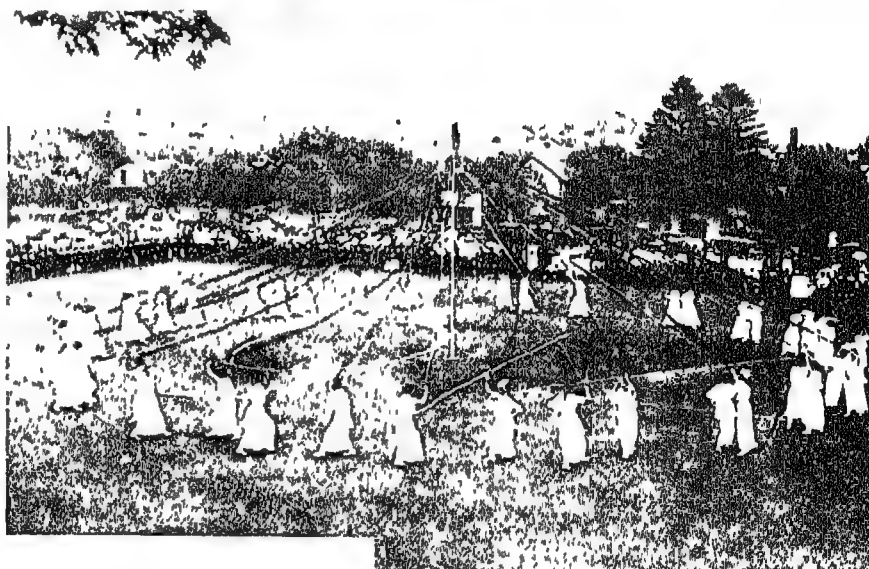
Less time was devoted to study and more to development of the child's physical equipment At the *left*, Chicago school children are enjoying an afternoon in a public swimming pool.

All illustrations on this page are from Louis W Rapeer, *Teaching Elementary School Subjects* 1917

The Colleges

The fervor of change and uplift which worked in educators on the elementary and secondary levels was not experienced by their brethren in the colleges, nor was it required of them.
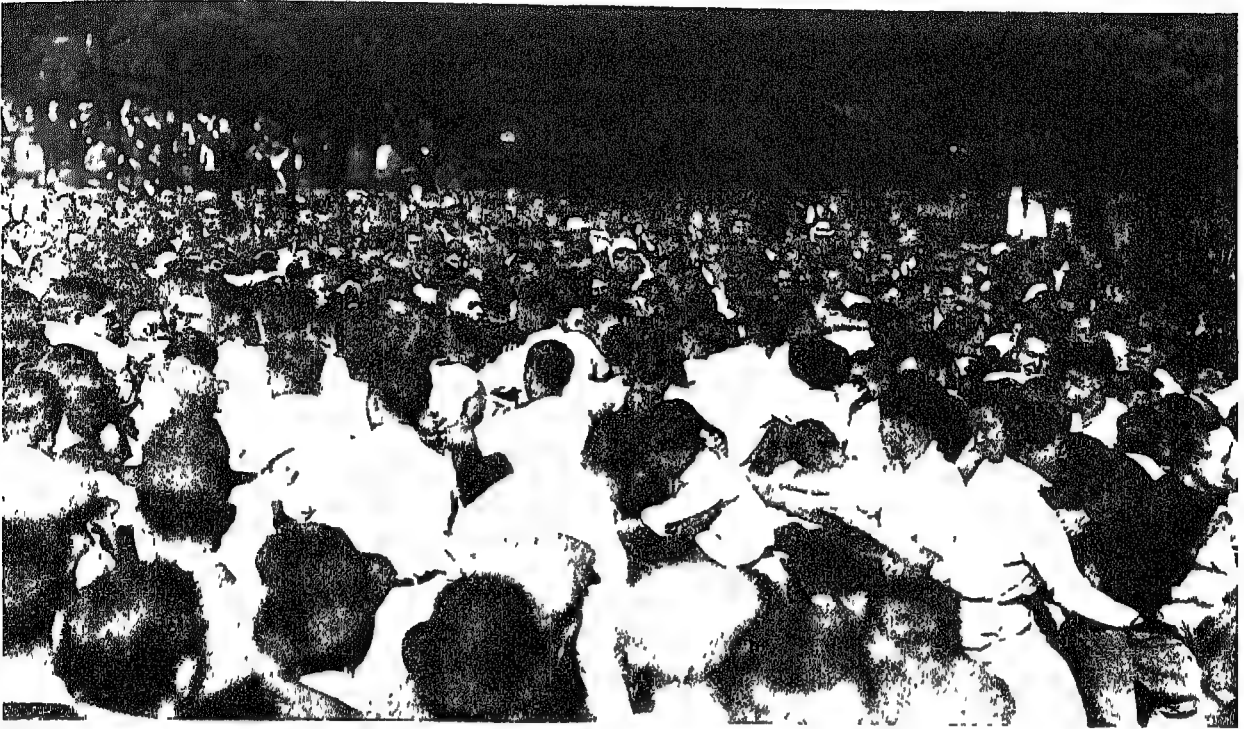
The undergraduate of 1911 gloried in elemental sport like the "class rush" shown *above* When he occupied the typical room shown *below*, his thoughts did not as a rule dwell on the faults of the curriculum. He kept his distance from the Faculty and expected it to reciprocate.

Both illustrations on this page are by the *courtesy* of Princeton University Library and R C Rose & Son, Princeton, N J

The Colleges (*Continued*)

The practical sex, however, took a more serious view of college. The Purdue girls of the class of 1914 at the *left* were preparing for scientific careers or for matrimony

Over tea and homemade chocolate cake they relaxed on occasions like the dormitory party shown *right*

Not the least important activity of any young woman at college was "dating." In the picture at the *left*, the girls in the background were not being particularly helpful.

All illustrations on this page are by the *courtesy* of Purdue University, Lafayette, Ind

Extremes in Art

Through 1911 and 1912, John Sloan continued to produce moody *genre* studies of New York life like "Six O'Clock" at the *right* and "McSorley's Bar" *below*.
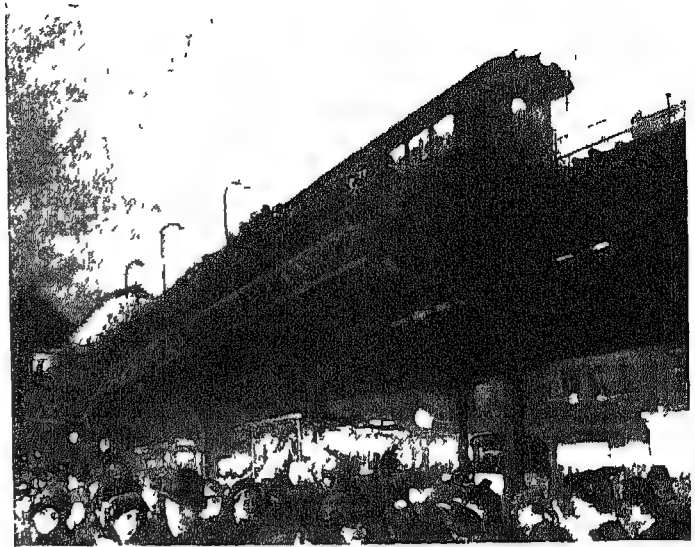
Courtesy Phillips Memorial Gallery, Washington, D C

Courtesy, Detroit Institute of Arts, Mich

But the layman "who knew what he liked" was more pleased with a painting by Paul Chabas — the study of "September Morn" at the *right*, whose popularity was immediate in 1912 — and thereafter

International Studio August, 1912

Motors and Movies

The change in American standards of sexual behavior, brought about by the dark anonymity provided in movie theaters and by the freedom of environment which the automobile afforded, belongs to a later date.
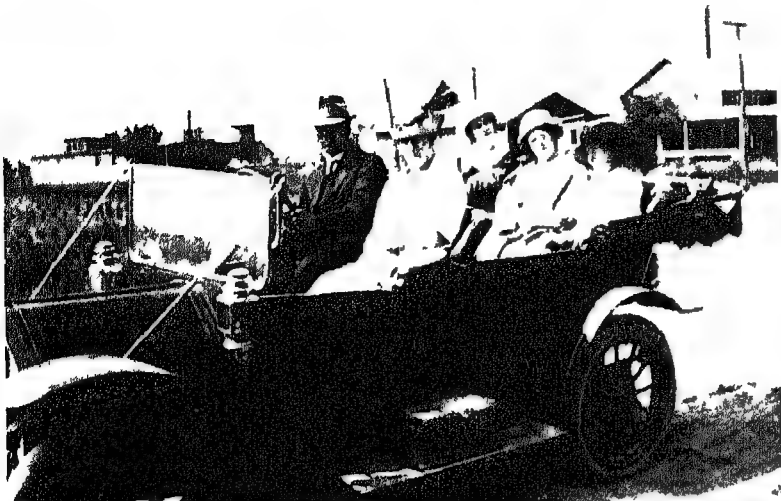
Courtesy, Mrs Frank Ewing, Grand Rapids, Mich

In 1912, when this Grant, Mich., family went for a ride, father drove the car. It was his hobby; and it stayed home nights.

Town & Country, Jan 6, 1912
Courtesy, Town & Country, New York City

Electric broughams were recommended for ladies because "the most delicate frame would not be jolted and the slow, comfortable pace allowed a leisurely study of the scenery"

In the picture *right*, Annette Kellermann is seen getting into a Rauch and Lang electric.
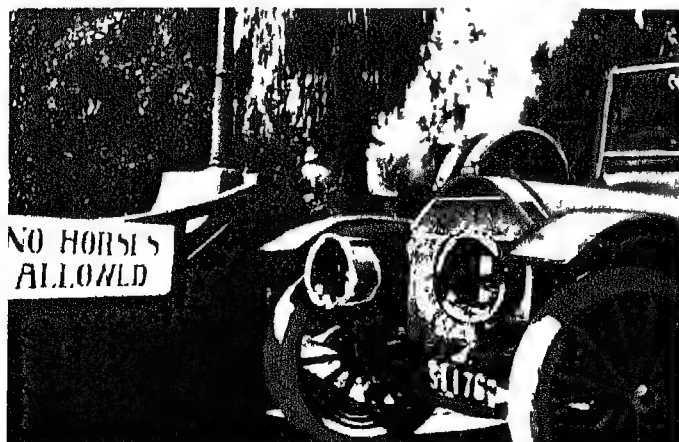
Town & Country, June 22, 1912 Courtesy, Town & Country, New York City

In 1912 some Eastern summer resorts still banned the use of automobiles, but, as the picture at the *left* indicates, a progressive Los Angeles country club took the opposite tack.

Motors and Movies *(Continued)*

The motion picture, regardless of the precincts where it might be shown, was coming of age as mature entertainment. The still picture *above* is a scene from "Queen Elizabeth," starring Sarah Bernhardt and Lou Tellegen This French import, shown here in 1912, was the first "feature" picture and had great influence on the domestic product.

Mary Pickford and Lionel Barrymore appear in the still *below*, a scene from D W. Griffith's 1912 picture "The New York Hat."

Both illustrations on this page are by the *courtesy* of the Film Library, The Museum of Modern Art, New York City

Frontier Turns Inward

James J. Hill stepped forward proudly to address the crowd on completion of his Great Northern line to Bend, Ore. (*left*), but in 1911 the empire-builder was already an anachronism. The pioneer days were done The popular mind dwelt less on producing great works and scheming great schemes than on diverting to reform and reconstruction the energies that had peopled the wilderness.

No lands were left which had about them the mystery and hopefulness which could draw men and women in search of fortune across half a continent. On the Montana homestead *below*, there was only the prospect of a hard and lonely struggle for bread.

Both illustrations on this page are by the *courtesy* of the Great Northern Railway Company, St Paul, Minn

Sport

Correct management of the reins and position of the hands were stressed in recommending to 1912 ladies the smartness of a four-in-hand turnout. (*Right*).

Belle Beach, *Riding and Driving for Women* 1912

The costume at the *left* was considered *chic* for young horsewomen when they rode astride.

Below is a group of winter sportsfolk setting off across the New Hampshire hills. Popular magazines of 1912 commented on the growing vogue of winter sports and winter holidays

Belle Beach, *Riding and Driving for Women* 1912

Town & Country, Jan 13, 1912. *Courtesy*, Town & Country, New York City

Girls

Courtesy, Chicago Lawn Historical Society and Chicago Public Library, Ill

The little Chicago girl at the *left* included her family in the picture. Note the ornate style of beauty featured in dolls of the period.

The photograph of a Chicago girls' club *below* was also taken around 1911.

Courtesy, Chicago Lawn Historical Society and Chicago Public Library, Ill

Sport clothes for girls were not yet completely functional. As the 1912 picture *below*, from Springfield, Ill., indicates, they could be quite decorative.

Courtesy, Mr Myron F Henkel, Springfield, Ill

Fancy Dress

Some historians were of the opinion that the inhibited instinct of the American male for gaudy plumage lay behind his love of fraternal society regalia.

At the *right* is shown the Carson City, Nev., Lodge of Eagles as pictured in their dress uniforms, sometime in 1911.
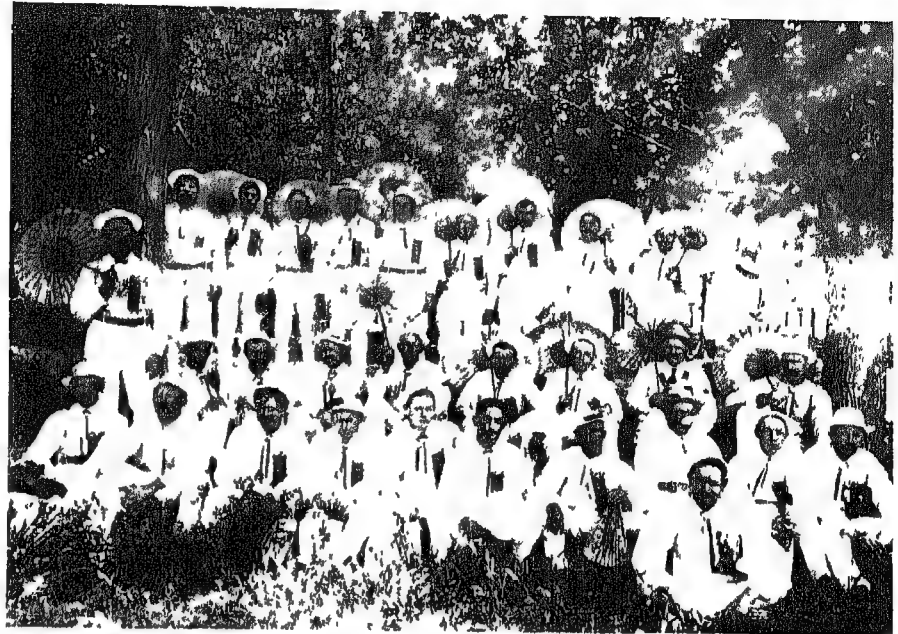
Courtesy, Nevada State Historical Society, Reno

Militia units which could offer full-dress outfits like those of the Maryland regiment shown *below* in 1911, had no trouble filling their companies.
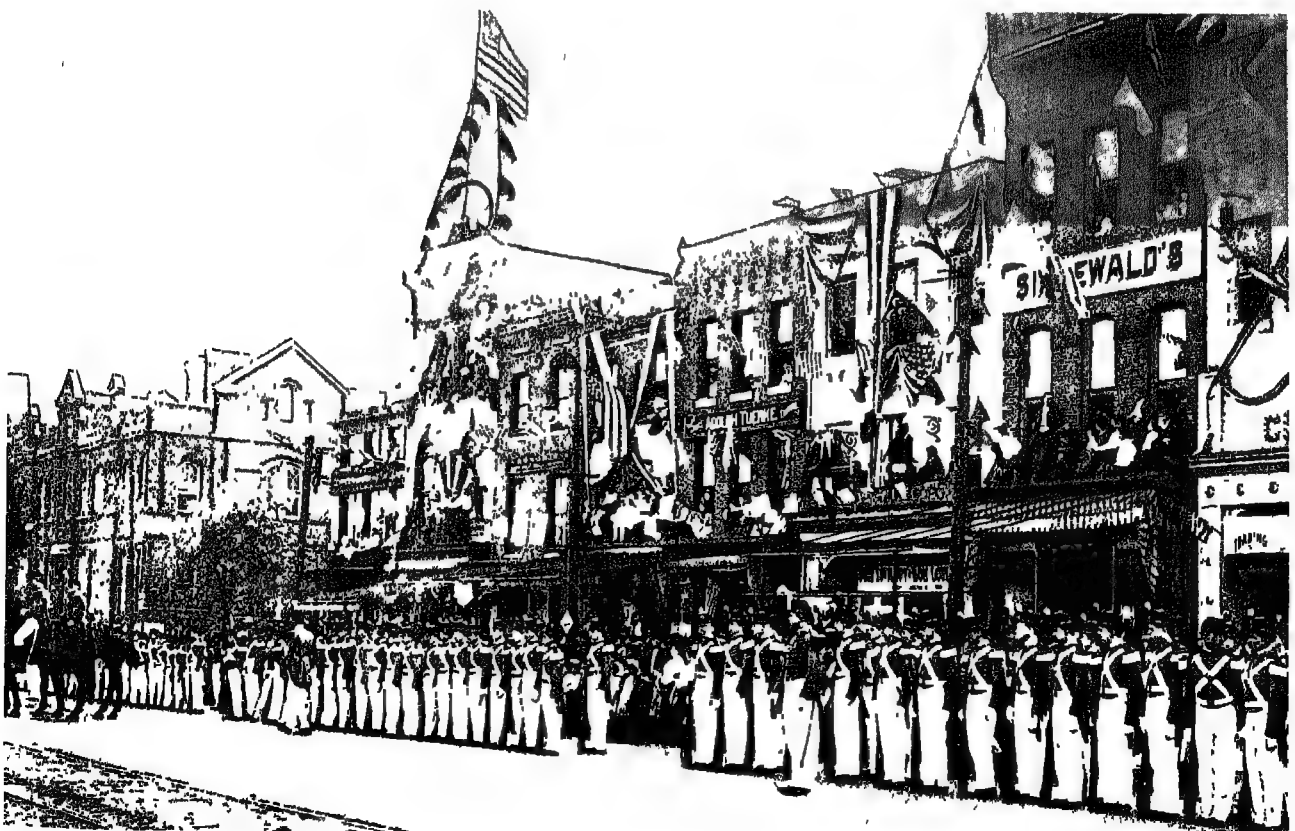
Courtesy, The Municipal Museum of the City of Baltimore, Md

Turned Out to Graze

The end of the road for many fire-horses came in 1911. Most of the larger cities motorized their departments or planned to do so.

Harper's Weekly, Apr 1, 1911 Courtesy, Harper & Brothers, New York City
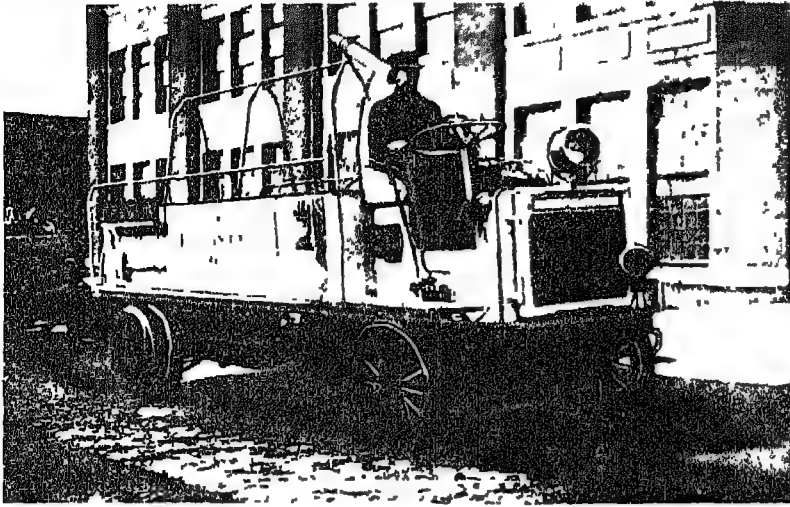
New York City put "high-pressure" hose trucks (*left*) in service.

Courtesy, Mack International Motor Truck Corporation, New York City

The first motor-driven hook-and-ladder truck was the 1911 Mack at the *right*. The builders were also advertising the motor-pumper shown *below*.
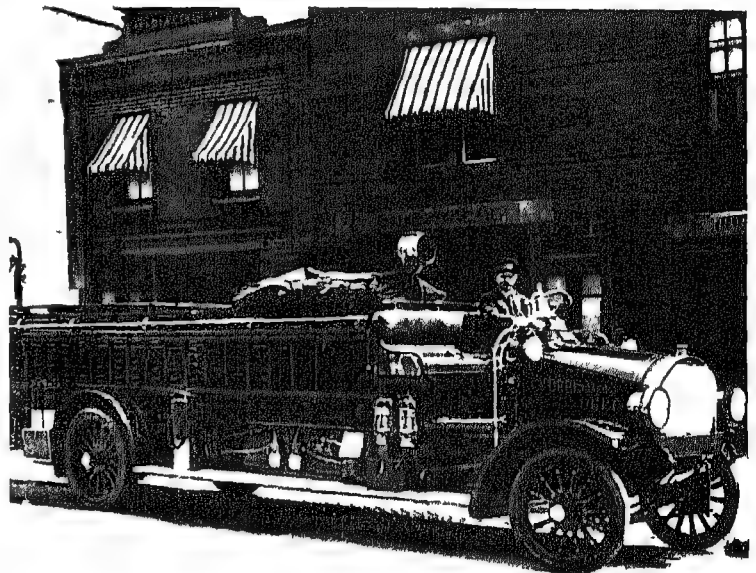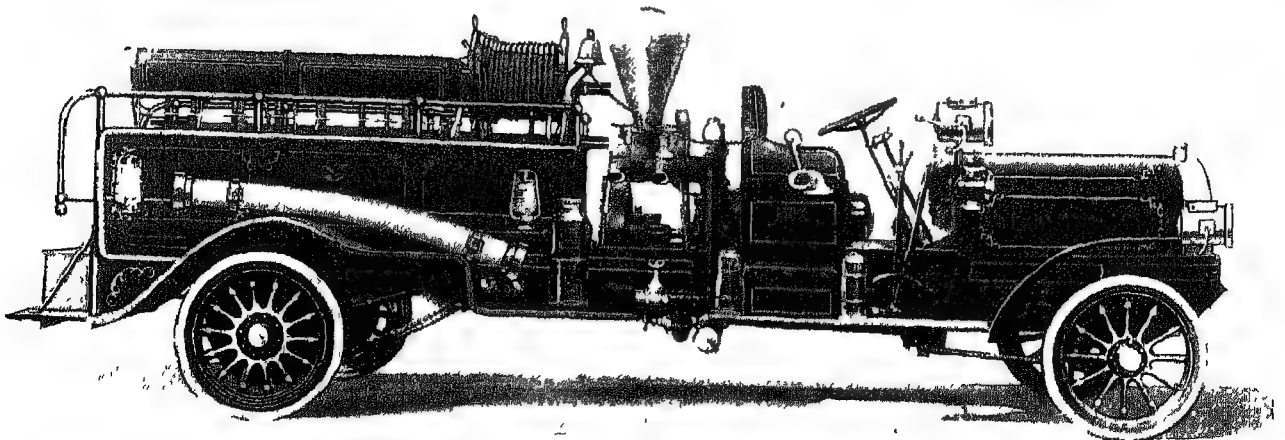
Courtesy, Mack-International Motor Truck Corporation, New York City

The City as Symbol

The nation's ambitious youth thronged to the restless and opulent cities. This was no longer a natural process whereby those who were unprovided for in smaller communities were forced to adventure. In these years of change, the cities symbolized a larger and freer way of life—the rich peace of the future for which man would not have to strive.

Renascent San Francisco's Market Street is seen *right* as it looked in 1911.
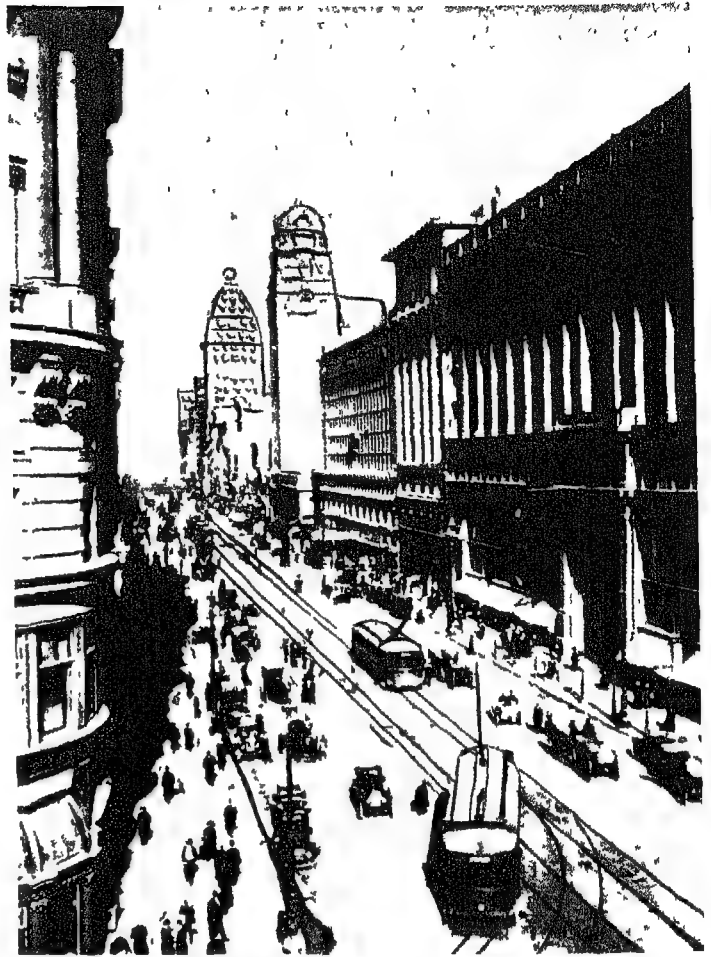
Harper's Weekly, Mar 2, 1912 *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City

Richmond, Va., as a true city of the newly-industrial South, bragged of its "skyline." Contrast the 1912 view *below* with the picture on page 29.
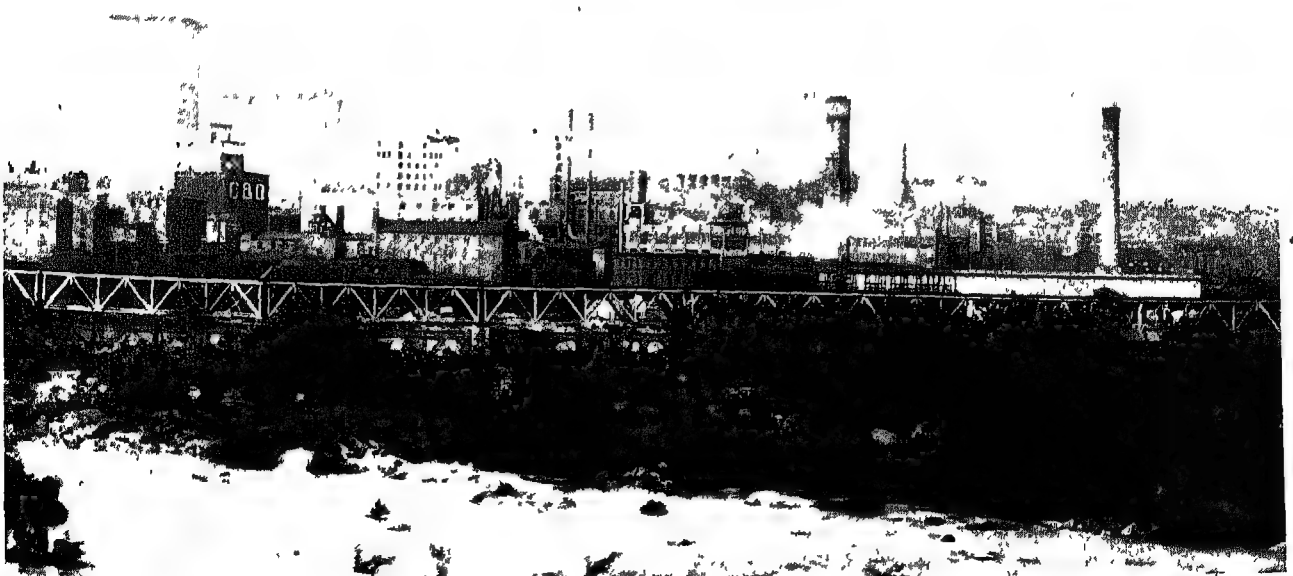
Courtesy, The Valentine Museum, Richmond, Va

In the News: 1912

Harper's Weekly, Feb 10 1912
Courtesy Harper & Brothers New York City

Early in the year, striking textile workmen at Lawrence, Mass., carried flags up against the bayonets of the militiamen who protected strikebreakers at work But the presence of I. W W. organizers lost the strikers popular support.

Below, President Taft is seen signing the proclamation that made Arizona the forty-eighth state—on St Valentine's Day
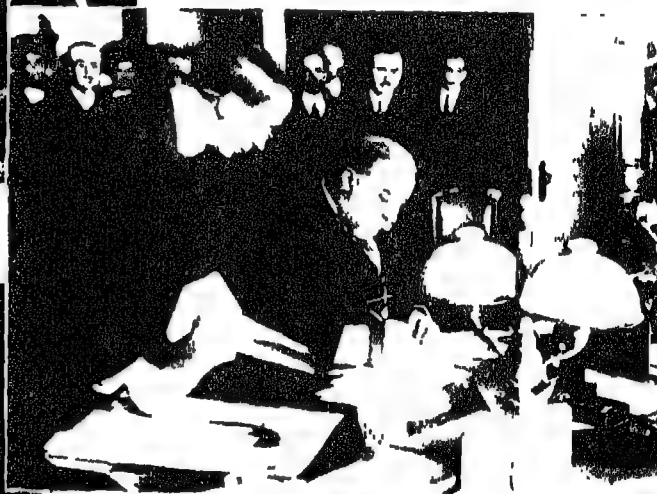
Harper's Weekly Mar 2, 1912
Courtesy Harper & Brothers, New York City

Courtesy, Brown Brothers, New York City

New dance steps were improvised to suit at once the ragtime music newly come up from the honky-tonks and barrel-houses, and the hobble skirts which were the vogue. At the *left*, a couple are pictured in one of the positions of the "Turkey Trot."

Titanic

Early in April, 1912, the unsinkable luxury liner *Titanic* sailed from Liverpool on her maiden voyage. She is seen at the *right* in her last photograph.

Four hundred miles southeast of Cape Race, she struck an iceberg at twenty-one knots. Her hull was slit open from bow to stern. Three hours later she went down.

At the New York pier, the crowds shown *left* waited anxiously for news, and for the rescue ship *Carpathia* which had arrived at the scene some hours after the disaster.

As the *Carpathia* was worked up to the pier (*right*), her boats still hung from the davits. But of *Titanic's* 2,223 souls, only 705 had been rescued
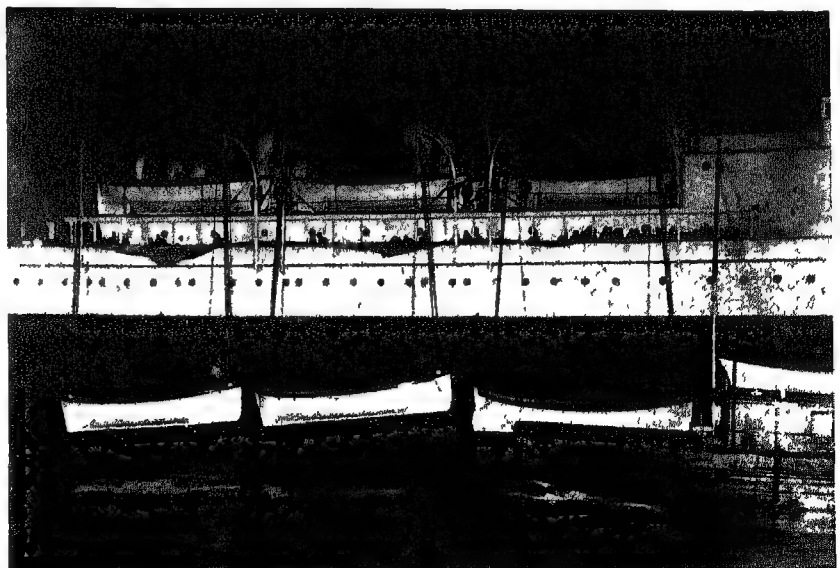
All illustrations on this page are by the *courtesy* of Underwood-Stratton, New York City

Gunmen

For more than two years the newspapers featured the repercussions of the Rosenthal murder. On July 15, 1912, Rosenthal, a gambling-house proprietor in New York City, appeared before District Attorney Charles S. Whitman and swore that Police Lieutenant Charles Becker (*left*) was his partner and cover-up man. A few hours later, four gunmen shot Rosenthal dead in front of the Metropole Hotel on 43rd Street near Broadway. Becker was convicted as an accessory to the murder and was executed after several futile appeals.

The "gunmen," a new type in American crime, were also convicted and executed. They are seen *below* on their way to Sing Sing Prison in November, 1912. Reading right to left, obliquely back, starting with the man holding the cigarette: Lefty Louie, Dago Frank, Gyp the Blood, Whitey Lewis.

Both illustrations on this page are by the courtesy of Underwood Stratton, New York City

Three Way Election

The Republican Party approached convention time in a hopeless fight over the interparty issue of "progressivism" versus "stand-pattism"—reform or reaction. Theodore Roosevelt had determined to block renomination of his erstwhile friend, President Taft

Progressive Republicans favored Senator Robert LaFollette of Wisconsin (at *right*, with Taft) It was generally believed that Roosevelt would not run. But in February, 1912, he changed his mind and entered the battle against the "stand-pat" bosses of his party. "We stand at Armageddon and we battle for the Lord," said he, but the convention bosses at Chicago (*below*) held the line for Taft.

Courtesy, Scribner Art File
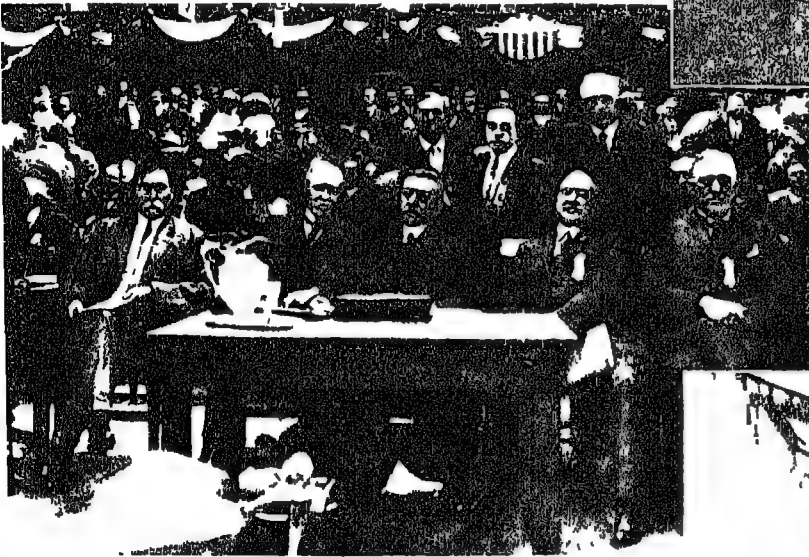
Harper's Weekly June 29, 1912
Courtesy Harper & Brothers New York City

In August, 1912, at another Chicago convention pictured *right*, the outraged and "steam-rollered" Progressive Republicans formed a new party and chose Theodore Roosevelt as its nominee.
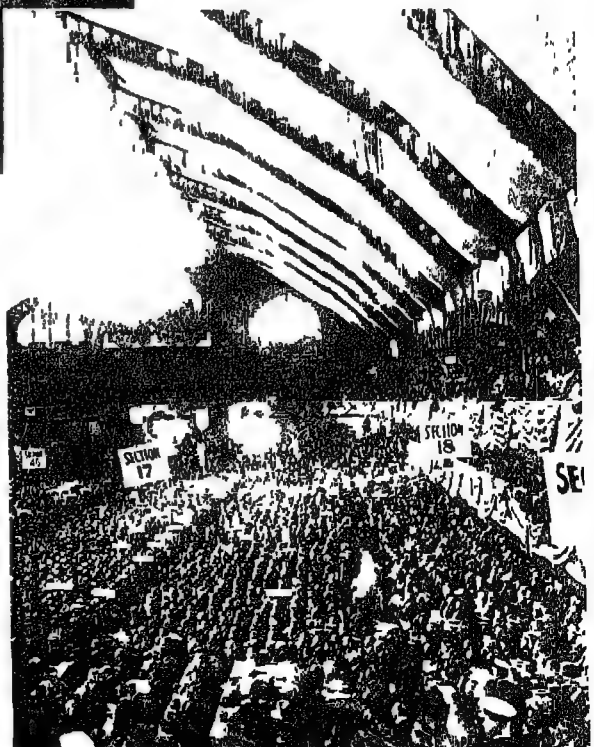
Courtesy Brown Brothers, New York City

Three Way Election *(Continued)*

"Strong as a Bull Moose" was a favorite simile of the Progressive candidate, and the figure of that animal joined the donkey and the elephant as a party symbol.

Courtesy, Brown Brothers, New York City

When news of his nomination was brought to T.R. at his Long Island home, he responded with the characteristic smile shown at the *left* *Below* is the Bull Moose emblem as used on a 1912 campaign badge.

Courtesy Roosevelt Memorial Association, New York City
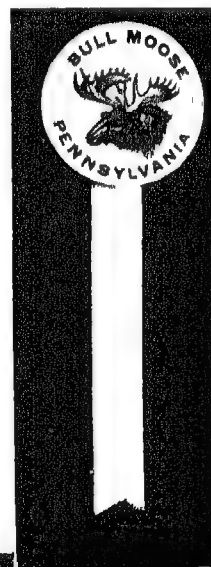
The "New Freedom"

The Democrats at their Baltimore convention had found an exciting candidate. The crusading Governor of New Jersey, and former President of Princeton University, backed by Bryan and a re-invigorated party, revealed great campaigning gifts. Woodrow Wilson struck hard at the forces of privilege in addresses like the one pictured *below*, made before an Iowa college group.

Harper's Weekly, Sept 28, 1912 *Courtesy*, Harper & Brothers, New York City

Scholar in Politics

Taft's chances had been effectually killed by Roosevelt's pre-convention sneers and accusations. But in Wilson, the Democrats had a candidate who out-Roosevelted Roosevelt. People listened to him and believed him, as he carried his gospel of the "New Freedom" to great meeting halls and to little corner groups like the Minnesota people shown *below*.
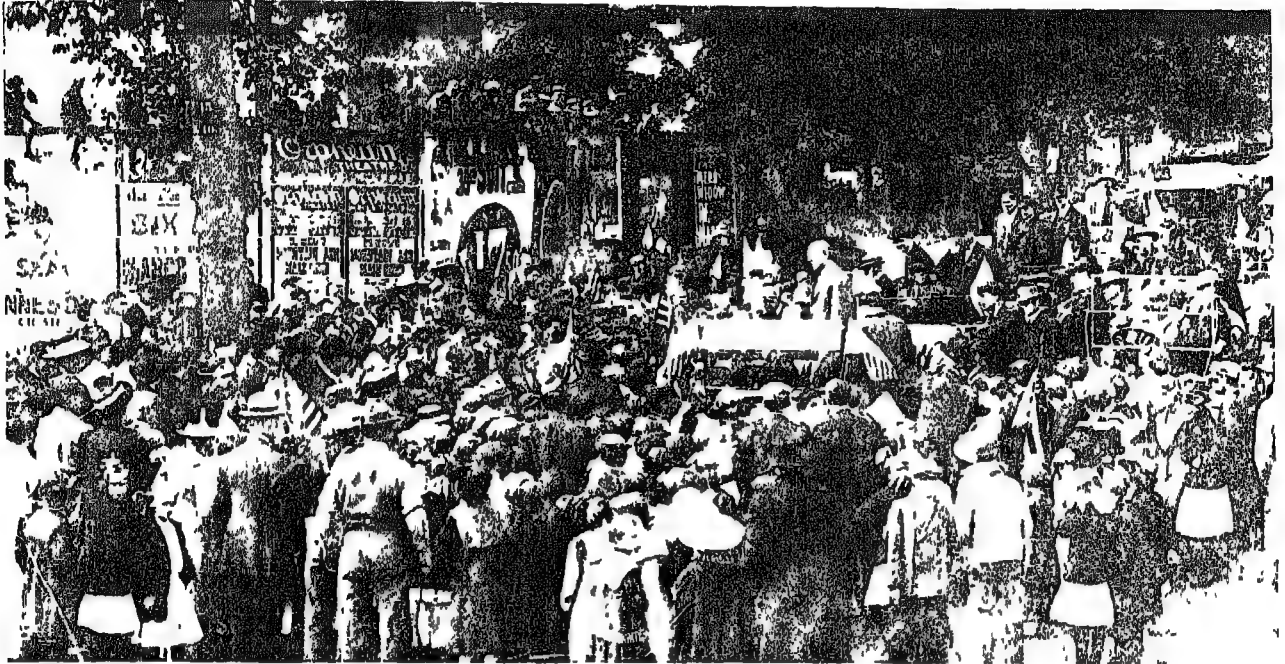
Poised and serene, Wilson with his gift for phrases, painted bright word-pictures of a better world. He gave a vision to the man in the street. He was confident of victory as he cast his vote in a Princeton, N J., fire house on Nov. 5, 1912.

Both illustrations on this page are by the *courtesy* of Underwood-Stratton, New York City

10

THE NEW FREEDOM

Woodrow Wilson triumphed over a divided Republican Party in 1912. The electoral vote ran 435 for Wilson, 88 for Roosevelt and the Progressives; 8 for Taft.

Harper's Weekly, Nov 9, 1912
Courtesy, Harper & Brothers, New York City

The aims of the new administration were synthesized in the phrase, "The New Freedom," originally the title given the new President's public statements when they appeared in book form, and by 1913 accepted as a slogan for political action against monopolies and greed. In many minds the new freedom extended far beyond political and economic ends, and foreshadowed an American Utopia for body and spirit.

Left, Woodrow Wilson, twenty-seventh person to be President of the United States.

Ex-President Taft wore a pleased smile as he rode to the inauguration with President Wilson, as shown *right*.

"This is not a day of triumph; it is a day of dedication," said the new President, "we shall restore, not destroy."

Courtesy, Underwood-Stratton, New York City
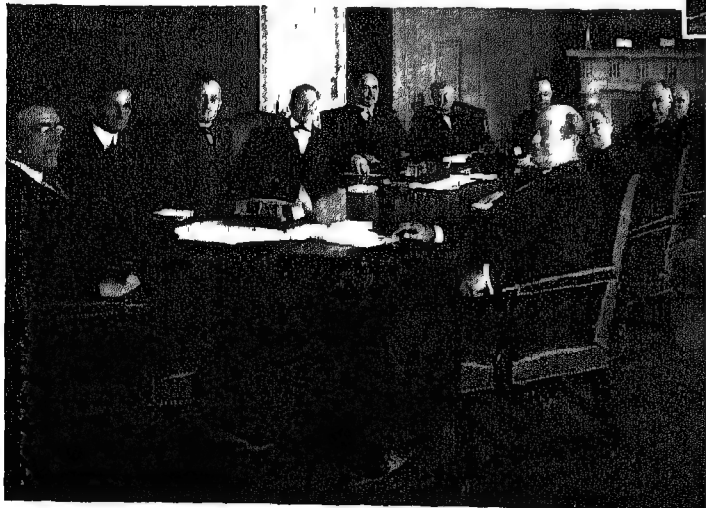
Courtesy, Underwood Stratton, New York City

At the *left* is the first official photograph of the new Cabinet. Prominent in the right foreground is William Jennings Bryan, the Secretary of State.

Stand and Deliver

Weary of the fight to secure local approval of votes for women by action of the State Legislatures, a newly "militant" wing of the Suffragettes heckled the Wilson administration for woman's share in the new freedom.
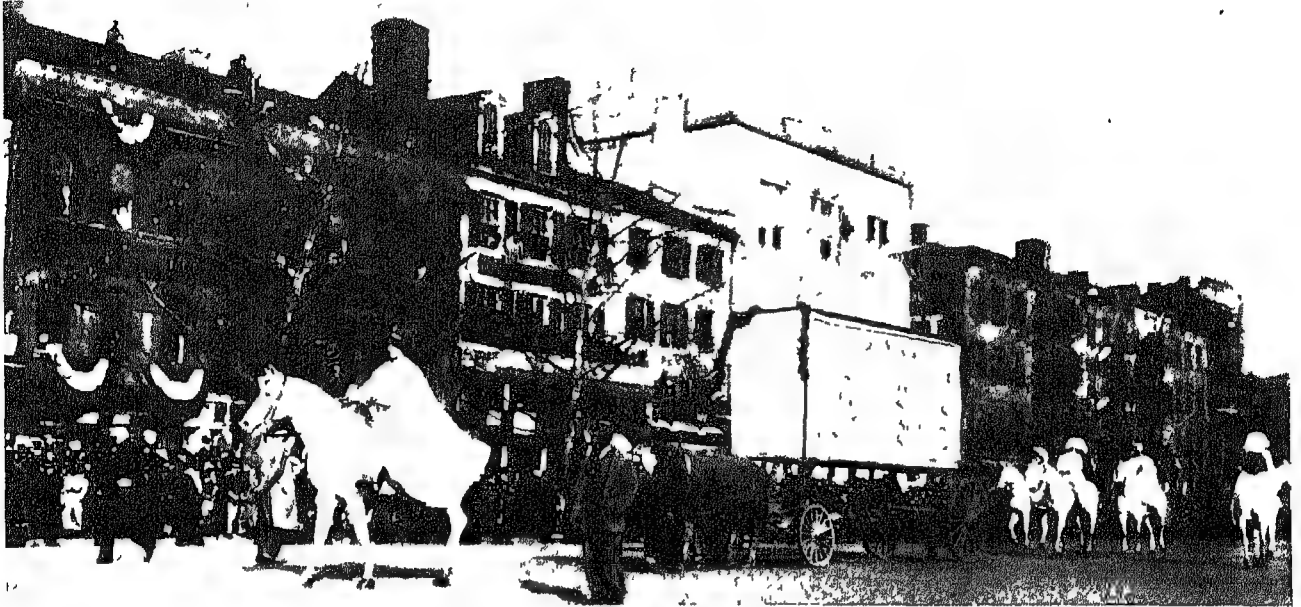
In 1913, the militant forces of suffrage paraded through the streets of Washington, D. C., and demanded an amendment to the Federal Constitution which would blanket all local opposition to their cause.

Both illustrations on this page are by the *courtesy* of the Scribner Art File

Postal Progress

On Jan. 1, 1913, the new Parcel Post service had begun to operate. The farmer in isolated locations was now able to buy in markets where his dollar went farther, and he was given an opportunity of closer contact with his fellow citizens by a generally improving rural post system.
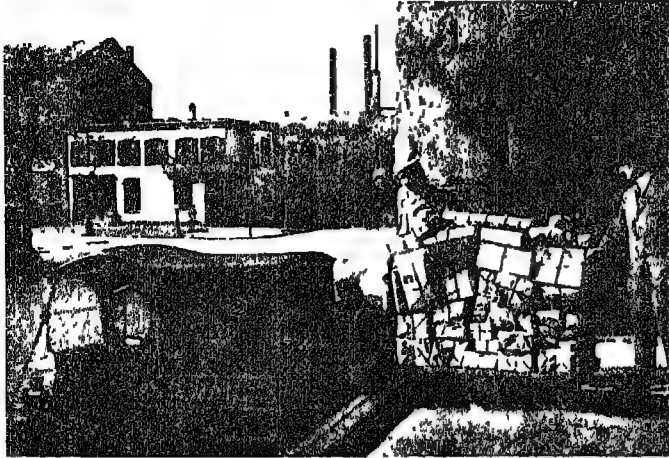
Harper's Weekly, Jan 18, 1913 Courtesy, Harper & Brothers, New York City

The picture at the *left* was taken at a Washington, D. C post office on the first day of Parcel Post service. Now, packages would be taken by Uncle Sam to places which the express companies could not serve.

At the *right*, the RFD man crosses a ford in Lauderdale County, Ala., c. 1913.

Courtesy, Public Roads Administration, Washington, D C
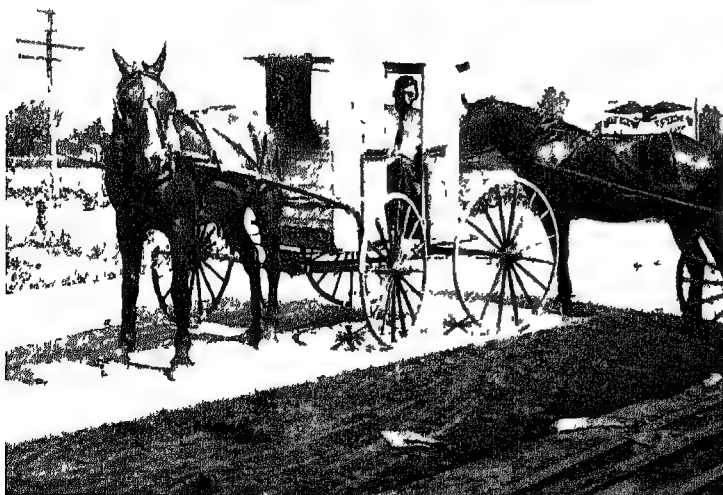
Courtesy, Public Roads Administration, Washington, D C

The close-up picture of a rural mail wagon at the *left* was taken in 1913 near Greenwood, Miss.

News From Panama

American engineers were beating the world again. The work on the great Isthmian Canal was almost completed.
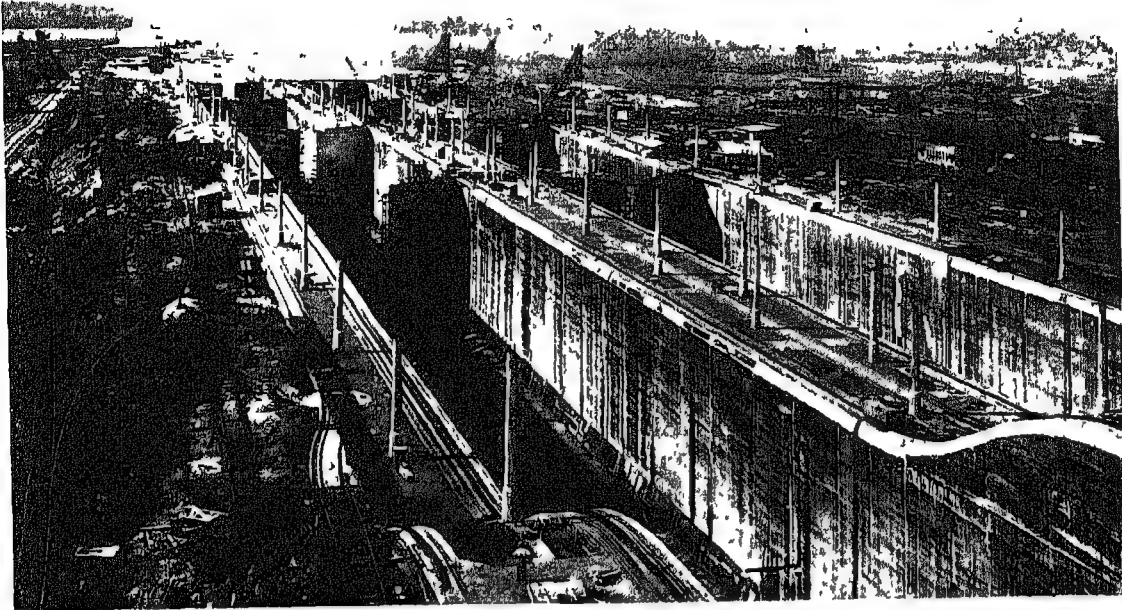
Courtesy, The National Archives, Washington, D C

The picture of Gatun Locks *above* was taken on June 25, 1913. In the distance is the Atlantic entrance to the Canal. *Below* are shown the lower main gates of Miroflores Locks as they looked on July 5, 1913.
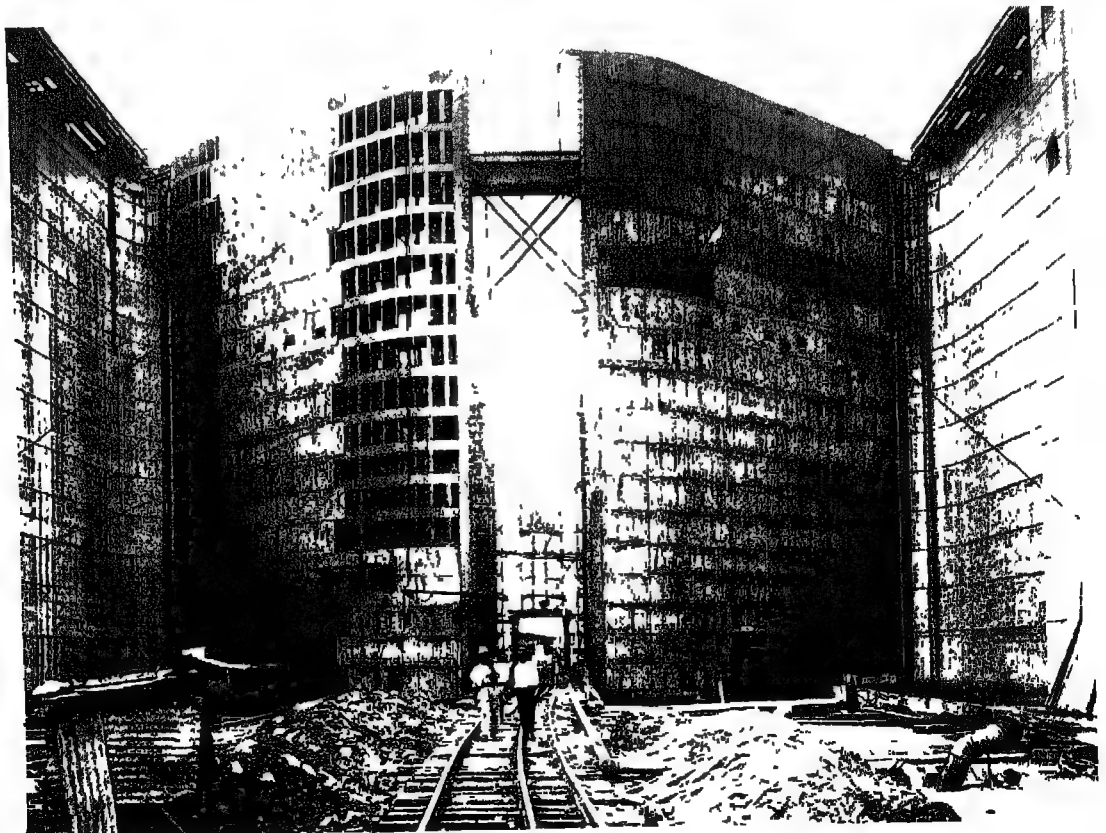
Courtesy, Scribner Art File

End of a Great Task
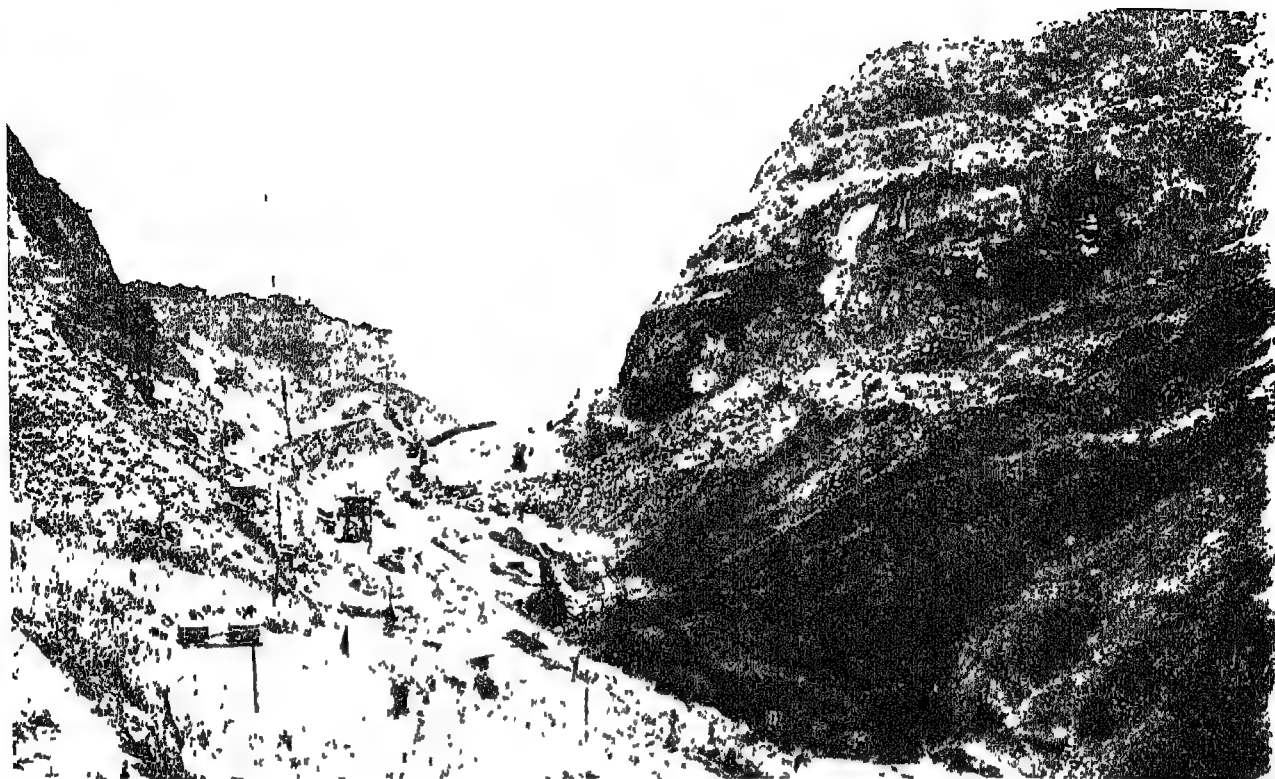
In Culebra Cut (*above*) and other ways through the mountains, the work was impeded by "slides" or cave-ins of the walls. Note a recent slide at the right, *above*.

Despite all difficulties, on Sept. 9, 1913, steamshovels Number 226 and 204 took the last bites from the bottom of the Panama Canal. The historic moment is shown in the picture *below*.
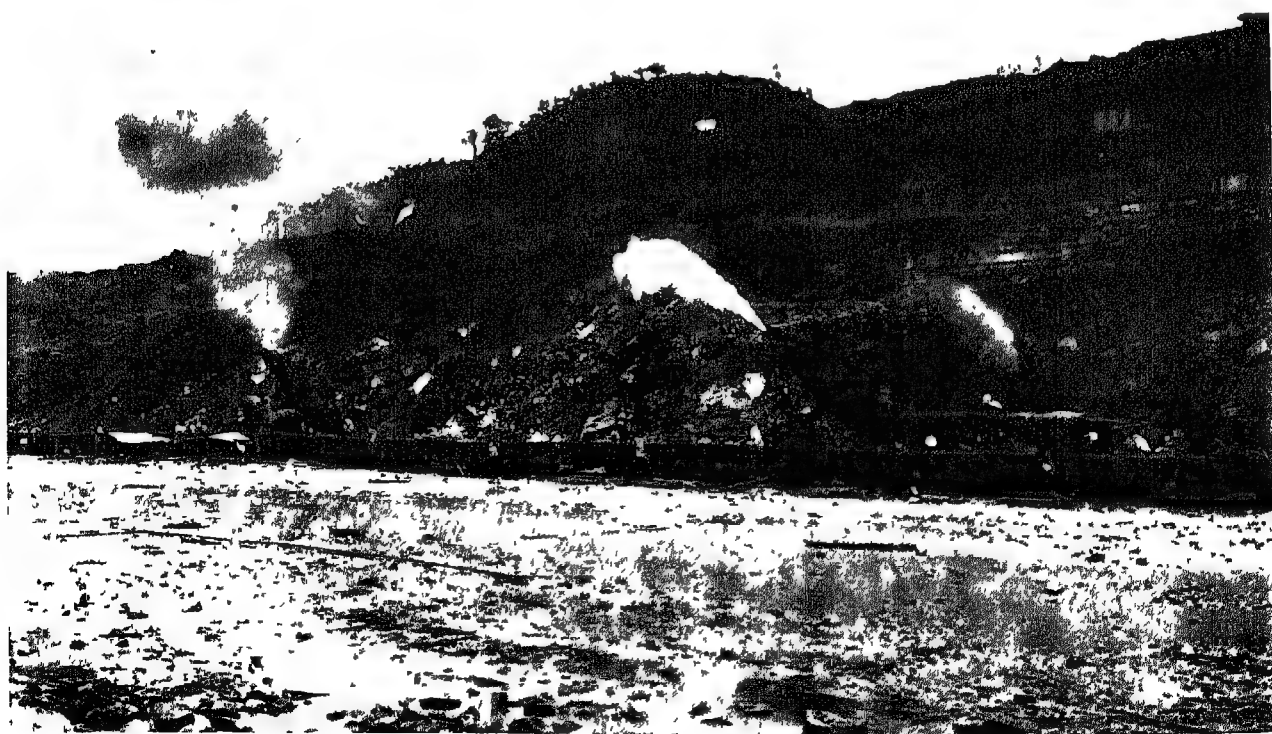
Both illustrations on this page are by the *courtesy* of the Scribner Art File

Movie "Stars"

The motion picture in its infancy was encountering an evil with which the stage had long been plagued American theater-goers went to see, not plays or stories, but personalities

D. W. Griffith directed "Judith of Bethulia," but it is safe to say that it was a 1913 hit because it "featured" Blanche Sweet (shown *right* in a scene from the picture) and Mae Marsh (*below*, with Robert Harron).

Little boys paid out their dimes to see William S. Hart (at the extreme *right*), the vehicle in which he appeared meant little or nothing

All illustrations on this page are by the *courtesy* of the Film Library, The Museum of Modern Art, New York City

South of the Border

Backwash from Mexico's internal troubles had been spilling over Uncle Sam's doorstep ever since 1911. Early in 1914, President Wilson demanded formal apologies for the arrest of some United States marines at Tampico, Mexico. When President Huerta of Mexico refused the demand, President Wilson ordered the Atlantic fleet to Vera Cruz.
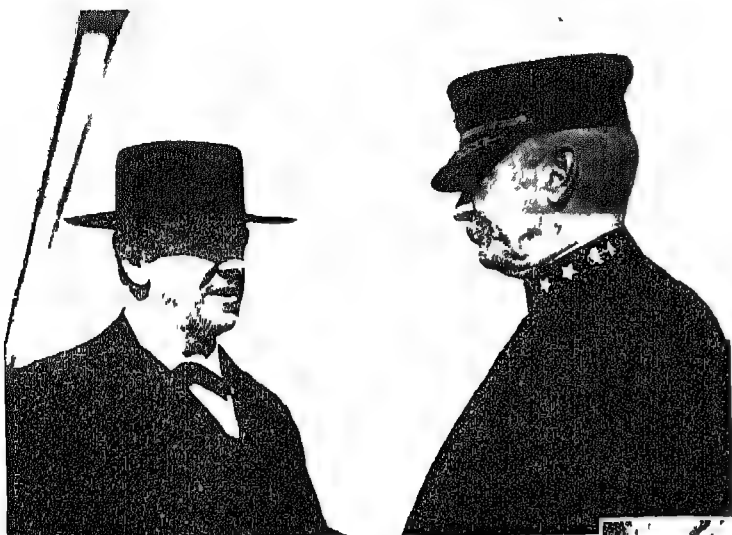
Courtesy, Underwood-Stratton, New York City

At the *left*, Secretary of the Navy Daniels is shown in conference with the man who would command the fleet, Rear Admiral Badger. Not two weeks before this picture was taken (Apr. 15, 1914), the Secretary had endeared himself to Navy officers by banning use of liquor in all wardrooms.

On Apr. 21, 1914, the city of Vera Cruz was taken with slight loss to the marines and sailors who made the landing.

There was comparatively little reaction. As seen at the *right*, the average native of Vera Cruz docilely accepted another set of rulers and rules.

Courtesy, Scribner Art File

Courtesy, Scribner Art File

The American passion for sanitation was loosed on the captured city. At the *left*, United States sailors are supervising an apathetic job of street sweeping.

Colorado Strike

From September, 1913, until May, 1914, south-central Colorado was in a state of civil war. Long-standing differences between the Colorado Fuel and Iron Company and its miners resulted in a strike of singular bitterness, which was not settled until Federal troops restored order and the company adopted a more constructive policy.
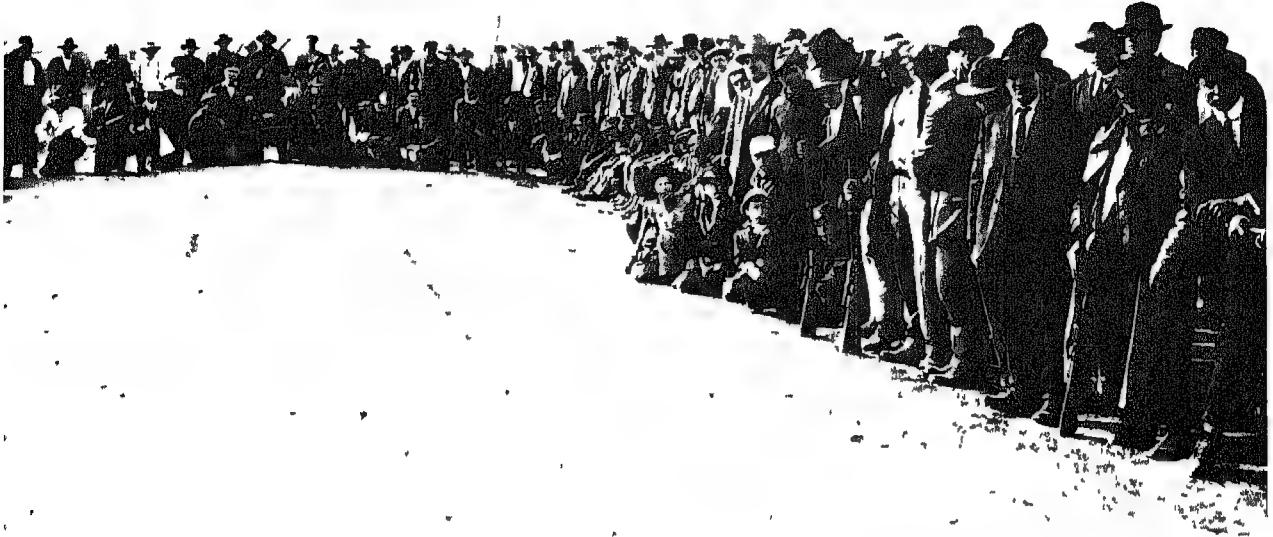
The picture of strikers *above* was taken near a tent city they had set up in the vicinity of San Rafael, Colo.

Below, a mine guard is shown behind a breastwork This picture was taken shortly after a shocking encounter at Ludlow, Colo., in April, 1914, during which many innocent persons were killed The breastwork was made of ruins from the Ludlow fire.

Both illustrations on this page are by the *courtesy* of Underwood-Stratton, New York City

Telephone
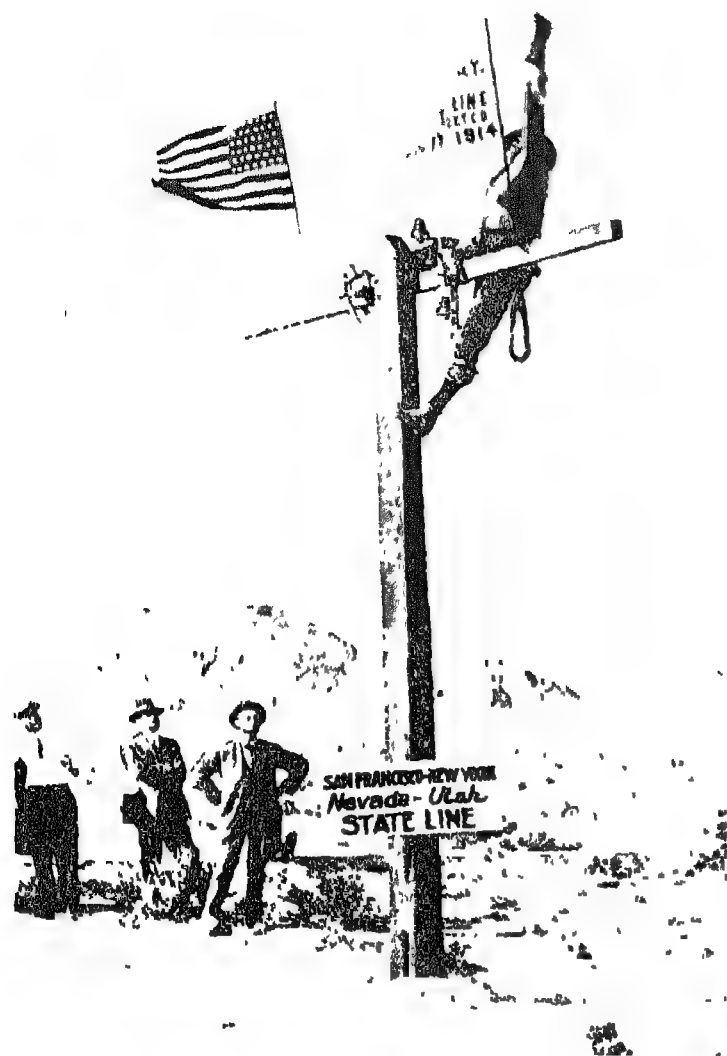
On June 17, 1914, the last pole was set for the first transcontinental telephone line—a direct wire, New York to San Francisco. The picture at the *left* was taken on the spot. The line was opened for service in January, 1915.

Expansion of telephone service was playing its part in bringing all Americans closer together. The rural mails and parcel post, and now the telephone, were breaking down the lonesomeness of people far from the cities—"the lones" as pioneer women called it The man in the picture *right* might have been making a business call, or he might have been minding the neighbors' business on a "party line"

Both illustrations on this page are by the *courtesy* of the American Telephone and Telegraph Company, New York City

A War

The murder of the Austrian Archduke Franz Ferdinand and his wife, late in June, 1914, had created a new European crisis, but most Americans had become accustomed to European "crises" since 1911. Our own troubles with Mexico seemed much more important. And so the headlines *below* had for the general public the quality of nightmare.

On July 29, 1914, the war news ran across only five columns The weather report read "Fair Today and Tomorrow." Mme. Caillaux had been acquitted. Two New Yorkers had attempted suicide.

New York Tribune

WAR SHOCKS STOCK MARKET, GOLD GOES OUT

AUSTRIA DECLARES WAR, RUSHES VAST ARMY INTO SERVIA; RUSSIA MASSES 80,000 MEN ON BORDER

By August 2, the headlines spread across the entire page as "the lights of Europe were going out."

New York Tribune

GERMANY DECLARES WAR ON RUSSIA; FRANCE PREPARES TO JOIN HER ALLY; ITALY QUITS THE TRIPLE ALLIANCE

U.S. TRANSPORTS FOR RELIEF OF MAROONED AMERICAN TOURISTS

LATEST NEWS OF THE WAR

KAISER MOBILIZES TO HIS LAST MAN; 4,000,000 IN ARMS

By August 4, a general European war was in being.

New York Tribune

BRITISH ULTIMATUM TO GERMANY; JOHN BURNS QUITS THE CABINET; GERMANS ADVANCE THROUGH BELGIUM

RUSSIAN FLEET DRIVEN BACK; 1 SHIP ASHORE; THREE TOWNS SEIZED

LATEST NEWS OF THE WAR

INVASION OF THE LUXEMBURG BY KAISER'S TROOPS SWIFTLY COUNTERED BY SIR E. GREY

All illustrations on this page are by the *courtesy* of the New York *Herald-Tribune*, New York City

Reaction

Courtesy, Underwood-Stratton, New York City

"All German hearts beat higher," said one of the German language newspapers published in New York, and in that city reservists of the German army paraded as seen *above*, carrying their national flag Some of these men sailed to rejoin their regiments.

The Canal Opened

S. S. Ancon is shown *below* as she passed Cucaracha Slide on Aug. 15, 1914—the day on which the Panama Canal was opened for traffic. As they read their newspapers, military men recalled *U. S. S. Oregon's* voyage around Cape Horn in 1898, and felt that Uncle Sam's new tactical ditch had been finished none too soon.
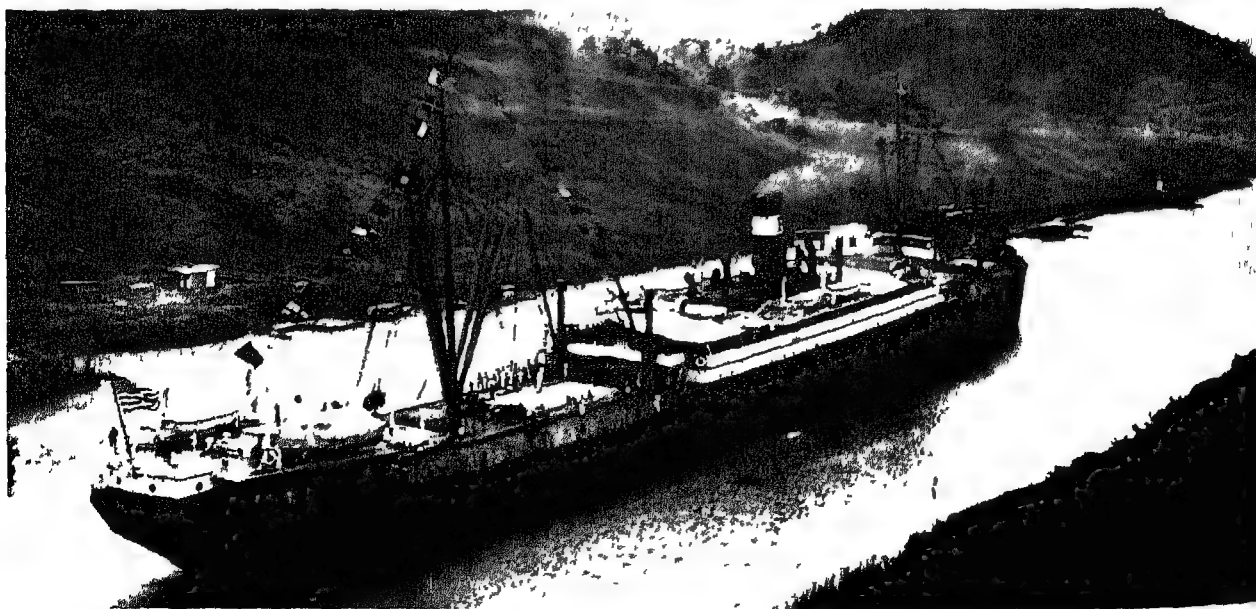
Courtesy, National Archives, Washington, D. C

Highways

All through 1914, work continued on the good roads program. The nation's road system was becoming a really efficient network for general transport, for pleasure driving, or for possible emergencies.

In many sections, excavating was done by hand as seen in the 1914 picture at the *right*.
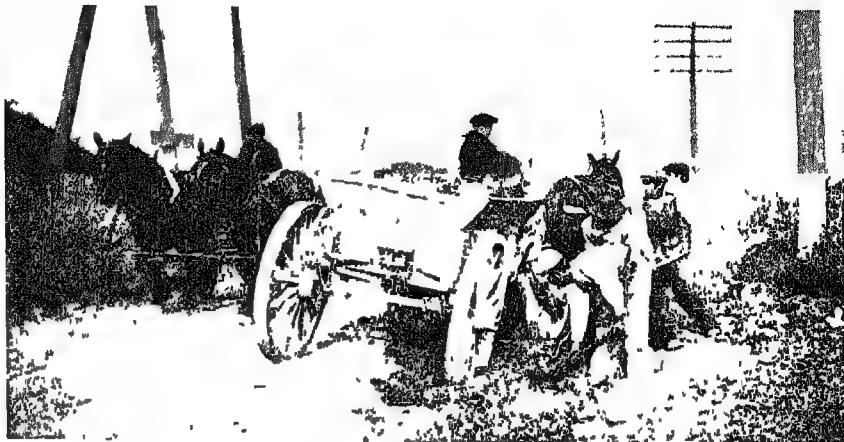
Courtesy, Public Roads Administration, Washington, D C

Courtesy, North Carolina State Department of Archives and History, Raleigh

Keeping the roads in good repair was an essential part of the program. At the *left*, men of New Hanover County, N. C., are patching their section of a State Highway.

First proposed in 1912, the Lincoln Highway began to be built in October, 1914. This coast-to-coast link for motorists between New York and San Francisco was financed in its early days by private contributions and State grants. At the *right*, a touring car heads across a Wyoming stretch of the road in 1914.

Town & Country, Jan 3, 1914 *Courtesy*, Town & Country, New York City

Stores and Offices

The architecture of business offices and retail stores remained stubbornly conservative in conception. The advertising or "public relations" value of a cleverly designed place of business was not widely appreciated.

Courtesy, The Great Atlantic and Pacific Tea Company, New York City

In the view of a chain store *above*, note how much "brand name" canned goods was stocked by 1914, in addition to teas, coffees and dairy products.

The office pictured *below* was in the old County Building at Carson City, Nev.

Courtesy, Nevada State Historical Society, Reno

Funny Folk

The movies in 1914 abounded in comedy of the slap-stick school. Several of the comedians became famous in their day for their performances as distinctive, national types.
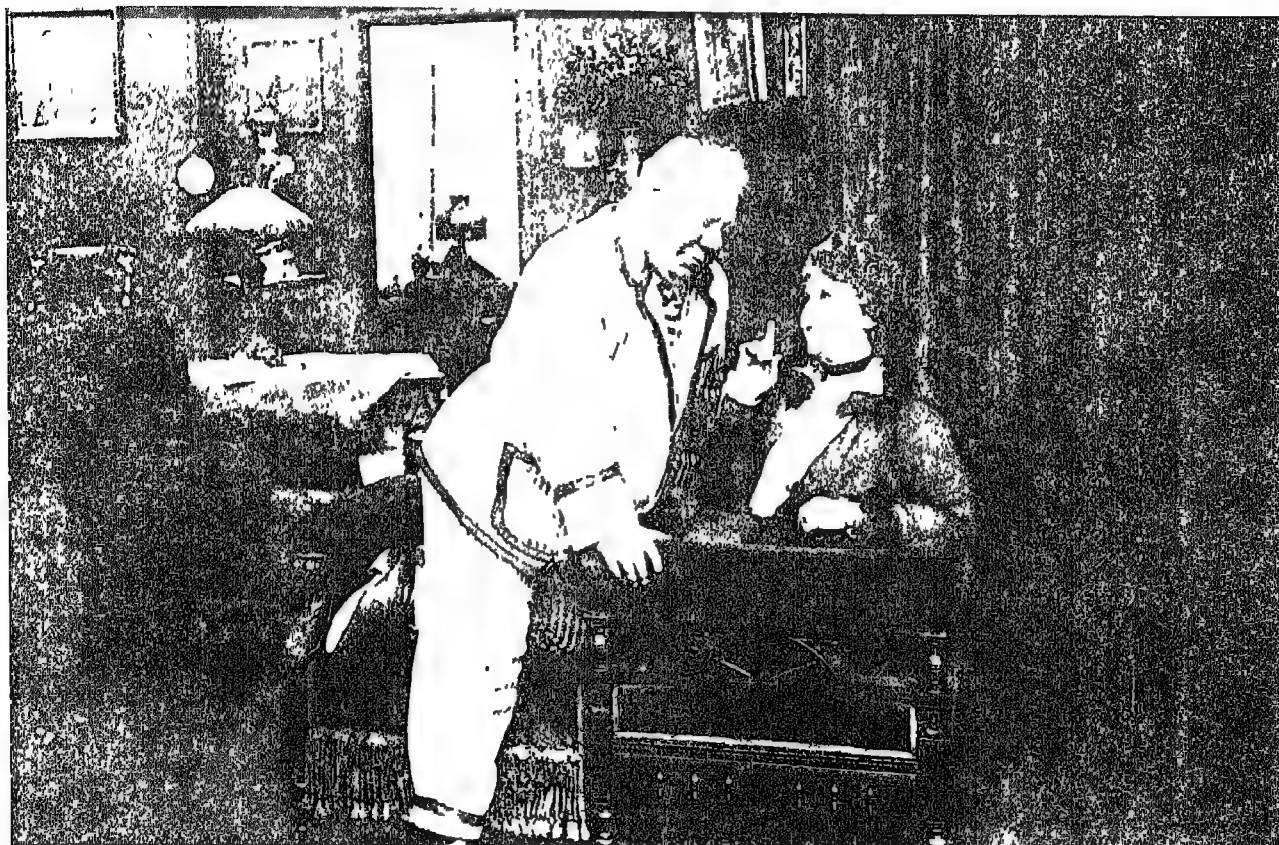
The fun in a fat man's troubles was ably exploited by John Bunny (*above*, in a tense moment from "Father's Flirtation").

Flora Finch (*below*, in striped dress) was the perennial lean and hungry spinster. A 1914 comedy entitled "The New Stenographer" provided the scene *below*

Both illustrations on this page are by the *courtesy* of Photoplay, New York City

"New Freedom" in Literature

Critics were being forced to recognize clamorous new voices in the national literary chorus. The young writers of the Middle West somewhat aggressively declared their artistic independence of Boston and New York.

VOL. III Price 15 cents NO. VI

Poetry
A Magazine of Verse
Edited by Harriet Monroe

MARCH, 1914

Chicago Poems . . . . . Carl Sandburg
Chicago—Jan Kubelik—The Harbor—The Hammer—At a Window—Lost—Who Am I Momus—The Road and the End.

Love Songs . . . . . . Sarah Teasdale
Old Love and New—Over the Roofs—September Midnight

Poems . . . . Frances Shaw
Who Loves the Rain—The Child's Quest—Cologne Cathedral—Skeletons—Star Thought—Little Pagan Rain Song.

Eros Turannos Edwin Arlington Robinson

Three Irish Spinning Songs

The Sea Bird to the Wave . Padraic Colum

Editorial Comment
Vers Libre and Metrical Prose — Homage to Wilfrid Blunt — Notes

543 Cass Street, Chicago

Copyright 1914 by Harriet Monroe. All rights reserved.

Annual Subscription $1.50

Poetry A Magazine of Verse, March, 1914
Courtesy, Poetry, Chicago, Ill

In the issue of *Poetry · A Magazine of Verse* shown at the *left*, the new spirit is aptly illustrated by Carl Sandburg's "Chicago Poems" and by the editorial on the then-burning question of "free verse."

Far forward in the attack on the genteel tradition was a New York magazine, *The Smart Set*, which published many of the new writers and strove determinedly to be ahead of the intellectual fashion. Note, on the cover reproduced *right*, the motto at the lower left.

The Smart Set, October, 1914

New Art From Abroad

Courtesy, Mr & Mrs Walter C Arensberg, Hollywood, Calif

Work which was believed to exemplify the modern spirit in art was arranged for display in the Armory of the Sixty-ninth Regiment, New York City, during February, 1913. Cubism and Post-Impressionism were revealed to the public at this remarkable exhibition of painting and sculpture.

Marcel Duchamp's "Nude Descending a Staircase" *above* was the principal target for popular wit during the Armory Show, but the crowd had a good laugh at Cezanne and Van Gogh as well.

Sad to say, the announcement of another visiting artist (at the *right* in all its austerity of phrase) met with much more popular approval.

MADAME HELENA RUBINSTEIN, who is the accepted adviser in beauty matters to the Royalty, Aristocracy and the great Artistes of Europe; whose position as a scientific Beauty Culturist and whose unique work on exclusive lines have created for her a world-wide fame, whose establishments, the Maison de Beauté Valaze, at 24 Grafton Street, Mayfair, London, and at No 255 Rue Saint Honore, Paris, are well-known landmarks in the itinerary of the ladies of high society of both Continents, whose 'Valaze' specialities have been found essential to the maintenance of their complexion beauty by the world's most beautiful women—announces the opening of her American

MAISON
de BEAUTÉ VALAZE
at No. 15 EAST 49th ST.
NEW YORK CITY

This establishment equipped in much the same manner as Madame Rubinstein's London and Paris houses, in itself radiates the spirit of Beauty

Town & Country Feb 1, 1915
Courtesy, Town & Country, New York City

Campus By Day

The American collegian remained still pretty much of a sartorial conformist.
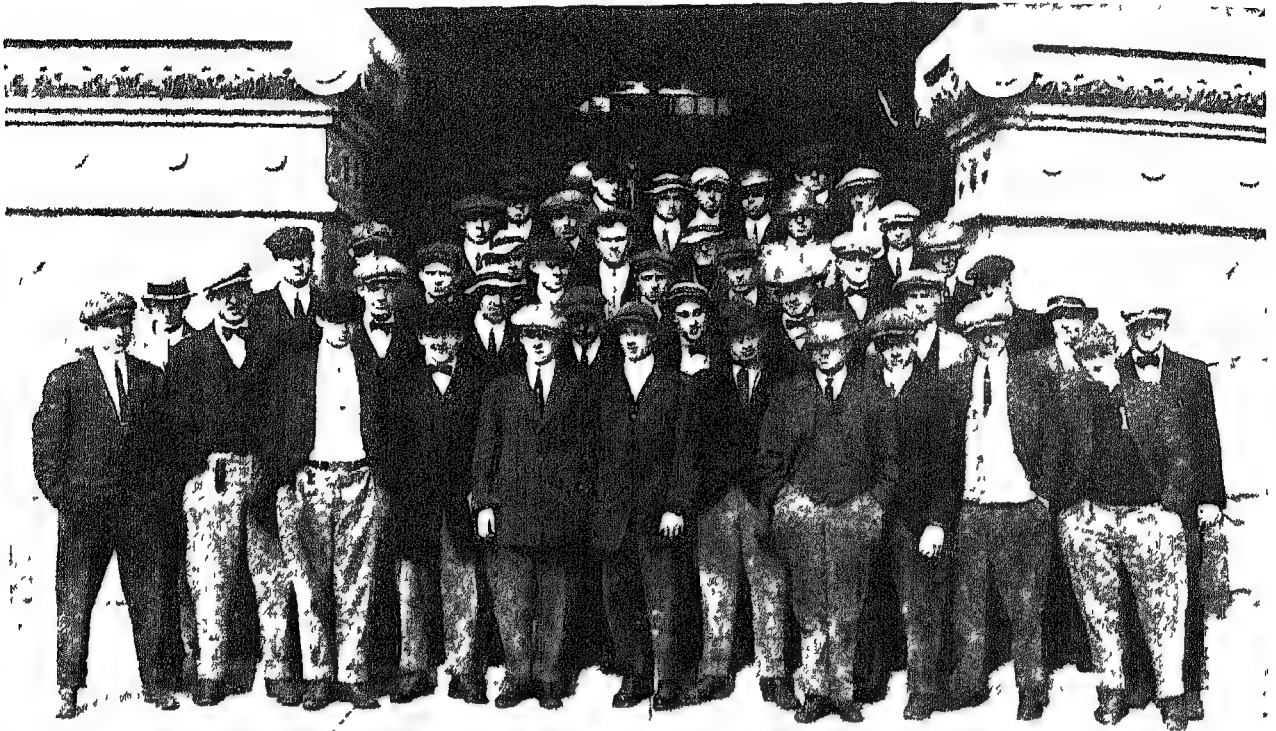
Courtesy, Purdue University, Lafayette, Ind

A cheerful, and sometimes irritating, breeziness of manner went with the clothes shown *above*, as worn by a group at Purdue University in 1913.

Smith College girls did their gymnasium work in 1913 with notable snap and vigor, as may be observed in the piece of documentation given *below*.
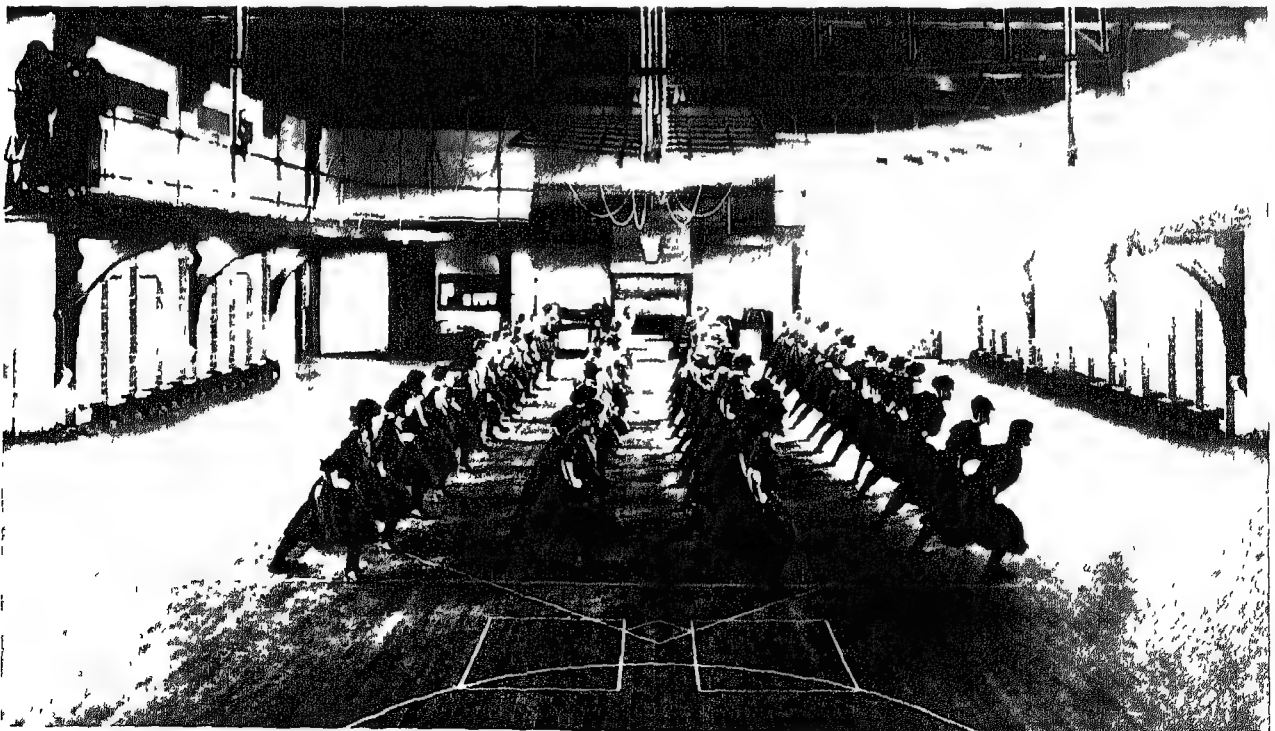
Courtesy, Smith College Archives, Northampton, Mass.

In the Evening by the Moonlight

But Young America at college aimed at a suave cosmopolitanism when attending the "Proms" of those years.

Courtesy, Smith College Archives, Northampton, Mass

A group of Smith College girls (Class of 1915) are shown *above* with their escorts, *en route* to their own Prom in 1914.

And *below* is one photograph of a Prom that may stand for all. The music was soft, the lights were low and a long, exciting lifetime, brilliant with success, lay beyond the gates of the University.

Courtesy, Purdue University, Lafayette, Ind

Dancers

The personal charm and flawless taste of Vernon and Irene Castle won the nation away by sheer force of example from the wilder manifestations of the new ragtime. To the romantic youth of 1915, they were what the Gibson Man and the Gibson Girl had been to a previous generation.

At the *left*, they are seen in a step of the tango; *below*, in a ballroom dance pose.

Both illustrations on this page are by the *courtesy* of Mrs Irene Castle Enzinger, Lake Forest, Ill

May 1, 1915

For many months, pictures and text in the nation's press kept the American public at the ringside of the war in Europe. The Central Powers had the sympathy of many, equally strong sympathies were aroused for France and England. The majority of Americans were neutral, and somewhat puzzled as diplomatic "notes" were directed to both sides protesting interference with our shipping.

Courtesy, Scribner Art File

The Cunard liner *Lusitania* (*left*) was to sail for Liverpool from New York on the morning of Saturday, May 1, 1915 She was unarmed and carried only small-arms ammunition in her cargo. This was in accord with United States law.

On the morning of the sailing, among resort announcements from Atlantic City and the Adirondacks, New York newspapers carried the two advertisements shown in conjunction at the extreme *right*

MAY 1, 1915.

SPRING AND SUMMER RESORTS — Atlantic City

Always Delightful, but Particularly Attractive During the Late Spring and Early Summer

Atlantic City

America's Famous All-Year Resort

The refreshing salt air blown in gentle zephyrs off the ocean, the warm sunshine and unlimited opportunities for outdoor recreation and pleasure, have spread Atlantic City's fame as an all year health and pleasure resort over the entire American Continent.

The leading hotels are noted for the excellence of their accommodations and service.

THE LEADING HOUSES

will furnish full information, rates, etc.

Marlborough-Blenheim

The Holmhurst — Seaside House — Hotel Dennis

The Shelburne — Galen Hall — Hotel St. Charles

Hotel Chelsea — Hotel Strand — The Pennhurst

OCEAN STEAMSHIPS

CUNARD

EUROPE VIA LIVERPOOL

LUSITANIA

Fastest and Largest Steamer now in Atlantic Service Sails SATURDAY, MAY 1, 10 A. M.

Transylvania, Fri., May 7, 5 P.M.

Orduna, Tues., May 18, 10 A.M.

Tuscania, Fri., May 21, 5 P.M.

LUSITANIA, Sat., May 29, 10 A.M.

Transylvania, Fri., June 4, 5 P.M.

Gibraltar—Genoa—Naples—Piraeus

S.S. Carpathia, Thur., May 13, Noon

ROUND THE WORLD TOURS

Adirondacks — THE NEW Whiteface Inn

SARANAC INN

Connecticut.

The Edgewood

"New York's Ideal Suburban Hotel"

AT GREENWICH, CONN.

Opens Saturday, May 29

New York

A Summer Resort of the Best Class

MIZZEN TOP

OPENS JUNE 17

Hotel STRAND

THE LATEST FIREPROOF HOTEL

HOTEL CHELSEA

ROYAL PALACE

HOTEL—COTTAGES

on the Beach, ATLANTIC CITY, N. J.

"A RESORT IN ITSELF"

Near all Piers and Amusements

CAPACITY 600

Bookings for Summer may now be made

GALEN HALL

HOTEL AND SANATORIUM

ATLANTIC CITY, N. J.

NOTICE!

TRAVELLERS intending to embark on the Atlantic voyage are reminded that a state of war exists between Germany and her allies and Great Britain and her allies; that the zone of war includes the waters adjacent to the British Isles; that, in accordance with formal notice given by the Imperial German Government, vessels flying the flag of Great Britain, or of any of her allies, are liable to destruction in those waters and that travellers sailing in the war zone on ships of Great Britain or her allies do so at their own risk.

IMPERIAL GERMAN EMBASSY

WASHINGTON, D. C., APRIL 22, 1915.

American Line

AMERICAN STEAMERS

Courtesy, The *Sun*, New York City

"All the News That's Fit to Print"

The New York Times.

EXTRA

LUSITANIA SUNK BY A SUBMARINE, PROBABLY 1,260 DEAD; TWICE TORPEDOED OFF IRISH COAST; SINKS IN 15 MINUTES; CAPT. TURNER SAVED, FROHMAN AND VANDERBILT MISSING; WASHINGTON BELIEVES THAT A GRAVE CRISIS IS AT HAND

SOME DEAD TAKEN ASHORE

Several Hundred Survivors at Queenstown and Kinsale

STEWARD TELLS OF DISASTER

One Torpedo Crashes Into the Doomed Liner's Bow, Another Into the Engine Room.

SHIP LISTS OVER TO PORT

Makes It Impossible to Lower Many Boats, So Hundreds Must Have Gone Down

ATTACKED IN BROAD DAY

The Lost Cunard Steamship Lusitania

Cunard Office Here Besieged for News, Fate of 1,918 on Lusitania Long in Doubt

List of Saved Includes Capt. Turner, Vanderbilt and Frohman Reported Lost

Saw the Submarine 100 Yards Off and Watched Torpedo as It Struck Ship

Only 850 Were Saved, Few Cabin Passengers

LONDON, Saturday, May 8.—The Cunard liner Lusitania, which sailed out of New York last Saturday with 1,918 souls aboard, lies at the bottom of the ocean off the Irish coast.

She was sunk by a German submarine, which sent two torpedoes crashing into her side at 2:30 o'clock yesterday afternoon, while the passengers, seemingly confident that the great swift vessel could elude the German underwater craft, were having luncheon.

The great inrush of water caused the liner to list heavily to port, so that she could not

Courtesy, The New York *Times*, New York City

One hundred and twenty-eight American citizens were lost in the event described *above*, a blunder that turned American opinion sharply against Germany and her allies.

Disaster at Chicago

The mind of the Middle West, however, was more strongly moved to pity and terror by the capsizing of the excursion steamer *Eastland* at her pier in the Chicago River on July 24, 1915, as she was preparing to leave for a day's outing on Lake Michigan. More than eight hundred of the two thousand persons aboard lost their lives.
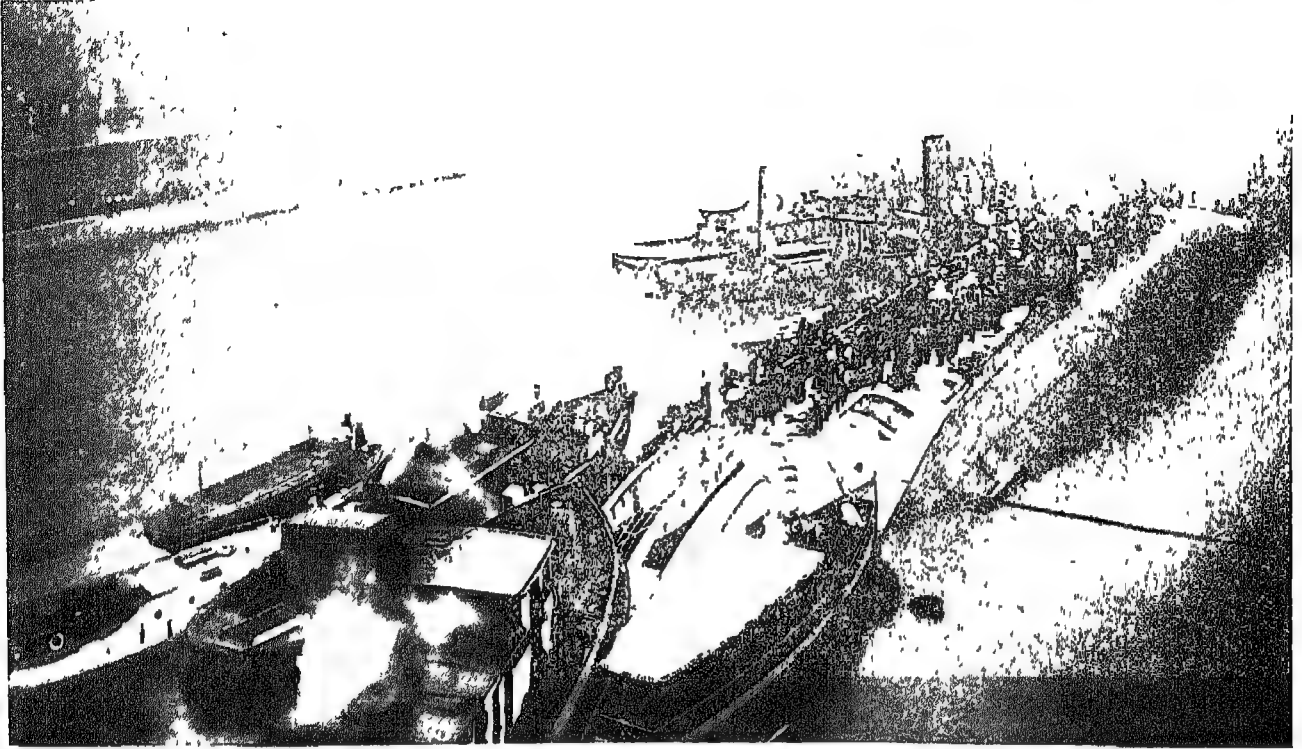
Courtesy, Underwood-Stratton, New York City

Above, the *Eastland* is shown lying on her side after the disaster

Houston

In August, 1915, the *S S Satilla* (in the foreground *below*) brought a cargo of freight up the new ship channel at Houston, Tex., and had the honor of opening Houston's wharves to deep-water traffic.
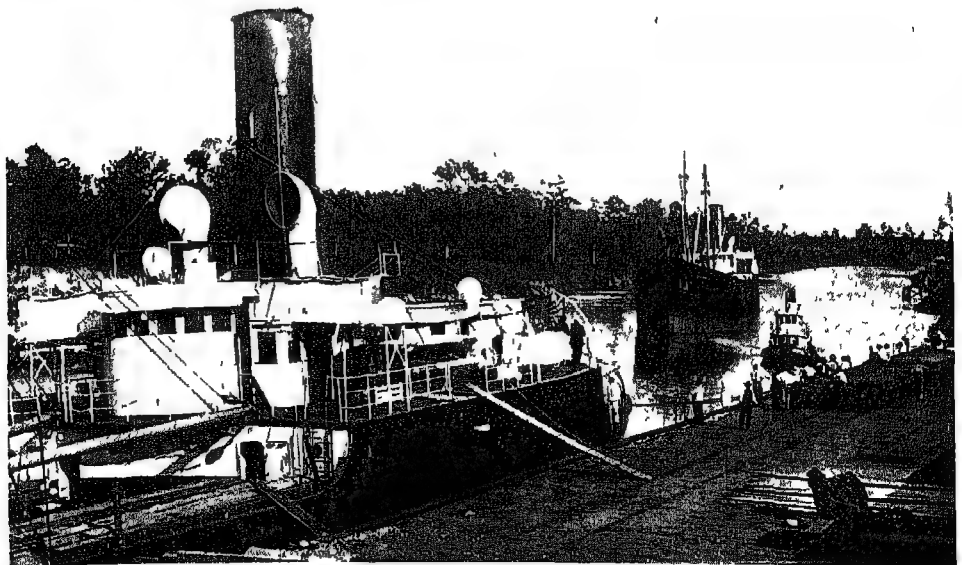
Courtesy, Houston Chamber of Commerce, Tex

Panama-Pacific Exposition

Between February and December, 1915, the opening of the Panama Canal and the discovery of the Pacific Ocean were celebrated jointly in a great Exposition at San Francisco, Calif. The use of Californian architectural styles in the buildings at the Exposition (*below*, the Home Economy and Commerce Buildings) brought about a national vogue for Spanish houses and decoration.
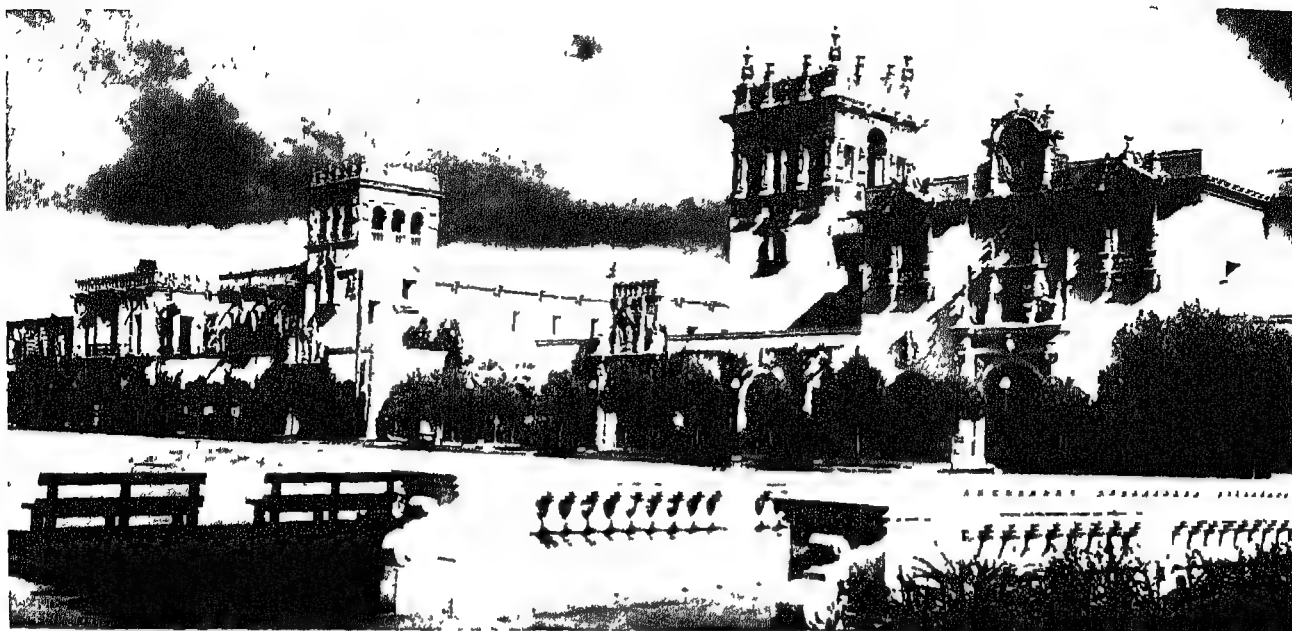
Courtesy, Scribner Art File

The Canal as a Weapon

Although "slides" or cave-ins were still making trouble, the importance of the Panama Canal to national defense was undoubted In the picture *below*, taken on Aug. 31, 1915, *U.S.S. Ohio* (at *left*) and *U S.S Missouri* are seen passing through the upper chamber of Miraflores Locks.
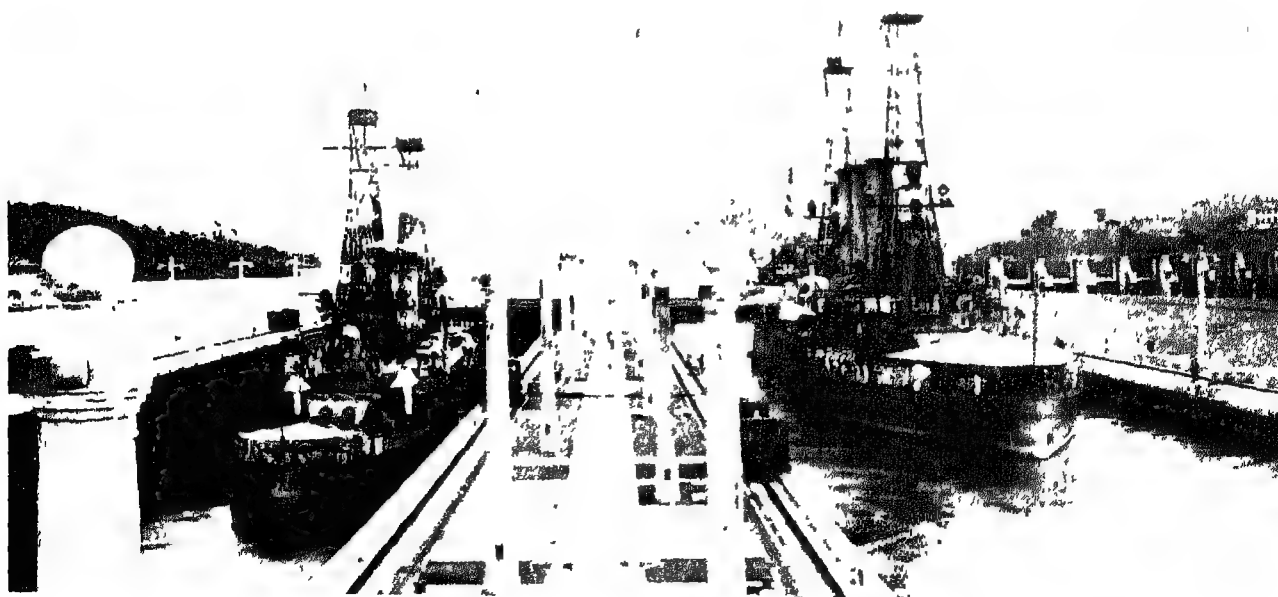
Courtesy, National Archives, Washington, D C

Propaganda

As the warring groups competed for the support of United States public opinion, our newspapers were filled with charges and countercharges of atrocious conduct, plus fervent declarations of national virtue. In August, 1915, headlines like those shown *below* awoke the American public to some evil connotations of propaganda.

Yet the pictures of ruined cathedrals and the vivid stories sent back early in the war by correspondents like the veteran Richard Harding Davis (*below*) were propaganda also.

The World.

"Circulation Books Open to All."

HOW GERMANY HAS WORKED IN U S TO SHAPE OPINION, BLOCK THE ALLIES AND GET MUNITIONS FOR HERSELF, TOLD IN SECRET AGENTS' LETTERS.

LETTERS MR. VIERECK AND DR. ALBERT WROTE TO EACH OTHER

Fatherland Financed Author Fox's Expenses Paid, Plans Laid to Buy Press Association and Otherwise Control News of the War
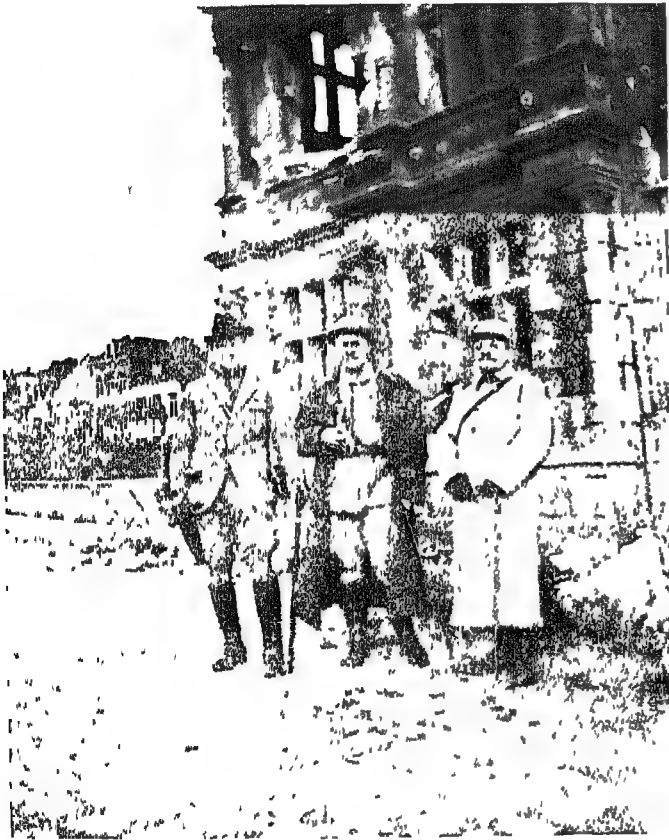
German heavy-handedness in the execution of a program of intrigue and conspiracy climaxed in the revelations headlined at the top of the page. These were the result of the loss of a briefcase by Dr Heinrich Albert, chief of German espionage in the United States. In consequence, the German military attache, Franz von Papen (*right*), and other diplomats were shipped back to Germany.

All illustrations on this page are by the *courtesy* of the Scribner Art File

War Boom

After a brief, shocked slump in 1914 at the declaration of the European war, American industry entered on an almost feverish period of activity Foreign orders came piling in as the belligerents cast their manpower into battle.

Courtesy, North Carolina State Department of Archives and History, Raleigh

Southern mills like the one on Tar River, N. C, at the *left* were in full production and bringing hard money to a section which could use it.

War needs gave the builders of internal combustion engines a chance for vast expansion. At the *right* is the plant of the Waukesha Motor Co. in southeastern Wisconsin as it looked in 1915.
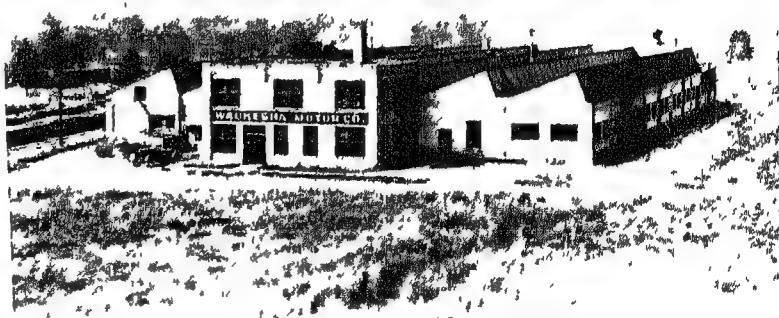
Courtesy, Waukesha County Historical Society, Waukesha, Wis

Courtesy, Board of Commissioners of the Port of New Orleans, La.
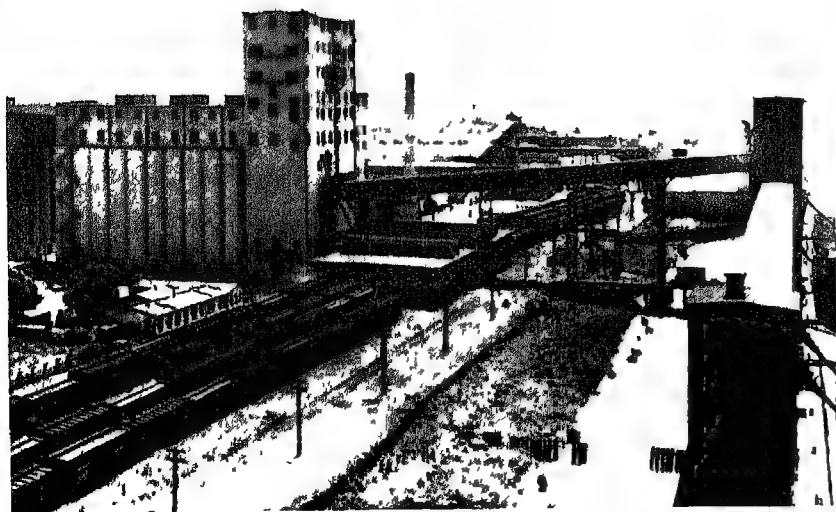
In New Orleans, La, the public grain elevator at the *left* was completed in 1916, and was part of a program for improving shipping facilities at that port.

Machinery

Many pieces of machinery familiar to a later generation were in an experimental stage between 1913 and 1916.

At the *right* a 1913 model of a Diesel power unit is shown.
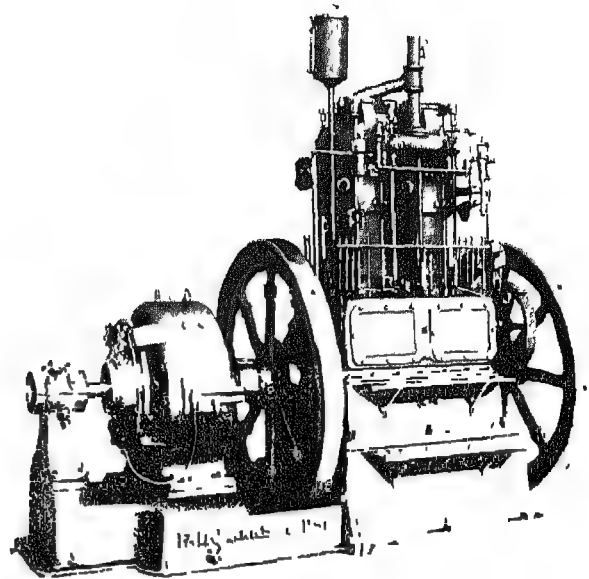
Courtesy, Fairbanks, Morse & Co , Chicago, Ill
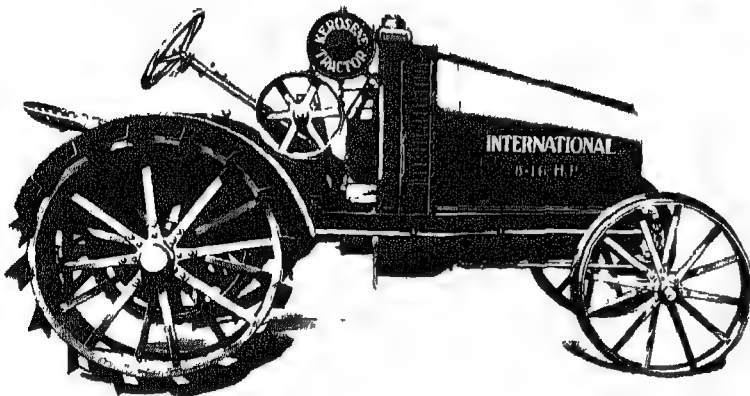
Courtesy, International Harvester Company, Chicago, Ill

The kerosene tractor at the *left* was designed in 1915 for use on small farms.

The biplane at the *right*, designed and produced in 1916, was Boeing Aircraft Company's first model.
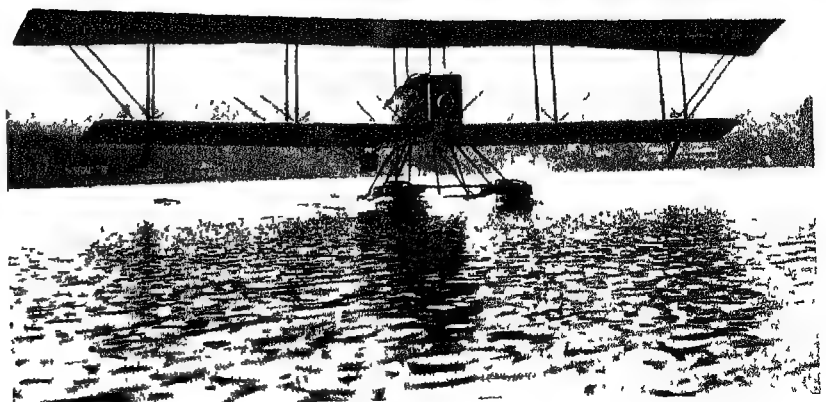
Courtesy, Boeing Aircraft Company, Seattle, Wash

Music and Words
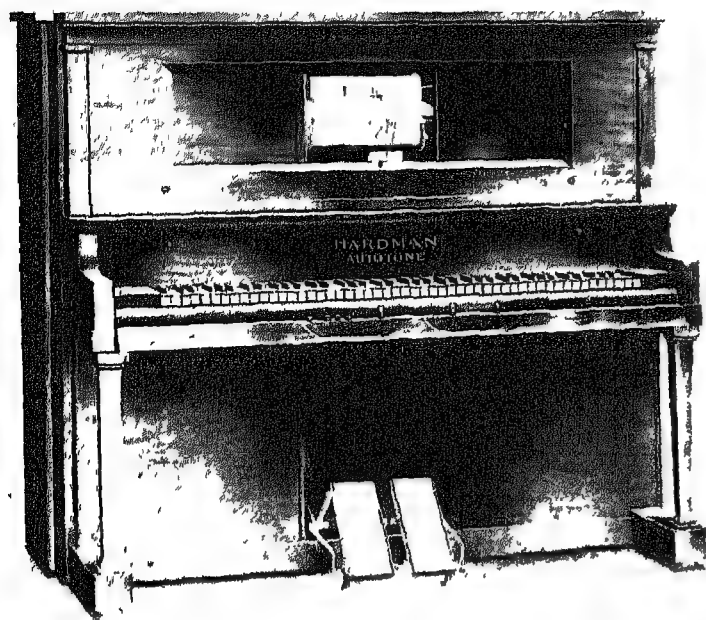
Courtesy, Hardman, Peck & Co , New York City

Mechanization of our society reached a climax in the "player-piano" or "Pianola," a once-familiar object in aspiring parlors. A 1916 "player" is shown *left*. Note the perforated roll which rendered Chopin and Schubert with soul-shattering precision.

In 1916, the all-purpose "audion," shown with its adapter at the *right*, was on sale for experimental use as detector, amplifier, or oscillator.
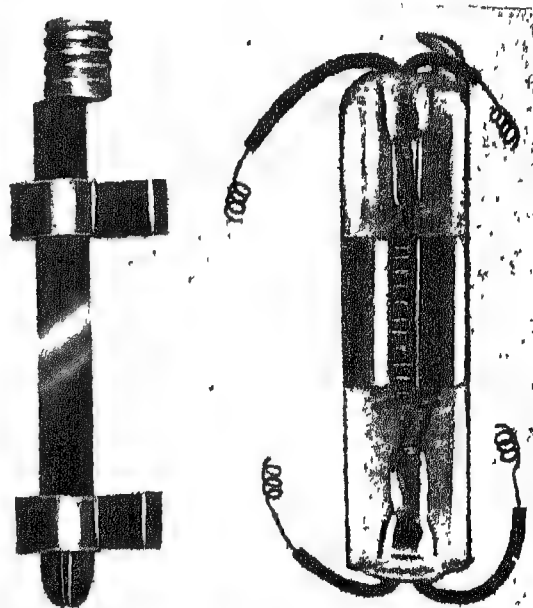
The Electrical Experimenter, May, 1916
Courtesy, Popular Mechanics, Chicago, Ill
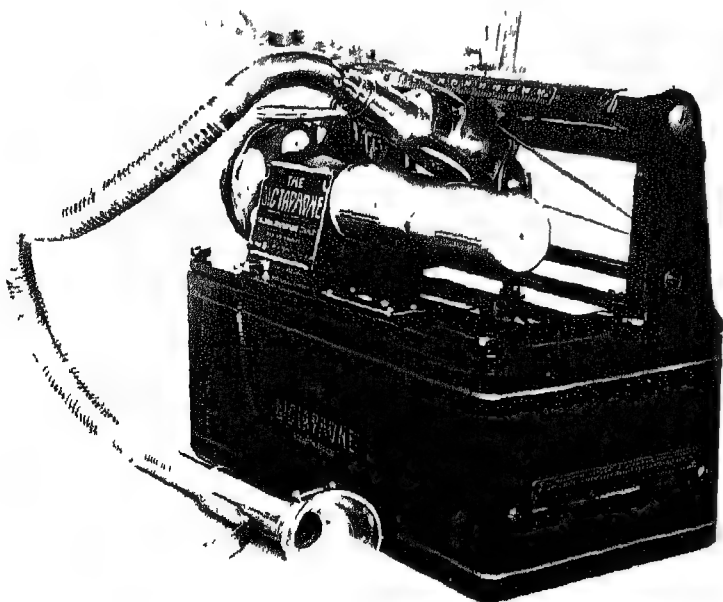
Courtesy, Dictaphone Corporation, New York City

The 1915 Dictaphone at the *left* was finding favor with a newly-christened American type—the "executive," whose brilliant ideas could brook no delay in expression.

Iron

The two nations which up to 1914 led the United States in steel and iron exports were now at war with each other. The market was wide open.
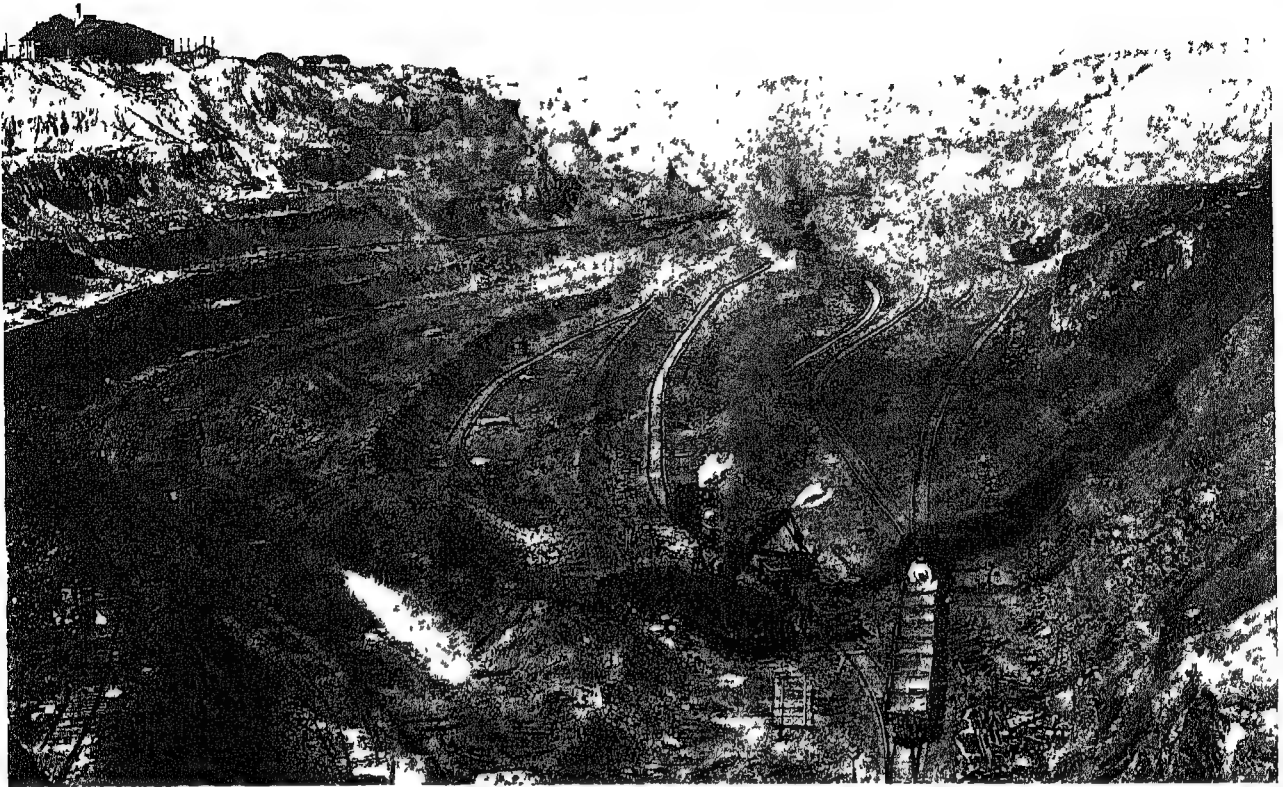
The Fayal Mine at Eveleth, Minn., was one of many American mines which profited by the situation. The open pit of the Fayal Mine is seen in the 1915 picture *above*, and *below* is shown Number Two Station of the works underground.
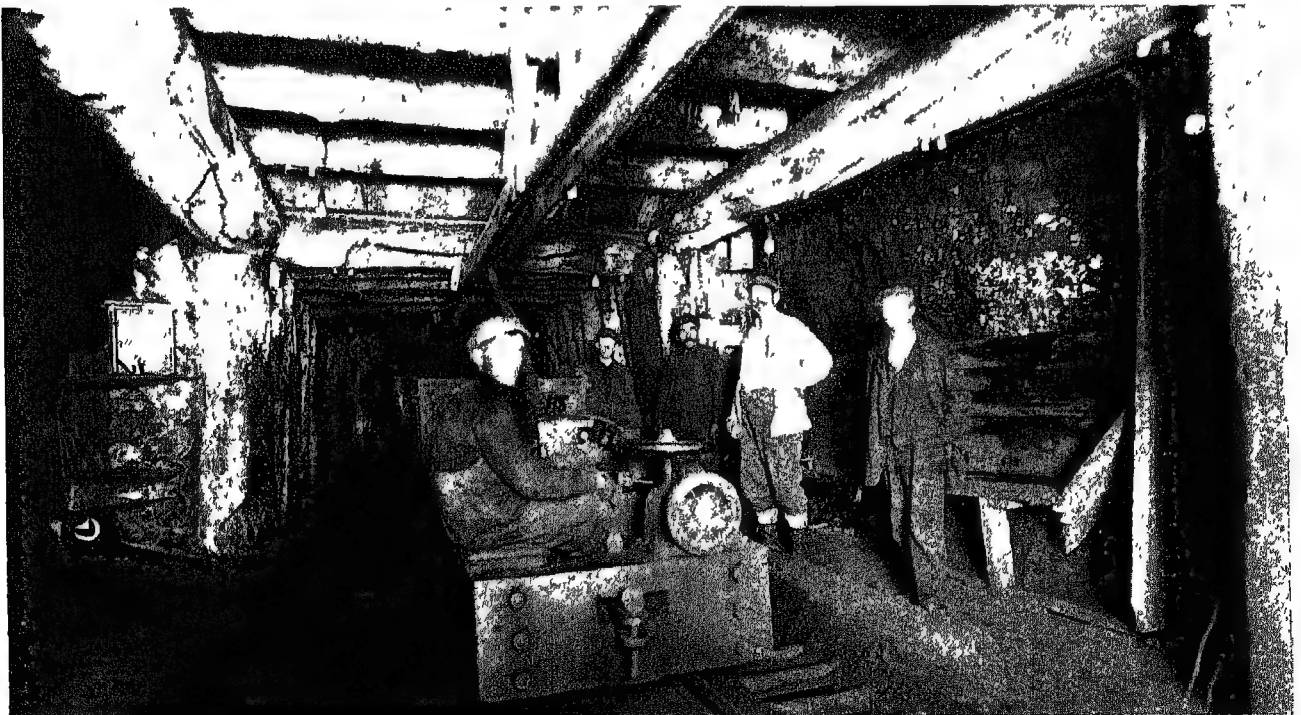
Both illustrations on this page are by the *courtesy* of the St Louis County Historical Society, Duluth, Minn

Steel
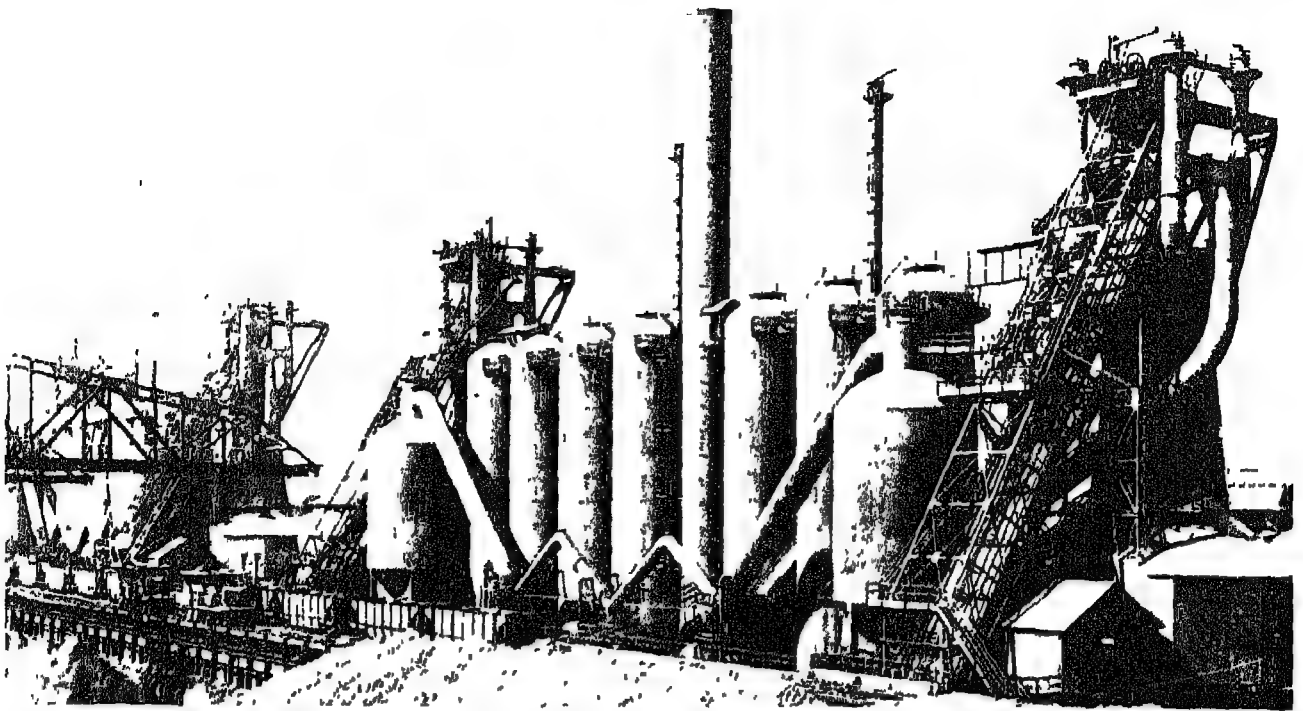
Courtesy, Scribner Art File

Through 1915 and 1916 molten pig-iron flowed constantly from the blast furnaces pictured *above*, which, only a year before, were operating at two-thirds capacity.

In the picture *below*, an open-hearth furnace is being tapped. The larger ladle contains the steel, slag pours off into the smaller one
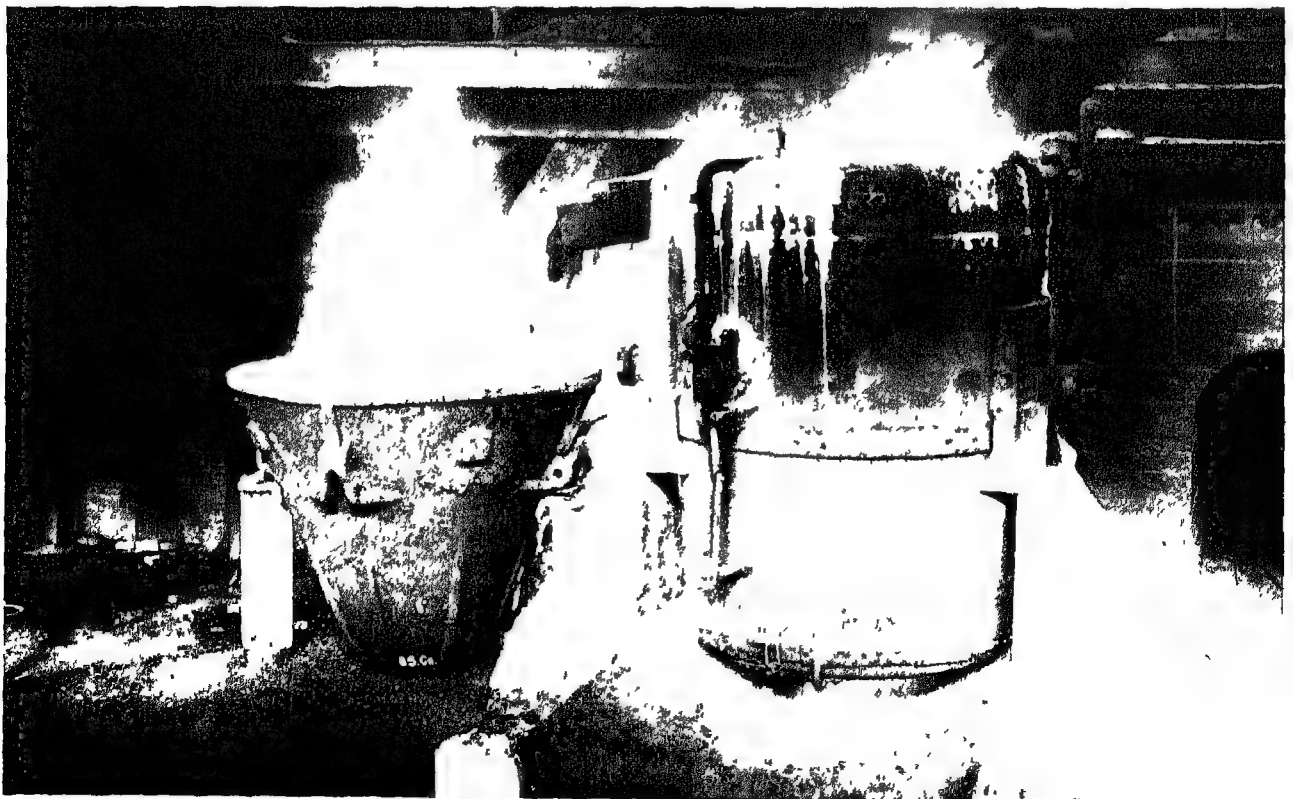
Courtesy, Bethlehem Steel Company, New York City

Copper

By 1916, the United States was producing sixty-two per cent of the world's supply of copper. Prices were at their peak as munition requirements and other wartime uses demanded more and more of the metal.

Above is a picture of Butte Hill, Mont., about 1916—the "richest hill on earth."

The ore train *below* operated between Butte Hill and the refineries.
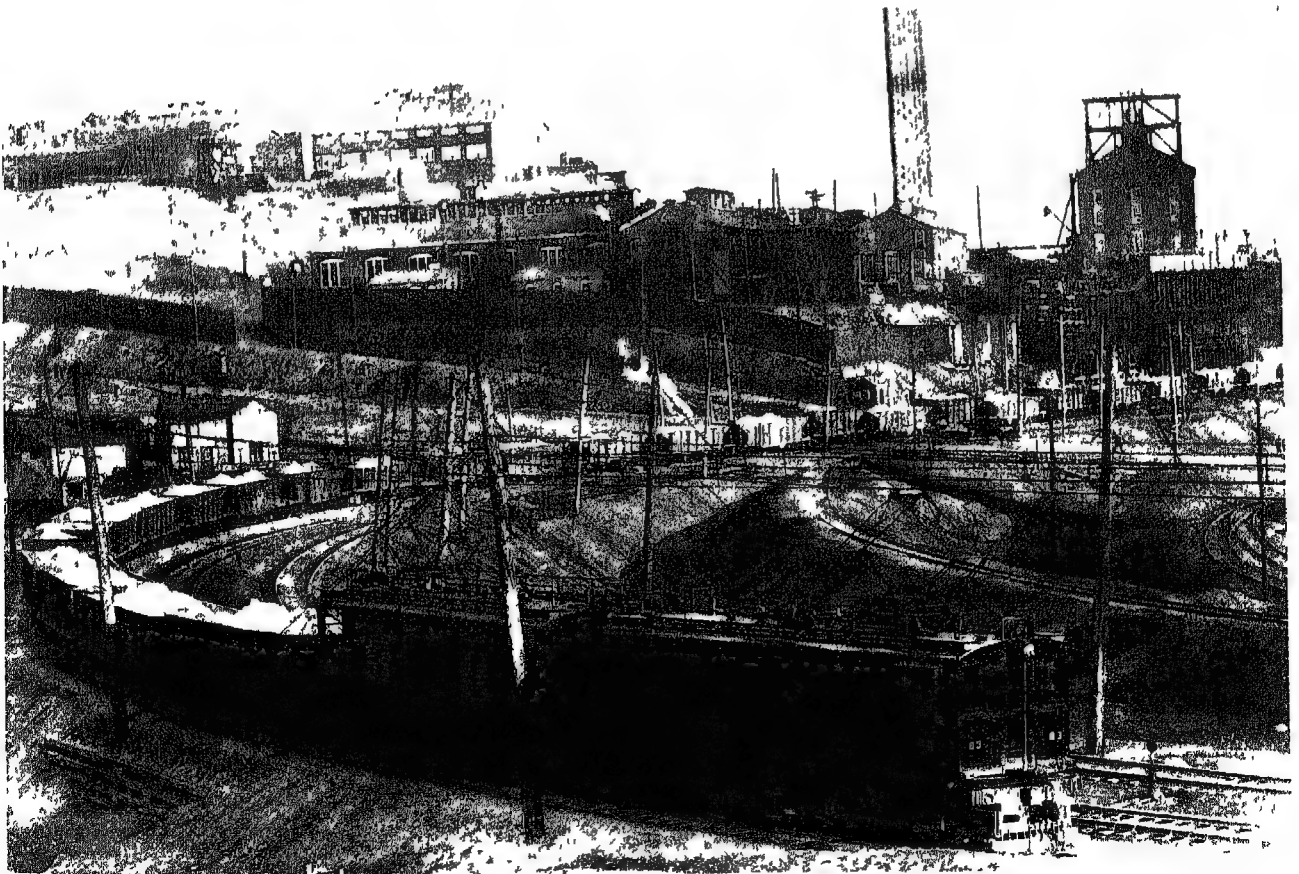
Both illustrations on this page are by the *courtesy* of the Anaconda Copper Mining Company, New York City

Dryer and Dryer

A significant number of States had passed prohibitory laws against liquor in the years between 1905 and 1915. The temperance forces, assisted by the refusal of the liquor industry to reform itself, looked forward confidently to the goal of national prohibition.
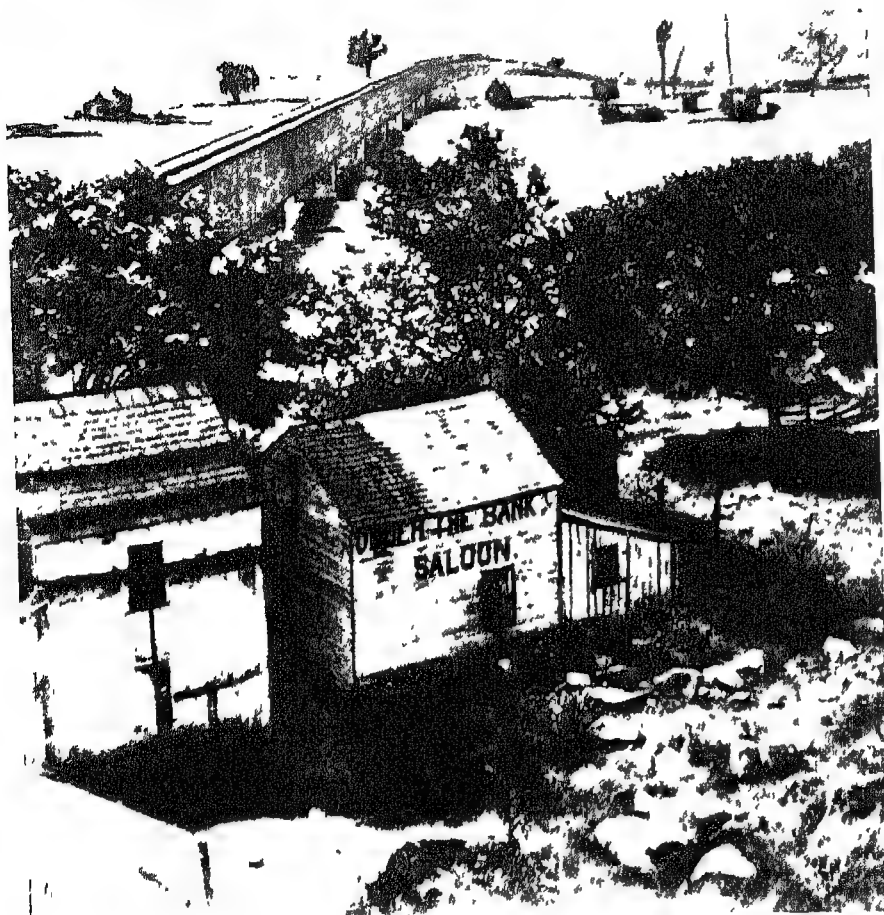
The old-fashioned saloon (at *left* a specimen at Belle Isle, Richmond, Va.; other specimens on page 193) was the chief target of the crusaders for total prohibition.

Courtesy, The Valentine Museum, Richmond, Va

Ladies of the Woman's Christian Temperance Union held a jubilant convention at Seattle, Wash., in October, 1915. A partial view of the delegates is given *below*.

Courtesy, National Woman's Christian Temperance Union, Evanston, Ill

Cigarette Advertising

The cigarette had become by 1914 respectable, virile, accepted. Some public resorts still objected to its use by women, *ladies* did not smoke.
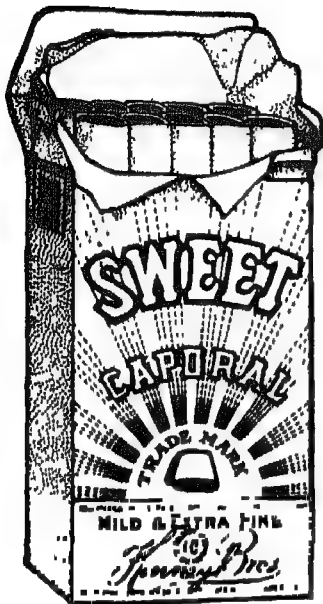
Inc , Philadelphia, Pa

Above is the daddy of all popular brands. "Leading medical journals" were said to endorse the purity and wholesomeness of "Sweets."

Courtesy, N W Ayer & Son, Inc , Philadelphia, Pa

Note in the advertisement *above*, the appeal to snobbery in the watering-place scene, and the statement that the brand was smoked "Everywhere"—the fashionable everywhere, of course.

The 1915 advertisement at the *right* is a notable specimen of ad-writing. The text repays careful reading for its revelation of the motives on which the advertiser played for response.

Men of Fashion Smoke "Bull" Durham

In the brilliant exodus after a big night at the opera, men who subscribe to boxes for the season—masters of the fine art of enjoyment—utilize the interval before the approach of their limousines in relishing a fresh, delicious smoke of "Bull" Durham tobacco Theirs are the strong, active hands of self-achievement—capable of controlling the destinies of an industry, or of contriving a perfectly rolled "Bull" Durham cigarette with equal adroitness.

Town & Country, Jan 1, 1915. *Courtesy*, Town & Country, New York City

Peace Ship

That the hopes of many men for an international agreement to end the war in Europe and prevent future wars might adequately be publicized, Henry Ford was persuaded to charter the Scandinavian liner *Oscar II*. A delegation of peace-loving Americans was to sail aboard her for Norway and Sweden, there to enlist the mediation of all neutral countries and so end the conflict

Long before the ship sailed on Dec 4, 1915, the aim of the voyage had been forgotten in uproarous and adverse criticism of the delegates and their press releases. The boastful statement that "the boys would be out of the trenches by Christmas" and pictures like the one at the *left* in which two of the clerical delegates were shown at exercise on deck (Rev. J. L. Jones, below; Rev. C. F Aked in flight) made the enterprise seem like a colossal joy-ride of fools.

Below we see the *Oscar II* four days out on her mission of peace The heavy seas were nothing compared to the wrangling and disputes that went on in the salons. The effort was a costly, idealistic failure.

Both illustrations on this page are by the courtesy of Underwood Stratton, New York City

More Movies

The year 1915 saw the making of the first screen "epic," a picture which still has greatness, "The Birth of a Nation" At the *right* is shown a scene from Sherman's march to the sea.

Courtesy, Film Library, The Museum of Modern Art, New York City
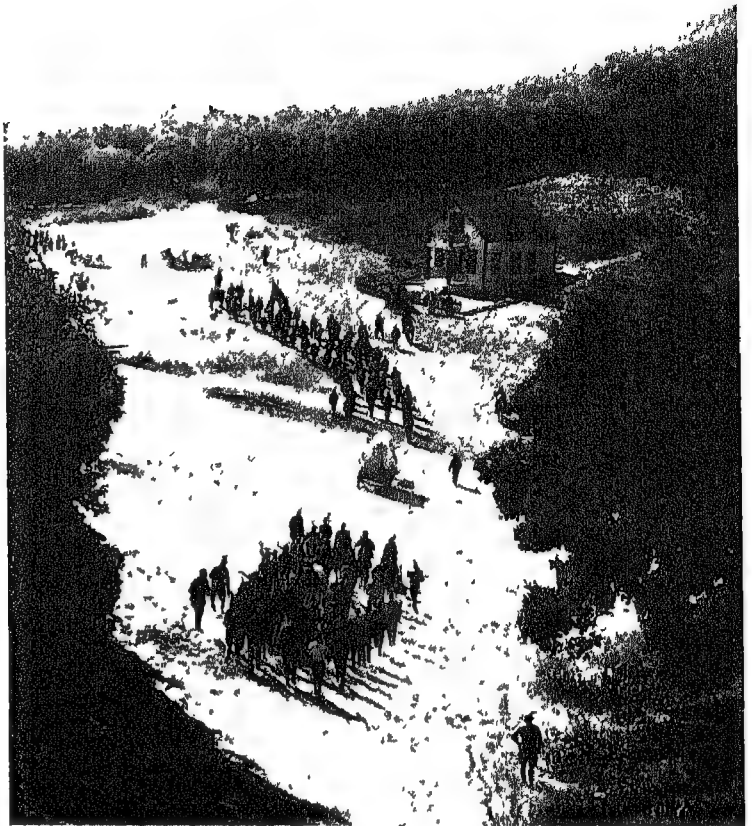
The new medium attracted stars from other firmaments. *Below*, Geraldine Farrar of the Metropolitan Opera is seen in a 1915 movie version of "Carmen," with Wallace Reid.

Courtesy, Photoplay, New York City

Football, Etc.
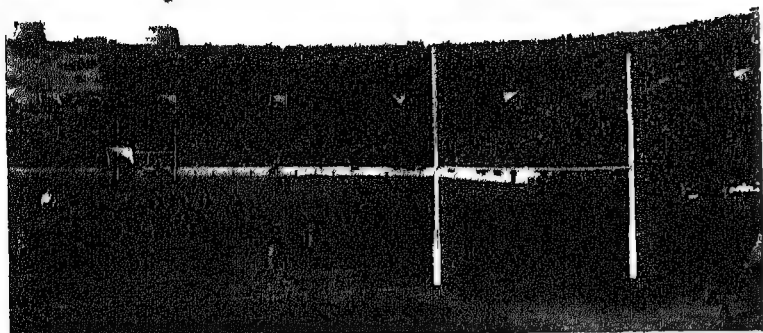
Courtesy, Princeton University Library and R C Rose & Son, Princeton, N J

War or no war, a sport-loving nation continued to enjoy itself. At the *left* is a moment from the Yale-Princeton game of 1915.

The mysterious sport of curling had its devotees. At the *right*, Nicholas Murray Butler, President of Columbia University, is skipping to the curler in 1915

Town & Country Jan 20, 1915
Courtesy Town & Country, New York City
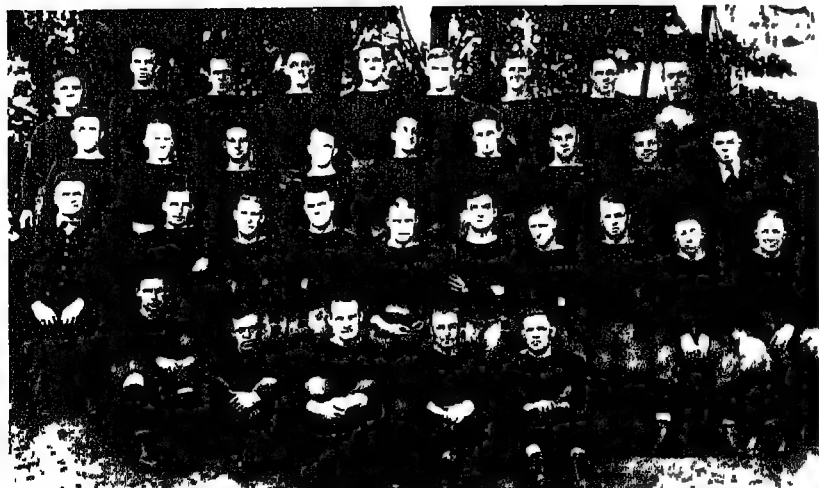
Courtesy, The University of Pittsburgh, Pa.

At the *left* is the undefeated, untied Pittsburgh team of 1916, called by Walter Camp the best team he had ever seen "Pop" Warner is on the left end of the second row.

The New School

The physical plant of American public schools was in process of improvement, along with the curriculum and the faculty.

In sincere praise of the new type of schoolhouse shown at the *right*, a 1915 publication said that it was "as efficient as a modern factory."
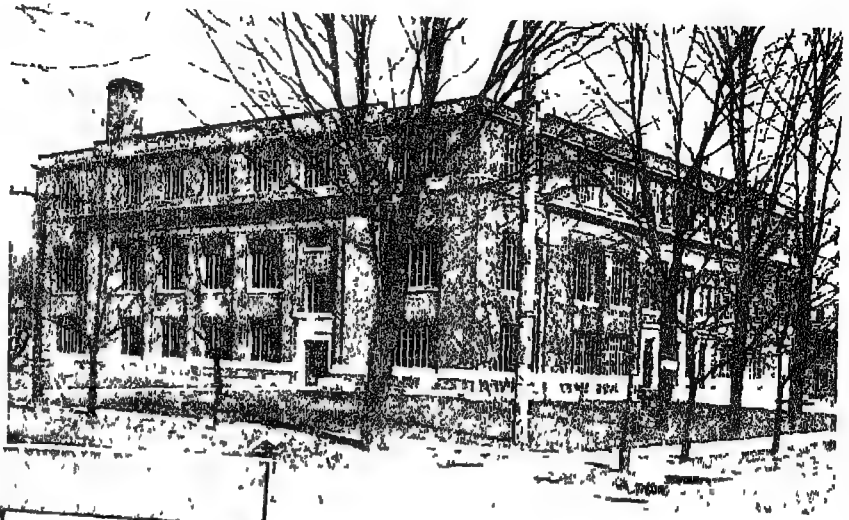
L. W. Rapeer, ed., *Educational Hygiene* 1915

The new type of desk shown *left* was not screwed to the floor. The old rigidity of classroom organization had been owing in great measure to the strictly formal arrangement of classroom furniture. Supervised play, as observed in the Montclair, N. J., picture *below*, was intended to encourage the group spirit.

L. W. Rapeer, *Teaching Elementary School Subjects* 1917

L. W. Rapeer, *Teaching Elementary School Subjects* 1917

The Columbus Raid

Continuing forays of Mexican bandits across the border climaxed on the night of Mar 8, 1916, when about fifteen hundred Mexicans under Pancho Villa raided and looted the town of Columbus, N. M.

The picture *above* was one of the first to be taken after the outrage. The ruins of the town hotel, in which six Americans were killed, may be seen in the foreground.

Six thousand soldiers under command of Brig. Gen. John J Pershing were ordered to pursue and capture Villa A group of the Eleventh U. S. Cavalry is shown *below* on the pursuit southward into Mexico.

Both illustrations on this page are by the *courtesy* of Underwood Stratton, New York City

Chasing Villa

Pershing's force advanced some hundreds of miles into Mexico, despite the protests of the Mexican government Lack of air reconnaissance and rail transport made the hunt through the mountains of northern Mexico a tedious failure. Villa remained uncaptured, although his forces were dispersed
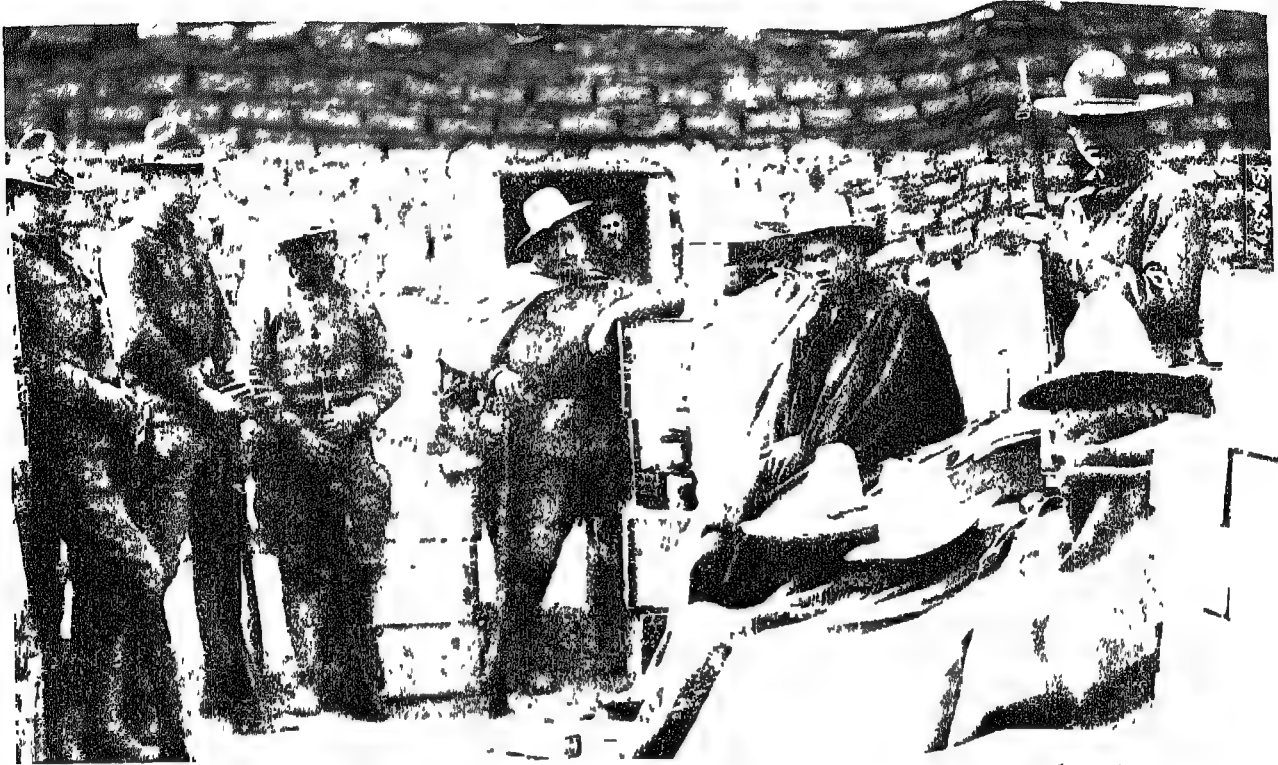
In the picture *above*, some Villistas captured toward the end of April are under the large hats on the *right*—but not seen.

General Pershing and his staff are pictured *below* The General stands fourth from the left. Fifth from the left (wearing a tie) is his aide, Lt. George S. Patton.

Both illustrations on this page are by the *courtesy* of Underwood Stratton, New York City

Preparedness

As the European belligerents continued to trespass on the rights of the United States and other neutrals, President Wilson became convinced that a greatly strengthened Army and Navy might give his protests more weight. He proposed a National Defense Act which became law in June, 1916.

Courtesy, Underwood Stratton, New York City

While Congress debated the bill, "Preparedness Parades" took place in various localities. In New York City the paraders marched until far into the night of May 13, 1916. *Above*, a unit is seen passing the Public Library at 42nd Street and 5th Avenue.

A Challenge Accepted

To all whom it may concern.

Whereas, *President Wilson, speaking recently in St. Louis, challenged those who differ with him as to the immediate need for unusual naval and military preparations to "hire large halls" and state their case to the public, and*

Whereas, *the various militarist organizations masquerading as "defense" societies and falsely claiming that they alone can speak for American patriotism are deliberately creating a widespread condition of hysteria as to the safety of this country and the danger of foreign invasion, and*

Whereas, *this reckless propaganda of militarism and jingo imperialism if allowed to go on unchecked will inevitably lead to the destruction of the principles of liberty and freedom upon which the hope of American Democracy is based,*

We hereby announce that

We have accepted the President's challenge and have hired the largest halls in New York, April 6, Buffalo, April 7; Cleveland, April 8, Detroit, April 9; Chicago, April 10, Minneapolis, April 11; Des Moines, April 12, Kansas City, April 13, St Louis, April 14; Cincinnati, April 15, and Pittsburgh, April 16, where the following American Citizens, who have volunteered their services, will set forth

THE TRUTH ABOUT "PREPAREDNESS"

STEPHEN S WISE
WASHINGTON GLADDEN
SCOTT NEARING
MARTIN HARDIN
JAMES H MAURER
HERBERT BIGELOW

GEN ISAAC R. SHERWOOD
AMOS PINCHOT
A A BERLE
ARTHUR L WEATHERLEY
JOHN HAYNES HOLMES
JOHN A. MCSPARRAN

Signed ANTI "PREPAREDNESS" COMMITTEE
Munsey Building Washington, D C.

Courtesy, The New-York Historical Society, New York City

There were those who did not agree with the President. William Jennings Bryan had already resigned as Secretary of State in protest against the policy of the United States Now, in answer to the preparations for national defense, a group of citizens issued the broadside at the *left* and proposed to argue the matter.

The War Intrudes

For a few hours on the night of July 30, 1916, the thunder and red glare of the Western Front came to Jersey City, N. J., and the New York harbor area. German saboteurs exploded the munitions shipping station on Black Tom Island.
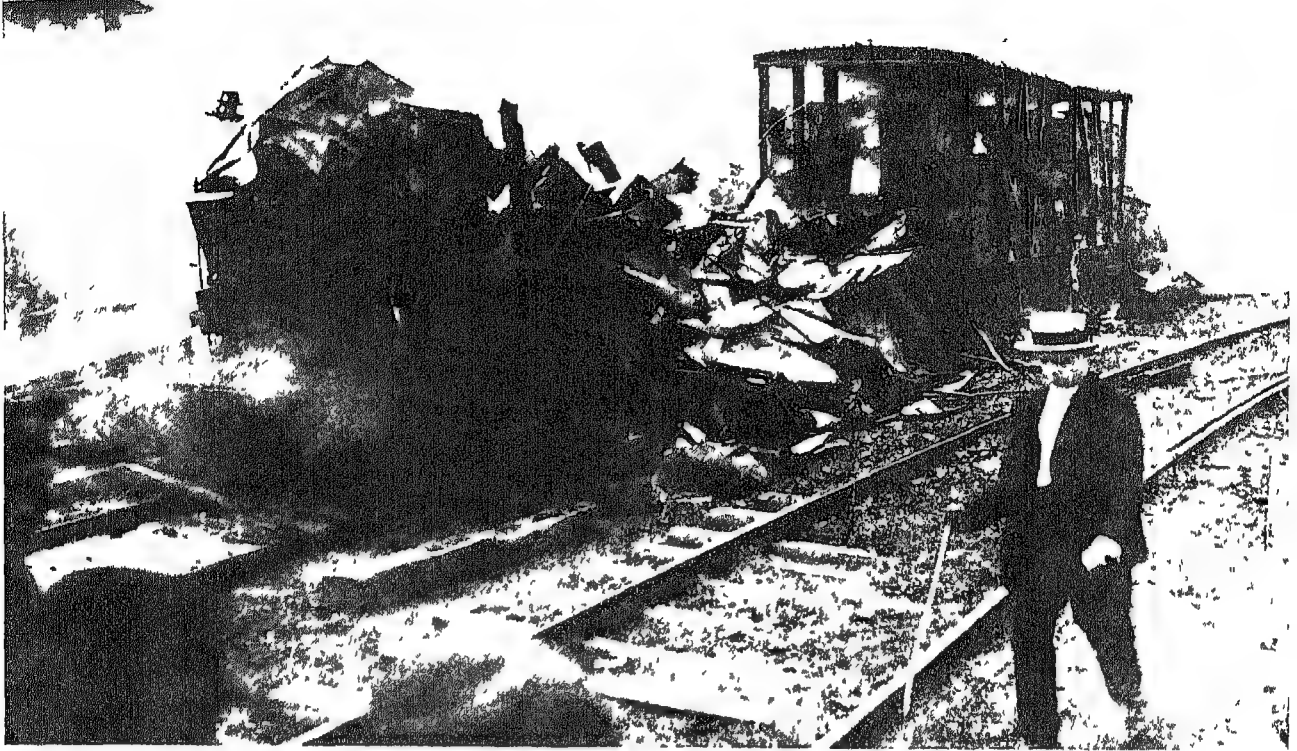
A number of persons were killed and as may be judged from the picture *above*, taken after the fire was checked, property damage was extensive

On Aug. 23, 1916, the German submarine *Deutschland*, a cargo-carrier, ran the British blockade. She is shown *below* on her arrival at Baltimore, Md.
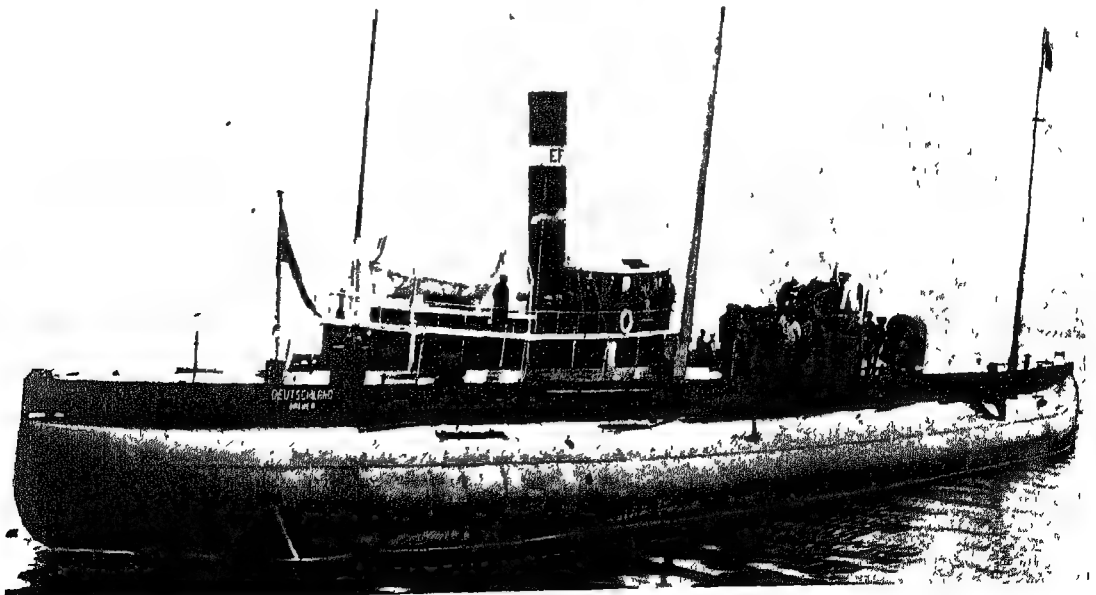
Both illustrations on this page are by the *courtesy* of Underwood-Stratton, New York City

Social Advance

Domestic reforms instituted by the Administration were less spectacular than the actions required of it by the war in Europe, but they were effective and solidly conceived. Idealism marked the politics of the day and the mood of American society began to conform.

Courtesy, H J Heinz Company, Pittsburgh, Pa

Employee Relations

Enlightened corporations were voluntarily supplying services which helped to keep their staffs healthy and happy. At the *left* is seen part of the free dental clinic maintained by a Pittsburgh, Pa., food company

"Be Prepared"

Many men were giving their time and skill to the work for betterment of American boys conducted by the Boy Scouts of America. This organization received its Federal charter in June, 1916, and the contemporary picture at the *right* shows a "time trial" in the practice of first aid to injured persons This was one of many practical skills which scouting emphasized

Courtesy, Boy Scouts of America, New York City

Emotion on the Screen

Varied fare was offered to the moviegoer of 1916 At the *right*, Roscoe ("Fatty") Arbuckle is seen in an episode of "Fatty at Coney," an early example of Arbuckle's subtle comedy technique

William Fox reached deep down in the barrel for some of the vehicles in which Theda Bara (*below* at the left) appeared in 1916. Mrs. Wood's tearful "East Lynne" provided the scene *below*, a play which in the words of a critic "is perennially attractive to adolescents of all ages."

Both illustrations on this page are by the *courtesy* of Photoplay, New York City

Spectacles

Following on his success with "The Birth of a Nation," D. W. Griffith directed and produced "Intolerance" in 1916, another revelation of hidden possibilities in screen entertainment. One of the crowd scenes from "Intolerance" is shown *below*.
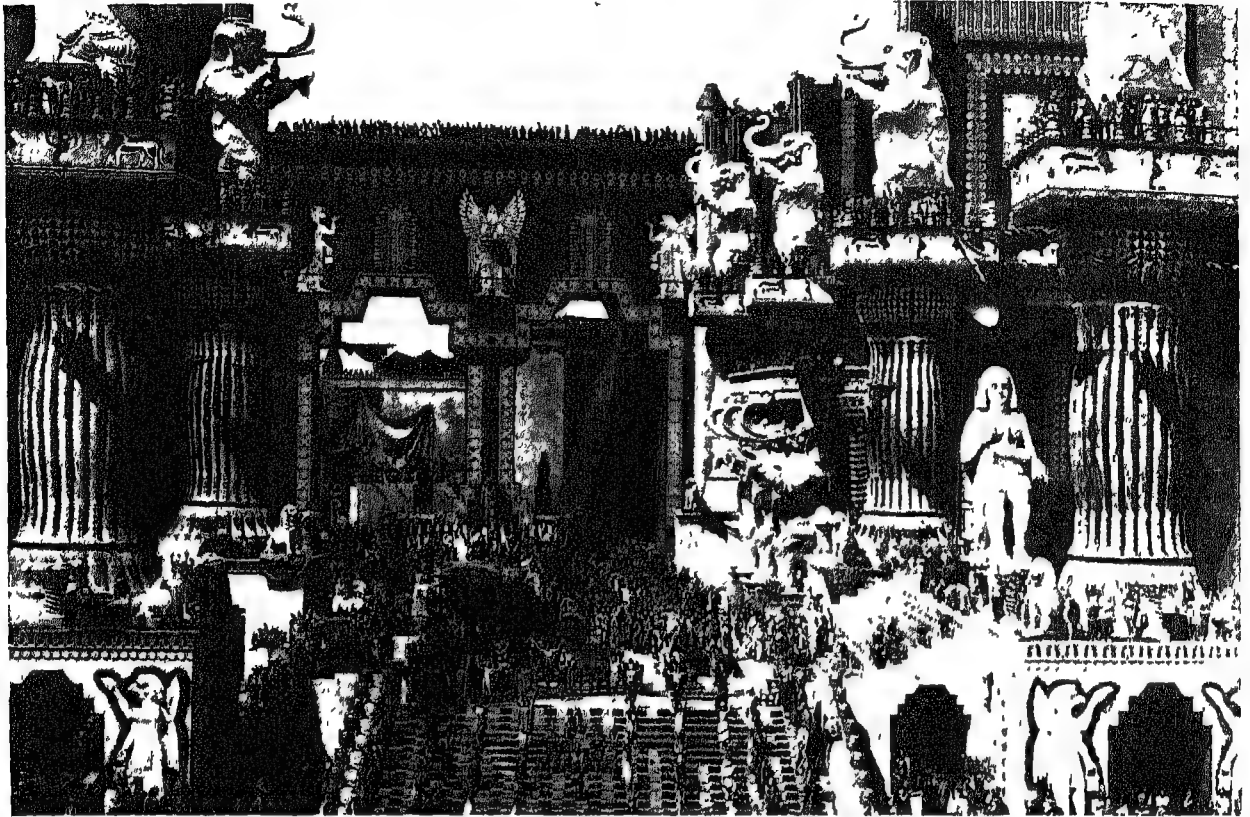
Courtesy, Film Library, The Museum of Modern Art, New York City

Town & Country, Sept 1, 1916
Courtesy, Town & Country, New York City

On the Stage

At the *left*, the Dolly Sisters, Rozsika and Yancsi, are seen as they appeared at the final curtain of "His Bridal Night," a 1916 farce.

Broadway

For the tenth season of his "Follies," Flo Ziegfeld outdid himself in providing a show of sufficient gorgeousness and eye-appeal to match the occasion. His book-writers even rewrote a few Shakespearian scenes for inclusion among the Hula numbers and the tableaux.

Miss Allyn King (*right*) was chosen to be "The Follies Girl of 1916," and Miss Ann Pennington (*below*) made the best of the gifts with which nature had endowed her

Town & Country, July 20, 1916
Courtesy, Town & Country, New York City

Town & Country, July 20, 1916
Courtesy, Town & Country, New York City

Actresses still struck on occasion the cigarette-premium poses of an earlier day. At the *right* is a publicity portrait of Eva Tanguay, whose raucous protest that she didn't care was heard from coast to coast.

> "My voice, it may sound funny
> But it brings me in the money—
> *And I don't care!*"

Courtesy, Scribner Art File

Campaign of 1916

Woodrow Wilson had successfully begun a program of social reform, and he had "kept us out of war." There was no question about his renomination.
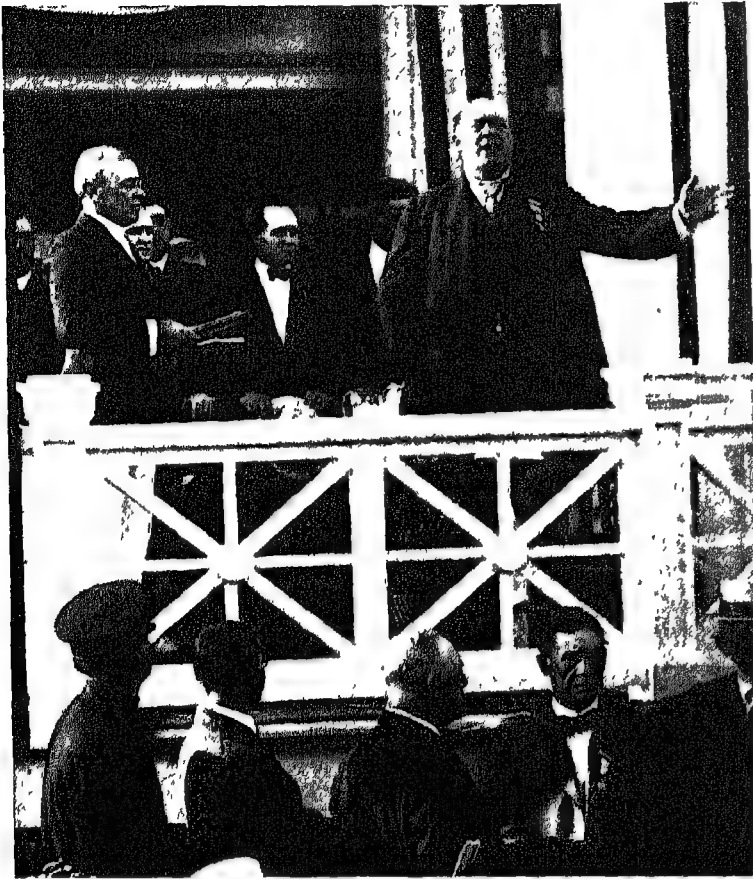
Courtesy, Underwood-Stratton, New York City

The President is shown *left* at Long Branch, N. J, as he listened to the official notice of his renomination, brought to him by Senator Ollie James of Kentucky in a speech before almost thirty thousand people.

Peace with Honor!
Preparedness!
Prosperity!

THE
Democratic Text Book
1916

Copyright by HARRIS & EWING

Woodrow Wilson

Courtesy, The New York Public Library, New York City

Far and wide, the Democratic Party circulated its "Campaign Book" in which were stated reasons for the President's re-election. *Right* is shown a page from the book, and on its front cover (*left*) may be read the campaign slogans.

FIGURE IT YOURSELF—
How Much Do We Owe Woodrow Wilson?

LAST JULY THE AMERICAN PEACE SOCIETY ESTIMATED THE TOTAL COST OF THE WAR AT THE END OF TWO YEARS AT MORE THAN $140,000,000,000, BASING ITS ESTIMATES ON THE CONSERVATIVE FIGURES OF SOME OF THE FOREMOST EUROPEAN STATISTICIANS, SUCH AS EDGAR CRAMMOND, OF ENGLAND; HENRI MASSON, OF BELGIUM; YVES GUYOT, OF FRANCE; MONSIEUR BARRIOL, OF RUSSIA; VON RENAULT AND RIESSER, OF GERMANY, AND THE AUSTRIAN MINISTER OF NATIONAL DEFENSE.

THIS HUGE COST INCLUDED DIRECT EXPENDITURES AND INDIRECT COSTS DUE TO LOSSES OF PROPERTY AND CAPITAL, AND WAS DIVIDED THUS.

GERMANY	$47,805,000,000
ENGLAND	27,350,000,000
FRANCE	22,025,000,000
AUSTRIA	23,790,000,000
RUSSIA	18,770,000,000
BELGIUM	5,540,000 000
ITALY	11,000,000,000

MINISTER GUYOT, OF FRANCE, HAS DECLARED THAT "THIS VAST DRAIN ON THE WORLD'S FINANCES IS CALCULATED TO PUT THREE-FOURTHS OF THE WORLD IN PAWN, WERE IT TO CONTINUE FOUR YEARS LONGER, LEAVING THE UNITED STATES AS THE ONLY SOLVENT NATION ON EARTH."

AND THIS REVEALS ONLY THE FINANCIAL SIDE OF THE "HELL" FROM WHICH WOODROW WILSON HAS SAVED THE UNITED STATES.

Courtesy, The New York Public Library, New York City

Campaign of 1916 (*Continued*)

The Republican Convention, June 10, 1916, chose Charles Evans Hughes to be Republican candidate for the Presidency, although Progressives had hoped for Theodore Roosevelt. The ex-President announced his support of the Republican ticket and his refusal to run again under the Bull Moose emblem, an action dictated by his fear and loathing of Wilson's policies. A reunited Republican Party stood a good chance of victory.

In the picture at the *right*, the bearded Republican nominee is seen in talk with the banker, Henry Clews. In the atmosphere of New York City and State, Justice Hughes felt at home. He is shown *below* addressing a crowd at the Syracuse, N. Y., State Fair.
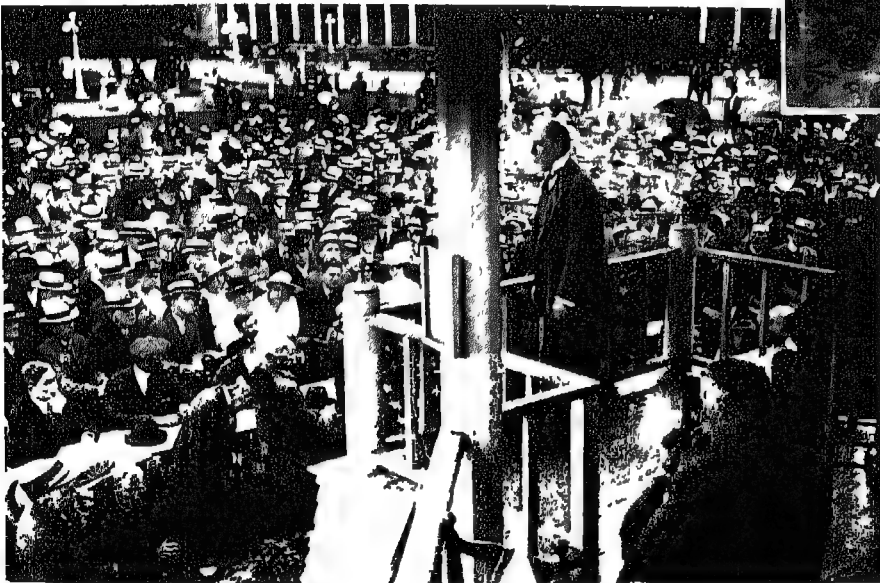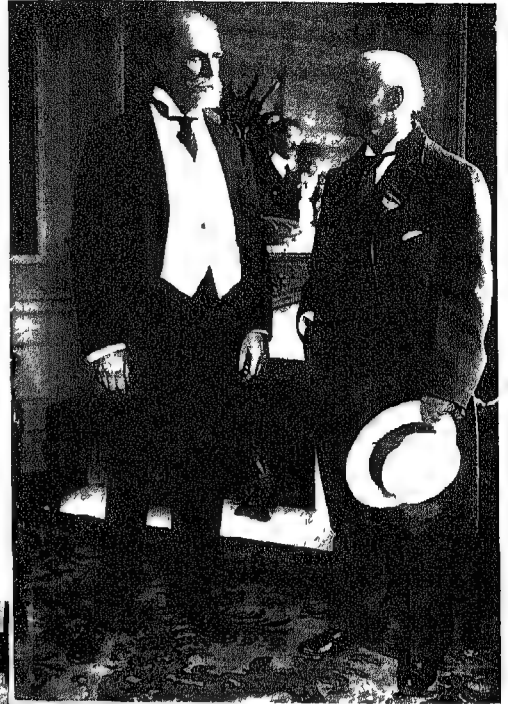
The Hughes campaign train is seen *below* at Miles City, Mont.

Justice Hughes did not accord with Western ideas of a President. Also, in California, he was used by one of the sides in a local political feud to score off the other, and so made a number of political enemies.

All illustrations on this page are by the *courtesy* of Underwood-Stratton, New York City

11

END OF AN ERA

While the nominating conventions were in session and the rival candidates were maneuvering for position; while Frenchmen, Englishmen and Germans battled on the flat country around Bapaume and Peronne in the great Somme River offensive; the people of the United States enjoyed a peaceful summer, disturbed only by the war pictures in newspaper rotogravure supplements.

Thousands of city-bound people went to bathe in the surf at beaches like New York's Manhattan Beach (*above*). The Oriental Hotel may be seen in the background.

A "goose-chase" contest in Long Island Sound (*below*) attracted an audience from suburban Larchmont's Yacht Club.

Both illustrations on this page are by the *courtesy* of Underwood Stratton, New York City

Summer Sport

Canoe races were popular at Moosehead Lake, Me. (*right*).
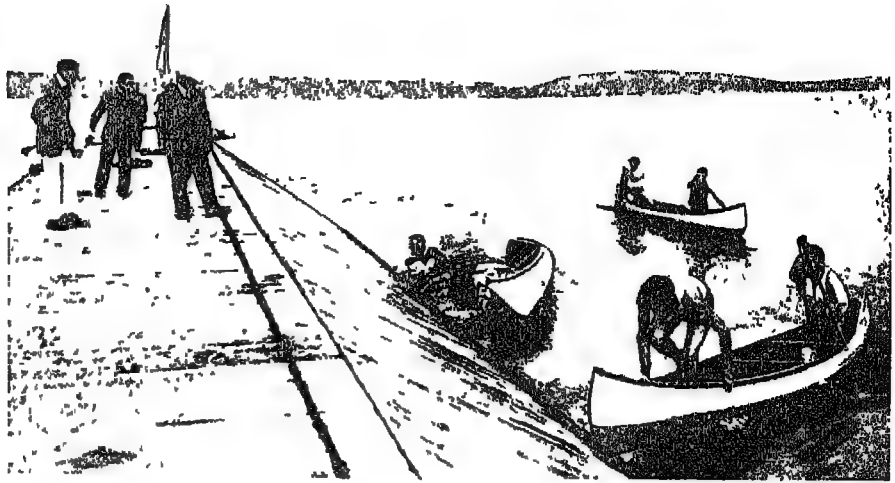
Courtesy, The Long Island Railroad, New York City

The morning hours were the traditional bathing hours at West Hampton, Long Island (*left*).

Courtesy, The Long Island Railroad, New York City

Hill Top Inn, on Bellevue Avenue, Newport, R. I., housed many prominent guests, and its Wednesday and Saturday tea dances were popular affairs At the *right*, Rear Admiral H. T. Mayo and officers of his staff are seen outside the Inn.
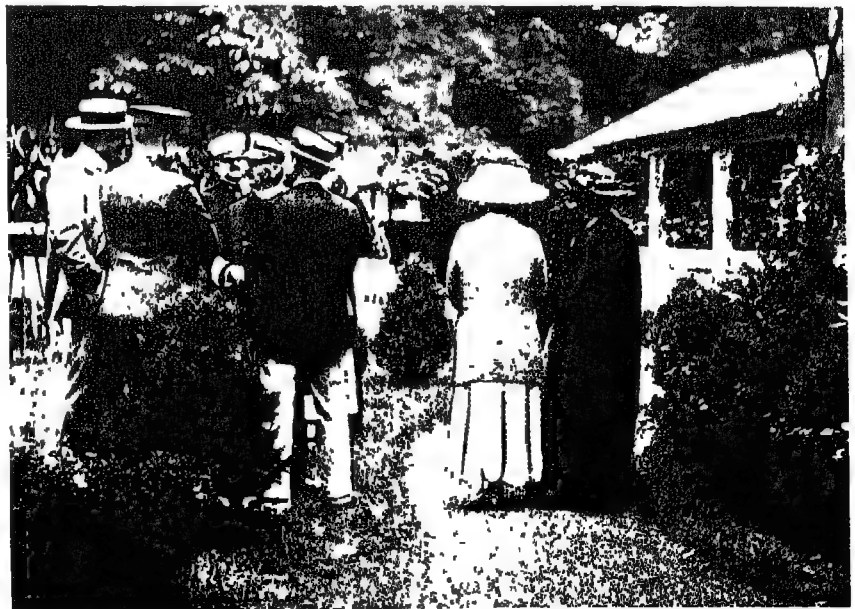
The Spur, Aug 15, 1916

Touring

Restless Americans who did not care for the local delights of the seashore betook themselves to the National Parks for change of environment.

Western coaches met the trains at the Gardiner, Mont., railroad station shown *above.*

The road up Mt. Washburn in Yellowstone Park (*below*) was best negotiated by a sure-footed team.

Both illustrations on this page are by the courtesy of the National Park Service

Sundays at Home

The baseball park was a pleasant place to spend the afternoon. The town boys were playing the team from the factory.
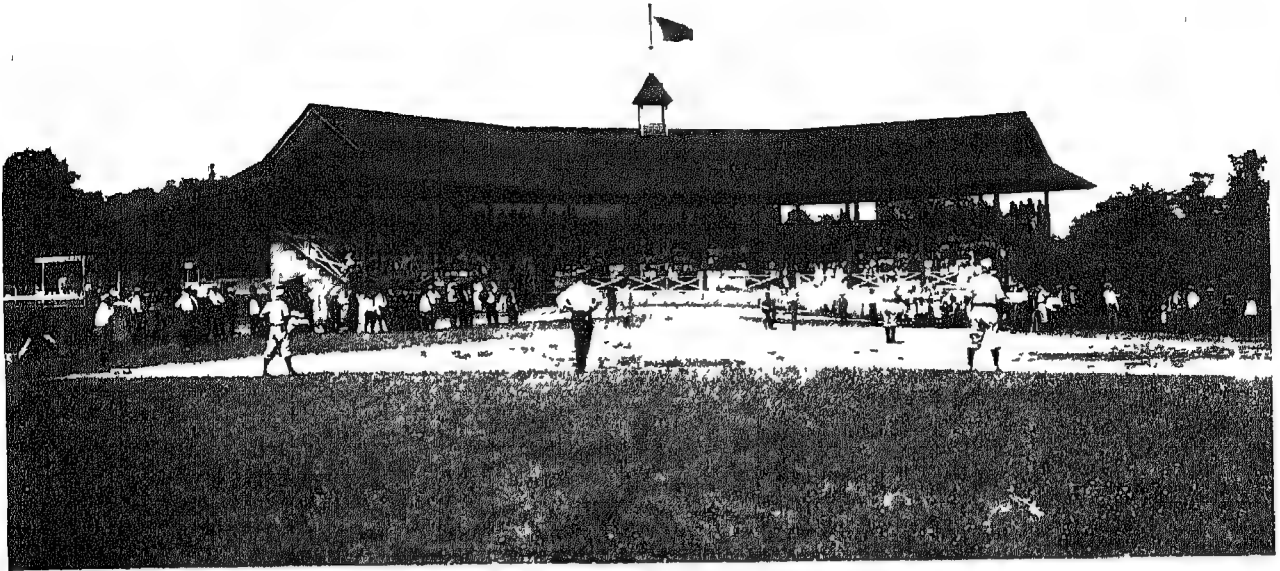
Courtesy, H J Heinz Company, Pittsburgh, Pa

The picture *above* was taken near Pittsburgh, Pa.

In the evening, if it were not too hot, the local movie house was the place to go. There was a new comedy showing, "The Adventurer," with Charlie Chaplin and Edna Purviance.

Courtesy, Photoplay, New York City

Normal Things

The customary chores and small activities of the average American citizen were performed in a mood of personal security made all the more precious by what newspapers called "the European holocaust."

Courtesy, Mrs Bert Gilmor, Los Angeles, Calif

On a farm near Ada, Mich., the woman seen at the *left* experienced this sense of security, just as did the trolley passengers in Richmond, Va., *below*.

Courtesy; The Valentine Museum, Richmond, Va

As Fall Came On

The old passenger whaleback *Christopher Columbus* (*right*) was still making the run between Chicago and Milwaukee.
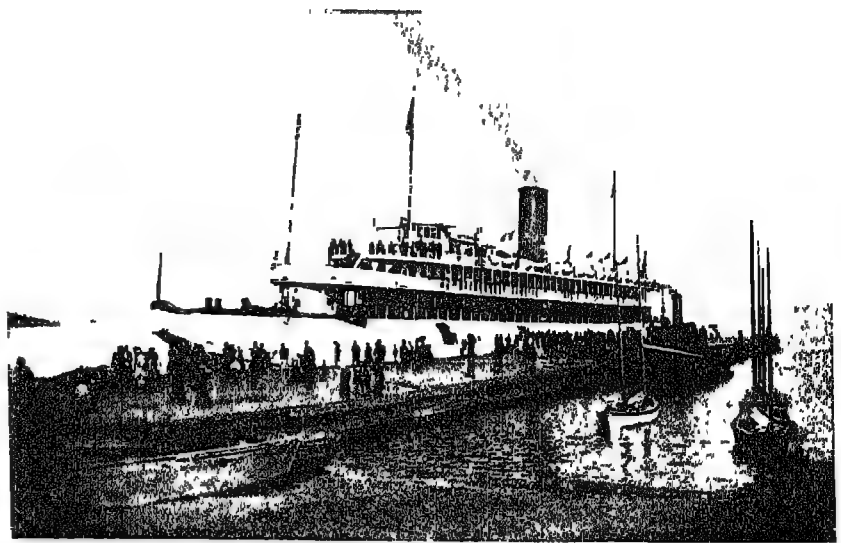
Courtesy, St Louis County Historical Society, Duluth, Minn
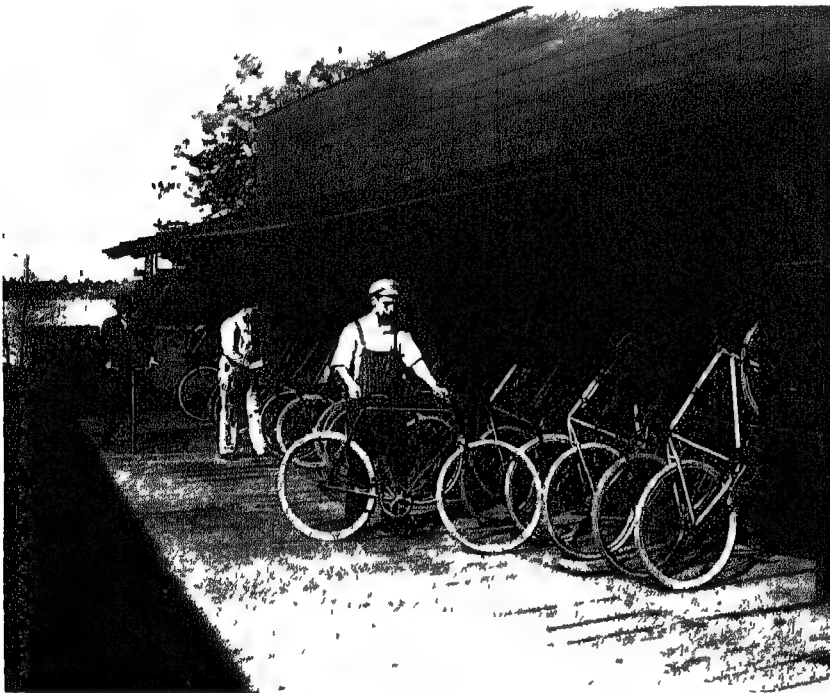
Courtesy, H J Heinz Company, Pittsburgh, Pa

Near Pittsburgh, Pa., workmen cycled to the factory in the pleasant warmth of Indian summer.

In the suburbs of Chicago, laundry was delivered in the handsome style illustrated at the *right*

Courtesy, International Harvester Company, Chicago, Ill

School Days

The pains of childhood were renewed as school reopened.
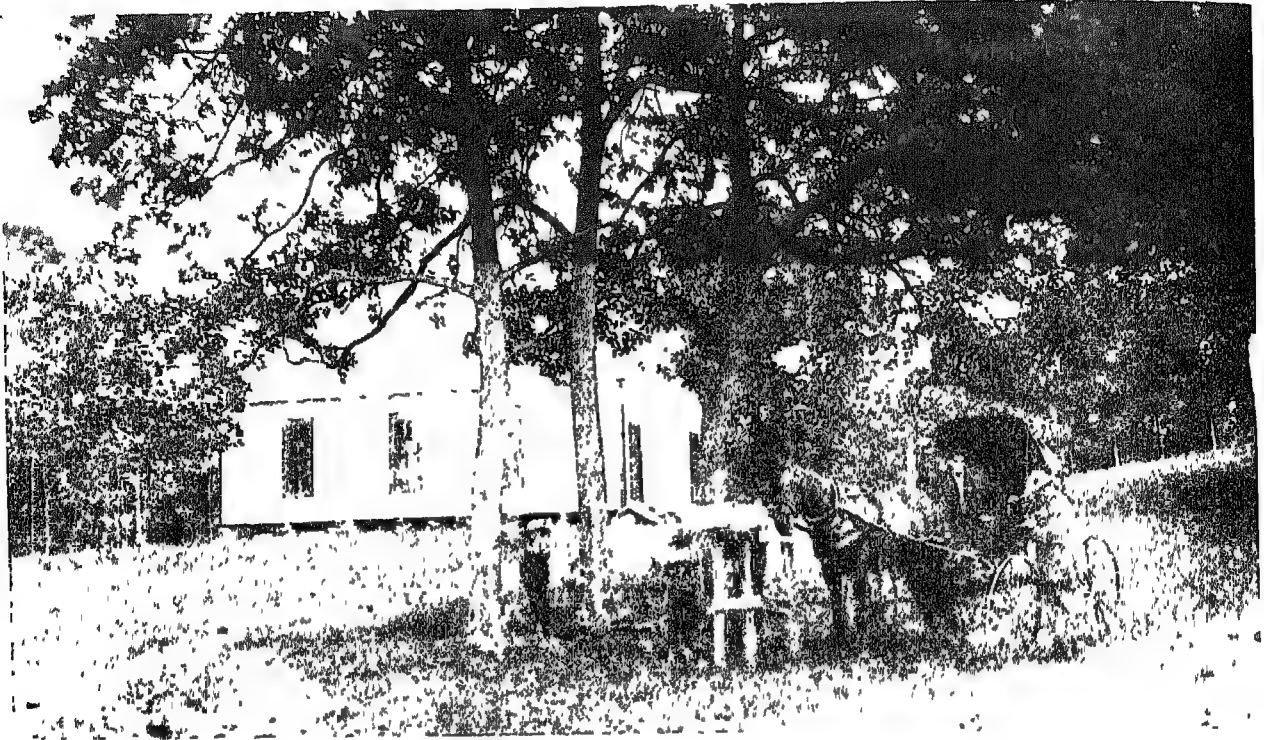
Courtesy, Public Roads Administration, Washington, D C

The picture *above* was taken in Lauderdale County, Ala. Two small boys enjoy the last moments of freedom.

As part of their education, North Carolina school children were set to picking cotton.

Courtesy, North Carolina State Department of Archives and History, Raleigh

Cabaret

The fall of 1916 saw customers thronging as never before to night resorts which offered a dance band and entertainment along with food and drink.

Courtesy, Brown Brothers, New York City

The scene *above* was photographed at the Cafe Beaux Arts, New York City.

Jazz

Afro-American rhythms for dancing, the "jazz" idiom, first came to be popular in the East as performed and recorded by the Original Dixieland Jazz Band. The band is shown *right* as it appeared at Reisenweber's Cafe, New York City.

Courtesy, Mr James U. Ernst, New York City

Shall We Dance

It was a dancing time, very gay and light of heart.
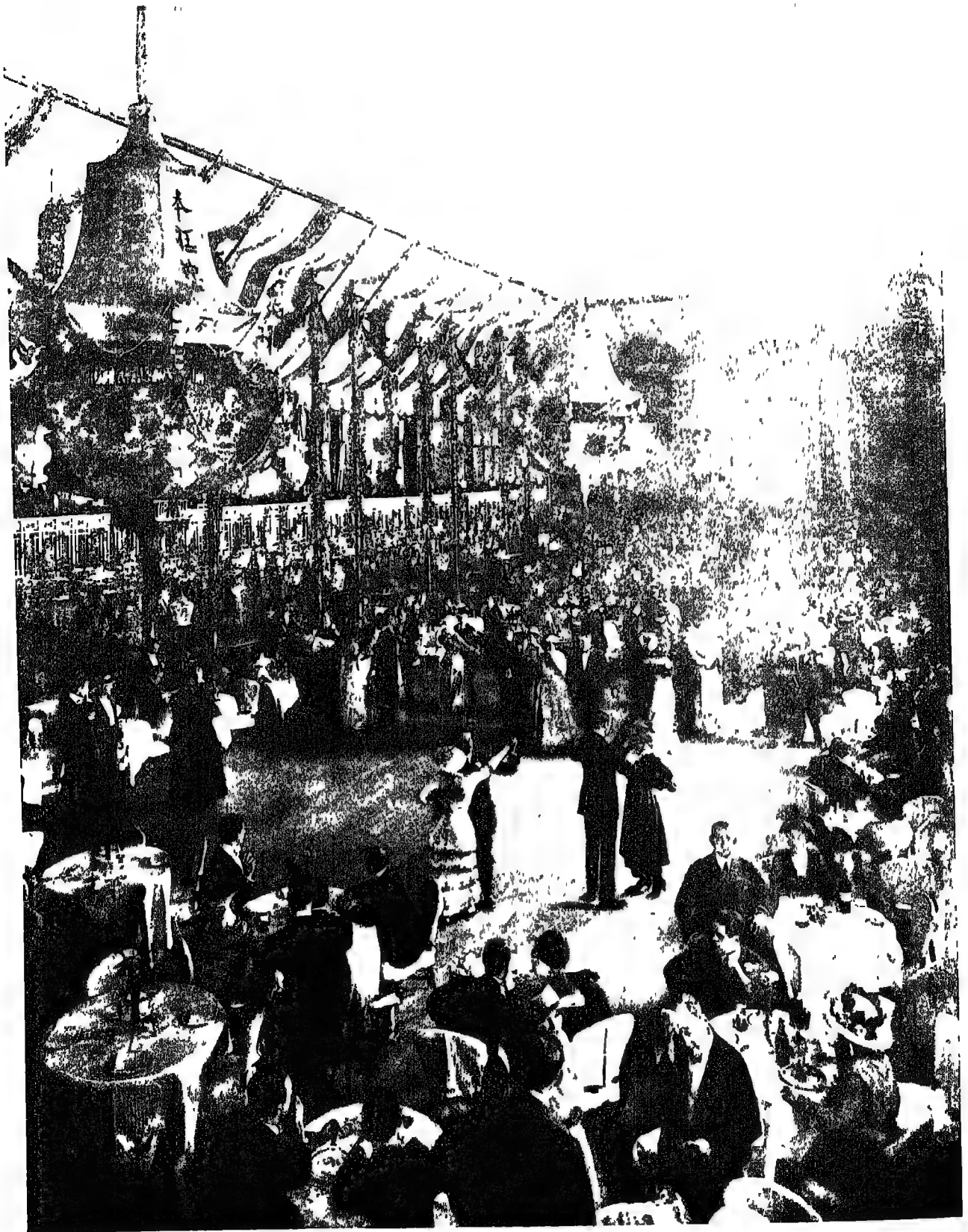
Courtesy, Brown Brothers, New York City

Merrymakers, young and old, met at the "Cascades" ballroom of New York's Biltmore Hotel *above*. It was "smart" to go there. Note the waiter at the lower right.

Old and New

A third traditional ingredient went along with the dancing and the singing.

Family saloons like Rudolph Steinbacher's Milwaukee tavern shown *right* catered to one class of customer in 1916
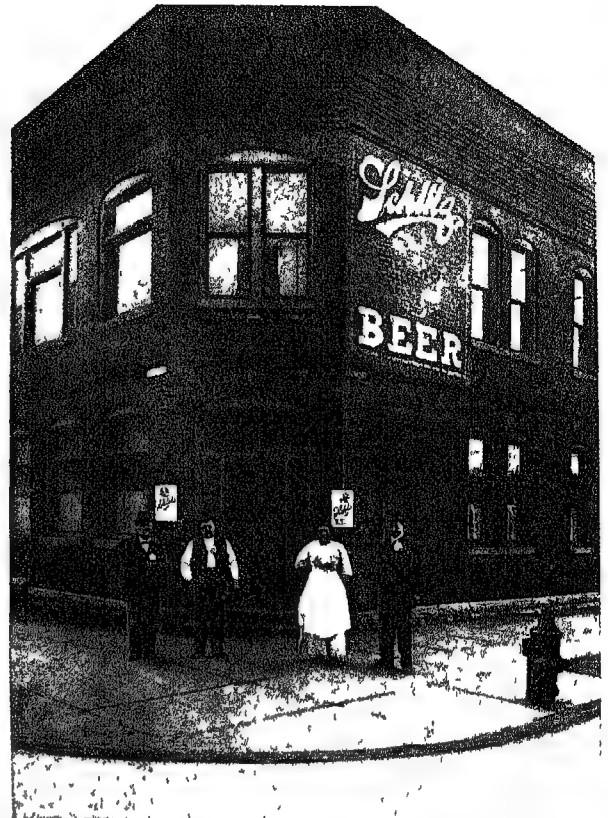
Bustanoby's New York City cafe had a different kind of trade. As proved *below*, Bustanoby's was up-to-date and tolerated women at its bar.

But it was later than they thought.

Courtesy, Wisconsin State Historical Society, Madison

Courtesy, Brown Brothers, New York City

Victories in Sight

The men and women who had fought for years against the liquor trade were heartened in their struggle as the spring of 1917 drew on.

The Union Signal

OFFICIAL ORGAN
NATIONAL WOMAN'S CHRISTIAN TEMPERANCE UNION

Vol XLIII — EVANSTON, ILL., MARCH [illegible] 1917 — No 10

PROHIBITION MEASURES PASSED BY SIXTY-FOURTH CONGRESS AND SIGNED BY PRESIDENT WILSON

ALASKA PROHIBITION BILL, passed by the Senate and House without the formality of a roll-call.

PORTO RICAN CITIZENSHIP BILL, containing a provision for prohibition, with a referendum to the people if desired by them

DISTRICT OF COLUMBIA BILL, prohibiting the manufacture and sale of alcoholic beverages in the District.

AMENDMENT TO POSTOFFICE APPROPRIATION BILL, prohibiting the use of the mails for liquor advertising purposes, and also prohibiting, excepting for scientific, sacramental, medicinal and mechanical purposes, the shipment of alcoholic liquors, through the channels of interstate commerce, to individuals in states that now prohibit the manufacture and sale of intoxicating liquors

Courtesy, National Woman's Christian Temperance Union, Evanston, Ill

At the *left* appears a front cover from the official organ of the Woman's Christian Temperance Union

"I wudden't be surprised at anny minyit if I had to turn this emporyum into an exchange for women's wurruk," commented Mr. Dooley, the immortal saloon keeper of Archey Road.

Agitation had begun as well against cheap and often pornographic reading supplied to the young by mail

The advertisement *right* stressed the positive side of this campaign.

Courtesy, N W Ayer & Son, Inc, Philadelphia, Pa

Peace Without Victory

Charles Evan Hughes had gone to bed on election night, 1916, believing himself President. As returns continued to come in, his lead dwindled, and the electoral votes of California determined his defeat. Woodrow Wilson had been re-elected, by twenty-three electoral votes.

Assured of popular support, President Wilson redoubled his efforts to achieve a European peace without bitterness. His proposals failed to influence either set of belligerents. The German high command, driven to desperation by the throttling grip of the Allied blockade, forced the Reichstag to reopen unrestricted submarine warfare, despite promises made in answer to Wilson's earlier protests After Feb. 1, 1917, German submarines were to sink on sight all vessels found in a clearly delimited zone around the British Isles and in the Mediterranean. One United States ship would be permitted a weekly call at the port of Falmouth, but she would have to bear distinctive markings and carry no contraband of war.

On Feb. 3, 1917, the President informed Congress that he had broken off diplomatic relations with Germany. Late in February, the State Department received evidence that Germany was acting to bring Mexico into the war against the United States should the diplomatic rupture lead to more serious action. While a Senate filibuster fought to prevent the arming of American merchant ships, several of them were torpedoed by German submarines. War had come in fact Once again President Wilson appeared before Congress.
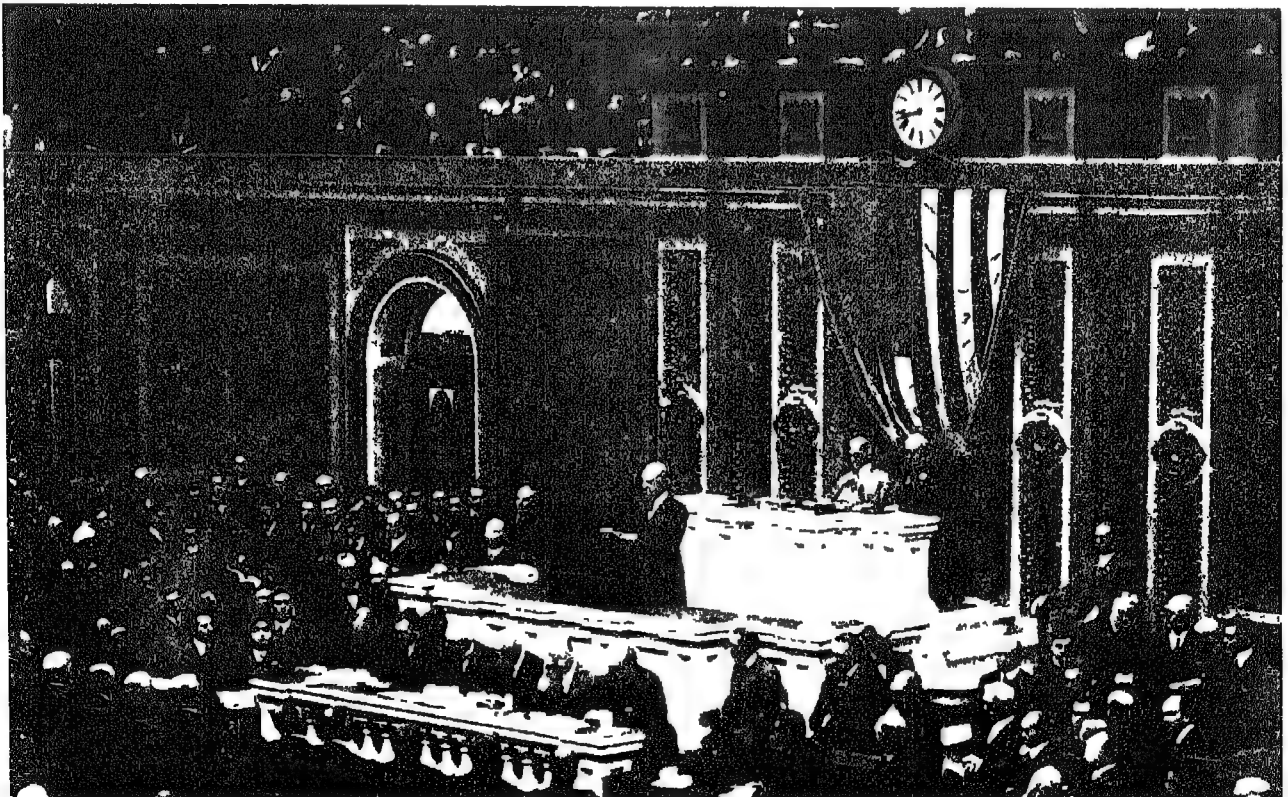
Courtesy, Underwood-Stratton, New York City

At 8:30 P.M., Apr. 2, 1917 (note clock in picture *above*), as a soft, spring rain fell over the Capitol, the President called for war. There was pandemonium in the crowded hall of the House of Representatives as he concluded ". . . the day has come when America is privileged to spend her blood and her might for the principles that gave her birth and happiness and the peace which she has treasured God helping her, she can do no other."

Mobilization

Our new allies cried for ships, credit, shells, food. Our whole industrial and agricultural potential would have to be geared to war. The President delegated his extraordinary war powers to boards and commissions, which had sweeping authority over shipbuilding, the control of production and distribution, the floating of war loans and the seizure of essential facilities.

Attention!

ALL MALES between the ages of 21 and 30 years, both inclusive, must personally appear at the polling place in the Election District in which they reside, on

TUESDAY, JUNE 5th, 1917

between the hours of 7 A.M. and 9 P.M. and

Register

in accordance with the President's Proclamation.

Any male person, between these ages, who fails to register on June 5th, 1917, will be subject to imprisonment in jail or other penal institution for a term of one year

NO EXCUSE FOR FAILURE TO REGISTER WILL BE ACCEPTED

NON RESIDENTS must apply personally for registration, at the office of the County Clerk, at Kingston, N. Y., AT ONCE, in order that their registration cards may be in the hands of the Registration Board of their home district before June 5, 1917

Employers of males between these ages are earnestly requested to assist in the enforcement of the President's Proclamation.

Signed,

BOARD OF REGISTRATION of Ulster County
E. T. SHULTS, Sheriff
C. K. LOUGHRAN County Clerk
Dr. FRANK JOHNSTON, Medical Officer

Meanwhile, under the Selective Service Act of May, 1917, civilian administrators set about raising an army. This was to be no war of volunteers. All men between twenty-one and thirty were obliged to register.

At the *left* is a draft poster as displayed in Ulster County, N. Y.

Despite gloomy predictions, the registration was orderly In the picture *below* is a typical line-up on New York City's East Side, June 5, 1917.

Courtesy, The New-York Historical Society, New York City

Courtesy, Underwood Stratton, New York City

Industrial Mobilization

The War Shipping Board set about "bridging the Atlantic" with ships. Great new shipyards were built and existing facilities like the Wilmington, N. C., yard at the *right* worked day and night. The schooner shown at the far right was torpedoed off the North Carolina coast early in 1918.

Courtesy, North Carolina State Department of Archives and History, Raleigh

Courtesy, Anaconda Copper Mining Company, New York City

Far under the earth, timbering operations like that shown *left* marked extension of copper mines, even though prices had been forced down from their 1916 peak.

The original hand-operated plate mill with which Andrew Carnegie had begun operations at Upper Union Mills, Pittsburgh, Pa., was working at capacity to handle the 1917 demand for steel. (*Below*).
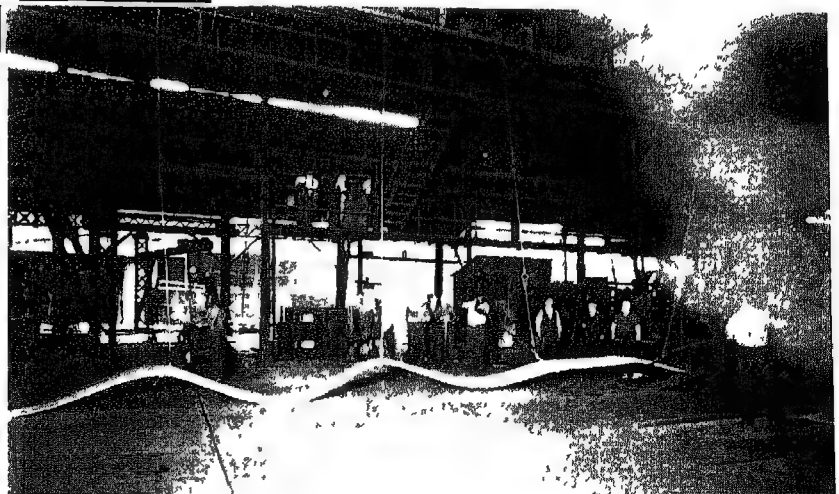
Courtesy, United States Steel Corporation, New York City

Transport

Efficient operation of domestic shipping systems was essential if the war were to be won
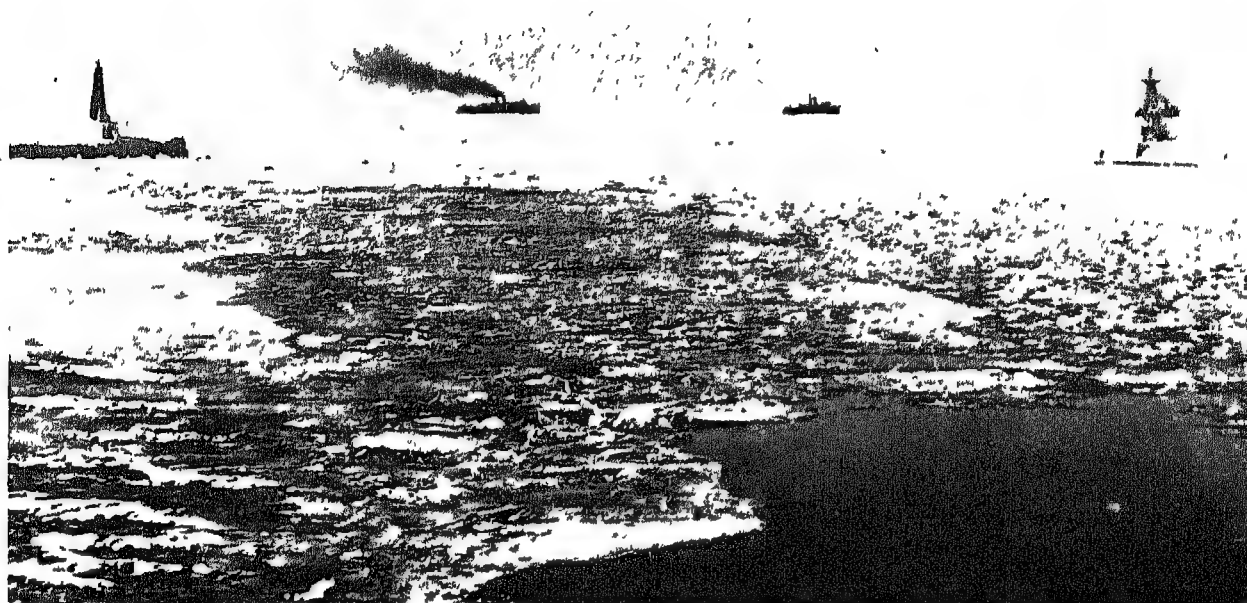
Courtesy, Mr Thomas B Dancey, Dearborn, Mich , and Captain Fred A Samuelson, Ludington, Mich

Great Lakes traffic was a major artery. Car ferries are breaking through the ice off Ludington, Mich., in the picture *above*.

All American railroads were unified under Government operation in December, 1917. The 1917 locomotive shown *below* was working for Uncle Sam.

Courtesy, Chicago, Burlington & Quincy Railroad Company, Chicago, Ill

Agriculture

In May and June, 1917, the prices of agricultural commodities soared. Extraordinary purchases had upset the normal balance of supply and demand The United States Food Administration under Herbert Hoover took control and succeeded in stabilizing prices.
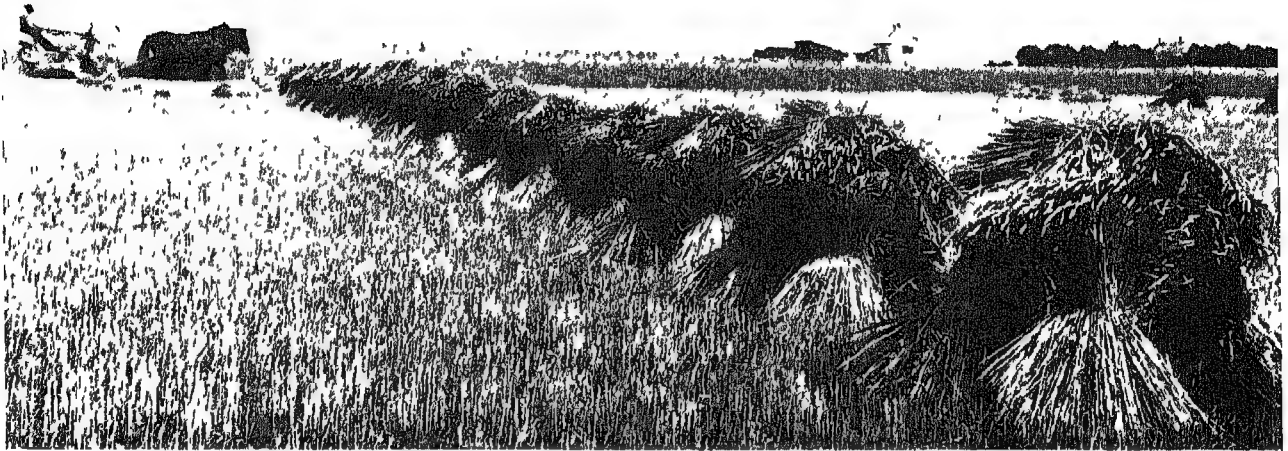
Courtesy, Great Northern Railway Company, St Paul, Minn

All was well on the Montana farm *above* Wheat had risen to $3.25 a bushel before the Chicago Board of Trade stopped trading on May 11, 1917

When the picture *below*, of cotton shipments from El Campo, Tex., was taken in the summer of 1917, cotton was selling at twenty-seven cents a pound, the highest price since Civil War days.

Courtesy, The Library of the University of Texas, Austin

Timber

Photo by United States Forest Service Courtesy, Scribner Art File

Timber was driven down rivers to the sawmills, as in the view *left*, to meet the expanding quotas of the ship-building program.

In areas around booming war-plants, lumber was needed urgently for housing. The 1917 picture *right* shows new homes for workmen at the mills in Lexington, N C.
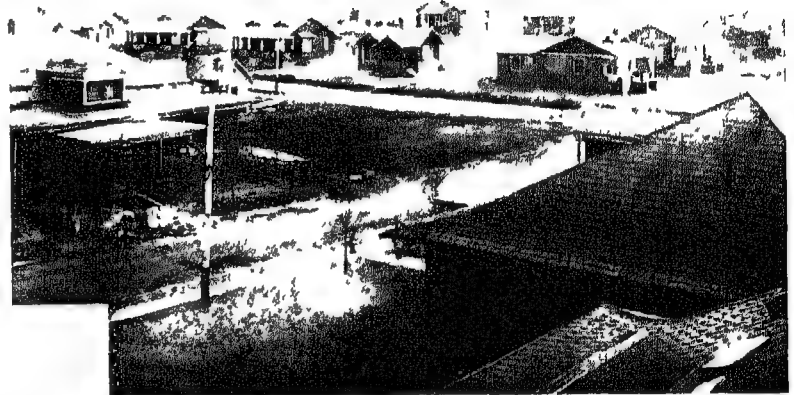
Courtesy North Carolina State Department of Archives and History, Raleigh

Courtesy, Minnesota Historical Society, St Paul

Fish

Institution by the Food Administration of "Meatless Tuesdays" and "Porkless Thursdays" made fish an accepted item in the diet of the whole nation. At the *left*, a big one comes ashore at Warroad, Minn.

Public Opinion

American public opinion was mobilized as well. The Committee of Public Information labored day and night to convince all American citizens that the war was both righteous and necessary.
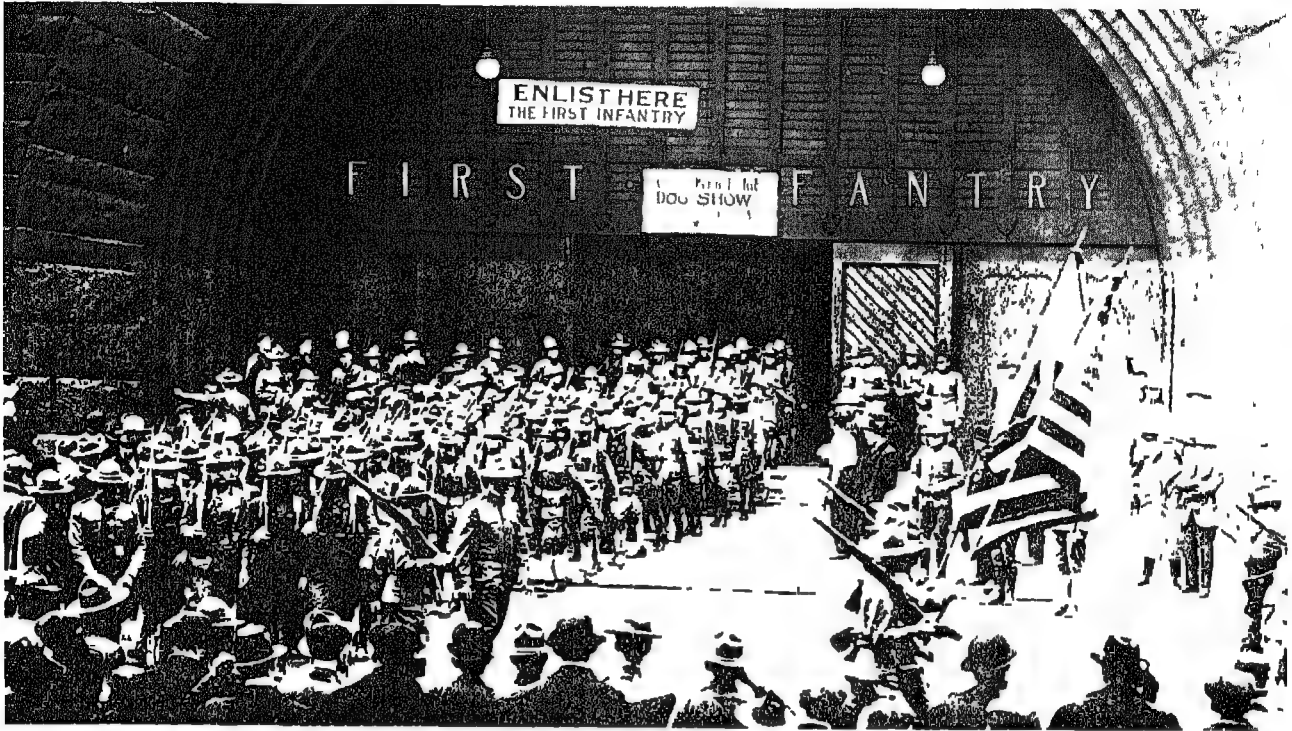
Courtesy U S Signal Corps, Washington, D C

In consequence, when the First Illinois Infantry marched out of its Chicago Armory to training camp (*above*) each man knew that he was dedicated to the righting of a grievous wrong.

The nation was one in spirit, as it was one in industrial and military effort In October, 1917, the committee shown *below* met to receive back from Yankee hands a North Carolina flag taken at New Bern in 1862.

Courtesy, North Carolina State Department of Archives and History, Raleigh

Draftees

To the cheers and applause of their countrymen, the men of military age went off to war in 1917.
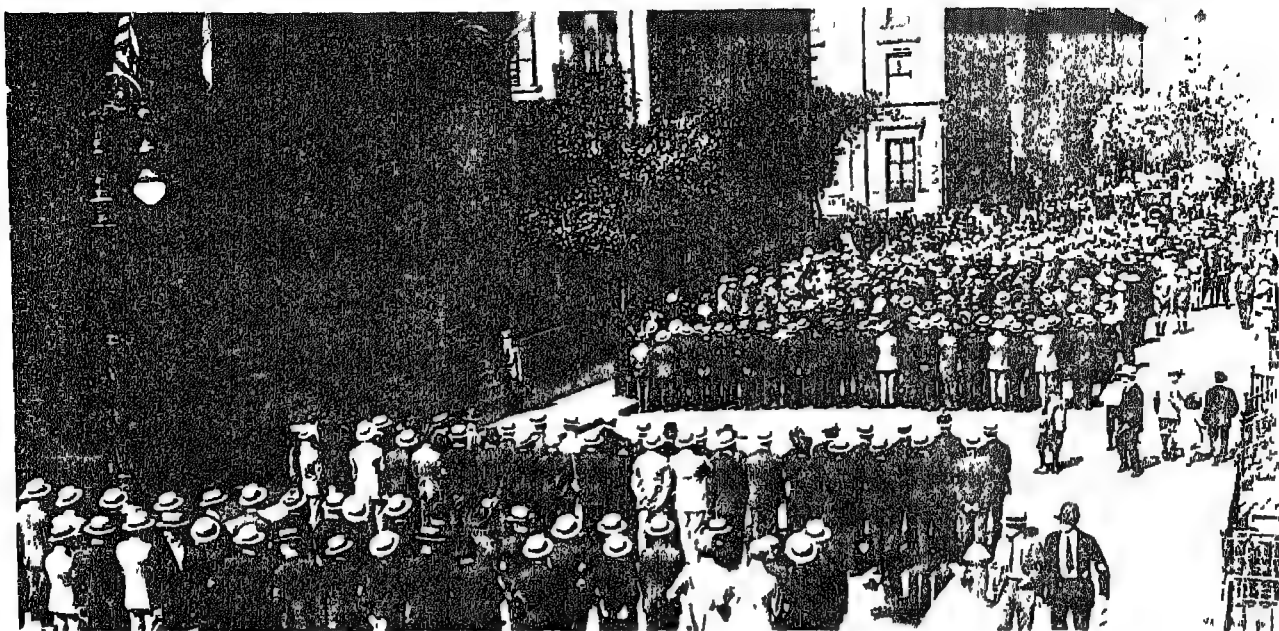
Parades of drafted men were common. *Above,* a group of draftees wait for their turn to swing into a march up Fifth Avenue, New York City.

Friends and relatives thronged down to Union Station to see the young men of Kansas City, Mo., depart for camp.

Both illustrations on this page are by the *courtesy* of the U S Signal Corps, Washington, D. C

Soldiers

Draftees of 1917 made jokes (as Americans always do in serious moments) when they set off to learn the ways of war at Camp Kearney or McClellan or Devens, or at Camp Upton, Long Island, the destination of the New Yorkers *below*

Courtesy, U S Signal Corps, Washington, D C.

From men like these an army was made. After some six months' training and endless rumors, orders came. A tight-packed train to an embarkation camp! And then a jammed transport in convoy, protected by smoke screens and circling destroyers!
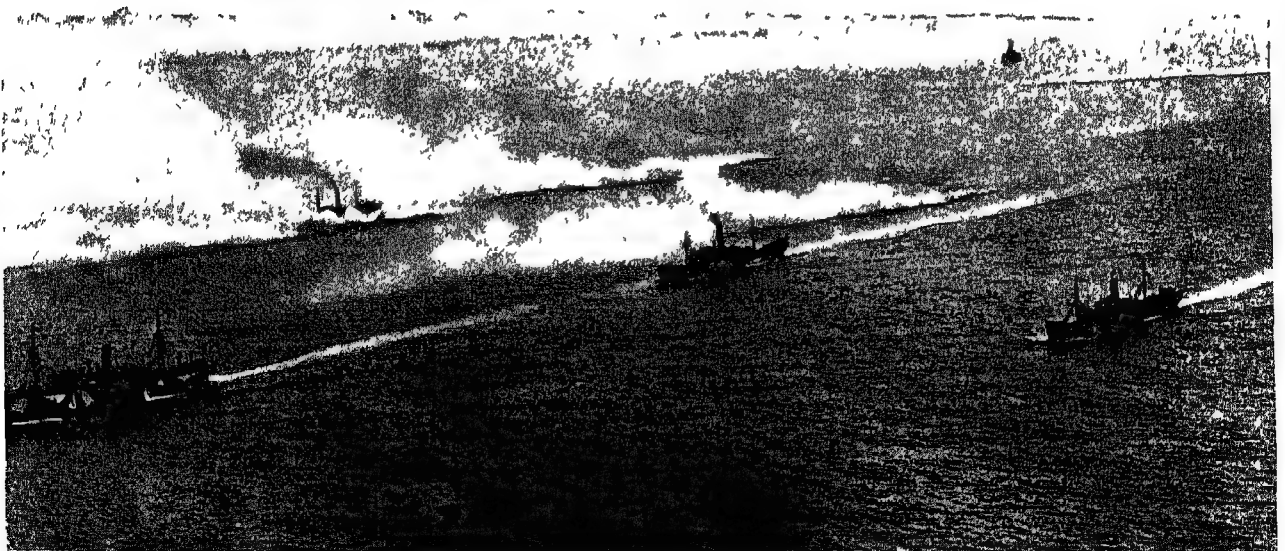
Courtesy, U S Navy Department, Washington, D C

Lafayette, We Are Here

Ignorant of war, high-spirited, idealistic, units of the American Army landed on French soil.
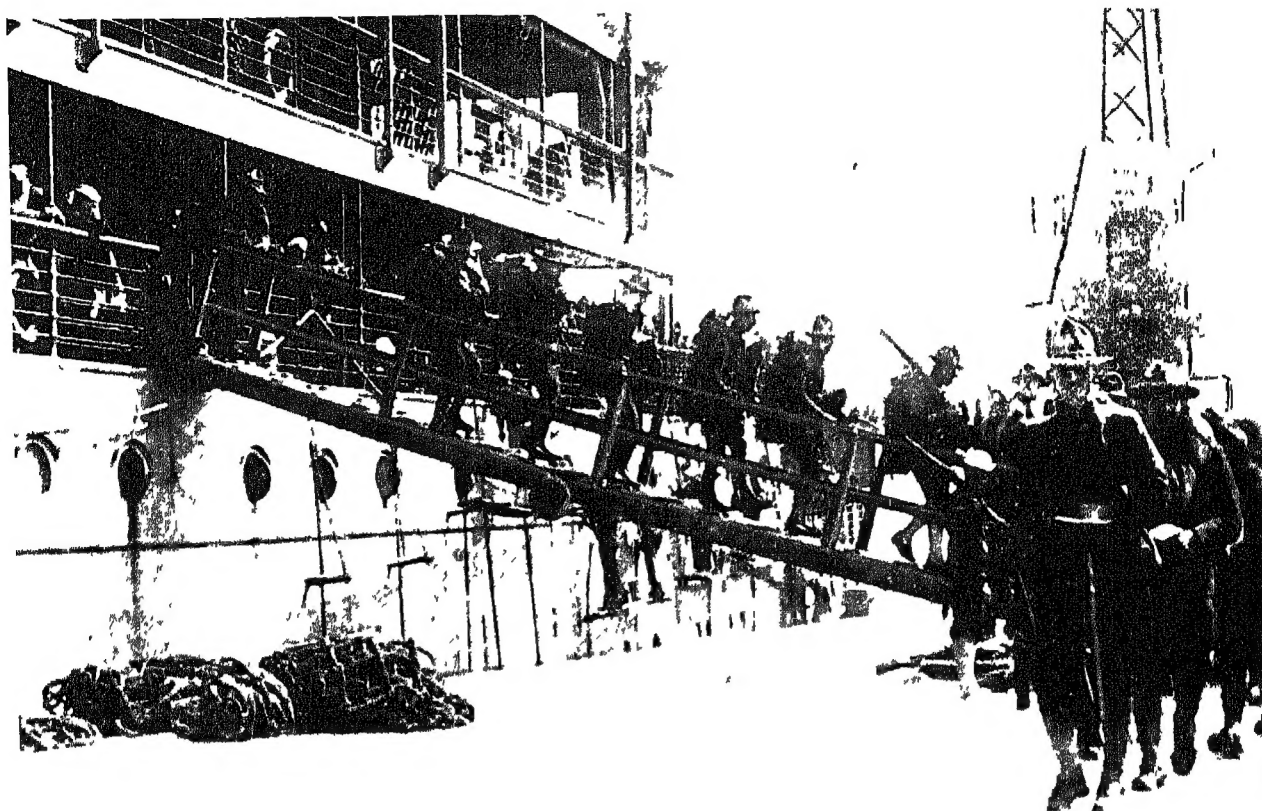
But after the run down a transport's gangway (*above*) there was another training period to undergo before active service at the front.

French and English officers returned from the advanced sectors to lend a hand in practice maneuvers on old battlefields.

Both illustrations on this page are by the courtesy of the U S. Signal Corps, Washington, D C.

Moving Up

Towards the end of 1917, only the First American Division had actively engaged the enemy. But seasoned troops had to be hurried across Europe to rescue the failing Italians—the Russians turned their guns on one another—and the defense of the Western Front was thrust suddenly on the men from Chicago and New York, from the little towns and the lonesome farms of America.

War has always been largely a matter of waiting The French roads with their neat borders of trees were usually shrouded in rain. The picture *above* is a rarity.

When the trucks arrived at their destination, the real thing began—the sodden trenches, the stinks, barrages, patrols, raids—

Both illustrations on this page are by the *courtesy* of the U S Signal Corps, Washington, D. C

Action

German divisions released by the Russian collapse were hurled against the Allied lines.

Amid the splintered trees of what had been a forest, the machine-gun company *above* crouched down and fought back. Infantrymen hugged the French earth while the ground ahead was prepared for their feet.

Both illustrations on this page are by the courtesy of the U S. Signal Corps, Washington, D C.

Into A New World

Courtesy, U S Signal Corps, Washington, D C

Up the slope and over the crest, by day or by night, against the machine gun's burst, the wire, the sniper's rifle, at Mondidier, Cantigny, Belleau Wood, the Second Marne, the American soldier was a symbol of his country's entry into a new world, a new set of responsibilities.